
Sitarama Nama Pratapa Prakasha

सीताराम नाम प्रताप प्रकाश

Document Information

Text title : Shri Sita Rama Nama Pratapa Prakashah

File name : sItArAmanAmapratApaparakAshaH.itx

Category : raama, rAmAnanda

Location : doc_raama

Author : Swami Yuglanand Sharan (sankalit kartA)

Proofread by : Mrityunjay Pandey

Translated by : Tulasidasaji

Latest update : February 2, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

February 2, 2024

sanskritdocuments.org

सीताराम नाम प्रताप प्रकाश



(स्वामीयुगलानन्यशरणां द्वारा सङ्कलित)

भगवान् श्रीराम की भान्ती श्रीराम नाम की मछिमा अपार अेवं अनन्त है ढसीलिये “राम न सकळिं नाम गुन गाळ “, श्रीराम नाम को लोग साधारण समजते हैं । परन्तु अैसा नही है । “श्रीराम नाम में अपार शक्ति है” । “अन्डै नाम राम रघुवर को । डेतु कृशानु भानु छिमकर को ॥ “ढसी से डेवर्षि नारड ञु ने “राम सकल नामन्ड ते अधिका” ये वरदान मांगा ।

सख्खिदानन्डधन भगवान् श्रीराम अेवं उनडे पतित पावन नाम में कोढ अन्तर नही है । “रामस्य नाम रुपं थ लीला धाम परात्परम् । अेतख्यतुष्टयं नित्यं सख्खिदानन्डविग्रहम् ॥ ” (वसिष्ठ संछिता), नाम-नामी में अभेड सम्बन्ध है । श्रीराम मडाराज में श्रीनामी भगवान् श्रीराम विद्यमान है । “नाम निरुपन नाम जतन ते । सोढ प्रगटत जिमि मोल रतन ते ॥ ”

परम सन्त श्री युगलानन्यशरणां ञु मडाराज ने श्री सीता राम नाम प्रताप प्रकाश में वेड, शास्त्र, पुराण आडि का सप्रमाणा सङ्ग्रह डिया है । श्री स्वामी ञु मडाराज ने भाषा-भाष्य भी डिया है । जिनका सम्पूर्णां ञुवन श्री नाम साधना में व्यतीत डुआ ढो उनका कथोपकथन पूर्ण रुप से अनुपम अेवं डिव्य है, नाम की साधना वेड शास्त्रों के साथ-साथ सभी सन्तों ने स्वीकार की है । वे याले डिसी मत या पन्थ के ढों ।

श्रीनाम की साधना, साधना के साथ ढी साथ साध्य भी है । श्रीनाम मडाराज “नाम” के साथ “मन्त्र” भी हैं । ज्ञान स्वरुप अेवं साक्षात् ब्रह्मस्वरुप भगवान् शङ्कर निरन्तर नाम जपते हैं अेवं श्रीराम नाम के बल पर श्री काशी में मरने वालों को मुक्ति प्रदान करते हैं । नाम की साधना यारों युगों से थली आयी है, “थडुं ञुग थडुं श्रुति नाम प्रभाढि । कलि विशेष नळि आन ढपाढि ॥ ” अेवं “थडुं ञुग तीनि काल तिडुं लोका । भअे नाम जपि ञुव भिसोका ॥ ”

सभी ऋषि मुनियों व ज्ञानी ध्यानी सिद्ध सन्तों ने श्री नाम मडाराज का आश्रय लिया है । श्री नाम मडाराज की साधना में निम्न भाते विचारणीय हैं -

१. निरन्तर अेवं सदा सर्वत्र
२. श्रद्धा विश्वासपूर्वक
३. डश नामापरथ रछित ढोकर
४. सभी डेश काल पात्रपात्र अेवं शारीरिक स्थिति में

प. प्रारम्भिक अवस्था में भाव, कुभाव, अनप, आलस्य में परन्तु आगे बढ़ने पर अेकाग्र मन से अेवं प्रेमपूर्वक

६. परा, पश्यन्ति, मध्यमा, वैभरी में वैभरी की प्रधानता ।

७. सत्मी नाम अेवं मन्त्रों सर्वोत्कृष्टता

८. जपात् सिद्धिः

९. योग, ध्यान, आदि से श्रेष्ठ

सीताराम नाम प्रताप प्रकाश का सम्पादन अेवं प्रकाशन लक्ष्मण डिला में श्री स्वामी सीताराम शरण्णु मडाराज के द्वारा हुआ । पुनः प्रकाशन “पुरी” वाले मडाराज श्री स्वामी गङ्गादास ञु मडाराज ने भी मणीराम दास ञु की छावनी से कराया । वर्तमान प्रकाशन श्री सीताराम दास ञु मधुकरिया के शिष्यगण करा रहे हैं । वर्तमान सम्पादन प्रकाशन में नैयायिक श्री तुलसीदास ञु अेवं श्री हरिशङ्कर दास ञु के सत्प्रयास का सकल प्रमाण आप सत्मी के सन्मुख है ।

“श्री तुलसीदास ञु सम्प्रदाय के गौरव हैं इस दिशा में उनके अनेक प्रयास हो चुके हैं अेवं आगे भी होंगे अेतदर्थ धन्यवाद ।” - मडान्त श्री नृत्य गोपालदास ञु, श्रीमणिरामदास छावनी सेवा ट्रस्ट, श्रीअयोध्या ञु

श्रीमते रामानन्दाय नमः । श्रीसीतारामाभ्यां नमः श्रीगुरवे नमः । स्वामीयुगलानन्यशरण्णु द्वारा सङ्कलितः ।

अथ श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशः ।

अथ प्रथमः प्रमोदः

मङ्गलाचरण -

श्रीरामं जनकात्मजामनिलजं वेधोवशिषावृषी योगीशञ्चपराशरं श्रुतिविदं व्यासं जिताक्षं शुक्म् ।

श्रीमन्तं पुरुषोत्तमं गुणनिधिं गङ्गाधराद्यान् यतीन् श्रीमद्राघवदेशिकञ्च वरदं स्वाचार्यवर्यश्रये ॥

पुराणोक्तवचनानि -

श्रीहनुमन्नाटके श्रीमडावीरवाक्यं रामनामानन्यभक्तान प्रति -

कल्याणानां निधानं कलिमलमथनं पावनं पावनानां

पाथेयं यन्मुमुक्षोस्सपदि परपदप्राप्तये प्रस्थितस्य ।

विश्रामस्थानमेकं कविवरवयसां ञुवनं सज्जनानां

बीजं धर्मद्रुमस्य प्रभवतु भवतां भूतये रामनाम ॥ १ ॥

श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाश के आरम्भ में परम उपासकवर्य, आचार्यशिरोमणि नामानुरागियों में अग्रगण्य अेवं श्रीरामञु को आनन्द प्रदान करने वाले पवनपुत्र श्रीमडावीरञु के द्वारा रचित श्लोक को शोक शमन के लिअे मङ्गलाचरण में रभा गया है । जिससे श्रीहनुमानञु की कृपा से ग्रन्थ के विद्नों का नाश हो, रसिक नामानुरागियों की सत्मा में प्राचुर्य हो, अभिराम श्रीनाम मडाराज का अनुपम अर्थ चित्त में प्रकाशित हो एत्यादि

अनेक अबिलाषाओं की पूर्ति के लिये मङ्गलाचरण के रूप में लिखा गया है। श्रीछनुमानजो की रचना तो मडागम्भीर अवं अथाह है, परन्तु उनकी ही दुष्ट मति के अनुसार कुछ अर्थ लिखने का प्रयास किया जा रहा है। श्रीछनुमानजो समस्त श्रीरामनाम के रसिकों को आशीर्वाद देते हैं मडाअभिराम श्रीरामनाम मडाराज नामानुरागियों को अेक रस परम अैश्वर्य देने में सदा समर्थ हों, यहाँ “भूति” शब्द का अणिमादिक विभूति अर्थ नहीं है अपितु श्रीसीताराम नाम स्वरूपादि का बोध रूप सुभ ही अर्थ छ है। श्रीरामनाम कैसे हैं? छसी प्रश्न के उत्तर में शेष सम्पूर्ण विशेषण श्रीरामनाम के हैं। समस्त कल्याणों का दिव्य निवास स्थान है यहाँ “कल्याण” का तात्पर्य कल्याणप्रद ज्ञान, वैराग्यादि समस्त शुभ साधन अवं साध्य हैं। पुनः कैसे हैं? कलियुग के पाप ताप का नाश करने वाले हैं। पुनः कैसे हैं? पवित्र करने वाले जो श्रीगङ्गाजो आदि पवित्र तीर्थ हैं उन सबको भी पवित्र करने वाले हैं। पुनः कैसे हैं? अतिशीघ्र (छसी मानव शरीर से भगवद्धाम प्राप्ति के लिये सङ्कल्पित मुमुक्षु के लिये श्रीरामनाम मडाराज राह अर्थ हैं। पुनः कैसे हैं श्रीरामनाम? मडर्षि वाल्मीकि, व्यास, नारद आदि कवियों के वचनों (सद्ग्रन्थों) के अेकमात्र विश्रामस्थल हैं। तात्पर्य यह है कि श्रीराम नाम के अवलम्बन के बिना किसी को विश्राम नहीं है। पुनः कैसे हैं श्रीरामनाम? सभी सत्पुरुषों का परम ज्वन हैं तात्पर्य है कि सभी सज्जन विवेकी पुरुष श्रीरामनाम के जप के बिना अपने को मृतक मानते हैं सख्या ज्वन तभी है जब राम नाम का जप होय। पुनः कैसे हैं रामनाम? समस्त सामान्य और विशेष धर्मों के बीज हैं अर्थात् कारण हैं, कारण हो प्रकार के होते हैं: उपादान (समवाधि) कारण और निमित्त कारण जैसे घट का उपादान कारण कपाल (मिट्टी) अवं निमित्त कारण कुवाल है। छसी प्रकार श्रीरामनाम सर्वधर्ममय हैं और सब धर्म के कर्ता भी हैं।

मडाशम्भुसंछितायां श्रीशिववाक्यं श्रीरामभक्तान् प्रति-
मडाशम्भुसंछिता में श्रीशिवजो का वाक्य श्रीरामभक्तों के प्रति-
मुक्तिस्त्रीकर्णपूरौ मुनिदृद्यवयःपक्षती तीरभूमौ
संसारपापारसिन्धोः कलिकलुषतमस्तोमसोमार्कभिम्बो ।
उन्मीलत्पुण्यपुञ्जद्रुमललितदले लोचने य श्रुतीनां
कामं रामेतिवर्णौ शमिड कलयतां सन्ततं सज्जनानाम् ॥ २॥

द्वितीय श्लोक श्लोक को दूर करने वाला श्रीमडाशम्भु संछिता का है भगवान् श्रीशङ्करजो श्रीरामानुरागियों में श्रेष्ठ हैं छसीलिये सभी नामरसिक सन्तों को आशीर्वाद देते हुये कहते हैं कि श्रीरामनाम के होने अक्षर सभी नामानुरागियों का उनकी रूचि के अनुसार सदा मडामङ्गल करें। यह मेरा आशीर्वाद है। श्रीरामनाम के होने वर्ण कैसे हैं- मुक्ति रूपी स्त्री के कर्ण के कर्णकूल हैं, ताटङ्ग स्त्रियों के सौभाग्य का धोतक होता है। यहाँ तात्पर्य यह है कि नाम सम्बन्ध के बिना मुक्ति भी विधवा की तरह अशोभनीय है अतः उर प्रकार से नाम रटना ही उचित है। पुनः कैसे हैं श्रीरामनाम के होने वर्ण? मुनियों के दृद्य रूपी पक्षी के रामनाम मडाराज हो पङ्क है। अर्थात् समस्त मननशील मडापुरुषों के अन्तःकरण को स्पन्दित करने वाले हैं। पुनः कैसे हैं श्रीरामनाम के होने वर्ण? संसाररूपी अपार सागर के होने किनारे हैं, अबिप्राय यह है कि जब होने वर्णों का उच्यारण करेङ्गे तो अवश्य ही भवसागर से पार हो जायेङ्गे। पुनः कैसे हैं श्रीरामनाम के होने वर्ण? कलियुग के मडापापरूपी अन्धकार को

नाश करने के लिये सूर्य एवं पापजन्य तापों को शमन करने के लिये यन्द्र स्वरूप हैं अर्थात् “रकार” अग्नि बीज है सूर्य में प्रकाशन का सामर्थ्य “रकार” से ही प्राप्त है “मकार” यन्द्र बीज है यन्द्रमा ताप का अपनोदन करके स्थित में आह्लाद को प्रकट करता है उसी प्रकार श्रीरामनाम के दोनों वर्ण कलि के लीषण पापरूपीतम एवं तज्जन्य तापों का अपनोदन करके स्थित में परम आह्लाद को प्रकट करते हैं । पुनः कैसे हैं श्रीराम नाम के दोनों वर्ण? प्रकाशित पुण्यरूपी वृक्ष के सुन्दर दो दल हैं, अङ्कुरण के समय वृक्ष में पड़ले दो दल आते हैं तदनन्तर उसका विकास होता है श्रीनाम मङ्गलराज के बिना उच्चारण किये सुकृत भी असम्भव है । पुनः कैसे हैं श्रीरामनाम के दोनों अक्षर? वेद पुरुष के दो नेत्र हैं । इनकी कृपा से ही वेदों के रक्षकों को जाना जा सकता है । तात्पर्य यह है कि श्रीरामनाम के सङ्घारे ही वेदों को सब कुछ दियेयी देता है श्रीनाम मङ्गलराज के बिना तो वेद भी अन्धे हैं श्रीनाम मङ्गलराज के बिना जब वेद ही अन्धे हैं तो वेद पढ़ने वालों की क्या कथा होगी अतः नाम रटो ।

पद्मपुराणे श्रीशिववाक्यं पार्वतीं प्रति-

पद्मपुराण में श्रीशिवजी का वाक्य पार्वती जी के प्रति-

नामचिन्तामणि रामश्चित्तन्यपरविग्रहः ।

पूर्णा शुद्धो नित्ययुक्तो न भेदो नामनामिनः ॥ ३ ॥

श्रीरामनाम मङ्गलराज चिन्तामणि हैं अर्थात् चिन्तनमात्र से समस्त अभीष्ट पदार्थों को प्रदान करने वाले हैं तथा श्रीरामजी साक्षात् सच्चिदानन्दस्वरूप हैं दोनों पूर्ण पवित्र एवं नित्ययुक्त हैं नाम और नामी में भेद नहीं है ।

अतः श्रीरामनामादि न भवेद् ग्राह्यमिन्द्रियै ।

स्फुरति स्वयमेवैतिञ्जह्लादौ श्रवणे मुपे ॥ ४ ॥

इसीलिये श्रीरामनाम रूपगुणादि मन और इन्द्रियों के विषय नहीं हैं ये तो स्वतः अहेतुकी कृपा से रसना, श्रवण, मुप, उदय, कण्ठादि स्थानों में प्रकट होते हैं । यदि कोई कुतर्की कहे कि अग्नि के कलने से मुप नहीं जलता है यीनी के कलने से मुप नहीं मीठा होता है उसी प्रकार श्रीरामनाम के कलने से जीव कृतार्थ नहीं होता तो उसका यह कथन सर्वथा अनुचित है ज्योद्धि अधि यीनी आदि प्राकृत शब्द है और श्रीरामनाम अप्राकृत, दिव्य एवं चिन्मय है इनके साथ संसारी पदार्थों की तुलना नहीं हो सकती । दूसरी बात अग्नि के कथन से मुप जलता है इसमें कोई प्रमाण नहीं है और श्रीराम नाम के कथन से उज्ज्वल मङ्गलपापी तर गये इसमें अनन्त प्रमाण हैं इसलिये उनका कुतर्क मालिन्ययुक्त एवं उपेक्षाणीय है । नामानुरागी को जैसे लोगों का सङ्ग नहीं करना चाहिये ।

रामरामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।

सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ॥ ५ ॥

सहस्र नाम सम सुनि सिव बानी ।

जपि जेष्ठं पिय सङ्ग भवानी ॥

उरषे हेतु हेरि उर ही को ।

डिय भूषन तिय भूषन ती को ॥

“नाम्नां समूहो नामता, सडस्राणां नामता सडस्रनामता अेव सडस्रनामतातुल्यम्” अैसा पाठ मानकर ज।गु।रा । श्रीरामभद्रायार्थं ज् अर्थ करते हैं कि ढजरो ढजरो विषु सडस्रनामों का उव्यारण किया जाय और अेक बार श्रीरामनाम का उव्यारण किया जाय तो भी दोनों तुल्य नहीं ढोड़गे । अतः श्रीरामनाम की अदभुत मडिमा है । लोड में भी ढमारे राम ने देभा है- ढडी श्रीविषु मडायज्ञ ढो रड था साडल डम था और आडुति पूरी करनी थी तो विप्रों ने ढडा कि अब दूसरी विधि से आडुति पूर्ण करते हैं “श्रीराम रामेति रामेति” ढस श्लोक का उव्यारण करते और आडुति ढलवाते और ढडते कि अेक बार में अेक ढजार आडुति ढो गयी, अतः लोड में भी यड मान्यता है कि श्रीविषु सडस्रनाम के पाठ की अपेक्षा श्रीरामनाम सडज, सुलभ और सर्वसिद्धि दायक है ।

अेक बार श्रीशङुकरज् प्रसाद पाने जा रहे थे तब अपनी प्राणप्रिया श्रीपार्वती ज् से ढडा कि प्रिये ! यलिये साथ में प्रसाद पा लिया जाय तब श्रीपार्वती ज् ने ढडा कि श्रीविषु सडस्रनाम पाठ का नियम है, अभी पाठ पूरा नहीं दुआ है पाठ पूरा करके पाऊँगी । यड सुनकर श्रीशङुकरज् प्रसन्न ढो गये और अपना मुख्य सिद्धान्त प्राणप्रिया श्रीपार्वती ढो सुनाते हैं ढे वरानने ! ढे रामे ! श्रीरामनाम श्रीविषु सडस्रनाम के तुल्य हैं अर्थात् श्रीरामनाम का अेक बार उव्यारण करने से श्रीविषु सडस्रनाम के पाठ का पुण्य सडज में प्राप्त ढो जाता है, श्रीरामनाम माया से परे हैं ढमारा परम धन हैं अतः श्रीराम नाम का उव्यारण कीजिये और मेरे साथ प्रसाद पाँयै! भगवान् शङुकर ज् की भात सुनकर श्रीपार्वतीज् ने श्रीरामनाम का उव्यारण करके श्रीशिवज् के साथ प्रसाद पाया । यड देभकर भगवान् शिव ने श्रीपार्वती ढो दुदय से लगा लिया और अपना भूषण बना लिया ।

ढे वरानने ! यस्मिन् राम रामेति मनोरमे रामे (रामनाम्नि) अड अति रमे । तत् श्रीरामनाम सडस्रनाम तुल्यं भवति, अैसा अन्वय करने पर अर्थ ढोगा- ढे यन्द्मभी पार्वति ! जिस मनोभिराम श्रीरामनाम में मैं अत्यन्त रमण करता हूँ वड श्रीरामनाम विषुसडस्रनाम के तुल्य है ।

जपतः सर्ववेदांश्च सर्वमन्त्रांश्च पार्वति ।

तस्मात्कोटिगुणं पुण्यं रामनाम्नैव लभ्यते ॥ ६ ॥

ढे पार्वति ! समस्त वेद, पुराण और सडिता तथा मन्त्रों के ढरोडों बार पाठ करने से जो पुण्य प्राप्त ढोता है उससे ढोटिगुना पुण्य अेक बार श्रीरामनाम के जप से ढोता है ।

ये ये प्रयोगास्तन्त्रेषु तैस्तैर्यत्साध्यते हलम् ।

तत्सर्वं सिद्धयति क्षिप्रं रामनामेति कीर्तनात् ॥ ७ ॥

तन्त्रों में जो जो प्रयोग हैं मारण, सम्मोडन, उव्याटन और आडर्षणादि और उनके प्रयोग से जिन-जिन हलों की सिद्धि ढोती है, वे सारे हल शीघ्र ढी श्रीरामनाम के सङुर्तन से सिद्ध ढो जाते हैं । आवश्यकता है विश्वास और प्रेम की ।

भूतप्रेतपिशाचाश्च वेतालाश्चेटकादयः ।

कूष्माण्डा राक्षसा घोरा भैरवा ब्रह्मराक्षसाः ॥

श्रीरामनाम त्रडणात् पलायन्ते दिशो दशः ॥ ॢ ॥

मडाभयानक स्वरूप वाले जो भूत, प्रेत, पिशाच, भैरव, भैताल, राक्षस और कुष्माण्डादि हैं वे सब श्रीरामनाम के उच्चारण को सुनकर शीघ्र ही दशोदितशाओं में भाग जाते हैं । यह श्रीरामनाम का मडाप्रताप है अतः सब कुछ छोड़कर श्रीरामनाम में प्रेम करना ही उचित है श्रीरामनाम के रसिकों को श्रीनाम विभुओं का सङ्ग छोड़ देना चाडिअे ।

प्राणप्रयाणसमये रामनामसङ्कल्प्सरेत् ।

स भित्वा मण्डलं भानोः परं धामाभिगच्छति ॥ ८ ॥

याडे जैसा भी पापी हो प्राण छूटते समय किसी भी प्रकार से यदि वह अेक बार भी श्रीरामनाम का उच्चारण कर लेता है, तो वह सूर्य मण्डल का भेदन करके नगाडःा बजाते डुअे अवश्य ही परम धाम को जाता हैडर्ध्मात्रे स्थितौ श्रीमत्सीतारामौ परात्परौ ।

ड्याकारेषु त्रयो देवा भिन्दौ शक्तिरनुत्तमा ॥ १० ॥

श्रीरामनाम के “अर्ध्मात्रा” में परात्पर ब्रह्म श्री सीतारामज्जु स्थित हैं “आकार” में तीनों देवता (ब्रह्मा विष्णु मडेश) और “भिन्दु” में मडामाया आदिशक्ति स्थित हैं ।

भावार्थ- श्रीराम की स्थिति यह है- २ अ आ म् अ कुल पाँच अक्षर है “व्यञ्जनं यार्ध्मात्रिकम्” के अनुसार २ अर्ध्मात्रास्वरूप है म् (ं) अनुस्वार होने से भिन्दु स्वरूप है अतः रेङ् का वाच्य (अर्थ) श्रीसीतारामज्जु हैं रेङ् उनका वाचक है, वाच्य और वाचक में अभेद होने से रेङ् ही श्रीसीतारामज्जु हैं अतः रेङ् में श्रीसीतारामज्जु का ध्यान करना चाडिअे । अेवं रकार के उत्तर में जो “अ” है उसका अर्थ भगवान् वासुडेव है, तदनन्तर जो “आ” है उसका अर्थ ब्रह्मा है, मकार के उत्तर जो “अ” है “उसका अर्थ श्रीमडेशज्जु है, ं का अर्थ मडामाया मूल प्रकृति आदि शक्ति हैं ।

असङ्ख्यमन्त्रनाम्नां तु भीजं शर्मास्पदं परम् ।

अनादृत्य मडामन्दा संशक्ताश्चान्यसाधने ॥ ११ ॥

अनन्त मन्त्रों और अनन्त नामों का भीज भूत परम कारण समस्त सुभों का स्थान श्रीरामनाम है, श्रीनाम परत्व को बिना विचारे श्रीरामनाम की उपेक्षा करके मडामन्द् मूढः अज्ञानी लोग दूसरे साधनों में लगे रहते हैं व्यर्थ आसक्त हो जाते हैं ।

जपकाले सदा देवि नामार्थञ्च परात्परम् ।

चिन्तयेच्चैतसा साक्षाद् बुद्ध्या श्रीरामरूपकम् ॥ १२ ॥

“अब श्रीरामनामजप की विधि अेवं हल का निरूपण करते हैं” डे देवि ! लमेशा जप करते समय मन और बुद्धि से परात्पर ब्रह्मस्वरूप साक्षात् श्रीसीतारामज्जु के स्वरूपनामार्थ का चिन्तन करना चाडिअे । तात्पर्य यह है डि जब भी भीतर से अथवा बाडर से श्रीरामनाम का उच्चारण करें उस समय अवश्य सावधानीपूर्वक अर्थानुसन्धान करें । मडर्षि पतञ्जलि ने भी कडा कि- “तज्जपस्तदर्थं भावनम्” अर्थात् अर्थानुसन्धानपूर्वक जप से जप का वास्तविक अेवं पूर्ण लाभ मिलता है यदि प्रत्येक नाम के साथ अर्थानुसन्धान नडी हो पावे त्वरा के कारण अथवा निश्चित

सङ्ख्या पूर्ति के कारण तो आदि मध्य और जप के अन्त में भलीभाँति अर्थानुसन्धान कर लेवें । श्रीरामनाम सर्वोपरि है और साक्षात् श्री सीताराम ज़ु स्वरूप है । ऐसा चिन्तन करते हुये अपने चित्त की वृत्तियों को मन में लीन करे और अपने स्वरूप तथा छन्द्रेयादि करणों को मन को और बाहर के व्यवहारों को श्रीरामनामार्थ में लीन करे तत्पश्चात् श्रीरामनाम का जप करे ऐसा करने से कुछ ही दिनों में मडामोद विनोद की प्राप्ति होती है ।

अशनं सम्भाषणं शयनमेकान्तं भेदवर्जितम् ।

भोजनादित्त्रयं स्वल्पं तुरीये संस्थितिस्तदा ॥ १३ ॥

जप के समय भोजन कम करे जिससे आलस्य, प्रमाद और छन्द्रेयों की यञ्चलता नहीं होगी । धीरे-धीरे भोजन को घटावे । प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा कम करे शुद्ध भोजन करे । रजोगुणी अर्थात् तमोगुणी लोगों का अन्न न पार्ये । स्वादिष्ट सरस पदार्थों को चित्त से उटा दे, छन्द्रेयों को लम्पट न होने दे । हमेशा अवसर पाकर के ही थोड़ा सत्य, छितकारी अर्थात् मधुर बोले । निद्रा को धीरे-धीरे कम करे जहाँ तक हो सके रात्रि में जागकर उच्यस्वर में नाम उच्यारण करे और धीरे-धीरे निद्रा पापिनी को ज़ुत ले । सुन्दर ऐकान्त स्थान में निवास करे जहाँ किसी प्रकार का भेद विक्षेप आप को न हो, न दूसरे को हो । इस प्रकार साधन सम्पन्न होकर यदि श्रीराम नाम का जप करेङ्गे तो उसका हल अकथनीय होगा ।

संयमं सर्वदा धार्यं नैव त्याज्यं कदाचन ।

संयमानामचिन्मात्रे प्रीतिस्सञ्जायतेऽधिकाः ॥ १४ ॥

नाम जप को संयमित होना चाछिअे, संयम का त्याग नहीं करना चाछिअे, संयमपूर्वक श्रीरामनाम का जप करने से सञ्छिदानन्द स्वरूप श्रीरामनाम में उत्तरोत्तर प्रतिदिन प्रतिक्षण यथार्थ प्रीति बढ्ती है ।

प्रथमाभ्यासकाले य ग्रन्थं नामात्मकं सुधी ।

द्विथाममेक्यामं वा चिन्तयेद्धि प्रयत्नतः ॥ १५ ॥

श्रीरामनाम के नये साधक को चाछिअे कि सर्वप्रथम अभ्यास के समय में श्रीरामनाम परत्व बोधक ग्रन्थों का अध्ययन चिन्तन करे, अेक प्रउर अथवा दो प्रउर सावधान चित्त होकर और श्रीरामनाम के रसिक विरक्त सन्तों की सङ्गति करे, उनकी सङ्गति से श्रीराम नाम में आश्चर्यजनक प्रीति होगी ।

यदा नाम्नि लयं याति चित्तङ्कलेशविवर्जितम् ।

तदा न चिन्तयेत् किञ्चिद्व्यलब्ध्वा ह्यानन्दमन्दिरम् ॥ १६ ॥

निरन्तर कुछ समय तक श्रीरामनाम का जप करने पर बिना श्रम के सलज्ज जब श्रीरामनाम में चित्तविलीन हो जाय तब परमानन्दस्वरूप श्रीसीतारामज्जु को प्राप्त करके हिर कुछ ही चिन्तन न करे । ह्योङ्घ्रि विचारदि जितने साधन समूह है उनका अेक ही प्रयोजन है चित्त का लय करना । श्रीरामनाम का प्रताप और प्रभाव बिना जप के नहीं मालूम पडता है ।

तत्रैव श्रीब्रह्मवाक्यं नारदं प्रति-

पद्मपुराण में ही श्रीब्रह्माज्जु का वाक्य नारदज्जु के प्रति-

चिन्तामणिसमं कायं लब्ध्वा वै भारतेऽमलम् ।

संस्मरेन्न परन्नाम मोडात् स पतति ध्रुवम् ॥ १७ ॥

इस भारत वर्ष में चिन्तामणि के समान निर्मल शरीर को प्राप्त करके जो मोडवश परात्पर श्रीरामनाम का जप नहीं करता है सम्यक् स्मरण नहीं करता है वह निश्चित ही पुनः यौरासी लाभ योनि में करोड़ों वर्षों तक भटकता है नरक कुण्ड में गिरता है । तब बाद में पश्चात्ताप करता है कि मनुष्य शरीर पाकर भी हम अपना उद्धार नहीं कर सके ।

मानुषं दुर्लभं प्राप्य सुरैरपि समर्थितम् ।

जन्मव्यं सावधानेन रामनामाभिलेष्टम् ॥ १८ ॥

इसलिये देवदुर्लभ तथा देवपूजित मानव शरीर को प्राप्त करके सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाले श्रीरामनाम का सावधानीपूर्वक जप करना चाहिए ।

श्रुत्वा श्रीनाममाडात्म्यं यथार्थं श्रुतिपूजितम् ।

सर्वाशां संपिडायाशु स्मर्तव्यं सर्वदा बुधैः ॥ १९ ॥

समस्त श्रुतियों से पूजित श्रीरामनाम के यथार्थ माडात्म्य को सुनकर, शीघ्र ही सभी आशाओं को छोड़कर विद्वानों को सदा सर्वदा श्रीरामनाम का स्मरण करना चाहिए, यही परम पण्डिताई और सुबुद्धिमता है । शेष सारी यत्नरता उदरपूर्ति के निमित्त है ।

दोहा: जिसकी रसना नाम रस रसी असी पद पाय ।

भसी वासना तिनहन की हँसी उभय भिसराय ॥

विष्णुनारायणादीनि नामानि यामितान्यपि ।

तानि सर्वाणि देवर्षे जातानि रामनाम ॥ २० ॥

हे नारद ! भगवान् के विष्णु, नारायण आदि जितने नाम हैं वे सब भी पतितपावन हैं किन्तु वे सारे

नाम श्रीरामनाम से प्रकट दुःख हैं और द्वि मलाप्रलय के समय श्रीरामनाम में ही विलीन हो जाते हैं ।

शृणु नारद सत्यन्तं गुड्याद् गुड्यतमं मतम् ।

रामनाम सङ्गज्जन्वा याति रामास्यदं परम् ॥ २१ ॥

हे नारद ! मैं तुमसे अत्यन्त सत्य एवं गुड्य सिद्धान्त को कलता हूँ तुम सुनो- मनुष्य अंक बार ही श्रीरामनाम का जप करके श्रीरामजु के दिव्यपद को प्राप्त कर सकता है इसमें आश्चर्य न करना, श्रीरामनाम की बड़ी मडिमा है ।

-जिस प्रकार अन्धकारयुक्त कक्ष में दीप प्रज्वलित करते ही अन्धकार पूर्णतया नष्ट हो जाता है, पुनः अन्धकार प्रवेश न करने पावे इसके लिये दीप की लौ को जलाये रखना आवश्यक है उसी प्रकार अंक बार श्रीरामनाम के उच्चारण करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, पुनः पाप प्रवेश न करने पावे इसलिये नित्य निरन्तर श्रीरामनाम का जप करना चाहिए ।

प्रभ्र-ङ्गिर सन्त मडात्मा दिन रात राम नाम का जप क्यों करते हैं ?

उत्तर -स्नेह डोने के कारण, तात्पर्य यह है कल्याण तो अके ही बार रामनाम लेने से हो गया परन्तु श्रीरामनाम में अत्यन्त प्रेम हो जाने से वे दिन रात राम नाम रटा करते हैं । तब सामान्य लोगों को बार-बार नाम जप की प्रेरणा क्यों देते हैं? इसका उत्तर यह है कि अके बार श्रीरामनाम के उच्चारण से परमपद की प्राप्ति तो हो जायेगी परन्तु आगे भगवत्प्रतिकूल आचरण न हो, हमेशा भगवान् की स्मृति बनी रहे अन्तःकरण की शुद्धता बनी रहे । इसलिये निरन्तर रामनाम का जप करना चाखिये ।

सर्वेषां हरिनाम्नां वै वैभवं रामनामतः ।

ज्ञातं मया विशेषेण तस्मात् श्रीनाम सञ्जप ॥ २२ ॥

हे नारदज्ज ! करोड़ों वर्षों तक साधना करके मैंने यह विशेष अनुभव किया है कि भगवान् के समस्त नामों का अश्र्वर्य और प्रताप श्रीरामनाम के अंशांश से है, इसलिये स्नेहपूर्वक तत्पर होकर श्रीरामनाम का जप करो ।

क्षणाद्धं जानकीजानेर्नाम विस्मृत्य मानवः ।

मडादोषालयं याति सत्यं वस्मि मडामुने ॥ २३ ॥

हे मडामुने ! जो मानव श्रीसीतापति श्रीरामज्ज के नाम को आधे क्षण के लिये भी भूलकर किसी अन्य कार्य में आसक्त होता है वह मडादोषों और तापों के आलय, नरक में जाता है यह मेरा वचन सत्य है । तात्पर्य यह है कि श्रीरामनाम के विस्मरण के समान कोठ पाप नहीं है ।

रामनामप्रभावेण सीतारामं परेश्वरम् ।

सदात्मानं प्रपश्यन्ति रामनामार्थचिन्तकाः ॥ २४ ॥

श्रीरामनाम (सीतयासङ्घितो रामः सीतारामः तं सीतारामम् ।) के अनुसन्धान करने वाले साधकों को श्रीरामनाम के प्रभाव से परात्पर ब्रह्म श्रीसीतारामज्ज का साक्षात्कार होता है ।

तत्रैव श्रीसनत्सुमारवाक्यं नारदं प्रति-

पद्मपुराण में ही श्रीसनत्सुमारज्ज का वाक्य नारदज्ज के प्रति-

सर्वापराधकृदपि मुच्यते हरिसंश्रयः ।

हरेश्चपराधान् यः कुर्व्याद् द्विपदपांशनः ॥ २५ ॥

नामाश्रयः कदाचित् स्यात्तरत्येव स नामतः ।

नाम्नो हि सर्वसुदृष्टो ऽपराधात् पतन्त्यथः ॥ २६ ॥

किसी भी प्रकार का अपराध करने वाला व्यक्ति यदि श्रीरामज्ज की शरण में आ जाय तो वह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है । जो नराधम श्रीरामज्ज का अपराध करते हैं श्रीरामज्ज के बत्तीस सेवापराध हैं अवे वेद प्रतिकूल आचरण भी मडद अपराध हैं । जैसे अपराधी भी सन्त सद्गुरु के शरणगत होकर अकारण- करुणारुणालय श्रीरामनाम की शरण होकर श्रीरामनाम के जप करने से अपराध से मुक्त हो सकते हैं परन्तु अकारणहितैषी सर्वसुभदायक श्रीरामनाम का जो अपराध करता है उसका तो अधःपतन अवे नरक गमन सुनिश्चित है ।

श्रीनारद उवाच-

के तेऽपराधा विप्रेन्द्र नाम्नो भगवतः कृताः ।

विनिघ्नन्ति नृणां कृत्यं प्राकृतं ध्यानयन्ति हि ॥ २७ ॥

श्रीनारदजी ने कडा डे विप्रवर ! श्रीरामनाम सम्बन्धी कितने अपराध हैं? उन अपराधों का स्वरूप क्या है? जिनके करने से सारे सुकृत नष्ट हो जाते हैं और मलामलीन संसारियों जैसे गति प्राप्त होती है ।

श्री सनत्कुमार उवाच-

सतान्निन्दानाम्नः प्रथममपराधं वितनुते ।

यतः प्र्याति यातां कथमु सडते तद्विगर्हाम् ॥

शिवस्य श्रीविष्णोर्यं षड गुणानामादि सकलम् ।

धिया भिन्नं पश्येत् स भवु उरिनामाडितकरः ॥ २८ ॥

जो श्रीरामनाम के रसिक सन्त हैं उनकी निन्दा करना प्रथम अपराध, असाध्य रोग की तरह है निन्दा का तात्पर्य श्रीरामनाम के रसिक सन्तों की वाणी का अनादर करना और अपने असत्यक्ष का स्थापन करना । यदि कोई कहे कि सन्तों की निन्दा नामापराध कैसे होगी तो कहेते हैं कि जिन सन्तों के द्वारा श्रीरामनाम की प्रसिद्धि लोक में हुई उनकी बुराई को श्रीरामनाम मलाराज कैसे सडन करेङ्गे? सन्तों के बिना श्रीरामनाम को कौन जानता? दूसरा नामापराध श्रीगौरीशङ्कर भगवान् के गुणानामादि को भगवान् श्रीसीताराम जी के गुणानामादि से भिन्न मानते हैं, अभिप्राय यह है कि परात्पर ब्रह्म सर्वेश्वर श्रीसीतारामजी हैं और सब उनके अधीन हैं अतः श्रीगौरीशङ्कर जी की भिन्न ईशता का प्रतिपादन करना नामापराध है अथवा श्रीसीतारामजी और श्रीगौरीशङ्कर भगवान् में अमेद मानना भी अपराध है । सेवक स्वामि भाव मानना धर्म है ।

गुरोरवज्ञा श्रुतिशास्त्रनिन्दनं तथार्थावाधो उरिनाम्नि कल्पनम् ।

नाम्नो भलाधस्य हि पापबुद्धिर्न विधते तस्य यमैर्हि शुद्धिः ॥ २९ ॥

अपने गुरुजनों की अवज्ञा करना अर्थात् उनकी आज्ञा का उल्लङ्घन करना तीसरा नामापराध है । वेद पुराण की निन्दा करना यौथा नामापराध है यहाँ निन्दा का तात्पर्य है सुनकर के कुतर्क करना । श्रीनाम मलाराज की मडिमा सुनकर उसे यथार्थ रूप में स्वीकार न करना, केवल प्रशंसा मात्र मानना जैसे पुराणों में तीर्थों और स्तोत्रपाठादि की मडिमा लिखी है वैसे ही, श्रीरामनाम की मडिमा गायी गयी है । यह वास्तव नहीं है यह पाँचवां नामापराध है यह मडापाप है जैसे पापी की शुद्धता यमनियमादि साधनों से अथवा यमलोक में जाने से भी नहीं होती है ।

धर्मं व्रत त्याग लुतादिसर्वशुभकिया साम्यमपि प्रमादः ।

अश्रद्धधानेऽप्यमुभेऽप्यशृण्वति यश्चोपदेशं स नामापराधः ॥ ३० ॥

धर्म, व्रत, दान, त्याग और तप आदि जितने शास्त्रविहित शुभकर्म हैं उनकी श्रीरामनाम से तुलना करना यह सातवां असाध्य नामापराध है जैसे सर्वेश्वर मलाराजधिराज से सामान्य प्रजा की तुलना करना यह मडद अपराध है वैसे ही यह श्रीनामापराध है । जो अश्रद्धालु हैं सुनना नहीं चाहते हैं जैसे लोगों को लोभवश श्रीरामनाम की मडिमा सुनाना आठवां नामापराध है, यह मडाअपराध है तात्पर्य यह है उत्तम अधिकारी को ही श्रीरामनाम

परत्व और रहस्य की बात सुनानी याडिअे । श्रीरामनाम का जप करना और प्रमाद करना, असावधान रहना, सन्तों का सङ्ग न करना, समस्त विश्व को श्रीरामनाममय जानकर भी डिंसा का त्याग न करना, यल नवम अपराध डै तात्पर्य यल डै डि प्रमाद और आलस्य से रहलत डोकर सावधानीपूर्वक अडिंसावृत्ति से सन्तों का सङ्ग करते डुअे श्रीरामनाम का जप करना डी उत्तम जप डै ।

श्रुत्वापि नाममाडात्स्यं यः प्रीतिरडितोऽधमः ।

अडं ममाडिपरमो नाम्नि सोऽध्यपराधङ्कुत् ॥ ३१ ॥

श्रीरामनाम की मडिमा को सुनकर भी जो प्रीति से रहलत डै अडन्ता और ममता के मड में पागल डै वल भी नामापराधी डै यल दशम अपराध डै डयोडिडि अैसे सुभसागर श्रीरामनाम के स्वभाव और माडात्स्य को सुनकर भी संसार का त्याग नडीं डिया, श्रीरामनाम के रस को नडीं पिया डसलिये वल नामापराधी डै । अपराधविनिर्मुक्त पलं नाम्नि समाथर ।

नामैव तव देवर्षे सर्वं सेत्स्यति नान्यतः ॥ ३२ ॥

डे नारद ॥ ! डसलिये यल डयित डै डि सली प्रकार के नामापराधों को डोऽंकर डर पल श्रीराम का जप करो, श्रीरामनाम ॥ की डृपा से डी सली प्रकार के सुभों का लाल तुभडें मिल जायेगा । अन्य डिसी भी साधन से अनन्त कल्प में भी परमानन्ड दुर्वल डै ।

जाते नामापराधे तु प्रमाडेन कथञ्चन ।

सदा सङ्कीर्तयन्नाम तडेकशरणो भवेत् ॥ ३३ ॥

यडि प्राथीन मलीन संस्कार वश अथवा कुसङ्गवश नामापराध डो जाय तो धबराना नडीं याडिअे अपितु सदासर्वदा श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करे और श्रीरामनाम को डी अपना सर्वस्व अेवं संरक्षक माने और श्रीरामनाम के अनुरागी सन्तों के नाम का कीर्तन करे तथा सन्त सेवा करे तो सब अपराध मिट जाता डै ।

नामापराधयुक्तानां नामान्येव डरन्त्यधम् ।

अविश्रान्तप्रयुक्तानि तान्येवार्थकराणि यत् ॥ ३४ ॥

श्रीरामनाम के अपराधी का अपराध श्रीरामनाम के जप से डी मिटेगा परन्तु श्रीरामनाम का निरन्तर जप करें डिसी भी समय जप बन्ड न डो ।

नामैकं यस्य वायि स्मरणपथि गतं श्रोत्रमूले गतं वा

शुडु वलडशुडुवर्णं व्यवडितरडितं तारयत्येव सत्यम् ।

तडैडेडद्रविणजनता लोभपापपडमध्ये

निक्षिप्तं स्यान्न डलजनकं शीघ्रमेवात्र विप्र ॥ ३५ ॥

शुडु अथवा अशुडु जैसे जल्डी-जल्डी में “रम-रम” कल डेते डै, डिना दांत वाले “लाम-लाम” डोल डेते डै, सूकर को डेभकर यवन लोग “डराम” कल डेते डै अेवं व्यवधान सडित जैसे अली, “रा” कल डिया और डो धएटे बाड “म” कल ड। यल व्यवधानयुक्त डै अैसा नडीं डोना याडिअे तात्पर्य यल डै डि जिस डिसी भी प्रकार से जैसा डैसा

भी श्रीरामनाम जिसके वाणी, मन और श्रोत्र का विषय हो गया उसको श्रीरामनाम मडाराज निश्चित ही तार देगें, जैसे श्रीरामनाम मडाराज का जप जो देह, गेह, धन, मान, प्रतिष्ठा, जनता, धर्म, लोभ और पापार्थ के लिये करते हैं । हे नारद ! उनका शीघ्रता से कल्याण नहीं होता है धीरे-धीरे होता है अतः निष्काम भाव से ही श्रीरामनाम का जप करना चाहिए । नाम के बल पर पापकर्म में प्रवृत्त होना नाम मडाराज को नाराज करना है जैसे बार-बार शरीर में कीचड़ लगाकर श्रीसरयूज में घोंना अपराध है यद्यपि मलीनता तो दूर हो ही जायेगी पर यह उचित नहीं है उसी प्रकार नाम जप से पाप तो निवृत्त हो जाते हैं पर ऐसा करना सर्वथा अनुचित है ।

तत्रैव श्रीवशिष्ठवाक्यं भारद्वाजं प्रति-

पद्मपुराण में ही श्रीवशिष्ठज्ज् का वाक्य भारद्वाज्ज् के प्रति-

अहो मडामुने लोके रामनामाभयप्रदम् ।

निर्मलं निर्गुणं नित्यं निर्विकारं सुधास्पदम् ॥ ३६ ॥

प्रत्यक्षं परमं गुह्यं सौशील्यदि गुणार्णवम् ।

त्यक्ता मन्दात्मका ज्वा नानामार्गानुयायिनः ॥ ३७ ॥

हे मडामुने! अर्थात् की बात यह है कि अभय प्रदान करने वाले, स्वच्छ, गुणातीत, अविनाशी, सकलविकार रहित, अमृतस्वरूप, प्रकट, परमगुण, सुशीलतादि गुणों के सागर, अगम एवं अगाध श्रीरामनाम-मडाराज का निरादर करके दूसरे अनेक मार्गों का अनुगमन करते हैं वे निश्चित ही मन्दगति हैं ।

यत्र तत्र स्थितो वाऽपि संस्मरेन्नाममुक्तिदम् ।

सर्वपापविशुद्धात्मा स गच्छेत् परमां गतिम् ॥ ३८ ॥

जहाँ कहीं भी शुद्ध अथवा अशुद्ध स्थान में रहते हूँ जैसे किसी भी स्थिति में पवित्र हो या अपवित्र हो जो मुक्तिदाता श्रीरामनाम का स्मरण करता है वह मनुष्य समस्त पाप तापों का नाश करके परम धाम को प्राप्त करेगा । इसमें संशय नहीं है ।

मोडानलोलसज्जवाला ज्वलल्लोकेषु सर्वदा ।

श्रीनामाम्भोदृच्छयायां प्रविष्टो नैव दृश्यते ॥ ३९ ॥

मोडरूपी अग्नि में यह संसार सदा सर्वदा जल रहा है, जो भाग्यवशात् श्रीरामनाम रूपी मेघ की छाया के नीचे आ जाता है, वह शीतल हो जाता है वह फिर मोडादि की अग्नि में नहीं जलता है । यहाँ श्रीरामनाम का उच्चारण करना ही छाया के नीचे आना है ।

रामनामजपादेव रामरूपस्य साम्यताम् ।

याति शीघ्रं न सन्देहो सत्यं सत्यं वयो मम ॥ ४० ॥

अति आसक्तिपूर्वक तन्मय होकर श्रीरामनाम के जप करने से श्रीरामज्ज् की समता प्राप्त होती है इसमें सन्देह नहीं है मेरी वाणी को सत्य ही जानना ।

तत्रैव श्रीनारद वाक्यमम्बरीषं प्रति-

वडीं पर अम्बरीष ञु के प्रति श्रीनारद ञु का वचन-

सकृदुच्यारयेद्यस्तु रामनाम परात्परम् ।

शुद्धान्तःकराणो भूत्वा निर्वाणमधिगच्छति ॥ ४१ ॥

श्रीरामनाम को परात्पर तत्व समझकर जो एक बार श्रीरामनाम का उच्चारण करता है वह शुद्ध अन्तःकरण वाला होकर परम मोक्ष को प्राप्त करता है ।

कीर्तयन् श्रद्धया युक्तो रामनामाभिलेष्टम् ।

परमानन्दमाप्नोति हित्वा संसारबन्धनम् ॥ ४२ ॥

श्रद्धा से युक्त होकर सम्पूर्णकामनाओं को पूर्ण करने वाले श्रीरामनाम का जो सङ्कीर्तन करता है वह संसार के बन्धन का त्याग करके परमानन्द को प्राप्त करता है ।

अनन्यगतयो मर्त्या भोगिनोऽपि परन्तप ।

ज्ञानवैराग्यरहिता ब्रह्मचर्यादिवर्जिताः ॥ ४३ ॥

सर्वोपायविनिर्मुक्ता नाममात्रैकजल्पकाः ।

जनकीवल्लभस्यापि धाम्नि गच्छन्ति सादरम् ॥ ४४ ॥

हे परन्तप ! जिनकी श्रीरामनाम के अलावा दूसरी कोई गति नहीं है जो भोगी है, ज्ञान वैराग्य से रहित है ब्रह्मचर्यादि से शून्य है और भगवत्प्राप्ति के समस्त उपाय से जो शून्य है परन्तु श्रीरामनाम का उच्चारण करते हैं- वे लोग निश्चित ही आदरपूर्वक श्री जनकीशुवन के परात्पर धाम साकेत लोक में जायेंगे ।

दुर्लभं योगिनां नित्यं स्थानं साकेतसंज्ञकम् ।

सुभूपूर्वं लभेत्तत्तुनामसंराधनात् प्रिये ॥ ४५ ॥

हे पार्वति ! योग के जो आठ अङ्ग हैं उन आठ अङ्गों से युक्त योगी जन्म भर जो अभ्यास करते हैं जैसे योगियों को भी जो दुर्लभ है, नित्य साकेतधाम जिसका नाम है, जैसे दिव्य धाम को श्रीरामनाम की आराधना से भक्त सुभूपूर्वक प्राप्त कर लेता है ।

तत्रैव श्रीअर्जुनमपति श्रीकृष्णवाक्यं-

वडीं पर अर्जुन के प्रति श्रीकृष्ण के वाक्य-

भुक्तिमुक्तिप्रदातृणां सर्वकामकृत्वप्रद ।

सर्वसिद्धिकरानन्त नमस्तुभ्यं जनार्दन ॥ ४६ ॥

हे जनार्दन ! हे भुक्ति और मुक्ति प्रदान करने वालों की सभी कामनाओं के अनुसार कृत्व प्रदान करने वाले ! हे समस्त सिद्धियों को सुलभ करने वाले ! हे अनन्त ! आपको नमस्कार हो ।

यं कृत्वा श्रीजगन्नाथ मानवा यान्ति सद्गतिम् ।

ममोपरि कृपां कृत्वा तत्त्वं ब्रूहि सुभालयम् ॥ ४७ ॥

હે શ્રીજગન્નાથ ! મનુષ્ય જિસકો કરકે સદ્ગતિ કો પ્રાપ્ત કરતે હૈ, ઉસ સુખ કે આલય કો મેરે ઊપર કૃપા કરકે કહિએ
।

શ્રીકૃષ્ણ ઉવાચ -

યદિ પૃથ્વસિ કૌન્તેય સત્યં સત્યં વદામ્યહમ્ ।

લોકાનાન્તુ હિતાર્થાય ઇહ લોકે પરત્ર ચ ॥ ૪૮ ॥

હે કુન્તીનન્દન ! યદિ તુમ પૂછતે હો તો મનુષ્યોં કે ઇસ લોક ઔર પરલોક મેં કલ્યાણ કે લિએ મૈં સત્ય-સત્ય કહતા
હૂં ।

રામનામ સગ્જીવની મહામનોહર મૂરિ ।

જાસુ જીહ જિય વિચ વસી તાસુ સુજલ ભલિ ભૂરિ ॥

રામનામ સદા પુણ્યં નિત્યં પઠતિ યો નરઃ ।

અપુત્રો લભતે પુત્રં સર્વકામફલપ્રદમ્ ॥ ૪૯ ॥

સદા પુણ્યપ્રદ શ્રીરામનામ કા જો નિત્ય પાઠ કરતા હૈ, વહ યદિ અપુત્ર હૈ તો વહ સમસ્ત કામનાઓં કે અનુરૂપ ફલ
પ્રદાન કરને વાલે પુત્ર કો પ્રાપ્ત કરતા હૈ ।

મડ્ગલાનિ ગૃહે તસ્ય સર્વસૌખ્યાનિ ભારત ।

અહોરાત્રં ચ યેનોક્તં રામ ઇત્યક્ષરદ્વયમ્ ॥ ૫૦ ॥

જો દિન રાત “રામ” ઇન દો અક્ષરોં કા ઉચ્ચારણ કરતા હૈ, હે ભરતવંશી અર્જુન ! ઉસકે ઘર મેં સમસ્ત સુખ ઔર
મડ્ગલ સદા નિવાસ કરતે હૈ ।

ગડ્ગા સરસ્વતી રેવા યમુના સિન્ધુ પુષ્કરે ।

કેદારે તૂદકં પીતં રામ ઇત્યક્ષરદ્વયમ્ ॥ ૫૧ ॥

જિસને “રામ” ઇન દો અક્ષરોં કા ઉચ્ચારણ કિયા ઉસને શ્રીગડ્ગા, શ્રીસરસ્વતી, નર્મદા, પુષ્કર ઔર કેદાર મેં જલ
પી લિયા ।

અતિથેઃ પોષણશ્ચૈવ સર્વતીર્થાવગાહનમ્ ।

સર્વપુણ્યં સમાપ્નોતિ રામનામપ્રસાદતઃ ॥ ૫૨ ॥

શ્રીરામનામ કે પ્રભાવ સે મનુષ્ય અતિથિ સેવા ઔર સમસ્ત તીર્થોં કે અવગાહન જન્મ પુણ્યોં કો પ્રાપ્ત કર લેતા હૈ ।

સૂર્યપર્વણિ(*) કુરુક્ષેત્રે કાર્તિક્યાં સ્વામિદર્શને ।

કૃપાપાત્રેણ વૈ લબ્ધં યેનોક્તમક્ષરદ્વયમ્ ॥ ૫૩ ॥

જિસને “રામ” ઇન દો અક્ષરોં કા ઉચ્ચારણ કિયા, શ્રીરામ નામ કે ઉસ કૃપાપાત્ર કો સૂર્ય ગ્રહણ કે સમય કુરુક્ષેત્ર
મેં સ્નાન કરને કા તથા કાર્તિક માસ મેં શ્રીસ્વામી કાર્તિકેય કે દર્શન કા પુણ્ય સહજ મેં પ્રાપ્ત હો જાતા હૈ ।

*સૂર્યગ્રહે ઇત્યેવ સુવચમ્ ।

ન ગડ્ગા ન ગયા કાશી નર્મદા ચૈવ પુષ્કરમ્ ।

सदृशं रामनाम्नस्तु न भवन्ति कदाचन ॥ ५४ ॥

श्रीगङ्गाञ्च, गया, काशी, नर्मदा और पुष्कर आदि अनन्त पतितपावन तीर्थ ली अन्तःकरण की शुद्धि हेतु श्रीराम नाम की तुलना नहीं कर सकते हैं, अर्थात् श्रीरामनाम के जप से जितनी सज्जता से अन्तःकरण पवित्र होता है अनन्त तीर्थों के अवगाहन से नहीं । तीर्थों के अर्थात् श्रीगङ्गाञ्च आदि के जल का कुछ दिनों तक निरन्तर सेवन करने से जो अन्तःकरण की शुद्धि प्राप्त होती है वह श्रीरामनाम के जप से तत्काल प्राप्त हो जाती है जैसा कि भागवतकार ने लिखा है- सद्यः पुनन्त्युपस्पृष्टाः स्वर्धुन्यापोऽनुसेवया । (भा । १ । १ । १५)

येन दत्तं भुतं तमं सदा विष्णुः समर्चितः ।

जिह्वाग्ने वर्तते यस्य राम इत्यक्षरद्वयम् ॥ ५५ ॥

जिसके जिह्वा के अग्रभाग में “राम” यह दो अक्षर विराजमान हैं उसने उर प्रकार के दान, ध्वन और तप का अनुष्ठान कर लिया और उमेशा उमेशा के लिये भगवान् विष्णु की अर्चना कर लिया ।

माघस्नानं कृतं तेन गयायां पिण्डपातनम् ।

सर्वकृत्यं कृतं तेन येनोक्तं रामनामकम् ॥ ५६ ॥

जिसने श्रीराम नाम का उच्चारण कर लिया उसने तीर्थराज श्रीप्रयाग में, माघ स्नान का श्रीगयाञ्च में पिण्डदान का तथा वेद, पुराण और संहिता में विहित समस्त शुभ कृत्यों के अनुष्ठान का इवल सज्ज में प्राप्त कर लिया ।

याछो चारों ओर दूर दूर गौर ज्ञान विना दीनता न छीन छीन जीन अघ आग है ।

जहाँ तक साधन सुराधन विलोडिये जू बाधन उपाधन सखित नट भाग है ॥

तीरथ की आस सो तो नाडक उपास्य हेतु अेक बार राम कहे कोटिन प्रयाग है ।

युगल अनन्य छत उत भ्रम भ्रम दाम नाम के रटन बिनु छूटत न दाग है ॥

प्रायश्चित्तं कृतं तेन मडापातकनाशनम् ।

तपस्तमं य येनोक्तं राम इत्यक्षरद्वयम् ॥ ५७ ॥

जिसने “राम” छन दो अक्षरों का उच्चारण कर लिया उसने मडापातकनाशक प्रायश्चित्त को कर लिया और सबी प्रकार के तप का अनुष्ठान कर लिया ।

यत्वारः पठिता वेदास्सर्वे यज्ञाश्च याजिताः ।

त्रिलोकी मोयिता तेन राम इत्यक्षरद्वयम् ॥ ५८ ॥

जिसने “राम” छन दो अक्षरों का उच्चारण कर लिया उसने समस्त शाखा, अङ्ग और उपाङ्ग के सखित चारों वेदों का पाठ कर लिया और विधि सखित समस्त यज्ञों का अनुष्ठान कर लिया तथा तीनों लोकों के जुवों को दुभजाल से छुड़ा दिया ।

भूतले सर्वतीर्थानि आसमुद्रसरांसि य ।

सेवितानि य येनोक्तं राम इत्यक्षरद्वयम् ॥ ५९ ॥

जिसने “राम” छन दो अक्षरों का उच्चारण कर लिया उसने ब्रह्माण्ड के सब तीर्थों, समुद्र पर्यन्त समस्त सरोवरों में स्नान, दान और सेवन कर लिया ।

अर्जुन उवाच -

यदा भ्लेच्छमयी पृथ्वी भविष्यति कलौ युगे ।

किं करिष्यति लोकोऽयं पतितो रौरवालये ॥ ६० ॥

हे भगवन् ! जब यह पृथिवी सर्वथा भ्लेच्छों से आक्रान्त हो जायेगी, सम्पूर्ण वातावरण रौरव नरक तुल्य हो जायेगा उस समय मनुष्य किस साधन के सहारे इस लोक में सुभी रहते हुये परम पद को प्राप्त करेगा ?

श्रीकृष्ण उवाच -

न सन्देहस्त्वया कार्थो न वक्तव्यं पुनः पुनः ।

पापी भवति धर्मात्मा रामनामप्रभावतः ॥ ६१ ॥

हे अर्जुन ! श्रीरामनाम के विषय में तुम्हें सन्देह नहीं करना चाखिये और न ही बार-बार कलना चाखिये याहे जैसा भी पापी हो श्रीरामनाम के प्रताप से शुद्ध होकर पापी भी धर्मात्मा हो जाता है ।

न भ्लेच्छस्पर्शनात्तस्य पापं भवति दैडिनः ।

तस्मा मुच्यते जन्तुर्यस्मरेद्रामद्वयक्षरम् ॥ ६२ ॥

जो “राम” छन दो अक्षरों का स्मरण करेगा उनको भ्लेच्छों के स्पर्श पाप नहीं लगेगा ख्योड्डि श्रीरामनाम के प्रभाव से भ्लेच्छों के स्पर्श सम्भन्धी पाप से वे शीघ्र ही मुक्त हो जाते हैं ।

रामस्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ।

कुलायुतं समुद्धृत्य रामलोके मलीयते ॥ ६३ ॥

जो श्रद्धाभक्तिपूर्वक श्रीरामजी के स्तोत्रों का पाठ करते हैं वे मनुष्य अपने कुल की दस हजार पीढी का उद्धार करके श्रीसीतारामजी के दिव्य लोक साकेत में पूजित होते हैं ।

रामनामामृतं स्तोत्रं सायं प्रातः पठेन्नरः ।

गोघ्नः स्त्रीबालघाती च सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ६४ ॥

जो इस श्री रामनामामृत स्तोत्रों का श्रद्धा, विश्वासपूर्वक प्रातः काल और सायंकाल पाठ करता है वह गोडत्या, बालडत्या और स्त्रीडत्या जन्य समस्त पापों से मुक्त हो जाता है ।

तत्रैव श्रीअगस्त्यवाक्यं श्रीरामम्प्रति-

उसी पद्म पुराण में श्रीअगस्त्यजी का वाक्य श्रीराम के प्रति-

विश्वरूपस्य ते राम विश्वशब्दा हि वाचकाः ।

तथापि रामनामेदं प्रबो मुष्यतमं स्मृतम् ॥ ६५ ॥

हे रामजी ! सर्वस्वरूप आप सभी शब्दों के वाच्य हैं और दुनिया के सारे शब्द आपके वाचक हैं तथापि हे प्रबो ! यह श्रीरामनाम सभी नामों में अत्यन्त मुष्य कडा गया है ।

तत्रैव श्रीव्यासवाक्यं विप्रान्प्रति-

उसी पद्मपुराण में श्रीव्यासजी का वाक्य विप्रों के प्रति-

रामनामांशतो जाता ब्रह्माण्डः कोटिकोटिशः ।

रामनाम्नि परे धाम्नि संस्थिता स्वामिभिस्सह ॥ ६६ ॥

अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड श्रीराम नाम के अंश से उत्पन्न होते हैं और सर्वोत्कृष्ट तेजःस्वरूप श्रीराम नाम में ही अपने स्वामियों के साथ स्थित हैं ।

विश्वासः सुदृढो नाम्नि कर्तव्यः साधकोत्तमैः ।

निश्चयेन परां सिद्धिं शीघ्रं प्राप्नोत्यसंशयम् ॥ ६७ ॥

सर्वोत्तम साधकों को यादिये कि अन्य सभी साधनों से मन को भीज्यकर श्रीरामनाम में विश्वास स्थापित करें ।

सुस्थिर विश्वासापूर्वक श्रीरामनाम का जप करने से अतिशीघ्र ही सर्वोत्कृष्ट सिद्धि को प्राप्त कर लेते हैं ।

चित्तस्थैकाग्रता विप्रा नाम्नि कार्या प्रयत्नतः ।

वृत्तिरोधं विना हार्दं दुर्लभं मुनीनामपि ॥ ६८ ॥

उे ब्राह्मणों ! यादिये जिस किसी प्रकार से उो श्रीरामनाम में चित्त की अेकाग्रता करनी यादिये । जब तक चित्त की वृत्तियों का निरोध नहीं उोगा तब तक मुनियों को भी उृदयानन्द (परमानन्द) अत्यन्त दुर्लभ है ।

अडोभाग्यमडोभाग्यमडोभाग्यं पुनः पुनः ।

येषां श्रीमद्रघूत्तसनाम्नि सज्जयते रतिः ॥ ६९ ॥

वे लूग बडुत ही सौभाग्यशाली है बार-बार उनडे सौभाग्य की बलिडारी है जिनकी श्रीरामनाम में रति है ।

जो सप्रेम श्रीरामनाम का जप करते हैं उनडे समान सौभाग्यशाली कोठ नहीं है ।

स्कन्दपुराणे शिववाक्यं शिवां प्रति-

स्कन्दपुराण में भगवान् शिव का वाक्य श्रीपार्वतीजी के प्रति-

कामात्कोधाद्भयान्मोहान्भत्सरादपि यस्मरेत् ।

परम्ब्रह्मात्मकं नाम राम षत्यक्षरद्वयम् ॥ ७० ॥

परात्पर ब्रह्मस्वरूप श्रीरामनाम का जो काम सम्बन्ध से, डोध से, भय के कारण, मोह में आकर अथवा मात्सर्य से युक्त उोकर भी स्मरण करता है वह निश्चय ही कृतार्थ उो जाता है

येषां श्रीरामचिन्नाम्नि परा प्रीतिर्यज्यवा ।

तेषां सर्वार्थलाभश्च सर्वदास्ति शृणु प्रिये ॥ ७१ ॥

उे प्रिये ! सुनू जिन लूगों की सखिडानन्दस्वरूप श्रीरामनाम में सुस्थिर परा प्रीति है उनडे सभी मनोरथों की सिद्धि सर्वदा समजनी यादिये ।

गिरिराजसुते धन्या नास्ति त्वत्सदृशी क्वचित् ।

यस्मात्तव मडाप्रीतिर्वर्तते रामनाम्नि वै ॥ ७२ ॥

डे पर्वतराज पुत्रि पार्वति ! किसी भी लोक में तुम्हारे जैसा धन्य कोई नहीं है क्योंकि श्रीरामनाम में तुम्हारी निश्चय ही अत्यन्त प्रीति है ।

सर्वेऽवताराः श्रीरामनामशक्तिसमुद्भवाः ।

सत्यं वदामि देवेशि नाममाहात्म्यमद्भुतम् ॥ ७३ ॥

डे देवेशि ! जगत् उद्धार के लिये जितने अवतार पृथिवी पर होते हैं वे सारे अवतार श्रीरामनाम की अद्भूत शक्ति से प्रकट होते हैं श्रीरामनाम की अद्भूत महिमा है मैं सत्यकथता हूँ कि सभी अभिलाषाओं का त्याग करके कलियुग में श्रीरामनाम के उच्चारण से ही मोक्ष सम्भव है अन्य किसी उपाय से नहीं ।

ब्रह्माण्डपुराणो धर्मराजवाक्यं श्रीरामचन्द्रं प्रति-

ब्रह्माण्डपुराण में श्रीधर्मराज का वाक्य श्रीरामचन्द्रञ्च के प्रति-

जयस्व रघुनन्दन रामचन्द्र प्रपन्नदीनार्तिहराभिलेश ।

वाञ्छामले नाम निरामयं सदा प्रदेहि भगवन् कृपया कृपालो ॥ ७४ ॥

डे रघुनन्दन ! हे अभिलेश ! शरणागत दीनों के आर्ति को हरण करने वाले हे रामचन्द्रञ्च ! हे परमकृपालु भगवन् ! हम सब आपसे श्रीरामनाम को चाहते हैं अतः निरामय श्रीरामनाम को प्रदान कीजिये तात्पर्य यह है बिना श्रीरामञ्च के दिये चित्त में श्रीरामनाम निवास नहीं करता है और न ही नाम जप में चित्त लगता है इसलिये श्रीरामञ्च से नाम मळाराज को माँगना चाहिये ।

त्वन्नामसङ्कीर्तनतो निशाचरा द्रवन्ति भूतान्यपयान्ति चारथः ।

नाशं तथा सम्प्रति यान्ति राजन् ततः परं धाम प्रयाति साक्षात् ॥ ७५ ॥

डे मळाराज श्रीरामचन्द्रञ्च ! आपके श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से सारे निशाचर दूर भाग जाते हैं, सारे भूतप्रेत दूर खले जाते हैं और सारे शत्रु नष्ट हो जाते हैं । कीर्तन के पश्चात् साधक परमधाम को प्राप्त करता है

सुभप्रदं रामपदं मनोहरं युगाक्षरं भीतिहरं शिवाकरम् ।

यशस्करं धर्मकरं गुणाकरं वयो वरं मे हृदयेऽस्तु सादरम् ॥ ७६ ॥

सुभ प्रदान करने वाला, मन को हरने वाला, लय को हरण करने वाला, महामङ्गल करने वाला, मळान् यश प्रदान करने वाला, धर्मप्रदाता, समस्त गुणों की भान, “राम” यह ही अक्षर आदरपूर्वक मेरे हृदय में निवास करे यह मुझे वर दीजिये ।

रामनामप्रभा द्रिव्या वेदवेदान्तपारगा ।

येषां स्वान्ते सदा भ्राति ते पूज्या भुवनत्रये ॥ ७७ ॥

वेद और वेदान्त का परम तत्व स्वरूप श्रीरामनाम की द्रिव्य प्रभा जिनके हृदय में सदा निवास करती है, वे लोग त्रिलोकी में सदा सर्वदा पूज्य हैं ।

विष्णुपुराणो व्यासवाक्यं शुक्रं प्रति-

विष्णुपुराण में श्रीव्यासञ्च का वाक्य श्रीशुकदेवञ्च के प्रति-

अवशेनापि यन्नाम्नि कीर्तिते सर्वपातकैः ।

पुमान्विमुच्यते सद्यः सिंहात्रस्ता मृगा एव ॥ ७८ ॥

विवश डोकर भी जिस श्रीरामनाम के कीर्तन करने पर मनुष्य समस्त पापों से तत्काल मुक्त हो जाता है उनके सम्पूर्णा पाप वैसे ही भाग जाते हैं जैसे सिंह के डर से मृग समूह भाग जाता है ।

ध्यायन्ते यजन्यज्ञैस्त्रेतायां द्वापरदेश्यन् ।

यद्यप्रेति तद्यप्रीति कलौ श्रीरामकीर्तनात् ॥ ७९ ॥

सतयुग में ध्यान करने से, त्रेता में यज्ञ करने से, और द्वापर में भगवान् की पूजा करने से जो कुछ प्राप्त होता है कलियुग में श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से वल सब कुछ सलज में प्राप्त हो जाता है ।

तत्रैव श्रीसनत्कुमारवाक्यं वशिष्ठं प्रति-

श्रीविष्णुपुराण में ही श्रीसनत्कुमार का वाक्य श्रीवशिष्ठजी के प्रति-

प्रसङ्गेनापि श्रीरामनाम नित्यं वदन्ति ये ।

ते कृतार्था मुनिश्रेष्ठ सर्वदोषोद्भृतास्सदा ॥ ८० ॥

हे मुनिश्रेष्ठ ! इसी प्रसङ्ग विशेष में भी जो नित्य श्रीराम नाम का उच्चारण करते हैं वे निश्चय ही कृतार्थ हैं सदा सर्वदा सभी दोषों से मुक्त हैं ।

दृष्टं श्रुतं मया सर्वं यत्किञ्चित्सारमुत्तमम् ।

परन्तु रामनामैकवैभवं तु परात्परम् ॥ ८१ ॥

जो कुछ भी सारतत्व है उत्तम से उत्तम वस्तु है उन सबको मैंने देप लिया और सुन लिया परन्तु सबसे श्रेष्ठ परात्पर तत्व श्रीरामनाम की अद्भुत मडिमा है ।

तत्रैव श्रीविरञ्चिवाक्यं मरीचिं प्रति-

श्रीविष्णुपुराण में ही श्री ब्रह्माजी का वाक्य श्रीमरीचिजी के प्रति-

केचिद्गज्ञादिकं कर्म केचिज्ज्ञानादिसाधनम् ।

कुर्वन्ति नामविज्ञानविडीना मानवा भुवि ॥ ८२ ॥

परात्पर श्रीरामनाम के विज्ञान (अनुभव) से शून्य कुछ लोग पृथिवी पर यज्ञादि का अनुष्ठान करते हैं और कुछ लोग ज्ञानादि की साधना करते हैं ।

तत्र योगरताः केचिडेचिद्दधान विमोडिता ।

जपे केचित्तु क्लिश्यन्ति नैव जानन्ति तारकम् ॥ ८३ ॥

उनमें भी कुछ लोग योगाभ्यास में निरत हैं, कुछ लोग ध्यान में ही विमोडित हैं और कुछ लोग तान्त्रिक मन्त्रादि के जप में कष्ट भोग रहे हैं निश्चय ही वे लोग तारक मन्त्र श्रीरामनाम को नहीं जानते हैं इसलिये वे अभागी हैं ।

अलं य शङ्करो विष्णुस्तथा सर्वे द्विवौकसः ।

रामनामप्रभावेण सम्प्राप्ता सिद्धिमुत्तमाम् ॥ ८४ ॥

मैं (अहम्), शङ्करञ्च, विष्णुञ्च तथा सभी देवगण श्रीरामनाम के प्रभाव से ही उत्तम सिद्धि को प्राप्त किये हैं ।

निर्वर्णं रामनामेदं वर्णानां कारणं परम् ।

ये स्मरन्ति सदा भक्त्या ते पूज्या भुवनत्रये ॥ ८५ ॥

यह श्रीरामनाम वर्णों से रचित है अर्द्धमात्रा रेफ बिन्दुरूप है और सभी वर्णों का परम कारण है जैसे परमेश्वर स्वरूप श्रीरामनाम का जो भक्तिपूर्वक स्मरण करते हैं, वे लोग त्रिभुवन में सभी से सदा सर्वदा पूज्य हैं ।

भविष्योत्तरपुराणो श्रीनारायणवाक्यं मडालक्ष्मीं प्रति-

भविष्योत्तरपुराण में श्रीनारायणञ्च का वाक्य श्रीमडालक्ष्मी ञ्च के प्रति-

भजस्व कमले नित्यं नाम सर्वेशपूजितम् ।

रामेतिमधुरं साक्षान्मया सङ्गीर्यते वृष्टि ॥ ८६ ॥

हे मडालक्ष्मी ! भगवान् सदाशिव से नित्य पूजित “राम” इस मधुर नाम का भजन करो! मैं स्वयं ही वृष्टि में श्रीराम नाम का सङ्गीर्तन करता रहता हूँ ।

रामनामात्मकं ग्रन्थं श्रवणात्प्राणवल्लभे ।

शुद्धान्तःकरणो भूत्वा स गच्छेद्रामसन्निधिम् ॥ ८७ ॥

हे प्राणप्रिये ! श्रीरामनाम के प्रतिपादक ग्रन्थों के श्रवण और पाठ करने से थोड़ा ही दिनों में अन्तःकरण शुद्ध हो जाता है तत्पश्चात् श्रीरामञ्च का नित्य सामीप्य प्राप्त होता है ।

ञ्चुवाः कवियुगे घोरा मत्पादविमुभास्सदा ।

भविष्यन्ति प्रिये सत्यं रामनामविनिन्दकाः ॥ ८८ ॥

हे प्रिये ! मैं सत्य कहता हूँ कि कवियुग में मेरे चरणों से विमुभ और अत्यन्त नीच जो लोग होंगे वे व्यर्थ में मेरे भक्त कडाकर श्रीराम नाम की निन्दा करेंगे ।

गमिष्यन्ति दुराचारा निरथे नात्र संशयः ।

कथं सुभं भवेद्देवि रामनामभङ्गिर्मुषे ॥ ८९ ॥

जैसे पापी दुराचारी अधम लोग अवश्य नरक कुण्ड में गिरे होंगे इसमें संशय नहीं है । हे देवि! श्रीरामनाम से विमुभ ञ्चुवों को सुभ कैसे हो सकता है ।

सर्वेषां साधनानां वै श्रीनामोच्चारणं परम् ।

वदन्ति वेदमर्मज्ञा निमग्नं ज्ञानसागरे ॥ ९० ॥

जो सदा सर्वदा ज्ञानसागर में निमग्न रहते हैं और जो वेद के रहस्यों को जानते हैं वे सन्त महापुरुष कहते हैं कि सभी साधनों से श्रेष्ठ श्रीरामनाम का उच्चारण अर्थात् सङ्गीर्तन है ।

यत्प्रभावात्प्रभया नित्यं परमानन्ददायकम् ।

रूपं रसमयं दिव्यं दृष्टं श्रीजानकीपतेः ॥ ९१ ॥

जिस श्रीरामनाम के अद्भुत प्रभाव से मैंने नित्य परमानन्द प्रदान करने वाले दिव्य रसस्वरूप श्रीजानकीनाथजी के स्वरूप का साक्षात्कार किया ।

तत्रैव नारद वाक्यं भारद्वाजं प्रति-

भविष्योत्तर पुराण में ही श्रीनारदजी का वाक्य महर्षि भारद्वाज के प्रति -

योगादिसाधने क्लेशं दुस्तरं सर्वथा मुने ।

अतस्सौलभ्यसन्मार्गं सद्गच्छेन्नाम संस्मरन् ॥ ८२ ॥

हे मुने ! योगादि अन्य साधन मडादुस्तर और दुर्गम हैं उनके अनुष्ठान में सर्वथा कष्ट एवं श्रमाधिक्य है, अतः विवेकी पुरुष को श्रीरामनाम का स्मरण करते दुःखे सलज सुलभ सन्मार्ग पर चलना चाहिए ।

अनायासेन सर्वस्वं दुर्लभं मुनिसत्तम ।

प्रभावाद्रामनामस्तु लभते उपमद्भुतम् ॥ ८३ ॥

हे मुनिसत्तम ! श्रीरामनाम के प्रभाव से बिना परिश्रम के ही दुर्लभ से दुर्लभ अपने सर्वस्व को साधक सलज में ही प्राप्त कर लेता है और श्रीरामनाम के प्रभाव से श्रीजानकीनाथ के परात्पर अद्भुत स्वरूप का साक्षात्कार हो जाता है ।

श्रीनारदीयपुराणे सूतवाक्यं शौनकं प्रति -

श्रीनारदीयपुराण में सूतजी का वाक्य शौनक के प्रति -

भयं भयानामपडारिणिस्थिते परात्परे नाम्नि प्रकाशसम्प्रदे ।

यस्मिन्स्मृते जन्मशतोद्भवान्यपि भयानि सर्वाण्यपयान्ति सर्वतः ॥ ८४ ॥

भयों के भय को भी दूर करने वाले, समस्त कल्याण प्रदान करने वाले परात्परस्वरूप श्रीरामनाम मडाराज हैं जिनके स्मरण मात्र से सैकड़ों जन्मों के सभी भय सब प्रकार से दूर हो जाते हैं अतः श्रीरामनाम के उपासक को चाहिए कि किसी से भी भय न करे और किसी से भी कुछ चाहे नहीं क्योंकि श्रीरामनाम सर्वत्र व्याप्त हैं नाम के बिना दूसरी आशा यम त्रास का कारण है ।

आयासः स्मरणे कोऽस्ति स्मृतो यच्छति शोभनम् ।

पापक्षयश्च भवति स्मरतां तदहर्निशम् ॥ ८५ ॥

श्रीरामनाम के स्मरण करने में कुछ श्रम भी नहीं है और स्मरण करने पर अनन्त कल्याण को प्राप्त करते हैं, जो दिन रात श्रीरामनाम का स्मरण करता है उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं ।

प्रातर्निशि तथा सन्ध्यामध्याह्नादिषु संस्मरन् ।

श्रीमद्रामं समाप्नोति सद्यः पापक्षयो नरः ॥ ८६ ॥

प्रातःकाल, रात्रि में, सन्ध्या के समय एवं मध्याह्न काल में जो श्रीरामनाम का सम्यक् स्मरण करता है, तडाल उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और वह श्रीरामजी को प्राप्त करता है ।

रामसंस्मरणार्थीघ्नं समस्तक्लेशसङ्घयः ।

मुक्तिं प्रयाति विप्रेन्द्र तस्य विघ्नो न बाधते ॥ ८७ ॥

हे विप्रश्रेष्ठ ! श्रीरामनाम के सम्यक् स्मरण करने से समस्त क्लेशों का सम्यक् नाश हो जाता है, उसको मुक्ति की प्राप्ति होती है उसे किसी भी प्रकार के विघ्न बाधा उपस्थित नहीं होते ।

तत्रैव श्रीनारदवाक्यं व्यासं प्रति -

श्रीनारदीयपुराण ही में नारदश्च का वाक्य व्यासश्च के प्रति -

सर्वेषां साधनानां य सन्दृष्टं वैभवं मया ।

परन्तु नाममाहात्म्यकलां नार्हति षोडशीम् ॥ ८८ ॥

समस्त साधनों के अर्थ एवं महत्व को मैंने सम्यक् प्रकार से टोप लिया है, परन्तु वे सब श्रीरामनाम के माहात्म्य की सोलहवीं कला के बराबर भी नहीं है । श्रीरामनाम सर्वोपरि है श्रीरामनाम की अनन्त कलाएँ हैं, उनमें एक कला के तुल्य समस्त साधन, व्रत, तीर्थ, नेम, तप, यज्ञ, ज्ञान, वैराग्य और योगादि का सामर्थ्य है ।

दोहा : राम रसायन पान करु परिहरु अपर भरोस ।

युगलानन्य विकार बन भीय न करु परितोस ॥

भवताऽपि परिज्ञातं सर्ववेदार्थसङ्ग्रहम् ।

नामः परं क्वचित्तत्त्वं दृष्टं सत्यं वदस्व वै ॥ ८९ ॥

आपने भी समस्त वेदार्थ सङ्ग्रहों का परिज्ञान प्राप्त किया है, श्रीरामनाम से श्रेष्ठ किसी भी तत्व को कहीं भी यदि आपने टोपा है तो सत्य सत्य कडिआ! तात्पर्य यह है कि कहीं भी श्रीरामनाम से श्रेष्ठ तत्व नहीं है

बहुधाऽपि मया पूर्वं कृतं यत्नं मडामुने ।

नैव प्राप्तं परानन्दसागरं जन्मकोटिभिः ॥ १०० ॥

हे मडामुने ! मैंने भी पहले अनेक प्रकार से प्रयत्न किया परन्तु परमानन्द सागर श्रीरामनाम के बिना करोड़ों जन्मों में भी कहीं भी परमानन्द की प्राप्ति नहीं हुई ।

यावच्छ्रीरामनामस्तु भावं वै परात्परम् ।

नाभ्यस्तं दृष्टये ब्रह्मन् तावन्नानार्थनिश्चयम् ॥ १०१ ॥

हे ब्रह्मन् ! जब तक श्रीरामनाम के परात्पर प्रभाव का अपने दृष्टय में अभ्यास नहीं किया तब तक अनेक साधनों के यत्न में पड़ा रहा ।

श्रीमद्रामस्य सन्नामि यस्य स्यान्निश्चला रतिः ।

स्वप्नेऽपि न भवेदन्यसाधने रुचिर्निष्कला ॥ १०२ ॥

श्रीमान् श्रीरामश्च के सन्नाम में जिस साधक की निश्चल रति हो जाती है उस साधक की अन्य साधनों में स्वप्न में भी निष्कल रुचि नहीं होती है । तात्पर्य यह है कि जिसका मन श्रीरामनाम में लग गया वह अन्य साधन में प्रवृत्त नहीं होता है ।

शिवपुराणे श्रीशङ्करवाक्यं नारदं प्रति-

शिवपुराण में श्रीशङ्करजी का वाक्य नारदजी के प्रति-

सीतया सखितं रामनाम जाप्यं प्रयत्नतः ।

छंदमेव परं प्रेमकारणं संशयं विना ॥ १०३ ॥

श्रीसीताजी के द्रिव्य नाम से संयुक्त श्रीरामनाम का जप प्रयत्नपूर्वक करना चाखिअे, श्रीसीतारामनाम का जप ही बिना संशय के प्रेम का कारण है ।

सकृदुच्यारणादेव मुक्तिमायाति निश्चितम् ।

न जानेऽहं शतादीनां क्वलं वेदैरगोचरम् ॥ १०४ ॥

यह निश्चित है कि अेक बार श्रीरामनाम के उच्यारण करने से ही मुक्ति की प्राप्ति हो सकती है तब सैकड़ों बार श्रीरामनाम के जप का क्या क्वल है? यह मैं नहीं जानता, यह वेदों का भी अविषय है ।

यन्नाम सततं ध्यात्वाऽविनाशित्वं परं मुने ।

प्राप्तं नाम्नैव सत्यं य सुगोप्यं कथितं मया ॥ १०५ ॥

हे मुने ! जिस श्रीरामनाम का निरन्तर ध्यान करके उसी नाम मछाराज की कृपा से मैंने अविनाशित्व को प्राप्त किया है, यह कथन सर्वथा सत्य अेवं सुगोप्य है । मैंने आपको उत्तम अधिकारी जानकर श्रीरामनाम के प्रताप का रक्षय प्रकट किया है ।

श्रीरामनाम सकलेश्वरमादिदेवं

धन्या जना भुवितले सततं स्मरन्ति ।

तेषां भवेत्परममुक्तिमयत्नतस्तथा

श्रीरामभक्तिरथला विमला प्रसाददा ॥ १०६ ॥

श्रीरामनाम सत्मी का, समस्त ईश्वरों का भी ईश्वर है, आदिदेव है, पृथिवी तल पर वे लोग धन्य हैं जो निरन्तर श्रीरामनाम का स्मरण करते हैं । उन साधकों को बिना श्रम के ही मुक्ति हो जाती है और श्रीरामजी की अविषय विमल अेवं परम प्रसन्नता प्रदान करने वाली भक्ति प्राप्त हो जाती है

रामनाम सदा सेव्यं जपःपुण्यं नारद ।

क्षारार्द्धं नामसंलीनं कालं कालातिदुग्धम् ॥ १०७ ॥

हे नारद जी ! श्रीरामनाम की जपःपुण्यसेवा सदा करनी चाखिअे । श्रीरामनाम से रचित जो समय व्यतीत होता है वह आधा क्षण भी मछाकाल से भी अधिक दुग्धदायी है तात्पर्य यह है कि श्रीरामनाम का विस्मरण ही नामानुरागियों के लिअे मौत तुल्य है ।

श्रीमद्भागवते शुक्रदेववाक्यं परीक्षितम्प्रति-

श्रीमद् भागवत में शुक्रदेव जी का वाक्य परीक्षितजी के प्रति-

आपन्नः संसृतिं धीरां यन्नाम विवशो गृणन् ।

ततः सद्यो विमुच्येत यद् बिभेति स्वयं भयम् ॥ १०८ ॥

मडाभयानक संसार दुःख से युक्त होने पर जिस श्रीरामनाम का विवश होकर उच्चारण करने पर भी श्रुत तत्काल ही उस क्लेश से मुक्त हो जाता है ज्योङ्गी श्रीरामनाम के भय से भय भी उरता है ।

कलिं सभाजयन्त्यार्या गुणज्ञाः सारभागिनः ।

यत्र सङ्कीर्त्तनेनैव सर्वस्वार्थोऽभिलष्यते ॥ १०९ ॥

जो गुणी, सारग्राही अर्थात् आर्यजन हैं वे लोग कलियुग की प्रशंसा करते हैं ज्योङ्गी कलियुग में श्रीरामनाम के सङ्कीर्त्तन से ही सभी स्वार्थ की सिद्धि हो जाती है ।

अज्ञानाद्यथा ज्ञानाद्दुत्तमश्लोकनाम यत् ।

सङ्कीर्त्तितमघं पुंसां दृढत्येधो यथाऽनलः ॥ ११० ॥

जानकर अथवा अनजान में चाहे जैसे भी उत्तम श्लोक भगवान् श्रीसीतारामजी के दिव्य नामों का सङ्कीर्त्तन मनुष्यों के पाप को उरसी प्रकार जला कर भस्म कर देता है जैसे अग्नि लकड़ों की जो जलाकर भस्म कर देती है ।

ब्रह्महा पितृहा गोघ्नो मातृहाऽऽचार्यहाधवान् ।

श्लाघः पुल्कसकोवाऽपि शुद्धेरन् यस्य कीर्त्तनात् ॥ १११ ॥

ब्रह्मघाती, पितृघाती, गोहिंसक, मातृघाती, गुरुघाती, पापी, कुत्ते का मांस खाने वाला यज्ञाल और पुल्कसादि भी जिस श्रीरामनाम के सङ्कीर्त्तन से पवित्र हो जाते हैं उस रामनाम का जप करो अन्य साधनों को छोड़कर ।

नातः परं कर्म निबन्धकृन्तनं मुमुक्षूणां तीर्थपदानुकीर्त्तनात् ।

न यत्पुनः कर्म सुसज्जते मनो रजस्तमोभ्यां कलिलं यदन्यथा ॥ ११२ ॥

मोक्षाभिलाषी लोगों के कर्मों के बन्धन को काटने वाला तीर्थ पाद श्रीसीतारामजी के श्रीरामनाम के सङ्कीर्त्तन के अतिरिक्त कोई साधन नहीं है । श्रीरामनाम के जप से जब मन निर्मल हो जाता है तो वह पुनः रजोगुण और तमोगुण से युक्त नहीं होता है और कर्म में आसक्त नहीं होता है । दूसरे साधनों से मन की निर्मलता स्थिर नहीं होती है कुछ समय तक शान्त रहेगा फिर रजोगुण और तमोगुण से युक्त हो जाता है ।

अयं व्रतः स्वप्रियनामकीर्त्या जातानुरागो द्रुतयित्त उच्यैः ।

उसत्यथो रोदिति रौति गायत्युन्मादवन्नृत्यति लोकबाह्यः ॥ ११३ ॥

इस प्रकार सङ्कल्पपूर्वक प्राणप्रिय श्रीरामनाम का निरन्तर जप करने से प्रेमलक्षणा भक्ति प्रकट होती है, तत्पश्चात् वह द्रवितयित्त साधक कभी-कभी जोर से हँसता है, कभी रोता है, कभी ठाँसे स्वर में गाता है, कभी उन्मादी की तरह नृत्य करता है उसकी सारी चेष्टाओं लोक व्यवहार से बाहर हो जाती है ।

यथागदं वीर्यतममुपयुक्तं यदृच्छया ।

अजानतोऽप्यात्मगुणं कुर्यान्मन्त्रोऽप्युदाहृतः ॥ ११४ ॥

जैसे सुधा विषादि शक्तिमान् औषध दैववश बिना जाने लक्षाएँ करने पर भी अपना प्रभाव अवश्य दिभाता है उसी प्रकार श्रीरामनाम बिना ज्ञान के भी जप करने पर संसार दुःख मिटा देता है ।

मार्कण्डेय पुराणे श्रीव्यासवाक्यं स्वशिष्यान् प्रति-

मार्कण्डेयपुराण में श्रीव्यासजी का वाक्य अपने शिष्यों के प्रति-
धर्मानशेषसंशुद्धा-सेवन्ते ये द्विजोत्तमाः ।

तेभ्योऽनन्तगुणं प्रोक्तं श्रेष्ठं श्रीनामकीर्तनम् ॥ ११५ ॥

जो श्रेष्ठ ब्राह्मण समस्त शुद्ध धर्मों के सेवन से जो फल प्राप्त करते हैं उनसे अनन्त गुणा अधिक पुण्य श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से प्राप्त होता है, अतः श्रीरामनाम सङ्कीर्तन सर्वश्रेष्ठ है ।

यस्थानुग्रहतो नित्यं परमानन्दसागरम् ।

रूपं श्रीरामयन्द्रस्य सुलभं भवति ध्रुवम् ॥ ११६ ॥

जिस श्रीरामनाम की कृपा से परमानन्द सागर श्रीसीतारामजी का स्वरूप साक्षात्कार निश्चित सुलभ हो जाता है और ओक रस लृप्त्य में बना रहता है ।

वेदानां सारसिद्धान्तं सर्वसौष्यैककारणम् ।

रामनाम परं ब्रह्म सर्वेषां प्रेमदायकम् ॥ ११७ ॥

समस्त वेदों का सार सिद्धान्तः समस्त सुषुप्तों का ऐकमात्र कारण, परब्रह्म स्वरूप और सभी को प्रेम प्रदान करने वाला श्रीरामनाम है ।

तस्मात्सर्वात्मना रामनाम माङ्गल्यकारकम् ।

भजध्वं सावधानेन त्यक्त्वा सर्वदुराग्रहान् ॥ १८ ॥

इसलिये हे शिष्यों ! तुम लोग मलामाङ्गल्य प्रदान करने वाले श्रीरामनाम को सभी दुराग्रहों को छोड़कर सावधान होकर सर्वात्मभाव से भजो । इसी में भलाई है श्रीरामनाम सम्बन्ध बिना जोव किसी रीति से भी कृतार्थ नहीं हो सकता है ।

नित्यं नैमित्तिकं सर्वं कृतं तेन महात्मना ।

येन ध्यातं परं प्राप्यं नाम निर्वाणदायकम् ॥ ११८ ॥

जिसने परम प्राप्य निर्वाणदायक श्रीरामनाम का चिन्तन कर लिया उस महात्मा ने नित्य, नैमित्तिक सभी प्रकार के कर्मों का अनुष्ठान कर लिया । उसके लिये कुछ भी करना शेष नहीं है ।

जिह्वा सुधामयी तस्य यस्य नामामृते रुचिः ।

कृतकृत्यस्स अथ स्यात् सर्वदोषैकदाहकः ॥ १२० ॥

जिस साधक की श्रीरामनामामृत जप में रुचि हो जाती है उसकी जिह्वा अमृतमयी हो जाती है और वल साधक कृतकृत्य हो जाता है उसके समस्त दोष जलकर भस्म हो जाते हैं ।

तत्रैव व्यासदेववाक्यं सूतं प्रति-

उसी मार्कण्डेयपुराण में व्यासजी का वाक्य सूतजी के प्रति;

रामनाम परं गुह्यं सर्ववेदान्तवन्दितम् ।

ये रसज्ञा महात्मानस्ते जानन्ति परेश्वरम् ॥ १२१ ॥

श्रीरामनाम परम गुह्य है समस्त वेदान्तों से पूज्य है जो मडात्मा श्रीरामनाम के रस को जानते हैं वे श्रीरामनाम के परेश्वर स्वरूप को जानते हैं ।

नामस्मरणनिष्ठानां निर्विकल्पैक्येतसाम् ।

किं दुर्लभं त्रिलोकेषु तेषां सत्यं वदाम्यहम् ॥ १२२ ॥

जिनकी श्रीरामनाम के स्मरण में अपार निष्ठा है, जो नाना प्रकार के सङ्कल्प विकल्पों से रहित हैं, जो अेकाग्रचित्त हैं, उन मडात्माओं के लिये त्रिलोकी में कुछ भी दुर्लभ नहीं है यह सत्य सत्य मैं कहता हूँ ।

अज्ञानप्रभवं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम् ।

रामनामप्रभावेण विनाशो जायते ध्रुवम् ॥ १२३ ॥

जडचेतनात्मक जो कुछ भी जगत् है वह सब अज्ञान से उत्पन्न हुआ है श्रीरामनाम का निरन्तर जप करने से अन्तःकरण शुद्ध हो जाता है उस समय उस मडात्मा को सर्वत्र परिपूर्ण परब्रह्म श्रीरामज्जु का दर्शन होने लगता है सृष्टिगत नानात्व नष्ट हो जाता है ।

भजस्व सततं नाम जिह्वया श्रद्धया सह ।

स्वल्पकेनैव कालेन मडामोदः प्रजायते ॥ १२४ ॥

धसलिये श्रद्धापूर्वक अपनी जिह्वा से निरन्तर श्रीरामनाम का भजन करो इससे थोड़े समय में ही मडामोद की प्राप्ति होगी ।

धन्यं कुलवरं तस्य यस्मिन् श्रीरामतत्परः ।

जायते सत्यसङ्कल्पः पुत्रः श्रीशैशवल्लभः ॥ १२५ ॥

जिस कुल में श्रीरामनाम जप परायण, सत्यसङ्कल्प और श्रीविष्णु भगवान् आदि के स्वामी श्रीसीतारामज्जु का प्रिय पुत्र उत्पन्न होता है । वह कुल धन्य एवं श्रेष्ठ है ।

गरुडपुराणे श्रीविष्णुवाक्यं वैनतेयं प्रति -

गरुडपुराणे में श्रीविष्णुज्जु का वाक्य गरुडज्जु के प्रति -

श्रीरामराम रामेति ये वदन्त्यपि पापिनः ।

पापकोटिसहस्रेभ्यस्तेषां सन्तराणं ध्रुवम् ॥ १२६ ॥

जो पापी भी श्रीराम, राम राम ऐसा उच्चारण करते हैं उन पापियों का भी करोड़ों पापों से उद्धार निश्चित है तात्पर्य है कि अनन्त जन्मों के अनन्त पापों से मनुष्य का उद्धार श्रीरामनाम मडाराज की कृपा से हो सकता है लेकिन कुछ दिन तक निरन्तर सब आशा त्यागकर श्रीरामनाम का जप किया जाय तो ।

कलौ सङ्कीर्तनादेव सर्वपापं व्यपोहति ।

तस्माच्छ्रीरामनामस्तु कार्यं सङ्कीर्तनं वरम् ॥ १२७ ॥

कलियुग में श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से ही समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं इसलिये श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन ही सर्वश्रेष्ठ साधन है श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन ही करना चाहिये ।

अग्निपुराणे श्रीमहादेववाक्यं दुर्वाससं प्रति -

अग्निपुराणे में श्रीमहादेवञ्च का वाक्य दुर्वासा के प्रति -

न भयं यमदूतानां न भयं रौरवादिभ्यम् ।

न भयं प्रेतराजस्य श्रीमन्नामानुकीर्तनात् ॥ १२८ ॥

श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से यमदूतों का, रौरवादि नरकों का और यमराज का भय नहीं रहता है ।

यथ्यापराह्णे पूर्वाह्णे मध्याह्णे च तथा निशि ।

कायेन मनसा वाया कृतं पापं दुरात्मना ॥ १२९ ॥

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं च यत् ।

रामनामजपाच्छीघ्रं विनष्टं भवति ध्रुवम् ॥ १३० ॥

दुरात्मा पापी के द्वारा पूर्वाह्ण, मध्याह्ण और रात्रि में शरीर, मन और वाणी से जो पाप किया जाता है वह सम्पूर्ण

पाप निश्चित ही परम ब्रह्म परम तेजोमय और परमपवित्र स्वरूप श्रीरामनाम के जप से विनष्ट हो जाता है ।

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः स्त्रीशूद्राश्च तथान्त्यजाः ।

यत्र कुत्रानुकुवर्तुं रामनामानुकीर्तनम् ॥ १३१ ॥

इसलिखे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, स्त्री शूद्र तथा अन्त्यजों को शुचि अथवा अशुचि किसी भी अवस्था

में सर्वत्र श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करना चाखिये ।

तत्रैव प्रह्लादवाक्यं बालकान् प्रति अनि पुराणे -

उसी अग्निपुराणे में प्रह्लादञ्च का वाक्य बालकों के प्रति -

यत्प्रभावाद्दण्डं साक्षात्तीर्णो घोरभयार्णवम् ।

अनायासेन बाल्येऽपि तस्माच्छ्रीनामकीर्तनम् ॥ १३२ ॥

हे दैत्य बालकों ! जिस श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन के प्रभाव से बिना परिश्रम के ही बाल्यावस्था में ही

मैंने अपने पिताञ्च के क्रोधरूपी अत्यन्त भयावह समुद्र को पार कर लिया है, अतः हम सभी को श्रीरामनाम

का सङ्कीर्तन करना चाखिये ।

कर्त्तव्यं सावधानेन त्यक्त्वा सर्वदुराग्रहम् ।

साधनान्यं विहायाशु बुद्ध्या वैरश्यमात्मनि ॥ १३३ ॥

अतः समस्त दुराग्रह का त्याग करके अथवा अन्य सभी साधनों को रस शून्य जानकर सावधान छोड़कर

श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करना चाखिये ।

यद्बुद्ध्यन्वयस्वपंस्तिष्ठन् गच्छन्वै जाग्रति स्थितौ ।

कृतवान्यापमधाडं कायेन मनसा गिरा ॥ १३४ ॥

यत्स्वल्पमपि यत्स्थूलं कुयोनिनरकावहम् ।

तथातु प्रशमं सर्वं रामनामानुकीर्तनात् ॥ १३५ ॥

आज मैंने शरीर, मन और वाणी से भोजन करते समय, बैठते-उठते, चलते-जागते, सोते अथवा सकल

व्यवहार करते समय जो पाप किया है जो थोड़ा अथवा बहुत हो, एवं शूकरादि योनि एवं मलाघोर नरक प्रदान

करने वाले जो पाप हैं वे समस्त पाप श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से नष्ट हो जावें ।

क्रियाकलापलीनो वा संयुतो वा विशेषतः ।

रामनामानिशं कुर्वन् कीर्तनं मुख्यते भयात् ॥ १३६ ॥

वेदोक्त समस्त क्रियाकलापों से जो शून्य हो अथवा युक्त हो वह निरन्तर श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से

जन्ममरण रूप भय से मुक्त हो जाता है ।

यद्विच्छेत्परमां प्रीतिं परमानन्ददायिनीम् ।

तदा श्रीरामभद्रस्य कार्यं नामानुकीर्तनम् ॥ १३७ ॥

यदि श्रीसीतारामजी की परमानन्ददायिनी परात्पर प्रीति को प्राप्त करना चाहते हो तो सभी आशाओं

का त्याग करके श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करो पराप्रीति का उदय हो जायेगा ।

ब्रह्म वैवर्त्तपुराणे शिववाक्यं नारदं प्रति -

ब्रह्मवैवर्त्तपुराण में श्रीशिवजी का वाक्य श्रीनारदजी के प्रति -

उन-ब्रह्मणामत्यन्तं कामतो वा सुरां पिबन् ।

रामनामेत्यहोरात्रं सङ्कीर्त्त्य शुचितामियात् ॥ १३८ ॥

जो अत्यन्त पापी हजारों ब्राह्मणों की उत्या करने वाला है अथवा स्वच्छन्द मदिरापान करने वाला है, वह नीच भी एक दिन रात निरन्तर श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से परम पवित्र हो जाता है ।

अपि विश्वासघाती य तथा ब्राह्मण निन्दकः ।

कीर्त्त्येद् रामनामानि न पापैः परिभूयते ॥ १३९ ॥

किंसी की सहायता का वचन देकर सामर्थ्य होने पर भी न करना विश्वासघात है यह मलापाप एवं ब्राह्मण की निन्दा करना भी मलापाप है उत्यादि अनेक पापों को करने वाला भी यदि श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करे तो शीघ्र ही समस्त पापों से रहित हो जाता है ।

तत्रैव श्रीनारदवाक्यमम्बरीषं प्रति -

उसी ब्रह्मवैवर्त्तपुराण में श्रीनारदजी का वाक्य अम्बरीष के प्रति -

प्रज्ज्ञेस्तिष्ठन्स्वपन्नस्वसन्वाक्यप्रपूण्डि ।

रामनामस्तु सङ्कीर्त्त्यं भक्तियुक्तं परंप्रजेत् ॥ १४० ॥

जो खलते, बैठते, बोलते, पाते, पीते, सोते एवं वाक्य के अन्त में स्नेहपूर्वक श्रीरामनाम का उच्चारण करता है वह श्रीसीतारामजी के परम धाम को प्राप्त करता है ।

कदाचिन्नाम सङ्कीर्त्त्यं भक्त्या वा भक्तिवर्जितः ।

एतत् सर्वं पापानि युगान्ताग्निदिवोत्थितः ॥ १४१ ॥

जो श्रीरामनाम का उच्चारण किसी भी समय भक्तिपूर्वक अथवा भक्ति से रहित ही करता है उसको जन्म जन्मान्तर के समस्त पाप उसी तरह नष्ट हो जाते हैं जैसे महाप्रलय की अग्नि से समस्त सृष्टि का संसार हो जाता है ।

जन्मान्तर सलस्रैस्तु कोटि जन्मान्तरेषु यत् ।

रामनाम प्रभावेण पापं निर्याति तत्क्षणात् ॥ १४२ ॥

असङ्ख्य जन्मों में असङ्ख्य शरीरों के द्वारा डिये जाने वाले जो असङ्ख्य पाप हैं वे सारे पाप श्रीरामनाम के प्रभाव से क्षणभर में भस्म हो जाते हैं ।

अभक्ष्यभक्षाणात्पापमगम्यागमनाश्व यत् ।

नश्यते नात्र सन्देहो रामनाम जपान्नृप ॥ १४३ ॥

हे राजन् ! अभक्ष्य के भक्षण करने से एवं अगम्या स्त्री के साथ गमन करने का जो पाप लगता है वह पाप श्रीरामनाम के जप से नष्ट हो जाता है इसमें सन्देह नहीं है ।

अम्बरीष महाभाग शर्षुमद्भवयनं वरम् ।

सर्वोपद्रवनाशाय कुरु श्रीरामकीर्तनम् ॥ १४४ ॥

हे महाभाग अम्बरीष ! मेरे श्रेष्ठ वयन को सुनो, सभी प्रकार के उपद्रवों के नाश के लिये श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करो ।

तावत्तिष्ठति देहेस्मिन्काल कल्मष सम्भवम् ।

श्रीनामकीर्तनं यावत्कुरुते मानवो नहि ॥ १४५ ॥

मनुष्य के शरीर में काल जन्म कल्मष तभी तक निवास करते हैं जब तक वह श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन नहीं करता है श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं ।

यस्यस्मृत्या य नामोक्त्या तपो यज्ञाडियादेषु ।

न्यूनं सम्पूर्णातां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ १४६ ॥

जिनके स्मरण करने से और जिनके नाम का उच्चारण करने से तप, यज्ञ, ऋषिदि में होने वाली न्यूनता तत्काल सम्पूर्णाता को प्राप्त हो जाती है उन अच्युत भगवान् की मैं वन्दना करता हूँ ।

आधयो व्याधयो यस्य स्मरणान्नामकीर्तनात् ।

शीघ्रं वैनाशमायान्ति तं वन्दे पुरुषोत्तमम् ॥ १४७ ॥

जिनके स्मरण करने से और जिनके नाम का सङ्कीर्तन करने से सभी प्रकार की मानसिक व्यथा एवं शारीरिक व्यथाओं शीघ्र ही नष्ट हो जाती हैं उन पुरुषोत्तम भगवान् की मैं वन्दना करता हूँ ।

श्रीरामेत्युक्तमात्रेण लेलया कुलवर्द्धन ।

पापौघं विलयं याति दत्तमश्रोत्रिये यथा ॥ १४८ ॥

हे कुलवर्द्धन ! अनादरपूर्वक श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से भी पापों का समूह उसी प्रकार नष्ट हो जाता है जिस प्रकार अश्रोत्रिय को दिया गया दान नष्ट हो जाता है ।

गवामयुतकोटीनां कन्यानामयुतायुतैः ।

तीर्थकोटि सडस्राणां कृतं श्रीनामकीर्तनम् ॥ १४८ ॥

अनन्त कोटि गोदान, अनन्तकोटि कन्यादान और अनन्तकोटि तीर्थों में स्नान करने का जो पुण्य प्राप्त होता है वह एक बार श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से सडज में प्राप्त हो जाता है ।

रामनामेति सद्भक्त्या येन गीतं मडात्मना ।

तेनैव य कृतं सर्वं कृत्यं वै संशयं विना ॥ १५० ॥

जिस मडात्मा ने श्रद्धाभक्तिपूर्वक श्रीरामनाम का गान कर लिया, उसने ही समस्त कर्तव्य कर्मों का अनुष्ठान कर लिया, इसमें संशय नहीं है ।

वसन्ति यानि तीर्थानि पावनानि मडीतले ।

तानि सर्वाणि नाभ्रस्तुकलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ १५१ ॥

पृथ्वी पर पवित्र करने वाले जितने तीर्थ विद्यमान हैं वे सभी तीर्थ श्रीरामनाम की सोलहवीं कला के तुल्य भी नहीं हैं, अतः श्रीरामनाम सर्वश्रेष्ठ अर्थात् पावनों को भी पावन बनाने वाला है ।

रामनाम समं यान्यत्साधनं प्रवदन्ति ये ।

ते याड्डालसमास्सर्वे सदा रौरव वासिनः ॥ १५२ ॥

जो लोग दूसरे साधनों को श्रीरामनाम के समकक्ष कडते अर्थात् समजते हैं वे लोग याड्डाल के तुल्य हैं और सदा रौरव नरक में निवास करते हैं ।

रामनामाशयं दिव्यं ये जानन्ति समादरात् ।

ते कृतार्थाः कलौ राजन्सत्यंसत्यं वदाम्यडम् ॥ १५३ ॥

जो लोग श्रीरामनाम के दिव्य आशय को आदरपूर्वक जानते अर्थात् स्वीकार करते हैं, हे राजन् ! कलियुग में वे ही लोग कृतार्थ हैं यड मैं सत्य-सत्य कडता हूँ ।

दृष्टं नामात्मकं विश्वं मया विज्ञानयक्षुषा ।

वाज्मनोगोचरातीतं निर्विकल्पं प्रमोददम् ॥ १५४ ॥

मैंने विज्ञानरूपी नेत्र से देखा है कि समस्त विश्व श्रीरामनामात्मक है श्रीरामनाम वाणी, मनबुद्धि आदि इन्द्रियों से सर्वथा परे हैं सभी कल्पनाओं से परे हैं और मडाप्रमोद को प्रदान करने वाला है ।

भ्रड्मपुराणो श्रीभ्रड्मवाक्यं नारदं प्रति -

भ्रड्मपुराण में श्रीभ्रड्माज्जु का वाक्य नारदज्जु के प्रति -

इदमेव हि माङ्गल्यमिदमेव धनागमः ।

ज्जुवितस्य इलज्जैव रामनामानुकीर्तनम् ॥ १५५ ॥

શ્રીરામનામ કા સક્રીર્તન ડી પરમ મડ્ગલસ્વરૂપ હૈ સર્વશ્રેષ્ઠ ઘન કા આગમ હૈ ઔર માનવ જીવન કા પરમ ફલ હૈ ।

પ્રમાદાદપિ સંસ્મૃષ્ઠો યથાઠનલકણો દહેત્ ।

તથૌષ્ઠપુટ સંસ્મૃષ્ઠં રામનામદહેદધમ્ ॥ ૧૫૬ ॥

જૈસે પ્રમાદ સે ભી સ્પર્શ કરને પર અઝિકણ સ્પર્શ કરને વાલે કો જલાતા હૈ વૈસે ડી શ્રીરામનામ ઓષ્ઠપુટ ઔર રસના સે ઉચ્ચરિત હોને પર પાપ કો દગ્ધ કર દેતા હૈ ।

હત્યાડયુતં પાનસહસ્રમુગ્રં ગુર્વડ્ગનાકોટિ નિષેવનગ્ચ ।

સ્તેનાન્યસડ્ધ્યાનિ ચ પાતકાનિ શ્રીરામનામ્ના નિહતાનિ સઘઃ ॥ ૧૫૭ ॥

દસ હજાર હત્યા, હજારોં પ્રકાર સે ભયકુર મધપાન, ગુરુપત્ની કે સાથ કરોડોં બાર ગમન ઔર અસડ્ધ્ય બાર સુવર્ણાદિ કી ચોરી કરને સે હોને વાલે જો પાપ હૈં વે સબ શ્રીરામનામ કે સક્રીર્તન સે તત્કાલ નષ્ટ હો જાતે હૈં ।

નિર્વિકારં નિરાલમ્બં નિર્વેરગ્ચ નિરગ્જનમ્ ।

ભજ શ્રીરામનામેદં સર્વેશ્વર પ્રકાશકમ્ ॥ ૧૫૮ ॥

હે નારદ ! શ્રીરામનામ જન્માદિ વિકારોં સે રહિત હૈં, શ્રીરામનામમહારાજ જીવ કો ફુતાર્થ કરને કે લિએ કિસી અન્ય સાધન કા અવલમ્બ નહીં લેતે હૈં, શ્રીરામનામ કા કિસી સે વૈર નહીં હૈ, શ્રીરામનામ માયાદિ અગ્જનોં

સે રહિત હૈં, શ્રીરામનામ સર્વેશ્વર એવં શ્રીસીતારામજી કે પરાત્પરેશ્વરસ્વરૂપ કો સાક્ષાત્ નામાનુરાગી કે ભીતર

બાહર પ્રકાશિત કર દેતે હૈં અતઃ તુમ ઇસ શ્રીરામનામ કા ભજન કરો ।

શ્રુત્વા શ્રીરામનામ્નસ્તુ પ્રભાવં વૈ પરાત્પરમ્ ।

સત્યં યો નાભિજાનાતિ દ્રષ્ટવ્યં તન્મુખં નહિ ॥ ૧૫૯ ॥

શ્રીરામનામ કે પરાત્પર પ્રભાવ કો સુનકર ભી જો ઉસે સત્ય નહીં સમજતા હૈ ઉસકે મુખ કો નહીં દેખના ચાહિએ ।

વિજ્ઞાનં પરમં ગુહ્યમિદમેવ મહામુને ।

બાહ્યં વાડભ્યન્તરં નામ સતતં ચિન્તનં વરમ્ ॥ ૧૬૦ ॥

હે મહામુને ! નારદજી ! સર્વોત્કૃષ્ટ વિજ્ઞાન એવં પરમ ગોપનીય યહી હૈ કિ ભીતર બાહર સે નિરન્તર શ્રીરામનામ કા જપ કરના યહી શ્રેષ્ઠ ચિન્તન હૈ ।

કૂર્મ પુરાણે શ્રીશકુરવાક્યં શિવાં પ્રતિ -

કૂર્મપુરાણ મેં શ્રીશકુરજી કા વાક્ય પાર્વતીજી કે પ્રતિ -

ગોપ્યાદ્રોષ્યતમં ભદ્રે સર્વસ્વં જીવનં મમ ।

શ્રીરામનામ સર્વેશમદ્ભુતં ભુક્તિ મુક્તિદમ્ ॥ ૧૬૧ ॥

હે કલ્યાણિ ! ગોપ્ય સે ભી અત્યન્ત ગોપનીય મેરે જીવન સર્વસ્વ શ્રીરામનામ હૈં, શ્રીરામનામ સર્વેશ્વર એવં આશ્ચર્યમય ભોગ એવં મુક્તિ પ્રદાન કરને વાલે હૈં ।

जपस्य सततं रामनाम सर्वेश्वर प्रियम् ।

नियामकानां सर्वेषां कारणां प्रेरकं परम् ॥ १६२ ॥

हे प्रिये ! तुम निरन्तर श्रीरामनाम का जप करो ज्योड्डि श्रीरामनाम सभी ईश्वरों को भी प्रिय है समस्त नियामकों का परम कारण एवं सर्वश्रेष्ठ प्रेरक है ।

रामनामैव सद्भिद्यै सत्यं वय्मि वरानने ।

समाहितेन मनसा कीर्तनीयस्सदा बुधैः ॥ १६३ ॥

हे सुमुग्धि ! हे ब्रह्म विद्यास्वर्गपिणि पार्वति ! मैं सत्य-सत्य कडता हूँ कि विद्वानों को सदा सावधानचित्त होकर श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करना चाडिअे ।

रामनामात्मकं तत्त्वं सतां ज्वनमुत्तमम् ।

निन्दितस्सर्वलोकेषु रामनाम बडिर्मुग्धः ॥ १६४ ॥

श्रीरामनाम सभी सन्तों का ज्वन है जो श्रीराम से बडिर्मुग्ध है वड सभी लोकों में निन्दित है ।

लौडिकी वैदिकी या या डिया सर्वार्थसाधिका ।

ताभ्य कोट्यर्बुदगुणां श्रेष्ठ श्रीनामकीर्तनम् ॥ १६५ ॥

सभी अर्थों को सिध्द करने वाली लौडिक या वैदिक जितनी डियाअँ है उन समस्त डियाओं से कई श्रेष्ठ श्रीरामनाम सङ्कीर्तन है ।

धिक्कृतं तमडं मन्ये सततं प्राणवल्लभे ।

यज्जिह्वाग्रे न श्रीरामनाम संराजते सदा ॥ १६६ ॥

हे प्राण वल्लभे ! मैं उसे सतत धिक्कार के योग्य मानता हूँ जिसकी जिह्वा पर सदा श्रीरामनाम विराजमान न हो अर्थात् जो सदा सर्वदा श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन नहीं करता है उसे धिक्कार है ।

वामनपुराणे श्रीवामन वाड्यं मुनीन्प्रति -

वामनपुराणे में श्रीवामनजो का वाड्य मुनियों के प्रति -

अधौघा वज्रपाताघा ड्यन्ये दुर्नीत सम्भवः ।

स्मरणाद्रामभद्रस्य सधो याति क्षयं क्षणात् ॥ १६७ ॥

पापों का समूल, वज्रपाताडि दौष तथा दूसरे दृष्टनीतियों से समुत्पन्न दुर्बिधाडि जितने दौष हैं वे सब श्रीरामनाम के स्मरण से तत्काल नष्ट हो जाते हैं ।

शृण्वन्ति ये भक्तिपरा मनुष्याः सङ्कीर्त्यमानं भगवन्तमुग्रम् ।

ते मुक्तपापाः सुग्धिनो भवन्ति यथाऽमृतप्राशनतर्पितास्तु ॥ १६८ ॥

भक्तिपरायण जो मनुष्य भगवान् के श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन एवं भगवान् के गुण कीर्तन को सुनते है वे समस्त पापों से मुक्त हो जाते हैं और उसी प्रकार सुग्धी हो जाते हैं जिस प्रकार अमृतपान करने से प्राण तृप्त हो जाते हैं ।

परदाररतो वाऽपि परापकृतकारकः ।

स शुद्धो मुक्तिमायाति रामनामानुकीर्तनात् ॥ १६८ ॥

जो परस्त्री भोगरत है अथवा जो दूसरे का अपकार करता है वह पापी भी श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन के प्रभाव से शुद्ध होकर मुक्ति को प्राप्त करता है ।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।

यस्मरेत्युऽरीकाक्षं स बाढ्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ १७० ॥

अपवित्र हो या पवित्र हो अथवा किसी भी अवस्था में हो जो श्रीराम राज्जव लोचन के नाम का स्मरण करता है वह भीतर बाहर सभी प्रकार से पवित्र हो जाता है ।

मत्स्य पुराणे -

मत्स्यपुराणे में -

सर्वेषां राममन्त्राणां श्रेष्ठं श्रीतारकं परम् ।

षडक्षरमनुसाक्षात्तथा युग्माक्षरं परम् ॥ १७१ ॥

समस्त श्रीराममन्त्रों में तारक मन्त्र (बीजयुक्त षडक्षरमन्त्र) श्रेष्ठ है अथवा श्रीरामनाम श्रेष्ठ है दोनों में भेद नहीं है ।

येन ध्यातं श्रुतं गीतं रामनामेष्टं मडत् ।

कृतं तेनैव सत्कृत्यं वेदोदितमप्यङ्गितम् ॥ १७२ ॥

समस्त अभिलषित वस्तुओं को प्रदान करने वाले श्रीरामनाम का जिसने ध्यान श्रवण और गायन किया, उसने वेद में कहे गये सत्कृत्यों का अपवाद अनुष्ठान कर लिया ।

ध्येयं ज्ञेयं परं पेयं रामनामाक्षरं मुने ।

सर्वसिद्धान्तसारं सौम्यं सौभाग्य कारणम् ॥ १७३ ॥

हे मुनिराज ! सभी सिद्धान्तों का सार, सुख और सौभाग्य का परम कारण अविनाशी श्रीरामनाम ही चिन्तन के योग्य, जानने योग्य अथवा अत्यन्त पेय हैं । अतः निरन्तर श्रीरामनाम का ही पान करना चाहिये ।

नामैव परमं ज्ञानं ध्यानं योगं तथा रतिम् ।

विज्ञानं परमं गुह्यं रामनामैव केवलम् ॥ १७४ ॥

श्रीरामनाम ही सर्वोत्कृष्ट ज्ञान, ध्यान, योग तथा प्रेम है केवल श्रीरामनाम ही विज्ञान अथवा अत्यन्त गुह्य है ।

नाम स्मरणं निष्ठानां नामस्मृत्या मडाघवान् ।

मुच्यते सर्वपापेभ्यो वाञ्छितार्थं य विन्दति ॥ १७५ ॥

श्रीरामनाम के स्मरण कीर्तन में जिनकी अपार निष्ठा है अथवा नामनिष्ठ भक्तों के नाम का स्मरण करने से मडापापी भी समस्त पापों से मुक्त होकर मनचाही वस्तु को प्राप्त कर लेता है ।

वाराहपुराणे श्रीशिववाक्यं शिवाम्प्रति -

वाराहपुराण में श्रीशिवञ्जु का वाक्य पार्वतीञ्जु के प्रति -

द्वैवाख्यूरश्रावकेन निहतो भ्लेच्छो जराजर्जरो-

डारामेण उतोऽस्मि भूमिपतितो जल्वंस्तनुं त्यक्तवान् ।

तीर्णोऽगोष्पदवद्भवार्णवमडो नाम्नः प्रभावादडोकिं

खित्रं यद्वि रामनाम रसिकास्ते यान्ति रामास्पदम् ॥ १७६ ॥

द्वैवयोग से अेक भ्लेच्छ (यवन) जो कि डुढःापे से जर्जर था, उसे अेक शूकर के बख्ये ने मारा, “डाराम (डाराम -शूकर) ने मुझे मारा अेवं ड ! राम ने मुझे मारा” अैसा कडता डुआ वड भूमि पर गिर पडःा और शरीर डे छोडः दिया । वड गौ के डुर के समान भवसागर को तर गया । अडो ! श्रीरामनाम का प्रभाव आश्चर्यमय डे । यद्वि श्रीरामनाम के प्रेमी श्रीरामञ्जु के धाम को जाते डैं तो ँसमें डैन आश्चर्य डे ।

ध्येयं नित्यमनन्य प्रेमरसिकैः पेयं तथा सादरं-

ज्ञेयं ज्ञानरतात्मभिश्च सुजनैः सम्यङ् क्रियाशान्तये ।

श्रीमद्रामपरेण नाम सुभगं सर्वाधिपं शर्मदं-

सर्वेषां सुदृढं सुरासुरनुतं ख्यानन्डकन्डं परम् ॥ १७७ ॥

अनन्यनामानुरागियों के ड्वारा नित्य ध्यान के योग्य, तथा परम प्रेमी रसिकों के ड्वारा सादर पान करने योग्य, क्रिया की सम्यङ् शान्ति के लिअे ज्ञान, सुजनों के ड्वारा जानने योग्य श्रीरामनाम डी डैं । श्रीरामनाम सुन्दर सडके स्वामी, कल्याण प्रडान करने वाला, सडी के अकारण डितैषी, सुर और असुर सडी से संस्तुत अेवं परम आनन्डकन्ड डैं अैसा विचार करके सड सवर्ड श्रीरामनाम का जप करना थालिअे ।

निरपेक्षं सड स्वख्यं सर्वसम्पत्ति साधकम् ।

भजध्वं रामनामेदं मडामाङ्गलिकं परम् ॥ १७८ ॥

श्रीरामनाम मडाराजपत्र, पुष्प, डल, शुडुता आद्वि अपेक्षाओं से सर्वथा रडित अर्थात् निरपेक्ष डैं । सड सवर्ड स्वख्य निर्मल डैं, सडी प्रकार की सम्पत्तियों को प्रडान करने वाले डैं और अतिशय मडामाङ्गलरूप डैं अतः आप सडी को ँस श्रीरामनाम का भजन करना थालिअे ।

करुणावारिधिं नाम ख्यपराधनिवारकम् ।

तस्मिन्प्रीतिर्न येषां वै ते मडपापिनो नराः ॥ १७९ ॥

श्रीरामनाम मडकरुणा के सागर अेवं समस्त अपराधों को डूर करने वाले डैं अैसे श्रीरामनाम में जिन लोगों की सख्यी प्रीति नडी डे । वे लोग निश्चय डी मडपापी डैं ।

लिङ्गपुराणे सूतवाक्यं शौनकं प्रति -

लिङ्गपुराण में सूतञ्जु का वाक्य शौनकञ्जु के प्रति -

रामनामानिशं भक्त्या प्रजसव्यं प्रयत्नतः ।

नातः परतरोपायो दृश्यते श्रूयते मुने ॥ १८० ॥

हे मुनिराज ! श्रीरामनाम का भक्तिपूर्वक एवं संयमपूर्वक दिनरात जप करना चाछिअे । आत्मकल्याण के लिअे श्रीरामनाम से बढःकर कोछ दूसरा उपाय न छिभायी देता छै और न सुना जाता छै ।

तत्रैव श्रीमछादेव वाक्यं पार्वतीं प्रति -

लिङ्गपुराण में छी श्रीशङ्करज्जु का वाक्य श्रीपार्वतीज्जु के प्रति -

वृथाऽऽलापं वदन्नीडा येषां नायाति सत्वरम् ।

छित्वा श्रीरामनामेदं ते नराः पशवः स्मृताः ॥ १८१ ॥

श्रीरामनाम को छोऽऽकर व्यर्थ वार्तालाप करने में जिनको शीघ्र छी लज्जा नछी आती छै वे मनुष्य पशु कछे जाते छै ।

न जाने छिं इलं ब्रह्मन् जायते नामकीर्तनात् ।

जनाति तच्छिवः साक्षाद्रामानुजदत्तो मुने ॥ १८२ ॥

हे ब्रह्मन् ! श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से कौन सा इल प्राप्त छोता छै छे मुनि श्रेष्ठ ! उसको श्रीरामज्जु की कृपा से साक्षात् शिवज्जु छी जानते छै ।

अछो नामामृतालापी जनः सर्वार्थसाधकः ।

धन्याद्ध्यतमो नित्यं सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ १८३ ॥

आश्चर्य छै श्रीरामनामरूपी अमृत का जप करने वाले (पान करने वाले) साधक सभी प्रकार के पुरुषार्थों को सिद्ध कर लेते छै वे सभी धन्यों में नित्य अतिशय धन्य छै यछ भात मैं सत्य-सत्य कछ रछा छूँ ।

रामनाम्ना जगत्सर्वं भासितं सर्वदा द्विज ।

प्रभावं परतमं तस्य वचनागोचरं मुने ॥ १८४ ॥

हे ब्राह्मण श्रेष्ठ ! यछ सम्पूर्णा जगत् श्रीरामनाम से छी सदा सर्वदा प्रकाशित छै । छे मुने! उस श्रीरामनाम का सर्वोत्कृष्ट प्रभाव वाणी से सर्वथा परे छै ।

अलं योगादिसङ्कलेशैर्ज्ञानविज्ञानसाधनैः ।

वर्तमाने दयासिन्धौ रामनामेश्वरे मुने ॥ १८५ ॥

मुने ! दयासिन्धु सर्वेश्वर श्रीरामनाम के विद्यमान छोने पर योगादि में कलेश छोने से क्या लाभ? एवं ज्ञानविज्ञान के साधक विभिन्न साधनों से क्या प्रयोजन? अर्थात् योगादि एवं ज्ञान विज्ञान के विभिन्न साधनों का त्याग करके अेकमात्र परमदयालु श्रीरामनाम का आश्रय लो । उसी से सभी प्रकार के अभीष्टों की सिद्धि छो जायेगी ।

रामात्परतरं नास्ति सर्वेश्वरमनामयम् ।

तस्मात्तन्नाम संलापे यत्नं कुरु मम प्रिये ॥ १८६ ॥

हे मेरी प्राणवल्लभे पार्वति ! श्रीरामनाम से परे सर्वेश्वर, निरामय, अशोक कोछ दूसरा तत्व नछी छै छसलिअे श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन करने का प्रयास करो ।

याज्ञावादिकजन्तूनामधिकारोऽस्ति वल्लभे ।

श्रीरामनाम मन्त्रेऽस्मिन् सत्यं सत्यं सदा शिवे ॥ १८७ ॥

डे प्राणवल्लभे पार्वति ! एस श्रीरामनाम मडामन्त्रे के जप में ब्रह्मा से लेकर याङ्गडाल पर्यन्त सभी ज़ुवों का अधिकार है यड बात मैं सदा सत्य-सत्य कडता हूँ ।

यत्प्रभाववलकंशतः शिवे शिवपदं सुभगं यदवामम् ।

तद्रतिं विरडिता डिल ज़ुवा यान्ति कष्टमतुलं यम सादनम् ॥ १८८ ॥

डे पार्वति ! मैंने जिस श्रीरामनाम के लवांश मात्र प्रभाव से सुन्दर अमर शिवपद प्राप्त किया है । ऐसे श्रीरामनाम में जिनकी प्रीति नहीं है वे लोग अतुलकष्टप्रद यमसदन नरकादि में अवश्य जायेङ्गे

साकारादगुणाख्यापि रामनाम परं प्रिये ।

गोप्याद्गोप्यतमं वस्तु कृपया सम्प्रकाशितम् ॥ १८९ ॥

डे प्रिये पार्वति ! साकार-निराकार सगुण-निर्गुण दोनों से सर्वोत्कृष्ट वस्तु श्रीरामनाम है यड गोपनीय से भी अत्यन्त गोपनीय है यड मैंने कृपा करके तुम्हारे समक्ष प्रकाशित किया है ।

स्मर्तव्यं तत्सदा रामनाम निर्वाणदायकम् ।

क्षणाद्धूमपि विस्मृत्य याति दुःखालयं जनः ॥ १९० ॥

एसलिये भोक्षप्रदायक श्रीरामनाम का सदा सर्वदा स्मरण करना याडिये आधे क्षण के लिये भी श्रीरामनाम का विस्मरण करने वाला मनुष्य दुःख सागर में डूब जाता है अतः श्रीरामनाम का सतत स्मरण करना याडिये ।

विष्णुपुराणे व्यासवाक्यं -

विष्णुपुराण में श्रीव्यासजि का वाक्य -

विष्णोरेडैक नामापि सर्ववेदाधिकं मतम् ।

तादृभ्राम सडस्रेण रामनाम सतां मतम् ॥ १९१ ॥

भगवान् विष्णु का प्रत्येक नाम समस्त वेदों से श्रेष्ठ है और भगवान् विष्णु के सडस्रों नामों से भी अत्यधिक पुण्य एवं डूलप्रद श्रीरामनाम है यड सन्तों को अभिमत् है ।

श्रीरामेति परभ्राम रामस्यैव सनातनम् ।

सडस्रनाम सादृश्यं विष्णोर्नारायणस्य य ॥ १९२ ॥

भगवान् श्रीराम का सनातन एवं सर्वोत्कृष्ट नाम श्रीरामनाम है भगवान् विष्णु और नारायण के सडस्र नामों के तुल्य श्रीरामनाम है ।

रामनाम्नः परं डिण्चित्तत्वं वेदे स्मृतिष्वपि ।

संडितासु पुराणेषु नैव तन्त्रेषु विधते ॥ १९३ ॥

श्रीरामनाम से बढ्कर कोड भी तत्व वेदों में, स्मृतियों में, संडिताओं में, पुराणों में और तन्त्रों में नहीं है ।

नाम्नो रामस्य ये तत्त्वं परं प्राडुः कुबुद्धयः ।

राक्षसांस्तान्विजानीयाद्भ्रजेयुर्नरकन्ध्रुवम् ॥ १९४ ॥

जो लोग श्रीरामनाम से बढःकर किसी दूसरे को तत्त्व कलते हैं वे लोग कुबुद्धि हैं उन लोगों को राक्षस समझना
थाडिअे वे लोग निश्चित डी नरक में जायेङ्गे ।

सा जिह्वा रघुनाथस्य नामकीर्तनमादरात् ।

करोति विपरीता या इणिनो रसना समा ॥ १८५ ॥

श्रीरामज्जु के श्रीरामनाम का जो आदरपूर्वक कीर्तन करती है वडी जिह्वा है ँसके विपरीत जो श्रीरामनाम का कीर्तन
न करके दुनियादारी के आतथीत में लगी रहती है वे सर्प की जिह्वा के समान हैं ।

रामेति नाम यस्त्रोत्रे विश्रम्भाज्जपितो यद्वि ।

करोति पापसन्दाहं तूलवह्निकणो यथा ॥ १८६ ॥

जिस किसी के भी कान में “श्रीराम” ँस नाम का विश्वासपूर्वक जप किया गया ँसके समस्त पापों
का ँसी प्रकार दाड ङो जाता है जिस प्रकार अग्नि के कण से रुठ समूह का दाड ङो जाता है ।

तावद् गर्जन्ति पापानि ब्रह्महत्याशतानि य ।

यावद्रामं रसनया न गृह्णातीति दुर्मति ॥ १८७ ॥

तभी तक सभी पाप गरजते हैं और तभी तक सैकडःों ब्रह्म हत्याओं विद्यमान रहती हैं जब तक दुष्टबुद्धि
मनुष्य अपनी जिह्वा से श्रीरामनाम का ञ्रलण नहीं करता है ।

-ुति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे प्रमोदनिवासे परात्परैश्वर्यदायके

श्रीयुगलानन्यशरणासङ्गृहीते अष्टादशपुराणप्रमाणनिर्णयनाम प्रथमः प्रमोदः ॥ १ ॥

श्रीयुगलानन्यशरणाञ्जु के द्वारा सङ्गृहीत प्रमोदनिधि परात्पर ँश्वर्य प्रदायक श्रीसीतारामनाम प्रताप प्रकाश में

अष्टादशपुराण प्रमाण निर्णयनामकः प्रथमः प्रमोदः समाप्तः ।

अथ द्वितीयः प्रमोदः

ुपपुराण वयनानि -

वायुपुराणे श्रीशिववाक्यं नारदं प्रति -

वायुपुराण में श्रीशिवज्जु का वाक्य नारदज्जु के प्रति -

महत्तस्तपसोमूलं प्रसवः पुण्य सन्ततेः ।

जुवितस्य हलस्वाद्दु सदा श्रीरामकीर्तनम् ॥ १८८ ॥

बडःी से बडःी तपस्या का मूल, समस्त पुण्यरूपी सन्तान का ँत्पत्ति स्थान अेवं मानव जुवनरूपी वृक्ष
का सुस्वाद्दु हल श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन है तात्पर्य है कि श्रीरामनामसङ्कीर्तन के बिना शेष साधन श्रममात्र है ।

श्रीरामनाम सामश्र्यं वैभवं शौर्यविक्रमम् ।

न वक्तुं कोपि शक्नोति सत्यं सत्यं य नारद ॥ १८९ ॥

डे नारदञ्च ! श्रीरामनाम के सामर्थ्य, वैभव, शौर्य एवं पराक्रम का वर्णन कोष्ठ भी नहीं कर सकता है यद्यत् सत्य है सत्य है ।

सततं राम रामेति यस्तु कीर्तयते सदा ।

गुरुतल्पशतेनापि सद्येव प्रमुच्यते ॥ २०० ॥

जो निरन्तर राम राम ऐसा सङ्कीर्तन करता रहता है वह मनुष्य सैङ्कुःओं बार गुरु पत्नी के साथ गमन जन्य पापों से शीघ्र ही मुक्त हो जाता है ।

यातना यमलोकेषु तावदेव भवेन्नृणाम् ।

यावन्न भजतेप्रीत्या रामनामपरात्परम् ॥ २०१ ॥

मनुष्यों को तभी तक यमलोक में यातना सहन करनी पड़ती है । जब तक वह प्रीतिपूर्वक परात्पर श्रीरामनाम का जप नहीं करता है ।

सर्वेषामवताराणां काराणं परमाद्भुतम् ।

श्रीमद्रामेतिनामैव कथ्यते सद्भिरन्वयम् ॥ २०२ ॥

सभी अवतारों का परम अद्भुत कारण श्रीरामनाम ही है ऐसा सभी सन्त निरन्तर कहते हैं ।

यत्र यत्र समुद्धारो दृश्यते श्रूयतेऽथवा ।

तत्सर्वं रामनामैव सत्यं सत्यं वयो मम ॥ २०३ ॥

जहाँ कहीं भी पापियों का उद्धार देखा या सुना जाता है वह सब श्रीरामनाम की कृपा से ही हुआ है यद्यत् मेरा वयन सत्य है सत्य है ।

रामनामात्मिकावाणी श्रोतव्या सर्वदा बुधैः ।

त्यक्त्वा नानार्थवञ्छन्वाद्येव विभ्रान्तिमण्डितान् ॥ २०४ ॥

अनेक प्रकार के अर्थ वाले शब्दों, वादविवादों, भ्रमयुक्त वाक्यों को छोड़कर विद्वानों को सदा सर्वदा श्रीरामनाम का श्रवण करना चाहिए ।

नृसिंहपुराणे -

नरसिंहपुराणे मे -

रामरामेति रामेति सततं संस्मरन्ति ये ।

त एव वल्लभास्माकमीश्वराणां य नारद ॥ २०५ ॥

हे नारद ! राम, राम, राम इस प्रकार जो निरन्तर श्रीरामनाम का स्मरण करते हैं वे ही हमारे प्रिय हैं और सभी ईश्वरों के भी प्रिय हैं ।

सर्वासाम् चित्तवृत्तीनां निरोधो जायते ध्रुवम् ।

रामनाम प्रभावेण जप्तव्यं सावधानतः ॥ २०६ ॥

श्रीरामनाम के प्रभाव से सभी चित्तवृत्तियों का निश्चित डी निरोध हो जाता है अतः सावधान होकर श्रीरामनाम का जप करना चाहिए ।

नरका ये नरा नीया ज्वन्तोऽपि मृतोपमाः ।

तेषामपि भवेन्मुक्ती रामनामानुकीर्तनात् ॥ २०७ ॥

जो लोग नारकी हैं, नीच हैं और जोते हुआ भी मृतक तुल्य हैं उन लोगों की भी श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से मुक्ति हो जाती है ।

तत्रैव श्रीप्रह्लादवाक्यं पितरं प्रति -

वर्डी श्रीप्रह्लादजो का वाक्य अपने पिताजो के प्रति -

रामनामजपतां कुतो भयं सर्वतापशमनैकभेषजम् ।

पश्यतात मम गात्र सङ्गतःपावकोऽपिसविलायतेऽधुना ॥ २०८ ॥

हे तात ! श्रीरामनाम के जप करने वालों को कहीं भी किसी से भय नहीं होता है समस्त तापों एवं रोगों के नाश करने के लिये अकेला औषधि श्रीरामनाम है । हे तात ! देखिये मेरे शरीर के सम्पर्क से इस समय अग्नि भी जल जैसे शीतल हो गया है ।

रामनाम प्रभावेण मुच्यते सर्वबन्धनात् ।

तस्मात्त्वमपि दैत्येश तस्यैव शरणं ब्रज ॥ २०९ ॥

हे दैत्ये ! श्रीरामनाम के प्रभाव से जो व समस्त बन्धनों से सङ्ग में मुक्त हो जाता है इसलिये हे राक्षसराज ! आप भी श्रीरामनाम की शरण में जाओ ।

तत्रैव श्रीनारदवाक्यं याज्ञवल्क्यं प्रति -

वर्डी श्रीनारदजो का वाक्य याज्ञवल्क्य के प्रति -

श्रीरामेति जपन्जन्तुः प्रत्यहं नियतेन्द्रियः ।

सर्वपाप विनिर्मुक्तः सुरवद्भासते नरः ॥ २१० ॥

अपनी इन्द्रियों को वश में करके प्रतिदिन “श्रीराम” इस प्रकार जप करने वाला साधक शीघ्र ही समस्त पापों से मुक्त होकर देवताओं की तरह प्रकाशित होने लगता है ।

सौभाग्यं सर्वदा स्वच्छं सरसानन्दमद्भुतम् ।

अवश्यं लभते भक्त्या रामनामानुकीर्तनात् ॥ २११ ॥

भक्तिपूर्वक श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन करने से सर्वदा स्वच्छ सौभाग्य एवं अद्भुत सरस आनन्द अवश्य प्राप्त होता है ।

रामनामरतानारी सुतं सौभाग्यमीप्सितम् ।

भर्तुः प्रियत्वं लभते न वैधव्यं कदाचन ॥ २१२ ॥

श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन में निरत रहने वाली स्त्री, पुत्र, अभीष्ट सौभाग्य और पति की प्रियता को प्राप्त करती है और कभी भी विधवा नहीं होती है ।

पतिव्रतानां सर्वासां रामनामानुकीर्तनम् ।

अैडिकामुष्किकं सौप्यदायकं सर्वशो मुने ॥ २१३ ॥

हे मुनिराज ! सभी पतिव्रताओं के लिये इस लोक से सम्बन्धित अथं परलोक से सम्बन्धित सभी प्रकार के सुषों का सम्पादक श्रीरामनाम सङ्कीर्तन है ।

सीतयासङ्कितं रामनाम येषां परं प्रियम् ।

त अेव कृतकृत्याश्च पूज्या सर्वसुरेश्वरैः ॥ २१४ ॥

श्रीसीतानाम के साथ श्रीरामनाम अर्थात् “श्रीसीताराम” यह दिव्यनाम जिन लोगों को परम प्रिय है वे लोग ही कृतकृत्य हैं और समस्त देवेश्वरों से पूज्य हैं ।

रामनामार्थमध्ये तु साक्षात् सीतापदं प्रियम् ।

विज्ञानागोचरं नित्यं मुने श्रीरामवैभवम् ॥ २१५ ॥

हे मुने ! श्रीरामनाम के अर्थ के मध्य में ही साक्षात् परमप्रिय सीतापद विराजमान है । और विशिष्ट ज्ञान के द्वारा जाना जाने वाला श्रीरामजी का प्रभाव भी श्रीरामनाम में ही संनिहित है ।

आदौ सीतापदं पुण्यं परमानन्ददायकम् ।

पश्चाच्छ्रीरामनामस्तु कथनं सम्प्रशस्यते ॥ २१६ ॥

पुण्य अेवं परमानन्द प्रदायक श्रीसीतापद का प्रथम उच्चारण होना याडिअे तत्पश्चात् श्रीरामनाम का उच्चारण सम्यक् प्रशस्त है अर्थात् श्रीसीताराम श्रीसीताराम सङ्कीर्तन ही सर्वथा प्रशंसनीय है ।

युग्मं वर्णं जपेद्यदि तदा सीतेति कीर्तयेत् ।

सावकाशे सदा लङ्क्यामध्ये मध्ये समाहरात् ॥ २१७ ॥

यदि श्रीरामनाम का राम राम जप करना हो तब भी पलले श्रीसीताराम सीताराम कड ले बाढ में राम राम जप करे, समय मिलने पर लङ्कितपूर्वक सदा सीताराम सीताराम जप करे । श्रीरामनाम के जप के समय बीच-

बीच में आहरपूर्वक सीताराम सीताराम जप करे ।

अेवं रीत्या स्मरन्नाम रामलद्रस्य सन्ततम् ।

षण्मासात्सिद्धिमाप्नोति कलौ विश्वासपूर्वकम् ॥ २१८ ॥

इस रीति से जो साधक विश्वासपूर्वक श्रीरामनाम का जप निरन्तर करता है उसको इस कलियुग में छः महीने में परम सिद्धि की प्राप्ति हो जाती है ।

सूर्योदये यथा नाशमुपैति ध्वान्तमाशु वै ।

तथैव रामसंस्मरणोद्दिनाशं यान्त्युपद्रवाः ॥ २१९ ॥

सूर्यनारायण के उदित होने पर जैसे शीघ्र ही अन्यकार नष्ट हो जाता है उसी प्रकार श्रीरामनाम के स्मरण करने से सभी उपद्रव नष्ट हो जाते हैं ।

दुराचारो मडादुष्टोमडाधौघ निडेतनः ।

रामनाम स्मरन् भक्त्या विशुद्धो भवति ध्रुवम् ॥ २२० ॥

दुराचारी मडादुष्ट एवं मडापाप निवास स्वरूप मनुष्य भी भक्तिपूर्वक श्रीरामनाम का स्मरण करने से निश्चित ही शुद्ध हो जाता है ।

रामनाम प्रभावेण यद्यच्छिन्तयते जनः ।

तत्तदाप्रोति वै तूर्णमभीष्टमति दुर्लभम् ॥ २२१ ॥

श्रीरामनाम का जापक साधक जो-जो चिन्तन करता है अर्थात् जिस-जिस वस्तु को प्राप्त करना चाहता है उस-उस वस्तु को निश्चित ही प्राप्त कर लेता है एवं अति दुर्लभ अभीष्ट को भी शीघ्र ही प्राप्त कर लेता है ।

सर्वाभीष्टप्रदे नाम्नि प्रीतिर्नैवाभिजायते ।

मुने तस्यापराधानां नियमो नैव विद्यते ॥ २२२ ॥

हे मुने ! सभी अभीष्ट वस्तुओं को प्रदान करने वाले श्रीरामनाम में जिसकी प्रीति नहीं है उसके अपराधों की गिनती नहीं है ।

रामनाम्नि रतिर्नास्ति कुरुते धर्मसञ्चयम् ।

तत्सर्वं निष्फलं प्रोक्तं पथिभीजङ्गुरा एव ॥ २२३ ॥

जिसकी श्रीरामनाम में प्रीति नहीं है उसके द्वारा किया गया धर्म का सङ्ग्रह उसी प्रकार निष्फल है जिस प्रकार मार्ग में बोये गये बीजों के अङ्कुर ।

बहुजन्मोग्रपुण्यानां हलं नामानुकीर्तनम् ।

सर्वेषां ऋषिमुष्यानां सम्मतं संशयं विना ॥ २२४ ॥

सभी श्रेष्ठ ऋषि मुनियों का संशय रहित मत है कि अनेक जन्मों के श्रेष्ठ पुण्यों का हल ही श्रीरामनाम सङ्कीर्तन है अर्थात् अनेक जन्मों के उल्टट पुण्यों के हलस्वरूप ही श्रीरामनाम सङ्कीर्तन में इच्छि लोती है ।

वृद्धिष्णु पुराणे श्रीपराशर वाक्यं शिष्यं प्रति -

वृद्धिष्णुपुराणे में श्रीपराशर ञु का वाक्य मैत्रेय ञु के प्रति -

क्व नाकपृष्ठगमनं पुनरावृत्ति लक्षणम् ।

क्व जपो रामनामस्तु मुक्तेर्बाँजमनुत्तमम् ॥ २२५ ॥

कहाँ स्वर्गादि लोकों का गमन? और कहाँ श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन? स्वर्गादि लोकों में जाने के बाद पुनर्जन्म का भय बना रहता है "क्षीणो पुण्ये मर्त्यलोके विशन्ति" पुण्यों के नाश हो जाने के पश्चात् पुनः मृत्युलोक में आना पड़ता है और श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन मुक्ति का सर्वश्रेष्ठ बीज है अर्थात् श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से मुक्ति की प्राप्ति लोती है, जिसमें पुनरागमन का भय नहीं लोता है ।

सर्वरोगोपशमनं सर्वोपद्रवनाशनम् ।

सर्वाश्चिदरं क्षिप्रं रामनामानुकीर्तनम् ॥ २२६ ॥

समस्त रोगों का नाश करने वाला, समस्त उपद्रवों का नाशक और शीघ्र ही सभी अरिष्टों का हटाने वाला श्रीरामनाम सङ्कीर्तन है अर्थात् श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से शीघ्र ही सभी रोग, सभी उपद्रव एवं सभी अरिष्ट दूर हो जाते हैं ।

नास्ति श्रीरामनामस्तु परत्वं दृश्यते क्वचित् ।

सदृशं त्रिषुलोकेषु सर्वतन्त्रेषु कुत्रचित् ॥ २२७ ॥

श्रीरामनाम से श्रेष्ठ तत्त्व कहीं भी दिखायी नहीं देता है । सभी लोकों में एवं सभी तन्त्रों में कहीं भी श्रीराम नाम के सदृश कोई तत्त्व नहीं दिखायी देता है ।

रामरामेति यो नित्यं मधुरं जपति क्षणम् ।

स सर्व सिद्धिमाप्नोति रामनामानुभावतः ॥ २२८ ॥

जो साधक नित्य क्षण भर भी मधुर स्वर में राम राम ऐसा जप करता है वह श्रीरामनाम के प्रभाव से सभी सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है ।

परानन्दे सुधासिन्धौ निमग्नो जायते जनः ।

यदा श्रीरामसन्नाम संस्मरेद्भावनायुतः ॥ २२९ ॥

जब कोई साधक सदभावना से युक्त होकर श्रीरामनाम का सम्यक् स्मरण या सङ्कीर्तन करता है उस समय वह परमानन्दरूपी अमृत सिन्धु में निमग्न हो जाता है ।

प्रायो विवेकिनः सौम्य वेदान्तार्थैक नैष्ठिकाः ।

श्रीमद् रामेशभद्रस्य नाम संराधने रताः ॥ २३० ॥

हे सौम्य ! अधिकांश वेदान्तार्थ चिन्तन परायण विवेकीजन श्रीरामनाम की आराधना में ही लगे रहते हैं “धर्ममार्गं चरित्रेण ज्ञानमार्गं च नामतः” सिद्धान्त के अनुसार समस्त वेदान्तार्थों का प्रकाश श्रीरामनाम के जप से ही होता है अतः विवेकी वेदान्ती लोग भी श्रीरामनाम के जप में लगे रहते हैं ।

तावदेव मद्दस्तेषां महापातक दन्तिनाम् ।

यावन्न श्रूयते रामनाम पञ्चाननध्वनिः ॥ २३१ ॥

तभी तक महापापरूपी ढाबियों का मद्द दिखायी देता है जब तक श्रीरामनाम सङ्कीर्तन रूपी सिंघ की ध्वनि सुनायी नहीं देती है अर्थात् श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन होते ही सभी महापाप दूर भाग जाते हैं ।

अविकारी विकारी वा सर्वदोषैकभाजनः ।

परमेशपदं याति सीतारामानुकीर्तनात् ॥ २३२ ॥

याहो निर्विकार हो या सविकार हो याहो समस्त दोषों का भजना हो, याहो कैसा भी हो, यदि वह सीताराम सीताराम सङ्कीर्तन करता है तो वह कीर्तन के प्रभाव से भगवान् के धाम को अवश्य जायेगा ।

डे जिह्ने रससारज्ञे सततं मधुरप्रिये ।

श्रीरामनामपीयूषं पिबप्रीत्या निरन्तरम् ॥ २३३ ॥

डे रसों के सार को जानने वाली निरन्तर मधुर प्रिये जिह्ने ! तू निरन्तर प्रीतिपूर्वक श्रीरामनामगुपी अमृत का पान कर ।

नातः परतरोपायो दृश्यते सम्मतौ श्रुतौ ।

सारात्सारतमं शुद्धं सर्वेषां मुक्तिर्दं परम् ॥ २३४ ॥

श्रीरामनाम से बढकर दूसरा कोई उपाय सन्तों की सम्मति में और वेदों में नही टिपायी देता है । सभी को मुक्ति प्रदान करने वाला अेवं सारतत्वों का भी सार शुद्ध सर्वोत्कृष्ट श्रीरामनाम है ।

स्वाभाविकी तथा ज्ञानक्रियाद्याः शक्तयः शुभाः ।

रामनामांशतो जाता सर्वलोकेषु पूजिता ॥ २३५ ॥

सभी लोकों में पूजित स्वाभाविकी, ज्ञान अेवं क्रियादि जितनी शुभ शक्तियाँ हैं वे सब श्रीरामनाम के अंश से उत्पन्न हुए हैं ।

लघु भागवते -

लघु भागवत में -

ज्ञानं वैराग्यमेवाथ तथा प्रीतिः परात्मनि ।

संलभन्नामसङ्कीर्त्य ङ्यभिरामाप्यमद्भुतम् ॥ २३६ ॥

अद्भुत लोकभिराम श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करके साधक ज्ञान, वैराग्य अेवं भगवान् में परम प्रीति प्राप्त कर सकता है ।

भृङ्गारदीये -

भृङ्गारदीयपुराण में -

ते कृतार्थाः सदा शुद्धाः सर्वोपाधि विवर्जिताः ।

नाम्नः प्रभावमासाधे गमिष्यन्ति परम्पदम् ॥ २३७ ॥

श्रीनारदजी कडते हैं कि जो श्रीरामनाम का उच्चारण करते हैं वे कृतार्थ हैं । सदा शुद्ध हैं समस्त उपाधियों से शून्य हैं वे लोग श्रीरामनाम के प्रभाव से परम पद को प्राप्त करेङ्गे ।

रामनाम परा ये च नामकीर्तनतत्परा ।

नाम्नः पूजापरा ये वै ते कृतार्थाः न संशयः ॥ २३८ ॥

जो लोग तन, मन, वचन, गति, मति अेवं रति से श्रीरामनाम परायण हैं और श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन में लगे रहते हैं और जो लोग श्रीरामनाम की पूजा में लगे हुए हैं वे लोग निश्चित ही कृतार्थ हैं इसमें संशय नही है ।

तस्मात्समस्तलोकानां छितमेव मथोच्यते ।

रामनाम परान् मर्त्यान् कलिर्बाधते क्वचित् ॥ २३९ ॥

अडोचित्रमडोचित्रमडोचित्रमिदम्परम् ।

रामनाम्नि स्थिते लोके संसार वर्तते पुनः ॥ २४७ ॥

आश्चर्य है मडान् आश्चर्य यड है डि ँस लोड में श्रीरामनाम के विधमान डोने पर भी लोडों का पुनरागमन डो रड। है तात्पर्य यड है डि मुक्ति का सर्वसुलभ साधन श्रीरामनाम विधमान हैं डि र भी लोड मुक्त नडों डो पा रडे हैं यडी मडान् आश्चर्य है ।

मित्रद्रोडी कृतघ्नश्च स्तेयी विश्वासघातकः ।

दुडितासङ्गमी दृष्टो भ्रातृपत्नीरतस्तथा ॥ २४८ ॥

विप्रदारारतो यस्तु विप्रवित्तापडारकः ।

परापवादकारी य बालघाती य वृद्धड ॥ २४८ ॥

स्त्रीजनानां सङ्घाती डिंसकः सर्वदडिनाम् ।

मातृगामी गुरुद्रोडी रामनाम्ना विशुद्धयति ॥ २५० ॥

मित्रों से द्रोड करने वाला, डि ये गये ँपडार को न मानने वाला, डोर, विश्वासघात करने वाला, पुत्री के साथ समागम करने वाला, दृष्ट, अपने भाँ की पत्नी के साथ समागम करने वाला, विप्रपत्नियों के साथ समागम करने वाला, विप्रों के धन को डुराने वाला, दूसरे की निन्दा करने वाला, बाल डत्यारा, वृद्धों की डत्या करने वाला, स्त्रियों की डत्या करने वाला, सभी डुवों का डिंसक, माता के साथ समागम करने वाला और गुरुद्रोड करने वाला पापी भी श्रीरामनाम के डप से शुद्ध डो डता है तात्पर्य यड है डि ँपर्युक्त पापों का प्रायश्चित्त यदि डिया डय तो डितने डन्म भीत डयेङ्गे परन्तु श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन मात्र से ये सारे पाप शीघ्र नष्ट डो डते हैं । अतः श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन डी सर्वश्रेष्ठ ँपाय है ।

मडायिन्ताडडतुरो यस्तु मडायिव्याधिव्याकुलः ।

डवरापस्मारकुड्ढादिमडारोगैः प्रपीडितः ॥ २५१ ॥

मडोत्पातमडारिष्टमडकूरड्रडार्दितः ।

मडशोकडग्नि सन्तमस्सर्वलोडैस्तिरस्कृतः ॥ २५२ ॥

मडानिन्धो निरालम्भो मडदुर्भाग्यदुःमितः ।

मडदरिद्रो सन्तापी सुणीस्थामडामकीर्तनात् ॥ २५३ ॥

डो मडायिन्ता के कारण आतुर हैं, डो मडान् मानसिक व्यथा अेवं शारीरिक व्यथा से विशेष आकुल हैं, डो डवर, मिरगी और कुड्ढादि मडारोगों से विशेष पीडित हैं । डो मडोत्पात, मडारोग और मडान् कूर ड्रडों से पीडित हैं । डो मडशोकडग्नी अग्नि में सन्तम हैं, सभी लोडों से डो तिरस्कृत हैं । डो अतिशय निन्डनीय हैं डिनका संसार में कोँ अवलम्ब नडों है । विशेष दुर्भाग्ययुक्त डोने से डो अतिशय दुःभी हैं । डो मडान् दरिद्र है अेवं सभी प्रकार के डवेशों से डो युक्त है वे भी श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन करने से शीघ्र डी सभी कष्टों से मुक्त डोकर सुणी डो डते हैं ।

कामक्रोधातुरः पापी लोभमोहमदोद्धतः ।
 रागद्वेषादिभिर्दग्धो मडादुर्वासनाऽऽवृतः ॥ २५४ ॥
 षड्भिर्भिराकान्तः षड्भिरैर्विभिधतः ।
 मनोराजकषायाद्यैर्व्याकुलः समुपद्रवैः ॥ २५५ ॥
 अन्यैश्चविधोत्पातैर्दारुणैरतिदुःषितः ।
 रामनामानुभावेन परानन्दमवाप्नुयात् ॥ २५६ ॥

जो लोग काम, क्रोध से व्याकुल हैं, पापी हैं, लोभ अथवा मोहयुक्त हैं मडाअड्डुारी हैं, रागद्वेषरूपी अग्नि से दग्ध हैं, मडान् दुर्वासना के कारण जिनका स्वरूप ढका हुआ है । क्षुधा, तृषा (प्यास) , शोक, मोह, जरा अथवा मरण रूप छः कर्मवासना से विशेष आकान्त हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद्य और मत्सरदि छः विकारों के कारण जो विशेष दुःखी है । मानसिक उवाह कल्पनारूपी कषायों अथवा अनेक उपद्रवों से जो व्याकुल हैं । अथवा दूसरे अनेक दारुण उवाहों के कारण जो अतिशय दुःषित हैं वे लोग भी यदि भाव सखित श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करें तो श्रीरामनाम के प्रभाव से परम आनन्द की प्राप्ति कर सकते हैं ।

किन्तीर्थैः किंप्रतैर्दोमैः किन्तपोभिः किमध्वरैः ।
 दानैर्धनैश्च किंज्ञानैर्विज्ञानैः किंसमाधिभिः ॥ २५७ ॥
 किंयोः किंविरागैश्च जपैरन्यैः किमर्थनैः ।
 यन्त्रैर्मन्त्रैस्तथातन्त्रैः किमन्यैरुग्रकर्मभिः ॥ २५८ ॥
 स्मरणार्त्कीर्तनाद्यैव श्रवणाल्लेभनादपि ।
 दर्शनाद्धारणार्त्तेव रामनामाभिलेष्टम् ॥ २५९ ॥

जब श्रीरामनाम के स्मरण, कीर्तन, श्रवण, लेभन, दर्शन अथवा धारण करने से ही सभी अभीष्टों की प्राप्ति हो सकती है तो फिर अनेक तीर्थों, प्रतों, उवनानुष्ठानों, तपस्याओं, यज्ञों, दानों, ध्यान, ज्ञान-विज्ञानों, समाधियों, योगों, विरागों, दूसरे जपों, पूजनों, यन्त्रों, मन्त्रों, तन्त्रों अथवा दूसरे उग्र कर्मों के अनुष्ठान से क्या प्रयोजन? अर्थात् अनेक श्रीरामनाम के आश्रय लेने से ही यदि सभी मनोरथ सिद्ध हो जायें तो व्यर्थ दूसरे साधनों की क्या आवश्यकता है?

आदित्यपुराणे श्रीमडादेववाक्यं शिवां प्रति -
 आदित्यपुराणे में श्रीमडादेवजो का वाक्य पार्वतीजो के प्रति -
 अहं जपामि देवेशि रामनामाक्षरद्वयम् ।
 श्रीसीतायाः स्वरूपस्य ध्यानं कृत्वा लुटिस्थले ॥ २६० ॥

उहे देवेशरि पार्वति ! मैं भगवती श्रीसीताजो के स्वरूप का लुटय में ध्यान करके “राम” इन दो अक्षरों का जप करता हूँ ।

रामनाम्नि स्थितास्सर्वे भ्रातरः परिकरास्तथा ।

गुणानां नित्यं देवि तथा श्रीधाममङ्गलम् ॥ २६१ ॥

हे देवि पार्वति ! श्रीरामनाम में ही परिकरों के सङ्घित श्रीरामज्जु के श्रीभरतादि भाई, सद्गुणों का समुदाय अर्थात् नित्य मङ्गलस्वरूप श्रीअयोध्या धाम नित्य स्थित हैं श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन जप करने से सबका दर्शन सङ्ग में प्राप्त हो जाता है ।

तत्रैवाहित्यवाक्यं ऋषीन् प्रति -

आदित्यपुराण में ही श्रीसूर्यज्जु का वाक्य ऋषियों के प्रति -

रामनामजपादेव भासकोऽहं विशेषतः ।

तथैव सर्वलोकानां कर्मणो शक्तिवानहम् ॥ २६२ ॥

हे ऋषियों ! श्रीरामनाम के जप के प्रभाव से ही मैं सबको प्रकाशित करता हूँ उसी प्रकार श्रीरामनाम के जप के द्वारा प्राप्त शक्ति से युक्त होकर मैं समस्त लोकों की परिक्रमा करता हूँ ।

नामविश्रब्धहीनानां साधनान्तरकल्पना ।

कृतामलर्षिभिस्सर्वैः परमानन्दनैष्ठिकैः ॥ २६३ ॥

श्रीरामनाम सङ्कीर्तनजन्य परमानन्द में निमग्न रहने वाले महात्माओं ने श्रीरामनाम में विश्वास न करने वाले लोगों के लिये ही दूसरे अनेक साधनों की कल्पनाओं की हैं अर्थात् जिन लोगों का श्रीरामनाम में पूर्ण विश्वास है उनके लिये दूसरी किसी साधना की आवश्यकता नहीं है ।

आङ्गिरसपुराणे -

आङ्गिरसपुराण में -

नामसङ्कीर्तनात्सर्वं मङ्गलं शाश्वतं शुभम् ।

सामीप्यं रामचन्द्रस्य तथा सर्वार्थसङ्ग्रहः ॥ २६४ ॥

श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से सभी प्रकार के कल्याण अर्थात् श्रेष्ठ, सभी अर्थों का समूह अर्थात् श्रीसीतारामज्जु का सामीप्य प्राप्त होता है ।

श्रीरामेति मनुष्यो यः समुच्चरति सर्वदा ।

जुवन्मुक्तो भवेत्सो हि साक्षाद्रामात्मकः सुधीः ॥ २६५ ॥

जो मनुष्य सदा सर्वदा “श्रीराम” अर्थात् उच्चारण करता रहता है वह जितने जित मुक्त है, वह विद्वान् साक्षात् श्रीसीतारामभय है ।

सुरद्रुमयथं त्यक्त्वा ह्येतेऽसं समुपासते ।

यस्यान्यसाधने प्रीतिस्त्यक्त्वा श्रीनाममङ्गलम् ॥ २६६ ॥

सर्वथा मङ्गलकारी श्रीरामनाम को छोड़कर जो लोग दूसरे साधनों में प्रीति करते हैं वे लोग कल्पवृक्ष समूह का त्याग करके अपावन वृक्ष रेणु की उपासना करते हैं ।

आत्सन्तरं तथा भाष्यं यस्तु श्रीराममुच्चरेत् ।

स्वल्पायासेन सङ्काशं जायते वृष्टिपङ्कजे ॥ २६७ ॥

जो लोग सर्वदा सावधान होकर प्रीतिपूर्वक भीतर तथा बाहर से निरन्तर श्रीरामनाम का उच्चारण करते रहते हैं थोड़े समय में ही उनके हृदय कमल में प्रकाश का दर्शन होने लगता है ।

शुकपुराणे श्रीअगस्त्यवाक्यं सुतीक्ष्णं प्रति -

शुकपुराण में श्रीअगस्त्यजी का वाक्य सुतीक्ष्णं के प्रति -

श्रीमद्रामेतिनामैव ज्वनानां य ज्वनम् ।

कीर्तनात्सर्वरोगेभ्यो मुख्यते नात्र संशयः ॥ २६८ ॥

श्रीरामनाम ही समस्त जिवों का ज्वन है । श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से निश्चित ही समस्त रोगों से मुक्ति मिल जाती है इस कथन में संशय नहीं है ।

ब्रह्माण्डशतदानस्य यत्कृत्वं समुदाहृतम् ।

तत्कृत्वाद्येकं विधात्सकृच्छ्रीराममुच्यन् ॥ २६९ ॥

सैकडःों ब्रह्माण्ड दान का जो फल कडा गया है उससे भी अधिक फल एक बार श्रीरामनाम के उच्चारण से होता है ।

तत्रैव श्रीशिववाक्यं शिवां प्रति -

शुकपुराण में ही श्रीशिवजी का वाक्य पार्वतीजी के प्रति -

यथैव पावको देवि रजसाच्छत्रात् प्रजेत् ।

तथा विश्वासहीनानां नास्तिनामार्थवैभवम् ॥ २७० ॥

हे देवि ! जिस प्रकार अग्नि धूल से ढके जाने पर अपने स्वभाव प्रभाव को प्रकट नहीं करता है उसी प्रकार विश्वासहीन मनुष्य श्रीरामनाम के मलायैश्वर्यादि को नहीं समझ पाता है । अर्थात् विश्वासहीनों के लिये श्रीरामनाम की मछिमा कुछ नहीं है ।

अहो भाग्यतराः सर्वे नामसंलग्नमानसाः ।

पावयन्ति जगत्सर्वं रामनामार्थचिन्तनात् ॥ २७१ ॥

आश्चर्य है कि जिनका मन श्रीराम नाम में संलग्न है वे सभी अत्यन्त भाग्यशाली हैं क्योंकि वे लोग लोकोपकारी श्रीरामनाम के अर्थ के चिन्तन से सारे संसार को पवित्र करते हैं ।

यत्प्रभावं समासाद्य शुको ब्रह्मर्षिसत्तमः ।

जपस्व तन्मलामन्त्रं रामनामरसायनम् ॥ २७२ ॥

हे पार्वति ! जिस श्रीरामनाम के स्वभाव प्रभाव को समझकर जप करके श्रीशुकदेवजी ब्रह्मर्षियों में श्रेष्ठ हो गये उस मलामन्त्र रसायन श्रीरामनाम का जप करो ।

पुराणसङ्ग्रहे श्रीसूत वाक्यं शौनकं प्रति -

पुराणसङ्ग्रह में सूतजी का वाक्य शौनक के प्रति -

छदान्नीं रामनाम्नस्तु रडस्यं प्रवदामि ते ।

यश्छुत्वा य पठित्वा य नरो याति परां गतिम् ॥ २७३ ॥

हे शौनक ज्ञ ! इस समय मैं आपके लिये श्रीरामनाम के उस रडस्य को कडने जा रडा हूँ जिसको सुनकर और पढःकर मनुष्य परमगति को प्राप्त करता है ।

सर्वेषां मन्त्रवर्गाणां रामनाम परं स्मृतम् ।

गोथं श्रीपार्वतीशस्य जुवनं चित्तशोधकम् ॥ २७४ ॥

सभी मन्त्रों में श्रीरामनाम मडामन्त्र सर्वश्रेष्ठ है अत्यन्त गोपनीय है श्रीपार्वती पति भगवान् शङ्कर का जुवन सर्वस्व है और अन्तःकरण की शुद्धि करने वाला है ।

सुलभं सर्वजुवानामनायासेन सिद्धिदम् ।

सर्वोपायं विडायाशु जमव्यं प्रेमतत्परैः ॥ २७५ ॥

श्रीरामनाम सभी जुवों के लिये सुलभ है बिना परिश्रम के ही सभी सिद्धियों को प्रदान करने वाला है अतः सभी उपायों को छोडःकर प्रेम-तत्पर होकर शीघ्र ही श्रीरामनाम का जप करना चाडिये ।

येन केन प्रकारेण जपन्भोक्षप्रदं नृणाम् ।

अेवंरीत्या जपेधस्तु रामनाममनुत्तमम् ॥ २७६ ॥

तस्य पाणितले सिद्धिरनायासेन सत्वरम् ।

सत्यं वदामि सिद्धान्तं सर्वं कलिमलापडम् ॥ २७७ ॥

जिस डिसी भी प्रकार से श्रीरामनाम का जप करने वाले मनुष्यों को श्रीरामनाम मोक्ष प्रदान करता है अैसा समजकर जो सर्वोत्तम श्रीरामनाम का जप करता है उसडे करतल में बिना परिश्रम के शीघ्र ही सभी सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं, यड सत्य सिद्धान्त मैं कडता हूँ डि कलि के समस्त मलों को दूर करने वाला श्रीरामनाम है ।

पृञ्चा रीतिर्यथातथ्यं गुरोः सान्निध्यतो मुने ।

तत्पश्चादव्यसेन्नाम सर्वेश्वरमतन्द्रितः ॥ २७८ ॥

स्वल्पाडारं तथानिद्रां स्वल्पवाक्यं निरन्तरम् ।

मिथ्यासम्भाषणं त्यज्वा तथा य गमनाडिकम् ॥ २७९ ॥

छडैव लभते नित्यं परिकराणां समागमम् ।

तथा नानारडस्थानां ज्ञानं सञ्जायते ध्रुवम् ॥ २८० ॥

हे मुने ! सभसे पडले श्रीगुरु मडाराज से श्रीरामनाम का यथार्थ स्वरुप और जप की विधि रीति समजना चाडिये । तत्पश्चात् आलस्यरडित होकर सर्वेश्वर श्रीरामनाम का अभ्यास करना चाडिये । भोजन स्वल्प, निद्रा स्वल्प, मिथ्या भाषण का त्याग करडे बहुत कम भोलना अेवं यत्र तत्र आना जाना बन्द करडे निरन्तर श्रीरामनाम का जप डिया जाय तो यडी सपरिकर श्रीसीतारामजु का दर्शन प्राप्त होता है और अनेक प्रकार के रडस्यों का ज्ञान भी निश्चित रुप से हो जाता है ।

नाम्नःपरात्परैश्वर्यं कथं वाया वदामि ते ।

स्मरणावलक्ष्यते विश्वं रामरूपेण भास्वरम् ॥ २८१ ॥

हे मुने ! श्रीरामनाम का परत्व, महत्व और ऐश्वर्य का मैं वाणी से क्या वर्णन करूँ? छतना सच है कि श्रीरामनाम का स्मरण कीर्तन करने से सम्पूर्ण विश्व श्रीसीतारामजी के रूप में भासित होने लगता है ।

भारतविभागे -

भारतविभाग में -

सर्वलक्षणहीनोऽपि युक्तो वा सर्वपातकैः ।

सर्वं तरति तत्पापं भावयन्नाममङ्गलम् ॥ २८२ ॥

जो समस्त शुभ लक्षणों से हीन हैं अथवा समस्त पापों से युक्त हैं वे भी मङ्गलमय श्रीरामनाम की भावना करने से समस्त पापों से मुक्त हो जाते हैं अर्थात् निरन्तर श्रीरामनाम का स्मरण कीर्तन करने से शीघ्र ही उनके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं ।

प्राणप्रयाणपाथेयं संसारव्याधिल्लेषजम् ।

दुःखशोकपरित्राणं श्रीरामेत्यक्षरद्वयम् ॥ २८३ ॥

प्राणों के मरणप्राण के समय पाथेयस्वरूप, संसाररूपी महाव्याधि के नाश के लिये सर्वश्रेष्ठ औषधिस्वरूप और अनेक प्रकार के दुःख एवं शोक से बचाने वाले “श्रीराम” ये दो अक्षर हैं ।

मातृछा पितृछा गोघ्नो ब्रह्महाऽऽचार्यछा मुने ।

श्वाहःपुल्कसको वाऽपि शुद्धेरन् रामनामतः ॥ २८४ ॥

हे मुने ! संसार में जो सर्वथा पूज्य हैं-माता, पिता, गौ, ब्राह्मण एवं आचार्य जैसे पूज्यों की हत्या करने वाले, कुत्ते का मांस खाने वाले खाएडाल एवं नीय जाति के लोग भी श्रीरामनाम का जप करने से श्रीरामनाम के प्रभाव से परमपवित्र हो जाते हैं ।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वसिद्धान्तपारगम् ।

सर्वद्वेषाधिपं तद्रं सर्वसम्पत्तिकारकम् ॥ २८५ ॥

महानादस्य जनकं महामोक्षस्यहेतुकम् ।

महाप्रेमरसेशानं महामोदमयं परम् ॥ २८६ ॥

आह्लादकानां सर्वेषां रामनाम परात्परम् ।

परं ब्रह्म परं धाम परं कारणकारणम् ॥ २८७ ॥

सम्पूर्ण मङ्गलों को भी माङ्गल्य प्रधान करने वाले, समस्त सिद्धान्तों का सार, सम्पूर्ण देवताओं का स्वामी, कल्याणदायक, सभी प्रकार की सम्पत्तियों को प्रधान करने वाले, दस प्रकार के नादों से परे महानाद का जनक, महामोक्ष का परम कारण, महाप्रेम एवं महारस के स्वामी, परमानन्दस्वरूप, सर्वोत्कृष्ट, प्रधान करने वालों में

सर्वश्रेष्ठ, परब्रह्मस्वरूप, असाधारण तेजःस्वरूप, समस्त कारणों के भी परम कारण श्रीरामनाम मહाराज हैं, अतः अन्य साधनों का आश्रय छोड़कर श्रीरामनाम मહाराज का आश्रय लेना चाडिअे ।

गणेशपुराणे श्रीगणेशवाक्यं ऋषीन् प्रति -

गणेशपुराण में श्रीगणेशजु का वाक्य ऋषियों के प्रति -

रामनाम परं ध्येयं ज्ञेयं पेयमर्निशम् ।

सर्वदा सद्भिरित्युक्तं पूर्व मां जगदीश्वरैः ॥ २८८ ॥

डे ऋषियों ! सत्युरुषों के द्वारा सर्वदा परम ध्यान के योग्य, जानने योग्य अेवं दिन रात पान करने योग्य श्रीरामनाम डी डै । यड भात मुजुको पडले डी जगत् के स्वामी ब्रह्मा, विष्णु और मडेश ने अता डिया था ।

अडं पूजयोऽभवंलोकं श्रीमन्नामानुकीर्तनात् ।

अतः श्रीरामनामस्तु कीर्तनं सर्वदोषितम् ॥ २८९ ॥

डस लोक में श्रीरामनाम के प्रभाव से डी मैं प्रथम पूज्य डुआ डूँ अतः डम सभी के लिये सदा सर्वदा श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन डी उचित डोगा ।

विद्वानां सन्निहन्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।

सुधासारं सदा स्वच्छं निर्विकारं निराश्रयम् ॥ २९० ॥

डयोडुडु श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन समस्त विघ्नों का नाश करने वाला, सम्पूर्ण सम्पत्तियों को प्रदान करने वाला, अमृत डी मूसलाधार वृष्टिस्वरूप, सदासर्वदा निर्मल, विकार रडित अेवं अन्य आश्रयों से रडित परम आश्रयस्वरूप डै । अतः श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन सडको करना चाडिअे ।

नन्दीपुराणे नन्दीश्वरवाक्यं गणान् प्रति -

नन्दीपुराण में श्रीनन्दीश्वर जु का वाक्य गणों के प्रति -

सर्वदा सर्वकालेषु ये वै कुर्वन्ति पातकम् ।

रामनामजपं कृत्वा यान्ति धाम सनातनम् ॥ २९१ ॥

जो लोग डर समय पाप करते रडते डैं वे लोग भी श्रीरामनाम का जप करके श्रीरामनाम के प्रभाव से सनातन धाम डिव्य नगरी अयोध्या को प्राप्त कर लेते डैं ।

डरन् ब्राह्मणसर्वस्वं प्रपन्नघ्नं सुरां पिबन् ।

अपि भ्रूणं डनन् पूतो जायते नामकीर्तनात् ॥ २९२ ॥

जो लोग ब्राह्मण के सर्वस्व का डरण करने वाले डैं, शरणागत डी डत्या करने वाले डैं, मडिरापान करने वाले डैं, अेवं गर्भपात करने वाले डैं वे लोग भी श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन करने से शीघ्र डी पवित्र डो जाते डैं ।

शुशुभ्वं भो गणारससर्वे रामनाम परं अलम् ।

यत्प्रसादान्महादेवो डालाडलमपीपिबत् ॥ २९३ ॥

हे मडादेवज्जु के गाएँ ! तुम सभी लोग श्रीरामनाम के उल्लूख बल को श्रवण करो, जिस श्रीरामनाम की प्रसन्नता के कृत्वस्वरूप भगवान् शङ्कर ने उलाहल विष का पान कर लिया । अर्थात् जिस श्रीरामनाम मडाराज की कृपा से विष भी अमृत हो गया अर्थात् शिवज्जु के गले का आभूषण हो गया ।

जानाति रामनाम्नस्तु परत्वं गिरिजापतिः ।

ततोऽन्यो न विजानाति सत्यं सत्यं वयो मम ॥ २८४ ॥

श्रीरामनाम के परत्व और मडत्व को यथार्थरूप से श्रीपावर्ती पति भगवान् शङ्कर ज्जु ही जानते हैं उनके अलावा दूसरा कोई भी यथार्थ रूप से नहीं जानता है मेरी यह वाणी सत्य है सत्य है ।

इतिहासोत्तमे -

इतिहासोत्तम में -

श्रीरामकीर्तने नित्यं यस्य पुंसो न जायते ।

सलोमपुलकं गात्रं स भवेत्कुलिशोपमः ॥ २८५ ॥

श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन अर्थात् स्मरण के समय जिस पुरुष का शरीर रोमाञ्चित नहीं होता है वह वज्र जैसा मडा कठोर है जैसे व्यक्ति को भारम्भार ग्लानि करनी याडिअे और श्रीरामनाम मडाराज से प्रार्थना करनी याडिअे कि उमारे लूद्य में भी श्रीरामनाम के जप सङ्कीर्तन में प्रेम प्रकट हो ।

रामनामजपे येषामश्रुपातो भवेन्नडि ।

त अेव भरतुल्यास्तु ल्यपूताः पातकालयाः ॥ २८६ ॥

श्रीरामनाम के जप के समय जिन पुरुषों को अश्रुपात नहीं होते हैं वे लोग गधे के समान हैं, अपवित्र अर्थात् पाप निवास हैं ।

श्रुत्वा श्रीरामनाम्नस्तु वैभवं पारमार्थिकम् ।

श्रवते न जलं नेत्रात्तन्नेत्रे वै रजोक्षिपेत् ॥ २८७ ॥

श्रीरामनाम के यथार्थ परत्व अर्थात् मडत्व को सुनकर जिन नेत्रों से अश्रुपात नहीं होते उन आँधों में निश्चित ही धूल डाल देनी याडिअे ।

तत्रैव नारकान् प्रति पुष्कलमुनिवाङ्मयं -

वडीं श्रीपुष्कल मुनि का वाङ्मय नरकवासियों के प्रति -

अडमध्यत्र नामानि कीर्त्तयामि जगत्पते ।

तानि वः श्रेयसे नित्यं भविष्यन्ति न संशयः ॥ २८८ ॥

हे नरकवासियों ! मैं भी यहाँ जगत् पति भगवान् श्रीसीतारामज्जु के पवित्र नामों का सङ्कीर्तन करता हूँ भगवान् के वे पवित्र नाम निश्चित ही तुम लोगों के कल्याण के लिये समर्थ होङ्गे इसमें संशय नहीं है ।

अडो सतां सङ्गममद्भुतम्बलं परं पवित्रं नरकादि नाशनम् ।

कर्तव्यमेतद्धि सदैव सज्जनैः श्रीरामनाम्नि प्रभवेत्पराशरतिः ॥ २८९ ॥

आश्चर्य है कि सन्त मछापुरुषों का सङ्ग अद्भुत फल प्रदान करने वाला, परम पवित्र और नरकादि जन्य पीडा का को नष्ट करने वाला है । अतः सत्पुरुषों को सदा ही सन्त मछापुरुषों का सङ्ग करना यादिये ज्योड्डि सन्त मछापुरुषों के सान्निध्य से ही श्रीरामनाम में परा प्रीति उत्पन्न होती है ।

सङ्कत्सङ्कीर्तितो देवः स्मृतो वा मुक्तिदो नृणाम् ।
स्मरतामलर्निशं नाम न जाने किं फलं भवेत् ॥ ३०० ॥

श्रीरामनाम का अेक बार सङ्कीर्तन अथवा स्मरण करने पर भगवान् मनुष्यों को मुक्ति प्रदान करते हैं । जो लोग दिन रात श्रीरामनाम का स्मरण करते हैं उन लोगों को भगवान् क्या फल देते हैं? यह मैं नहीं जानता हूँ ।

कृतज्ञानां शिरोरत्नं रामनामपरात्परम् ।

कथं न द्रवते श्रुत्वा स्वनामाह्वानमुत्तमम् ॥ ३०१ ॥

कृतज्ञों में शिरोमणि परात्परस्वरूप श्रीरामनाम मछाराज अपने उत्तम नाम का आह्वान सुनकर नहीं द्रवित डोड्गे?

किमत्र ढाढाकारेण युष्माकमधुनाधुवम् ।

स्मरध्वं रामनामाभ्यं मन्त्रं दुष्पापहारकम् ॥ ३०२ ॥

डे नरकवासियों ! तुम लोग यहां व्यर्थ में इस प्रकार ढाढाकार ज्यों कर रहे डो? तुम लोग इस समय समस्त दुःखों को दूर करने वाले मछामन्त्र श्रीरामनाम का स्मरण करो ।

कालं करालमत्यन्तं दृष्ट्वा स्वप्नमिदं जगत् ।

रामनामजपाच्छिद्रं जगृतिं याति निश्चितम् ॥ ३०३ ॥

काल को अत्यन्त कराल अेवं इस जगत् को स्वप्न तुल्य मानकर श्रीरामनाम का जप करने से शीघ्र ही निश्चित रूप से मोड-निद्रा से जागरण डोगा मोड-निद्रा भङ्ग डोगी और ज्ञुव को स्वस्वरूप की प्राप्ति डो जायेगी ।

रामनामिसुधाधाम्नि कुतर्कं निरयावडम् ।

समाश्रयन्ति ये पापास्ते मछाराक्षसाधमाः ॥ ३०४ ॥

अमृतस्वरूप श्रीरामनाम की मछिमा के विषय में जो मलीनमति पापीजन नरकप्रद कुत्सित तर्कों का आश्रय लेते हैं वे अधम मछाराक्षस हैं ।

प्रभाकरस्य सङ्काशं सर्वलोकैकगोचरम् ।

उलूका नेत्रडीनाश्च नैव पश्यन्ति दुर्भगा ॥ ३०५ ॥

श्रीरामनाम की मछिमा सूर्य के समान सर्वत्र सभी लोकों के ज्ञान का विषय है डिर भी उल्लू अेवं नेत्रडीन मन्मति दुर्भाग्यवश उसको नहीं देख पाते हैं । तात्पर्य यह है कि जैसे सूर्य का प्रकाश तो सर्वत्र फैल रहा है लेकिन उल्लू और नेत्रडीन लोगों को उसका दर्शन नहीं डोता है वैसे ही श्रीरामनाम की मछिमा सर्वत्र सभी लोगों के समक्ष प्रकट डो रही है परन्तु उल्लू अेवं नेत्रडीन जैसे भाग्यडीन लोगों को नहीं दिभायी दे रही है ।

तत्रैव श्रीभृगुवाङ्मयं -

वडी श्रीभृगुञ्ज का वाङ्मय -

श्रुत्वा नामानि तत्रस्थास्तेनोक्तानि तथा द्विज ।

नारका नरकान्मुक्ताः सद्येव मडामुने ॥ ३०६ ॥

हे मडामुने ! हे ब्राह्मण श्रेष्ठ ! उन श्री पुष्कल मुनि के द्वारा कहे गये भगवान् के नामों को सुनकर उस नरक में रहने वाले नारकी लोग नरक से तत्काल मुक्त हो गये ।

श्राद्धोऽपि नहि शक्नोति कर्तुं पापानि यत्नतः ।

तावन्ति यावती शक्ती रामनाम्नोऽशुभक्षये ॥ ३०७ ॥

अशुभों के नाश करने के लिये श्रीरामनाम में जितनी शक्ति है उतने पाप प्रयास करके भी मडानीय याइडाल भी नहीं कर सकते हैं ।

स्वप्नेऽपि नामस्मृतिरादिपुंसः क्षयङ्करोत्याहित पापराशिः ।

प्रयत्नतः किं पुनरादिपुंसः सङ्कीर्त्यते नाम रघूत्तमस्य ॥ ३०८ ॥

जब आदि पुरुष भगवान् श्रीरामचन्द्रजी का स्वप्न में भी नाम स्मरण करने पर अनेक जन्मों की सङ्कलित पापराशि नष्ट हो जाती है तब जो लोग श्रद्धापूर्वक प्रयत्न करके श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करते हैं उनके लिये क्या कडना ।

एतमेव परमभाग्यं प्रशस्यं सद्भिरुत्तमैः ।

श्रीसीतारामनाम्नस्तु सततं कीर्तनं मुने ॥ ३०९ ॥

हे मुने ! उत्तम सत्पुरुषों ने इसी को सर्वश्रेष्ठ एवं प्रशस्त भाग्य कडा है कि निरन्तर श्रीसीतारामनाम का सङ्कीर्तन होता रहे ।

यातुर्यं सर्वथा विप्र एतमेव विनिश्चितम् ।

नामव्याडरणं नित्यं त्यक्त्वा दुर्वासनादिकम् ॥ ३१० ॥

हे ब्राह्मण श्रेष्ठ ! सभी मडामुषों ने इसी को सभी प्रकार से परम यतुरता निश्चित किया है कि दुर्वासनाओं का त्याग करके नित्य श्रीसीताराम नाम का सङ्कीर्तन किया जाय ।

पुरा मडर्षयः सर्वे रामनामानुकीर्तनात् ।

सिद्धा ब्रह्मसुभेमग्रा याताः श्रीरामसन्ननि ॥ ३११ ॥

श्रीसीताराम के सङ्कीर्तन के प्रभाव से पादले सभी ऋषि मडर्षि सिद्ध एवं ब्रह्मसुभ में मग्न हो गये थे और अन्त में श्रीसीतारामजी के दिव्य धाम में चले गये ।

श्रुतं सङ्कीर्तितं वाऽपि रामनामाभिलेष्टम् ।

दडत्येनांसिसर्वाणि प्रसङ्गात्किमु भक्तिः ॥ ३१२ ॥

सम्पूर्णा अभीष्ट को प्रदान करने वाले श्रीरामनाम का प्रसङ्गवश किया गया सङ्कीर्तन अथवा श्रवण समस्त पापों को जला देता है तब जो लोग भक्तिपूर्वक सङ्कीर्तन या श्रवण करते हैं उनके लिये क्या कडना ।

तत्रैव स्थानान्तरे परमपुरुषवाड्यं वैष्णवान्प्रति -

उसी ग्रन्थ में दूसरी जगड परमपुरुष का वाड्य वैष्णवों के प्रति -

मद् भक्ताः सत्यमेतत्तु वाक्यं मे शृणुताधुना ।

सकृद्दुःखार्थं मन्नाम मत्तुल्यो जायते नरः ॥ ३१३ ॥

हे मेरे भक्तों ! आप लोग इस समय मेरे इस वाक्य को सुनें कि मनुष्य એક બાર મેરે મડુગલમય નામ કા ઉચ્ચારણ કરકે મેરે સમાન પૂજ્ય હો જાતા હૈ ।

રામનામ સમં નામ ન ભૂતો ન ભવિષ્યતિ ।

તસ્માત્તદેવ સફૂર્ત્ય મુચ્યતે કર્મબન્ધનાત્ ॥ ૩૧૪ ॥

શ્રીરામનામ કે સમાન દૂસરા નામ ન હૈ ન પહલે થા ઔર ન આગે હોને વાલા હૈ અતઃ શ્રીરામનામ કા સફૂર્તન કરકે કર્મબન્ધનોં સે મુક્ત હો જાના ચાહિએ ।

લઘુભાગવતે શ્રીવ્યાસ વાક્યં -

લઘુ ભાગવત મેં શ્રીવ્યાસજી કા વાક્ય -

ગોવધઃ સ્ત્રીવધઃ સ્તેયં પાપં બ્રહ્મવધાદિકમ્ ।

શ્રીરામકીર્તનાદેવ શતઘા યાતિ સત્વરમ્ ॥ ૩૧૫ ॥

ગોહત્યા, સ્ત્રી હત્યા, બ્રાહ્મણ હત્યાદિ એવં ચોરી આદિ સે જન્ય જિતને પાપ હૈં વે સારે પાપ શ્રીરામનામ કે સફૂર્તન કરને સે શીઘ્ર હી સૈકડઃોં ખાણોં મેં વિભક્ત હોકર નષ્ટ હો જાતે હૈં ।

કિં તાત વેદાગમ શાસ્ત્રવિસ્તરૈસ્તીર્થાદિકૈરન્યકૃતૈઃ પ્રયોજનમ્ ।

યદાત્મનો વાગ્છસિ મુક્તિકારણં શ્રીરામશમેતિ નિરન્તરં રટ ॥ ૩૧૬ ॥

વેદ એવં આગમ ગ્રન્થોં કે અધ્યયન દૂસરોં કે દ્વારા કિયે ગયે વિભિન્ન તીર્થોં કી યાત્રાઓં સે તુમ્હેં ક્યા પ્રયોજન હૈ? યદિ તુમ અપની આત્મા કી મુક્તિ ચાહતે હો તો નિરન્તર શ્રીરામનામ કા જપ કરો ।

વર્તમાનં ચ યત્પાપં યદ્ભૂતં યદ્ભવિષ્યતિ ।

તત્સર્વં નિર્દહત્યાશુ રામનામાનુકીર્તનાત્ ॥ ૩૧૭ ॥

જિતને પાપ પૂર્વ મેં હો ચુકે હૈં, વર્તમાન મેં હૈં ઔર ભવિષ્ય મેં હોને વાલે હૈં વે સારે પાપ શ્રીરામનામ કે સફૂર્તન સે શીઘ્ર હી જલ જાતે હૈં ।

તે કૃતાર્થઃ મનુષ્યેષુ સુભાગ્યા નૃપ નિશ્ચિતમ્ ।

રામનામ સદાભક્ત્યા સ્મરન્તિ સ્મારયન્તિ ચે ॥ ૩૧૮ ॥

હે રાજન્ ! મનુષ્યોં મેં વે સૌભાગ્યશાલી મનુષ્ય નિશ્ચિત હી કૃતાર્થ હૈં જો સદા સર્વદા ભક્તિપૂર્વક શ્રીરામનામ કા સ્મરણ કરતે હૈં ઔર દૂસરોં સે સ્મરણ કરવાતે હૈં ।

અભક્ષ્યભક્ષણાત્પાપમગમ્યાગમનાશ્ય યત્ ।

તત્સર્વં વિલયં યાતિ સકુદ્રામેતિકીર્તનાત્ ॥ ૩૧૯ ॥

અભક્ષ્ય પદાર્થોં કે ભક્ષણ કરને સે ઔર અગમ્યા સ્ત્રી કે સાથ ગમન કરને સે જો પાપ હોતા હૈ વહ સમ્પૂર્ણ પાપ એક બાર શ્રીરામનામ કે સફૂર્તન સે નષ્ટ હો જાતા હૈ ।

सदा द्रोह परो यस्तु सज्जनानां महीतले ।

जायते पावनो धन्यो रामनाम वदन् सदा ॥ ३२० ॥

पृथ्वीलोक में जो सदा सर्वदा सन्त मહापुरुषों से द्रोह करता है, वह भी सदा सर्वदा श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करता हुआ परम पवित्र अेवं धन्य हो जाता है ।

श्रीरामेति मुद्यायुक्त कीर्त्तयेद्यस्त्वनन्य धीः ।

पावनेन य धन्येन तेनेयं पृथिवी धृता ॥ ३२१ ॥

जो अनन्य बुद्धि से प्रसन्नतापूर्वक श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करता है वह परमपवित्र अेवं धन्य है वैसे पवित्रात्मा के द्वारा यह पृथिवी धारण की गयी है । अर्थात् जैसे ही मહापुरुषों से यह पृथिवी टिकी है ।

प्रभासपुराणे -

प्रभासपुराण में -

मधुरालयमदो मुष्यं नाम सर्वेश्वरेश्वरम् ।

रसनायां स्फुरत्याशु मडारासरसालयम् ॥ ३२२ ॥

भगवान् का वह श्रीरामनाम मडामधुरता का आलय है, समस्त भगवन्नामों में मुष्य हैं, सभी स्वामियों का परमेश्वर हैं और मडारास रस का साक्षान्निवासभूत हैं तथा अपनी अकारण करुणा से साधक की जिह्वा पर स्फुरित होते हैं ।

तत्रैव श्रीभगवद्वाक्यं नारदं प्रति -

वर्डी श्रीभगवान् का वाक्य श्रीनारदं के प्रति -

नाम्नां मुष्यतमं नाम श्रीरामाभ्यं परन्तप ।

प्रायश्चित्तमशेषाणां पापानां मोयकं परम् ॥ ३२३ ॥

हे नित्य शत्रुओं को पीडित करने वाले नारदं ! भगवान् के समस्त नामों में श्रीरामनाम अत्यन्त मुष्य, सम्पूर्ण पापों का मोयक तथा परम प्रायश्चित्त स्वरूप है ।

श्रीरामनाम परमं प्राणत्प्रियतरं मम ।

न हि तस्मात् प्रियः कश्चित् सत्यं जानीहि नारद ॥ ३२४ ॥

हे नारदं ! श्रीरामनाम मुझे प्राणों से भी अत्यन्त प्रिय है श्रीराम नाम से बढकर कोई भी मुझे प्रिय नहीं है यह सत्य जानो ।

नराणां क्षीणपापानां सर्वेषां सुकृतात्मनाम् ।

धृदमेव परं ध्येयं नान्यत्स्वप्नेपि नारद ॥ ३२५ ॥

हे नारदं ! जिनके पाप नष्ट हो गये हैं उनके लिये और सभी सुकृतियों के लिये यह श्रीरामनाम ही परम ध्यान करने योग्य है स्वप्न में भी दूसरा कुछ नहीं है ।

कालिका पुराणे -

कालिकापुराण में -

रामेत्यभिहिते देवे परात्मनि निरामये ।

असङ्ख्यमभतीर्थानां क्व तेषां भवेद्दुष्कृतम् ॥ ३२६ ॥

परम प्रकाश, निरामय अेवं परात्मस्वरूप श्रीरामनाम का जो लोग उच्यारण करते हैं उन लोगों को असङ्ख्य यज्ञ अेवं तीर्थों का क्वल निश्चित ही प्राप्त होता है ।

रामनाम प्रभा द्रिव्या सर्ववेदान्त पारगा ।

वदन्ति नियतं राजन् ज्ञात्वा सर्वोत्तमोत्तमाः ॥ ३२७ ॥

डे राजन् ! सभी शरीरधारियों में सर्वश्रेष्ठ सन्त मडापुरुष निश्चित रूप से यड जानकर कडते हैं कि श्रीरामनाम की प्रभा द्रिव्य अेवं समस्त वेदान्तों से परे हैं ।

सर्वासामेव शक्तीनां कारणं तमसः परम् ।

श्रीरामनाम सर्वेशं सौष्यदं शरणाधिनाम् ॥ ३२८ ॥

सभी शक्तियों का मूल कारण, मोडान्धकार से सर्वथा परे, सबका स्वामी अेवं शरणागत जूवों को सुभशान्ति प्रदान करने वाला श्रीरामनाम है ।

प्राणानां प्राणमित्याडुर्जुवानां जूवनं परम् ।

मन्त्राणां परमं मन्त्रं रामनाम सदा प्रियम् ॥ ३२९ ॥

सन्त मडात्मा कडते हैं कि समस्त प्राणियों का प्राण, समस्त जूवों का परम जूव, सभी मन्त्रों में श्रेष्ठ मन्त्रराज अेवं सदा सर्वदा प्रिय लगने योग्य अेकमात्र श्रीरामनाम ।

देवीभागवते व्यासवाक्यं शुक्रं प्रति -

देवी भागवत में व्यासजु का वाक्य शुक्रदेवजु के प्रति -

जूवानां दृष्टभावानां कृतघ्नानां तथा शुक्र ।

चरितं शृणु भो तात सदा पाप रतात्मनाम् ॥ ३३० ॥

डे तात शुक्र ! तुम दृष्टभाव वाले, कृतघ्न और सदा सर्वदा पाप में रत रहने वाले जूवों के चरित्रों को सुनो ।

श्रीमद्रामेतिनाम्नस्तु प्रभावं वै परात्परम् ।

ज्ञान वैराग्य डीनानां दृश्यं नैव भवेत् कदा ॥ ३३१ ॥

जो जूव सर्वथा ज्ञान वैराग्य से रहित है उन लोगों को कभी भी श्रीरामनाम का परात्पर प्रभाव नहीं द्रिप सकता । तात्पर्य यड है कि ज्ञान, वैराग्य अेवं सत्सङ्ग के द्वारा ही श्रीरामनाम का परत्व अेवं मडत्व का दर्शन होता है ँसके अभाव में नहीं हो सकता है ।

गर्भमध्ये तु यत्प्रोक्तं करुणानिधिमग्रतः ।

सततं कीर्तनं रामनाम कुर्वे समादरात् ॥ ३३२ ॥

गर्भ के मध्य में ज़ुब ने करुणासागर भगवान् के समक्ष प्रतिज्ञा किया था कि मैं निरन्तर आदरपूर्वक श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करूँगा ।

त्यक्त्वा दुराग्रहं सर्वं कुटुम्भादिकं सङ्ग्रहम् ।

करिष्यामि सदा भक्त्या तव नामानुकीर्तनम् ॥ 333 ॥

डे प्रभो ! मैं सभी प्रकार के दुराग्रहों को छोड़कर एवं सुतदारा कुटुम्भादि सङ्ग्रहों को छोड़कर सदा सर्वदा भक्तिपूर्वक आपके नाम का कीर्तन करूँगा ।

तत्सर्वं विस्मृतं ताताधमेनात्मापदारिणा ।

तस्मात्कष्टतरं दुःखं स प्राप्ति पुनः पुनः ॥ 334 ॥

डे तात ! आत्मापदारी अधम ज़ुब ने अपने प्रतिज्ञादि कृत्यों को भूला दिया इसलिये बार-बार वह अत्यन्त कष्टप्रद दुःख प्राप्त करता है । तात्पर्य यह है कि ज़ुब यदि अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार भगवान् का भजन स्मरण करे तो सुभी ज़ुबन ज़ु सकता है लेकिन ज़ुब दुर्भाग्यवश अपनी प्रतिज्ञा भूलकर संसार में हैस जाता है इसीलिये बार-बार दुःखी होता है, जन्म लेता है, मरता है, संसृति चक्र में पड़ता है ।

पद्म पुराण क्रियायोगसारे -

पद्म पुराण क्रियायोगसार में -

स्मरणे रामनामस्तु न काल नियमः स्मृतः ।

भ्रमादुर्व्यार्यमाणोऽपि सर्वं दुःखं विनाशनः ॥ 335 ॥

श्रीरामनाम के स्मरण कीर्तनादि में कालादि का कोष्ठ प्रतिबन्ध नहीं है प्रत्येक अवस्था में हर समय श्रीरामनाम का स्मरण कीर्तन किया जा सकता है भ्रमवश या असावधानता से श्रीरामनाम का उच्चारण करने पर भी समस्त दुःखों का नाश हो जाता है ।

नाम प्रभावं ब्रह्मर्षे रामचन्द्रस्य शाश्वतम् ।

ब्रवीम्यहं समासेन सेतिलासं निशामय ॥ 336 ॥

डे ब्रह्मर्षे ! मैं भगवान् श्रीसीतारामजु के नामों के शाश्वत प्रभाव का इतिहास के साथ सङ्क्षेप में वर्णन करता हूँ-सुनो-पहले किसी सतयुग में रघुनाम का एक वैश्य था उसकी पुत्री बड्डी सुन्दरी थी वह विवाह के पश्चात् विधवा हो गयी और कुछ दिन के बाद में व्यभियार में निरत हो गयी । ससुराल से अपने पिता के घर आकर भी जब वह नीयायरण में प्रवृत्त होने लगी तब उसके पिता ने उसके ठीपर कोष किया और समझाया तब वह अपने पिता के कोप के लय से वहाँ से भागकर किसी शहर में जाकर गणिका के रूप में निवास करने लगी । एक दिन किसी सन्त से पालित तोते को उसने बाजार में देखा तो उसे भरीद कर अपने घर ले आयी ।

रामेति सततं नाम पाठयते सुन्दराक्षरम् ।

रामनाम परम्ब्रह्म सर्ववेदाधिकं महत् ॥ 337 ॥

समस्त पातकध्वंसि स शुक्रस्तत्तदाऽपठत् ।

नामोऽभ्यारणमात्रेण तयोश्च शुङ्गवेश्यथोः ॥ ३३८ ॥

विनष्टमभवत्पापं सर्वमेव सुदारुणम् ।

रामनाम प्रभावेण तौ गतौ धाम्नि सत्त्वरम् ॥ ३३९ ॥

और वड वेश्या तोते को निरन्तर सुन्दर अक्षरों से युक्त श्रीरामनाम को पढःाती रहती थी कि श्रीरामनाम परब्रह्मस्वरूप, समस्त वेदों से श्रेष्ठ, मडान् अवेवं समस्त पापों का नाशक है । उसके बाद वड तोता श्रीरामनाम का पाठ करने लगा । श्रीरामनाम के उच्यारण मात्र से उन दोनों तोता और वेश्या के सभी दारुण पाप नष्ट हो गये । श्रीरामनाम के प्रभाव से वे दोनों शीघ्र ही भगवान् के दिव्य धाम को चले गये ।

ईदृशं रामनामेदं जपस्व द्विजसत्तम ।

अनायासेन तेऽभीष्टं सर्वं सेत्स्यति नान्यतः ॥ ३४० ॥

हे द्विजश्रेष्ठ ! जैसे श्रीरामनाम का सादर जप करो, श्रीरामनाम के जप से बिना परिश्रम के ही तुम्हारे सारे अभीष्ट सिद्ध हो जायेङ्गे । दूसरे साधनों से नहीं ।

विष्णोर्नामानि विप्रेन्द्र सर्ववेदाधिकानि वै ।

तेषां मध्ये तु तत्त्वज्ञ रामनाम परं स्मृतम् ॥ ३४१ ॥

हे विप्रेन्द्र! भगवान् नारायण के सभी नाम वेदों से श्रेष्ठ हैं और हे तत्त्व! भगवान् के उन सभी नामों में श्रीरामनाम सर्वश्रेष्ठ कडा गया है ।

रामेत्यक्षरयुग्मं हि सर्वमन्त्राधिकं द्विज ।

यदुच्यारणमात्रेण पापी याति पराङ्गतिम् ॥ ३४२ ॥

हे द्विजवर्य ! राम ये दो अक्षर सभी मन्त्रों से श्रेष्ठ हैं जिसके उच्यारण मात्र से पापी भी श्रेष्ठ गति को प्राप्त करता है ।

रामनाम प्रभावं हि सर्ववेदैः प्रपूजितम् ।

मडेश अवेवं जानाति नान्यो जानाति वै मुने ॥ ३४३ ॥

सभी वेदों से पूजित श्रीरामनाम के प्रभाव को भगवान् शङ्कर जी जानते हैं, हे मुने ! दूसरा कोई नहीं जानता है ।

विष्णोर्नामसडस्त्राणि पठनाद्यल्लभते ह्यलम् ।

तत्कृवं लभते मर्त्यो रामनाम स्मरन् सङ्गत् ॥ ३४४ ॥

भगवान् विष्णु के अेक डजार नामों के पाठ से जो हल प्राप्त होता है उस हल को मनुष्य अेक बार श्रीरामनाम के स्मरण से प्राप्त कर लेता है ।

तत्रैव धर्मराजवाङ्मयं दूतान् प्रति -

वडी धर्मराजञ्च का वाङ्मय दूतों के प्रति -

दूतः स्मरन्तौ तौ यापि रामनामाक्षरद्वयम् ।

तदा न मे दण्डनीचौ तयोः सीतापतिः प्रभुः ॥ ३४५ ॥

हे दूतों! यहि वे दोनों (तोता और वेश्या) “रा” “म” इन दो अक्षरों का स्मरण करते रहें लो तो वे दोनों मेरे द्वारा
 एङ्गनीय नहीं है श्योङ्गि उन दोनों के स्वामी श्रीसीतारामजु हैं ।

संसारे नास्ति तत्पापं यद्रामस्मरणैरपि ।

न याति सङ्गं सद्यो दृढं शृणुत किङ्करा ॥ ३४६ ॥

हे सेवकों ! तुम लोग निश्चित सुनो कि संसार में ऐसा कोई पाप नहीं है जो श्रीरामनाम के स्मरण से तत्काल नष्ट
 न हो जाय ।

ये मानवाः प्रतिदिनं रघुनन्दनस्य

नामानि घोरदृशितौघविनाशकानि ।

भक्त्याऽर्यन्ति विबुध प्रवर्षितस्य

ते पापिनोऽपि हि भटा मम नैव एङ्ग्या ॥ ३४७ ॥

हे मेरे भटो! जो मनुष्य श्रेष्ठ विद्वानों से पूजित श्रीसीताराम जु के, भयङ्करपापसमूहों के नाशक नामों का प्रतिदिन
 भक्तिपूर्वक अर्चन करते हैं अर्थात् श्रीरामनाम का जप करते हैं वे पापी भी मेरे द्वारा एङ्ग के योग्य नहीं है ।

तस्माद्धि सर्व पुण्याढ्यौ गणिका स शुको भटाः ।

पूजनीयौ च तौ नित्यमस्माभिर्नात्र संशयः ॥ ३४८ ॥

धसविभे हे भटो ! वल गणिका और तोता ये दोनों पुण्यात्मा हैं और लम लोगों के द्वारा नित्य पूज्य हैं धसमें
 संशय नहीं है ।

तावत्तिष्ठन्ति पापानि देहेषु देहिनां वर ।

रामरामेति यावद् न स्मरन्ति सुभ प्रदम् ॥ ३४९ ॥

हे देहधारियों में श्रेष्ठ मुनिवर! ज्यों के शरीरों में तभी तक पाप निवास करते हैं जब तक वल सुभ प्रदान करने
 वाले श्रीरामनाम का उच्चारण व स्मरण नहीं करता है ।

श्राद्धे च तर्पणे चैव बलिदाने तथोत्सवे ।

यज्ञे दाने व्रते चैव देवताराधनेऽपि च ॥ ३५० ॥

अन्येष्वपि च कार्येषु वैदिकेषु विद्यक्षाणैः ।

स स्मरेद्यत्कलं प्रेप्सू रामनामेति भक्तितः ॥ ३५१ ॥

श्राद्ध, तर्पण, बलिदान, उत्सव, यज्ञ, दान, व्रत, देवताराधन एवं विद्वानों के करने योग्य दूसरे सभी वैदिक कार्यों
 के अनुष्ठान के समय जिस इल की प्राप्ति की इच्छा हो उसके लिये भक्तिपूर्वक श्रीरामनाम का स्मरण करें ।

मृत्युकाले द्विजश्रेष्ठ रामरामेति यस्मरेत् ।

स पापात्माऽपि परमं मोक्षमाप्नोति मानवः ॥ ३५२ ॥

हे द्विजश्रेष्ठ! मृत्यु के समय में जो राम राम ऐसा स्मरण करता है वल पापी मनुष्य भी परम मोक्ष को प्राप्त करता
 है ।

रामेति नाम यात्रायां ये स्मरन्ति मनीषिणः ।

सर्वसिद्धिर्भवेत्तेषां यात्रायां नात्र संशयः ॥ ३५३ ॥

जो मनीषी लोग यात्रा के समय राम नाम का स्मरण करते हैं यात्रा में उन लोगों को सभी सिद्धि प्राप्त हो जाती है अर्थात् उनकी यात्रा मङ्गलमय एवं सफल होती है इसमें कोई संशय नहीं है ।

राजद्वारे तथा दूर्गे विदेशे दस्यु सङ्गमे ।

दुःस्वप्नप्रदश्चिन्ने चैव ग्राहपीडासु वै मुने ॥ ३५४ ॥

अरण्ये प्रान्ते वाऽपि श्मशाने च भयानके ।

रामनाम स्मरेत्तस्य विधन्ते नापदो द्विज ॥ ३५५ ॥

हे मुने! राजद्वार, डिला, विदेश, लुटेरों के समक्ष, दुःस्वप्न के दिग्भने पर, किसी ग्राह से पीडित होने पर, जङ्गल, मैदान और भयानक श्मशानादि स्थानों में हे द्विजों! जो रामनाम का स्मरण करता है उसके समक्ष कोई आपत्ति नहीं आती है ।

औत्पातिके मडाघोरे राजरोगादिके भये ।

रामनाम स्मरन् मर्त्यो लभते नाशुभं क्वचित् ॥ ३५६ ॥

मडा उत्पात के समय एवं मडा भयङ्कर यक्ष्मादि राजरोग के भय के समय जो रामनाम का स्मरण करता है उसे कहीं भी अशुभ की प्राप्ति नहीं होती है ।

रामनाम द्विजश्रेष्ठ सर्वाशुभ निवारणम् ।

कामदं मोक्षदं चैव स्मर्तव्यं सततं बुधैः ॥ ३५७ ॥

हे द्विजश्रेष्ठ! श्रीरामनाम समस्त अशुभों का निवारक, कामनाओं को पूर्ण कर देने वाला और मोक्ष प्रदान करने वाला है अतः विद्वानों को निरन्तर श्रीरामनाम का स्मरण करना चाहिए ।

रामनामेति विप्रर्षे यस्मिन्न स्मर्यते क्षणे ।

क्षणः स एव व्यर्थस्स्यात्सत्यमेव मयोच्यते ॥ ३५८ ॥

हे ब्रह्मर्षे! मैं सत्य ही कहता हूँ कि जिस क्षण में श्रीरामनाम का स्मरण नहीं होता है वह क्षण व्यर्थ ही है ।

स्मरन्ति रामनामानि नावसीदन्ति मानवाः ।

सत्यं वदामि ते नित्यं मडामङ्गल कारणम् ॥ ३५९ ॥

हे महात्मन्! मैं आपसे कहता हूँ कि श्रीरामनाम नित्य मडामङ्गलकारी है जो मनुष्य श्रीरामनाम का स्मरण करते हैं वे दुःखी नहीं होते हैं ।

जन्मकोटि दुरित क्षयमिच्छुस्सम्पदं च लभते भुवि मर्त्यः ।

रामनाम सततं यदि भक्त्या मोक्षदायि मधुरं स्मरतु स्म ॥ ३६० ॥

जो मनुष्य अपने करोड़ों जन्मों के पापों को नष्ट करना चाहता है और पृथिवी पर सम्पत्ति की प्राप्ति करना चाहता है उसे मोक्ष देने वाले मधुर श्रीरामनाम का निरन्तर भक्तिपूर्वक स्मरण करना चाहिए ।

अहो यस्मिन् जिवानां दृष्टानां पाप कर्मणात् ।

रामेति मुक्तिर्दं नाम न स्मरन्ति नराधमा ॥ ३६१ ॥

दृष्ट पाप परायण जिवों का यस्मिन् आश्चर्यजनक है कि वे नराधम मुक्ति देने वाले श्रीरामनाम का स्मरण नहीं करते हैं ।

अहर्निशं नाम परात्परेश्वरं जपन्ति ये ते सुभदा सदा शिवाः ।

तेषां पदस्पर्शरजोभिषेकात् सदैव पूतः किल पापिनो द्विजाः ॥ ३६२ ॥

हे ब्राह्मणों! जो लोग परात्परेश्वर श्रीरामनाम का दिन रात जप करते हैं वे लोग सबको सुभ देने वाले अर्थात् कल्याणस्वरूप हैं उनका स्पर्श धूलि से अभिषेक करने पर पापी भी निश्चित ही सदा सर्वदा के लिये पवित्र हो जायेगा ।

सहस्रास्थेन शेषोऽपि रामनाम स्मरत्यलम् ।

तत्राभावेण ब्रह्माण्डं धृत्वा क्लेशं बिना द्विज ॥ ३६३ ॥

हे द्विजश्रेष्ठ! भगवान् शेष भी अपने हजारों भुजों से अतिशय रूप से अपनी ही हजार रसनाओं से निरन्तर श्रीरामनाम का जप करते हैं और उसी के प्रभाव से बिना कष्ट के सम्पूर्णा ब्रह्माण्ड का भार धारण करते हैं ।

वक्तुं श्रमो न यात्वोऽपि श्रोतुमत्यन्त मोददम् ।

तथापि रामनामेदं न स्मरन्ति दुराशयः ॥ ३६४ ॥

श्रीरामनाम को कलने में थोड़ा भी परिश्रम नहीं है और सुनने पर अत्यन्त आनन्द प्रदान करने वाला है फिर भी दृष्ट दृष्टय जिव इस श्रीरामनाम का स्मरण नहीं करता है ।

अत्यन्त दुःखलभ्योऽपि सुमुक्तिर्जन्म कोटिभिः ।

लभ्यते रामनामैव कर्मास्ति किमतः परम् ॥ ३६५ ॥

करोड़ों जन्मों में अत्यन्त दुःख से प्राप्त होने वाली मुक्ति श्रीरामनाम से सज्ज में ही सुलभ हो जाती है फिर श्रीरामनाम के जप से बढकर दूसरा कौन श्रेष्ठकर्म होगा? अर्थात् कोई नहीं ।

रामनामामृतं स्वाद् कथं वाया वदामि ते ।

स्मरणादेव ज्ञातव्यं सर्वदा बुध सत्तमैः ॥ ३६६ ॥

श्रीरामनामरूपी अमृत कितना सुस्वादु है इसको हम अपनी तुच्छ वाणी से तुमसे क्या कहें? श्रेष्ठ विद्वानों को सदा सर्वदा श्रीरामनाम का स्मरण करके श्रीरामनाम की श्रेष्ठता व माधुर्यता को समझ लेना चाखिये अर्थात् स्वाद वाणी का विषय नहीं अनुभव का विषय होता है और सबका अनुभव अपना-अपना होता है अतः श्रीरामनामरूपी अमृत का स्वाद स्वतः जप करके अनुभव कर लेना चाखिये ।

सर्वं कृत्यं कृतं तेन येनोक्तं नाम मुक्तिदम् ।

नातः परतरं वस्तु क्वचित् सन्दृश्यते द्विज ॥ ३६७ ॥

हे द्विजवर! जिस व्यक्ति ने मुक्तिदाता श्रीरामनाम का उच्चारण कर लिया उसने समस्त कर्तव्य कर्मों का अनुष्ठान कर लिया क्योंकि श्रीरामनाम से बढकर कोई भी दूसरी वस्तु कहीं नहीं दिखायी देती है ।

यग्वश्रीरामनामस्तु सुप्रतापं लृष्टिस्थले ।

नायाति सम्भ्रमन्तीह विमुग्धाः सर्वयोनिषु ॥ ३६८ ॥

जब तक श्रीरामनाम का सुन्दर प्रताप लृद्य में व्यवस्थित नहीं होता है अर्थात् जब तक श्रीरामनाम के प्रति पूर्ण समर्पण नहीं हो जाता है तब तक मनुष्य भगवान् से विमुग्ध होकर सही योनियों में भटकते रहते हैं ।

रामनाम जप तत्परो जनो यत्कलं लभति तन्निरुपणो ।

याति नैव श्रमतोऽपि कदाचिच्छिव शिवा श्रुति शेष गणेशाः ॥ ३६९ ॥

श्रीरामनाम का जो तत्परता से जप करता है उसे जो फल प्राप्त होता है उसके वर्णन करने में भगवान् शङ्कर, पार्वती, वेद, अनन्त अर्थात् गणेशजी भी परिश्रम करने पर भी कहीं भी समर्थ नहीं है अर्थात् ये लोग भी उस फल का वर्णन नहीं कर सकते हैं ।

मानुषं जन्म सम्प्राप्य यैर्नोक्तमक्षरद्वयम् ।

ते पिशाचास्तु याऽडालस्सर्व प्रेत प्रपूजिताः ॥ ३७० ॥

सुन्दर मानव शरीर को प्राप्त करके भी जिन लोगों ने श्रीरामनाम के दो अक्षर का उच्चारण नहीं किया वे सब लोग सही प्रेतात्माओं से पूजित पिशाच अर्थात् याऽडाल हैं ।

आदिपुराणो श्रीकृष्णवाक्यमर्जुनं प्रति-

आदिपुराण में श्रीकृष्ण का वाक्य अर्जुन के प्रति-

रामनाम सदा ग्राही रामनाम प्रियः सदा ।

भक्तिस्तस्मै प्रदातव्या न य मुक्तिः कदाचन ॥ ३७१ ॥

हे अर्जुन ! जो सदा सर्वदा श्रीरामनाम का उच्चारण करते हैं और जिन्हें श्रीरामनाम प्रिय है उन लोगों को मैं भक्ति प्रदान करता हूँ कभी भी भूलकर भी मुक्ति नहीं देता हूँ ।

गायन्ति रामनामानि वैष्णवाश्च युगे युगे ।

त्यक्त्वा य सर्वकर्माणि धर्माणि य कपिध्वज ॥ ३७२ ॥

हे अर्जुन ! प्रत्येक युग में वैष्णवजन सही कर्मों और धर्मों को छोडकर श्रीरामनाम का गान करते रहते हैं ।

रामनामैव नामैव रामनामैव डेवलम् ।

गतिस्तेषां गतिस्तेषां गतिस्तेषां सुनिश्चितम् ॥ ३७३ ॥

उन वैष्णवों की निश्चित रूप से श्रीरामनाम ही परम गति है अर्थात् वैष्णवों का जुवन सर्वस्व श्रीरामनाम ही है ।

श्रद्धया डेलया नाम वदन्ति मनुजा भुवि ।

तेषां नास्ति लयं पार्थ रामनामप्रसादतः ॥ ३७४ ॥

डे पृथा पुत्र अर्जुन! जो मनुष्य श्रद्धा से अथवा अनादर भाव से भी पृथिवी पर श्रीरामनाम का उच्चारण करते हैं, श्रीरामनाम भडाराज की कृपा से उन्हें कहीं भी डिसी भी प्रकार का भय नहीं है ।

रामनाम रता यत्र गच्छन्ति प्रेम सम्प्लुताः ।

भक्तान्स्ताननुगच्छन्ति मुक्तयः स्तुतिभिस्सह ॥ ३७५ ॥

भगवत्प्रेमरस में भीने डुअे श्रीरामनामानुरागी भक्तजन जहाँ-जहाँ जाते हैं वहाँ-वहाँ पाँयों प्रकार की मुक्तियाँ विभिन्न प्रकार से स्तुति करती डुछ उन भक्तों का अनुगमन करती है ।

मानवा ये सुधासारं रामनाम जपन्ति डि ।

ते धन्या मृत्यु सन्नासरडिता रामवल्लभा ॥ ३७६ ॥

जो मानव अत्यन्त सुधासागर स्वरूप श्रीरामनाम का धारा प्रवाड जप करते हैं । वे लोग धन्य, मृत्यु डे भय

से रडित अेवं भगवान् श्रीराम डे अत्यन्त प्रिय हैं ।

नामैव परमा मुक्तिर्नामैव परमा गतिः ।

नामैव परमा शान्तिर्नामैव परमा मतिः ॥ ३७७ ॥

नामैव परमा भक्तिर्नामैव परमा धृतिः ।

नामैव परमा प्रीतिर्नामैव परमा स्मृतिः ॥ ३७८ ॥

नामैव परमं पुण्यं नामैव परमं तपः ।

नामैव परमो धर्मो नामैव परमो गुरुः ॥ ३७९ ॥

नामैव परमं ज्ञानं नामैव चाभिलं जगत् ।

नामैव ज्वनं जन्तोर्नामैव विपुलं धनम् ॥ ३८० ॥

नाव जगतां सत्यं नाव जगतां प्रियम् ।

नामैव जगतां ध्यानं नामैव जगतां परम् ॥ ३८१ ॥

नामैव शरणं जन्तोर्नामैव जगतां गुरुः ।

नामैव जगतां भीजं नामैव पावनं परम् ॥ ३८२ ॥

डे अर्जुन ! श्रीरामनाम डी परम मुक्ति, परम गति, परम शान्ति, परम बुद्धि, परम भक्ति, परम धैर्य, परम प्रेम, परम स्मृति, परम पुण्य, परम तप, परम धर्म, परम गुरु, परम ज्ञान, सम्पूर्णा जगत्, जन्तुओं का ज्वन, पर्याप्त धन, जगत् में सत्य पडार्थ, जगत् में अेकमात्र प्रेमास्पड, जगत् में अेक मात्र ध्यान का विषय, जगत् से सर्वडा परे, ज्वमात्र का अेकमात्र शरण, जगद्गुरु जगत् का मूल कारण परम पवित्र है ।

रामनाम रता ये य ते वै श्रीरामभावुकाः ।

तेषां सन्दर्शनाडेव भवेद्भक्ती रसात्मिका ॥ ३८३ ॥

जो लोग निरन्तर श्रीरामनाम डे जप में निरत है वे निश्चय डी श्रीरामजु डे भावुक भक्त हैं उन भक्तों डे दर्शन से डी रसात्मिका भक्ति प्रकट डो जाती है ।

कामादि गुण संयुक्ता नाममात्रैक बान्धवाः ।

प्रीतिं कुर्वन्ति ते पार्थ न तथा जित षड्गुण ॥ ३८४ ॥

हे पार्थ ! जो लोग कामकोधादि विकारों से युक्त होते दुःखे भी श्रीरामनाम को ही अपना सर्वस्व मानते हैं वे लोग जिस प्रकार मुझसे प्रेम करते हैं वैसा प्रेम कामकोधादि दोषों को जितने वाले लोग नहीं कर पाते हैं ।

तं देशं पतितं मन्ये यत्र नास्ति सु वैष्णवः ।

रामनाम परो नित्यं परानन्द विवर्द्धनः ॥ ३८५ ॥

हे पार्थ ! मैं उस देश को पतित (महानिन्दनीय) मानता हूँ जहाँ नित्य परमानन्द को बढ़ाने वाले, श्रीरामनाम परायण सुन्दर वैष्णव नहीं रहते हैं ।

रामनाम रता जुवा न पतन्ति कदायन ।

धन्द्राद्यास्सम्पत्तन्त्यन्ते तथा यान्येऽधिकारिणः ॥ ३८६ ॥

श्रीरामनाम के जप में निरत जुवों का कभी भी पतन नहीं होता है । श्रीरामनामानुरागियों के अतिरिक्त धन्द्रादि देवताओं तथा दूसरे अधिकारियों का अन्त में पतन निश्चित है ।

राम स्मरण मात्रेण प्राणान्मुञ्चन्ति ये नराः ।

इलं तेषां न पश्यामि भजामि तांश्च पार्थिव ॥ ३८७ ॥

हे राजन् ! जो मनुष्य श्रीरामनाम का स्मरण मात्र करके अपने प्राणों को छोड़ता है उनके इल को मैं नहीं देखता हूँ और मैं उनका भजन करता हूँ ।

नाम स्मरण मात्रेण नरो याति निरापदम् ।

ये स्मरन्ति सदा रामं तेषां ज्ञानेन किं इलम् ॥ ३८८ ॥

श्रीरामनाम के स्मरणमात्र से मनुष्य आपत्ति शून्य पद को प्राप्त करता है, जो लोग सदा सर्वदा श्रीरामनाम का स्मरण करते हैं उनको ज्ञान से क्या प्रयोजन है?

नामैव जगतां बन्धुनमैव जगतां प्रभुः ।

नामैव जगतां जन्म नामैव सयरायरम् ॥ ३८९ ॥

श्रीरामनाम ही सम्पूर्ण जगत् का बन्धु है वही सबका स्वामी है वही सबका उत्पत्ति स्थान है यर अयर सम्पूर्णजगत् वही है ।

नामैव धार्यते विश्वं नामैव पात्यते जगत् ।

नामैव नीयते नाम नामैव भुज्यते इलम् ॥ ३९० ॥

सम्पूर्ण विश्व श्रीरामनाम के द्वारा ही धारण किया जा रहा है । सम्पूर्ण जगत् नाम के द्वारा ही पालित है नाम के द्वारा ही नाम ले जाया जाता है । नाम के द्वारा ही इल भोगा जाता है ।

नामैव गृह्यते नाम गोप्यं परतरात्यरम् ।

नामैव कार्यते कर्म नामैव नीयते इलम् ॥ ३९१ ॥

अत्यन्त गोपनीय अेवं परात्पर श्रीरामनाम के द्वारा डी नाम ग्रहण डिया जाता डै । नाम के द्वारा डी सारे कर्म कराये जाते डैं और नाम के द्वारा डी डल प्राप्त कराये जाते डैं ।

नामैव याजशास्त्राणां तात्पर्यार्थमुत्तमम् ।

नामैव वेद सारांशं सिध्दान्तं सर्वदा शिवम् ॥ ३८२ ॥

समस्त वेदाङ्ग शास्त्रों का उत्तम तात्पर्यार्थ श्रीरामनाम डी डै और समस्त वेदों का सारांश सिध्दान्त सर्वदा कल्याणस्वरूप श्रीरामनाम डी डै ।

नामैव नीयते मेधा परे ब्रह्मणि निश्चला ।

नामैव यञ्चलं चित्तं मनस्तस्मिन्प्रलीयते ॥ ३८३ ॥

श्रीरामनाम से डी निश्चला बुद्धि परब्रह्म में डो पाती डै और श्रीरामनाम के जप से डी यञ्चलचित्त व मन परब्रह्म में विलीन डोता डै ।

श्रीरामस्मरणेनैव नरो याति पराङ्गतिम् ।

सत्यं सत्यं सदा सत्यं न जाने नामजं डलम् ॥ ३८४ ॥

श्रीरामनाम के स्मरण से डी मनुष्य सर्वश्रेष्ठ गति को प्राप्त करता डै यड बात सत्य अेवं सदासत्य डै डि श्रीरामनाम से डोने वाले डल को मैं नडी जानता डूँ ।

रामनाम प्रभावोऽयं सर्वोत्तम उदाहृतः ।

समासेन तथा पार्थ वक्ष्येऽहं तव डेतवे ॥ ३८५ ॥

डे पार्थ ! श्रीरामनाम का यड सर्वोत्तम प्रभाव कडा गया और तुभडारे लिअे सङ्केप से मैं पुनः कडूँगा ।

न नाम सदृशं ध्यानं न नाम सदृशो जपः ।

न नाम सदृशस्त्यागो न नाम सदृशी गतिः ॥ ३८६ ॥

न नाम सदृशं तीर्थं न नाम सदृशं तपः ।

न नाम सदृशं कर्म न नाम सदृशः शमः ॥ ३८७ ॥

न नाम सदृशी मुक्तिर्न नाम सदृशः प्रभुः ।

ये गृह्णन्ति सदा नाम त अेव जित षड्गुणा ॥ ३८८ ॥

श्रीरामनाम के सदृश न डोड ध्यान डै, न डोड जप डै, न डोड त्याग डै, न डोड गति डै, न डोड तीर्थ डै, न डोड शम (मनोनिग्रह) डै, न डोड मुक्ति डै, न डोड समर्थ डै, जो लोग सदा सर्वदा श्रीरामनाम का उच्यारण करते डैं वास्तव में वे लोग डी छः विकारों को जितने वाले डैं ।

कुर्वन् वा कारयन्वाऽपि रामनामजपस्तथा ।

नीत्वा कुल सडस्राणि परन्धामाधिगच्छति ॥ ३८९ ॥

जो डोड श्रीरामनाम का जप करते डैं अथवा जप करवाते डैं वे डजारों कुल कुटुम्बियों के साथ भगवान् के परम धाम को जाते डैं ।

नामैव नीयते पुण्यं नामैव नीयते तपः ।

नामैव नीयते धर्मो जगद्वैतव्यरायरम् ॥ ४०० ॥

श्रीरामनाम से ही पुण्य प्राप्त किया जाता है, तपस्या प्राप्त होती है, धर्म प्राप्त किया जाता है, यह यरायर जगत् श्रीरामनाम से ही पालित एवं व्यवस्थित है ।

रामनाम प्रभावेण सर्व सिद्धीश्वरो भवेत् ।

विश्वासेनैव श्रीरामनाम जायं सदा बुधैः ॥ ४०१ ॥

श्रीरामनाम के प्रभाव से साधक सभी सिद्धियों का स्वामी हो सकता है । अतः विद्वानों को सदा विश्वासपूर्वक श्रीरामनाम का जप करना चाहिए ।

शान्तो दान्तः क्षमाशीलो रामनाम परायणः ।

असङ्ख्य कुलजानां वै तारणे सर्वदा क्षमः ॥ ४०२ ॥

जो शान्त है अर्थात् जिन्होंने अपने मन को वश में कर लिया है और दान्त हैं अर्थात् जो धन्द्रियों को वश में कर लिया है, जो क्षमाशील हैं और जो रामनाम परायण है वे लोग निश्चय ही असङ्ख्य कुल में उत्पन्न ज्यों को भवसागर से तारने में सदा समर्थ होते हैं ।

ये नाम युक्ता विचरन्ति भूमौ त्यक्त्वाऽर्थकामान्विषयांश्च भोगान् ।

तेषां च भक्तिः परमा च निष्ठा सदैव शुद्धा शुभगा भवन्ती ॥ ४०३ ॥

जो लोग अर्थ, काम, विषयों और भोगों का त्याग करके श्रीरामनाम के जप स्मरण से युक्त होकर पृथिवी पर विचरण करते हैं उनकी भक्ति और परम निष्ठा सदैव शुद्ध और सुन्दर होती है ।

स्मरन्थो रामनामानि त्यक्त्वा कर्मापि चाभिलम् ।

स पूतः सर्वपापेभ्यः पद्मपत्रमिवाभ्रसा ॥ ४०४ ॥

जो सम्पूर्णा कर्मों का त्याग करके श्रीरामनाम का स्मरण करता है वह समस्त पापों से पवित्र हो जाता है जैसे कमल का पत्र जल में रहकर भी जल से अलग रहता है वैसे ही वह संसार में रहकर भी संसार से अलग रहता है ।

त्यक्त्वा श्रीरामनामानि कर्म कुर्वन्ति येऽधमाः ।

तेषां कर्माणि बन्धाय न सुभाय कदायन ॥ ४०५ ॥

जो लोग श्रीरामनाम का त्याग करके दूसरे कर्मों का अनुष्ठान करते हैं वे सब अधम है उनके सारे कर्म बन्धन के डेटे हैं कभी भी सुभ देने वाले नहीं है ।

यस्य चेतसि श्रीराम नाम माङ्गलिकं परम् ।

स जित्वा सकलाल्लोकान् परन्धाम परित्प्रजेत् ॥ ४०६ ॥

जिसके चित्त में सदा सर्वदा परम मङ्गलमय श्रीरामनाम विराजमान है वह सभी लोकों को जितकर भगवान् के दिव्य धाम को प्राप्त करता है ।

नाम युक्ता जना पार्थ जात्यन्तर समन्विताः ।

प्रीतिं कुर्वन्ति श्रीरामं न तथा नष्ट चङ्गुणाः ॥ ४०७ ॥

हे पार्थ ! नीच जाति में उत्पन्न भक्त भी श्रीरामनाम से युक्त होकर भगवान् श्रीराम से जैसी प्रीति करते हैं वैसी प्रीति उत्तम कुल में जन्म लेने वाले कामादि विकारों को ज़ुतने वाले ब्राह्मणादि नहीं करते हैं श्रीरामनाम

से रक्षित होने से ।

गायन्ति रामनामानि सततं ये जना भुवि ।

नमस्तेभ्यो नमस्तेभ्यो नमस्तेभ्यः पुनः पुनः ॥ ४०८ ॥

जो लोग पृथिवी पर निरन्तर श्रीरामनाम का गान करते रहते हैं उनको नमस्कार है, उनको नमस्कार है उनको बारम्बार नमस्कार है ।

रामनामाश्रया ये वै भावुकाः प्रेम सम्प्लुताः ।

ते कृतार्थास्सदा तात सत्यं सत्यं न यान्यथा ॥ ४०९ ॥

हे तात ! जो भावुक भगवत्प्रेमरस में निमग्न होकर श्रीरामनाम का आश्रय लेते हैं वे लोग सदा सर्वदा के लिये कृतार्थ हैं मेरी वाणी अन्यथा नहीं है सत्य है सत्य है ।

एति विज्ञापितं तात स्वया बुद्धया विधारय ।

रामनाम प्रसादेन सर्वं सुभमवाप्स्यसि ॥ ४१० ॥

हे तात अर्जुन ! मेरे द्वारा विज्ञापित रहस्य को अपनी बुद्धि से विशेष रूप से निर्धारण करो एतना तो सच है कि श्रीरामनाम की कृपा से तुम सभी सुखों को प्राप्त करोगे ।

तां नामगाथां विचरन्ति भूमौ गीत्वा सदा ते पुरुषाः सुधन्यष्टी ।

ये नामगाथा परतत्त्वनिष्ठास्ते धन्य धन्याः भुवि कृत्य पुण्याः ॥ ४११ ॥

जो लोग श्रीरामनाम की मछिमा का गान करते हुए पृथिवी पर विचरण करते हैं वे लोग सदासर्वदा के लिये धन्य हैं और जो लोग श्रीरामनाम के परत्व एवं महत्व में निष्ठा रखने वाले हैं वे लोग पृथिवी में धन्यातिधन्य हैं सदा कृतार्थ रूप हैं ।

रामनाम जनासक्तो रामनाम जनप्रियः ।

स पूतो निर्विकल्पश्च सर्वपाप बहिर्भुजः ॥ ४१२ ॥

श्रीरामनामानुरागीजनों में जो आसक्त है और श्रीरामनामानुरागीजन जिसे प्रिय हैं वही परम पवित्र है सभी कल्पनाओं से रक्षित है, एवं समस्त पापों से मुक्त है ।

रामनाम प्रसङ्गेन ये जपन्तीह्यर्जुन ।

तेऽपि ध्वस्ताप्लिलाधौड्घा यान्ति रामास्पदं परम् ॥ ४१३ ॥

हे अर्जुन ! इस संसार में जो लोग बिना श्रद्धा के प्रसङ्गवश श्रीरामनाम का जप किया करते हैं उनके भी सारे पाप नष्ट हो जाते हैं और वे भी भगवान् के दिव्य धाम को प्राप्त करते हैं ।

घोषयेन्नाम निर्वाण कारणं यस्त्वनन्य धीः ।

तस्य पुण्यद्वलं पार्थ वक्तुं कैः शक्यते भुवि ॥ ४१४ ॥

हे पार्थ ! अनन्यबुद्धि जो भक्त भोक्षकारण श्रीरामनाम का उच्चारण करता है उसके पुण्यद्वल कावर्णन पृथिवी पर कौन कर सकता है ।

तस्मान्नामानि कौन्तेय भजस्व दृढ येतसा ।

रामनाम समायुक्तास्ते मे प्रियतमास्सदा ॥ ४१५ ॥

हे कुन्ती पुत्र अर्जुन ! तुम दृढचित्त होकर भगवान् के नामों का भजन करो । जो लोग श्रीरामनाम से समायुक्त हैं वे मुझे सदा सर्वदा अत्यन्त प्रिय हैं ।

सततं नाम गायन्ति विनिर्विण्णैर्न येतसा ।

तेषां मध्ये सदा वासः श्रीरामस्य विशेषतः ॥ ४१६ ॥

जो लोग भेद रहित चित्त से निरन्तर श्रीरामनाम का गान करते हैं उन लोगों के मध्य में सदासर्वदा विशेष रूप से श्रीरामजी निवास करते हैं ।

श्रद्धया डेलया वाऽपि गायन्ति नाम मङ्गलम् ।

तेषां मध्ये परं नाम वसेन्नित्यं न संशयः ॥ ४१७ ॥

जो श्रद्धापूर्वक अथवा अनादरभाव से मङ्गलमङ्गलस्वरूप श्रीरामनाम का गान करते हैं उनके मध्य में नित्य श्रीरामनाम मङ्गल निवास करते हैं इसमें संशय नहीं है ।

न तत्र विस्मयः कार्यो भवता रामनाम्नि य ।

सत्यं वदामि ते पार्थ प्रियाय मम यात्मने ॥ ४१८ ॥

हे अर्जुन ! श्रीरामनाम के परत्व एवं महत्व के विषय में तुम आश्चर्य मत करना, तुम मुझे प्रिय एवं मेरी आत्मा को इसलिखे तुमसे सत्य कहता हूँ ।

यन्नाम स्मरतो नित्यं मडा ङ्यज्ञान बन्धनम् ।

छिद्यते याश्रमेणैव तमडं राघवं भजे ॥ ४१९ ॥

जिस भगवान् श्रीराघवेन्द्र के नाम का नित्य स्मरण करने से बिना श्रम के ही मडान् अज्ञान का बन्धन भी छिन्न भिन्न हो जाता है उन भगवान् श्रीराघवेन्द्र का मैं भजन करता हूँ ।

श्रद्धया परया युक्तो रामनाम परायणः ।

करोति जानकीजानिस्तस्य चिन्तां पुनः पुनः ॥ ४२० ॥

जो सर्वोद्दृष्ट श्रद्धा से युक्त होकर श्रीरामनाम के परायण हैं अर्थात् भजन में लगे रहते हैं उसकी बार-बार चिन्ता श्रीजानकीनाथ भगवान् करते हैं ।

अशेष पातकैर्युक्तः सर्वदोष परिष्कृतः ।

स पूतः सर्वपापेभ्यो यस्य नाम परन्तप ॥ ४२१ ॥

डे शत्रुओं को तपाने वाले अर्जुन ! जो सम्पूर्णा पापों से युक्त हैं और जो सभी प्रकार के दोषों में निमग्न हैं वह भी सभी पापों से मुक्त होकर परम पवित्र हो जाता है जिसका श्रीरामनाम से सम्बन्ध हो जाता है अर्थात्

जो श्रीरामनाम को अपना मानकर भजन करने लगता है ।

रामनाम सदा प्रेम्णा संस्मरामि जगद्गुरुम् ।

क्षयं न विस्मृतं याति सत्यं सत्यं वयो मम ॥ ४२२ ॥

मैं सदा सर्वदा प्रेम से जगद्गुरु श्रीरामनाम का स्मरण करता हूँ, क्षय भर भी नहीं भूलता हूँ यह मेरी वाणी

सत्य है सत्य है ।

पर निन्दा समायुक्तः परदार परायणः ।

स पूतः सर्वपापेभ्यो यस्य नाम परन्तप ॥ ४२३ ॥

हे परन्तप अर्जुन ! जो दूसरों की निन्दा करने में लगे हुए हैं और जो परस्त्री गमन करने वाले हैं वे भी सभी पापों से मुक्त हो जाते हैं, जिसका श्रीरामनाम से सम्बन्ध हो जाता है ।

पर छिंसा समायुक्तो लोभ मोह समाकुलः ।

सः पूतः सर्वपापेभ्यो यस्य नाम्नि सदा रुचिः ॥ ४२४ ॥

जो दूसरों की छिंसा करने में लगे हुए हैं और जो लोभ मोह से सम्यक् व्याकुल हैं वे भी सभी पापों से मुक्त होकर परम पवित्र हो जाते हैं, जिनकी श्रीरामनाम में सदा रुचि बनी रहती है ।

अशेष पातकैर्व्याप्ताः स्वधर्म परिवर्जिताः ।

अते तरन्ति पापिष्ठा रामनाम प्रसादतः ॥ ४२५ ॥

जो सम्पूर्णा पापों से पूर्णतया व्याप्त हैं और जो अपने धर्म कर्म से शून्य है जैसे पापिष्ठ भी श्रीरामनाम की कृपा से तर जाते हैं ।

तिष्ठन्ति रामनामानि तिष्ठन्ति वदनानि य ।

तथापि नरकमूढाः पतन्तीत्यद्भुतं मडत् ॥ ४२६ ॥

भगवान् श्रीराम के सुन्दर-सुन्दर नाम विद्यमान हैं और सुन्दर मुण्ड माण्डल भी विराजमान है फिर भी भूर्भ लोग नरक में गिर रहे हैं यह मछान् आश्चर्य है ।

गायन्ति रामनामानि कर्म कुर्वन्ति यापिलम् ।

स याति परमं स्थानं रामेण सह मोदते ॥ ४२७ ॥

जो सारे कर्मों को करते हैं और श्रीरामनाम का गान करते हैं वे लोग दिव्य धाम में जाते हैं और वहाँ श्रीरामजी के साथ आनन्द का अनुभव करते हैं ।

विसृज्य रामनामानि कर्म कुर्वन्ति यापिलम् ।

डिमाश्चर्यं डिमाश्चर्यं डिमाश्चर्यं धनञ्जय ॥ ४२८ ॥

हे अर्जुन ! भगवान् श्रीराम के मधुर नामों को छोड़कर अन्य सभी कर्मों को करते हैं इससे बढकर आश्चर्य क्या है? उनका सारा प्रयास व्यर्थ है ।

शान्तोदान्तः क्षमाशीलो रामनामार्थ चिन्तकः ।

तस्य सद्गुण सङ्ख्यमं वक्तुर्नैव क्षमोऽप्यहम् ॥ ४२८ ॥

जो मन ऐसे धन्द्रियों का निग्रह करते छुओ श्रीरामनाम के अर्थों का चिन्तन करते हैं उनके सद्गुणों की सङ्ख्या का वर्णन मैं भी नहीं कर सकता ।

विसृज्य रामनामानि कर्म कुर्वन्ति ये नराः ।

अप्राप्य सद्गतिं पार्थ भ्रमन्ति कर्म वर्त्मसु ॥ ४३० ॥

जो लोग श्रीरामनाम को छोड़कर दूसरे सारे कर्म करते हैं वे लोग सद्गति न प्राप्त करके कर्म मार्ग में ही धूमते रहते हैं ।

सर्वयोनिषु कौन्तेय भ्रमन्ति ते नराधमा ।

विसृज्य रामनामानि माया मोहित येतसः ॥ ४३१ ॥

जो श्रीरामनाम का त्याग करके माया से मोहित चित्त वाले हो गये हैं वे नराधम हैं हे अर्जुन ! वे लोग सभी योनियों में धूमते रहते हैं ।

यदृच्छ्यापि श्रीरामनाम गृह्णन्ति सादरम् ।

स पूतः सर्वपापेभ्यो रामनाम प्रसादतः ॥ ४३२ ॥

जो लोग दैववश बिना प्रेम के अथवा आदरपूर्वक श्रीरामनाम का उच्चारण करते हैं वे भी श्रीरामनाम की कृपा से सभी पापों से मुक्त होकर पवित्र हो जाते हैं ।

येनकेन प्रकारेण नाममात्रैक जल्पकाः ।

श्रमं विनैव गच्छन्ति परे धाम्नि समादरात् ॥ ४३३ ॥

जो लोग जिस किसी प्रकार से केवल श्रीरामनाम का उच्चारण करते हैं वे लोग बिना परिश्रम के ही सादर भगवान् के दिव्य धाम को प्राप्त करते हैं ।

नामयुक्ताञ्जनान् दृष्ट्वा यः पश्येत् सादरं सप्ते ।

स याति परमं स्थानं रामेण सह मोदते ॥ ४३४ ॥

जो लोग श्रीरामनामानुरागी साधकों को देखकर उनका आदर करते हैं वे मित्र अर्जुन ! वे भी भगवान् के दिव्य धाम साकेत में जाकर भगवान् श्रीरामजी के साथ आनन्दानुभव करते हैं ।

नामयुक्ताञ्जनान् दृष्ट्वा प्रणमन्ति य ये नराः ।

ते पूतास्सर्वपापेभ्यः कर्मणा तेन उेतुना ॥ ४३५ ॥

श्रीरामनामानुरागी भक्तों को देखकर जो उन्हें सादर प्रणाम करते हैं वे लोग उस कर्म के प्रभाव से सभी पापों से मुक्त होकर पवित्र हो जाते हैं ।

नामयुक्ताञ्जान् दृष्ट्वा स्निग्धो भवति यो नरः ।

स याति परमं स्थानं परमानन्द सागरम् ॥ ४३६ ॥

श्रीरामनामानुरागी भक्तों का दर्शन करके जिनका चित्तभाव से द्रवित हो जाता है वे लोग भी परमानन्द सागर दिव्य लोक में जाते हैं ।

गीत्वा य रामनामानि विचरेद्राम सन्निधौ ।

छंदं ब्रवीमि ते सत्यं तस्य वश्यो जगत्पतिः ॥ ४३७ ॥

जो लोग श्रीरामनाम का गान करते हुआ श्रीरामजी के समीप विचरए करते रहते हैं अर्थात् जो भगवन्नाम सङ्कीर्तन करते हुआ भगवान् की परिक्रमा करते रहते हैं वे अर्जुन ! मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि उस भक्त के अधीन भगवान् हो जाते हैं ।

गीत्वा य रामनामानि ये रुदन्ति नरोत्तमाः ।

तेषां हरिः परिकीर्तो परमेशेन संयुक्तः ॥ ४३८ ॥

जो श्रेष्ठपुरुष श्रीरामनाम का गान करते हुआ रुदन करते रहते हैं उनके हाथों भगवान् श्रीराम के साथ मैं बिक जाता हूँ अर्थात् उनके वश में हो जाता हूँ ।

गीत्वा य रामनामेति पतन्ति भुवि ये नराः ।

ते वै धन्यातिधन्याश्च वैष्णवानां शिरोमणिः ॥ ४३९ ॥

जो श्रीरामनाम का गान करते हुआ पृथिवी पर गिर पड़ते हैं वे लोग धन्यातिधन्य एवं वैष्णवों में अग्रगण्य हैं ।

यदृच्छया न गृह्णन्ति रामनामेति मङ्गलम् ।

अदृश्यास्ते जनाः पार्थ दृष्टिमात्रेण वर्जिताः ॥ ४४० ॥

परममङ्गल श्रीरामनाम का उच्चारण जो दैववश भी नहीं करते हैं वे अर्जुन ! जैसे लोगों का दर्शन नहीं करना चाँहिये यदि कदाचित् सामने आ जाये तो मुण्ड कुर लेना चाँहिये अथवा नेत्र बन्द कर लेना चाँहिये तात्पर्य यह है कि विमुग्धों के मुण्ड टपने से सम्भाषण से, एवं स्पर्श से पाप ताप प्राप्त होता है अतः सावधान रहना चाँहिये ।

स्वप्नेऽपि रामनाम्नस्तु येषामुच्चारणं नहि ।

भाग्यहीनास्तु ते नीयाः पापिनामत्रगामिनः ॥ ४४१ ॥

स्वप्ने में भी जिनके मुण्ड से श्रीरामनाम का उच्चारण नहीं हुआ, वे भाग्यहीन, नीय एवं पापियों में अग्रगण्य हैं ।

भिक्षया ये न गृह्णन्ति रामनाम परमेश्वरम् ।

लोकोपचारनिरतास्ते वै पापाङ्गिनो ध्रुवम् ॥ ४४२ ॥

जो लोग भिक्षा के कारण अर्थात् श्रीरामनाम कडेङ्गे तो भिक्षा नहीं मिलेगा इस भय से परमेश्वर श्रीरामनाम का उच्चारण नहीं करते हैं वे लोग लोकवासना में बन्धे हुए हैं और निश्चित ही पाप्मण्डो हैं ।

रामनाम जपाज्जुवा अनायासेन संसृतिम् ।

तरन्त्येव तरन्त्येव तरन्त्येव सुनिश्चितम् ॥ ४४३ ॥

श्रीरामनाम के जप से जो बिन परिश्रम के ही निश्चित ही संसार यक को तर जाते हैं तर जाते हैं तर जाते हैं ।

तत्रैवार्जुनवाक्यं श्रीकृष्णं प्रति -

वर्डी अर्जुनज्जु का वाक्य श्रीकृष्ण के प्रति -

भवत्येव भवत्येव भवत्येव मडामते ।

सर्वपाप परिव्याप्तास्तरन्ति नामबान्धवाः ॥ ४४४ ॥

डे मडाभुद्धे ! आपने जैसा कडा वैसा ही है वैसा ही है, जो सम्पूर्णापाप से युक्त है वह यह श्रीरामनाम को अपना बना ले तो निश्चित ही भवसागर से पार हो जायेगा ।

नमोस्तु नामरुपाय नमोस्तु नामजल्पिने ।

नमोस्तु नाम साध्याय वेदवेद्याय शाशुक्ते ॥ ४४५ ॥

श्रीरामनाम के परात्पर स्वरुप को नमस्कार हो, श्रीरामनाम के जप करने वालों को नमस्कार हो, एवं श्रीरामनाम के परम साध्य इलस्वरुप समस्त वेदों से प्रतिपाद्य तथा अविनाशी भगवान् श्रीराम को नमस्कार हो ।

नमोस्तु नाम नित्याय नमो नामप्रभाविने ।

नमोस्तु नामशुद्धाय नमो नाममयाय य ॥ ४४६ ॥

नित्यस्वरुप, परम प्रभावी, परम विशुद्ध और समस्त नाममय श्रीरामनाम को नमस्कार हो ।

श्रीरामनाम माडात्म्यं यः पठेच्छुद्धयान्वितः ।

स याति परमं स्थानं रामनाम प्रसादतः ॥ ४४७ ॥

जो श्रद्धाभक्ति से युक्त होकर श्रीरामनाम के माडात्म्य को पढेगा वह श्रीरामनाम की कृपा से सर्वोत्कृष्ट स्थान को प्राप्त करेगा ।

रामनामार्थमुत्कृष्टं पवित्रं पावनं परम् ।

ये ध्यायन्ति सदा स्नेहात्ते कृतार्थाः जगत्त्रये ॥ ४४८ ॥

जो श्रीरामनाम के उत्कृष्ट पवित्र एवं परम पावन अर्थों का सदा सर्वदा स्नेहपूर्वक चिन्तन करते हैं वे लोग तीनों लोकों में कृतार्थ हैं ।

सौर्य धर्मोत्तरे -

सौर्य धर्मोत्तरे में -

श्रीमद्रामस्य नामस्तु प्रभावं निर्मलं मुने ।

जपावेशवशेनैव ज्ञायते सज्जमैः वचित् ॥ ४४९ ॥

हे मुने ! भगवान् श्रीराम के नाम के निर्मल प्रभाव को जपावेश के द्वारा ही कुछ सज्जन लोग कहीं समझ (जान) पाते हैं, सब नहीं ।

मनोरथप्रदातारं सज्जनानां परं प्रियम् ।

लौकिकी दुर्भगा श्रीडा उत्तरं नाम सद्यशः ॥ ४५० ॥

श्रीरामनाम का पवित्र यश सत्पुरुषों के मनोरथ को पूर्ण करने वाला, सन्त महापुरुषों को परम प्रिय एवं दुर्भाग्यस्वरूप लोक लज्जा का नाश करने वाला है ।

सङ्कटव्यरितः शब्दो रामनाम्ना विभूषितः ।

कुरुते नामवत्कार्यं सर्वं मोक्षावधिं नृणाम् ॥ ४५१ ॥

यदि श्रीरामनाम से अलङ्कृत शब्दों का एक बार उच्चारण किया गया तो वह शब्द मनुष्यों के मोक्ष पर्यन्त श्रीरामनाम की तरफ सभी कार्यों को करता है ।

परत्वं परमं नाम्नो विदितं सर्वतः श्रुतौ ।

अबुधाः नैव जानन्ति सम्पतन्ति भवाण्वि ॥ ४५२ ॥

श्रीरामनाम का परम परत्व सर्वत्र वेद में प्रसिद्ध है मूर्ख लोग उसे नहीं जानते हैं और बार-बार भवसागर में गिरते हैं ।

सकर्मोपासना ज्ञानमनायासेन सिद्ध्यति ।

रामनाम यदा जिह्वा सञ्जपत्यपिलेश्वरम् ॥ ४५३ ॥

जब जिह्वा सर्वेश्वरेश्वर श्रीरामनाम का सम्यक् जप करती है उस समय सभी कर्म, उपासना एवं ज्ञान अनायास ही सिद्ध हो जाते हैं ।

काशीभाण्डे श्रीशिववाक्यं -

काशीभाण्ड में श्रीशिवजी का वाक्य -

पेयं पेयं श्रवणपुटके रामनामाभिरामं

ध्येयं ध्येयं मनसि सततं तारकं ब्रह्मरूपम् ।

जल्पन्जल्पन्प्रकृतिकृतौ प्राणिनां कर्णमूले

वीथ्यां वीथ्यामटतिजटिलः कोऽपि काशी निवासी ॥ ४५४ ॥

काशी में नित्य निवास करने वाले जटाधारी दयासागर कोष्ठ (भगवान् शङ्कर) प्राणियों की विकृति (शरीर) के प्रकृति (पञ्चमहाभूतों) में विलीन होने पर अर्थात् प्राणियों के शरीर त्याग (मृत्यु) के समय काशी में

“हे काशी वासियों ! अपने कानरूपी दोनों से श्रीरामनामरूपी अमृत का भूब पान करो और परब्रह्म स्वरूप तारक मन्त्र का मन से निरन्तर चिन्तन करो” ऐसा कडते-कडते काशी की गलियों में धूम रडा है ।

यस्यामलं प्रिययशः सुयशोविधाता

ताक्ष्यध्वजश्च गिरिजे नितरां तथाहम् ।

प्रेमसा वदामि य शृणोमि सडैव ताभ्यां

तद्रामनाम सकलेश्वरमादितेवम् ॥ ४५५ ॥

डे पार्वति ! जिस श्रीरामनाम के सुन्दर अेवं प्रिय यश को मैं ब्रह्मा तथा भगवान् विष्णु प्रेम से कडते हैं और उन दोनो के साथ मैं प्रेम से सुनता हूँ वड श्रीरामनाम सबका स्वामी अेवं आदितेव हैं ।

धदमेकं परं तत्त्वं निर्णीतं ब्रह्मवादिभिः ।

नाम व्याडरणं शुद्धं सर्वकालेषु प्रेमतः ॥ ४५६ ॥

ब्रह्मवादी मुनियो ने यडी अेक परमतत्व निर्धारित किया है कि सभी कालों में अर्थात् डर क्षण प्रेमपूर्वक शुद्ध भगवन्नाम का उच्यारण किया जाये ।

केदारभाएडे श्रीशङ्करवाक्यं पार्वतीं प्रति -

केदारभाएड में श्रीशङ्करजी का वाक्य पार्वती के प्रति -

रामनाम समं तत्त्वं नास्ति वेदान्त गोचरम् ।

यत्प्रसादात्परांसिद्धिं सम्प्राप्ता मुनयोऽमलाः ॥ ४५७ ॥

श्रीरामनाम से बडःकर वेदान्त का विषय कोठ हूसरा तत्व नडी है जिस श्रीरामनाम की कृपा से निर्मल मडात्माओं ने परासिद्धि को प्राप्त किया है ।

अतस्सर्वात्मना रामनाम रुपं स्मर प्रिये ।

अनायासेन बो देवि अमरी त्वं भविष्यसि ॥ ४५८ ॥

डे प्रिये देवि पार्वति ! डसलिये तुम श्रीरामनाम के स्वरुप का स्मरण करो जिसके प्रभाव से बिना परिश्रम के डी तुम भी अविनाशी डो जाओगी ।

रामनाम प्रभावेण ड्यविनाशी पदं प्रिये ।

प्राप्तं भया विशेषेण सर्वेषां दुर्लभं परम् ॥ ४५९ ॥

डे प्रिये ! जो पद सभी के लिये दुर्लभ है उस अविनाशी पद को मैंने श्रीरामनाम के प्रभाव से विशेष रुप से प्राप्त कर लिया है ।

अन्यानि यानि नामानि तानि सर्वाणि पार्वति ।

कार्यार्थे सम्भवानीड रामनामादित प्रिये ॥ ४६० ॥

डे पार्वति ! भगवान् के और दूसरे जितने नाम हैं वे सभी नाम अनादि रामनाम से भक्तों के कार्यसम्पादन के लिये प्रगट डुअे हैं श्रीरामनाम तो सबका मूल अेवं अनादि है ।

मार्कण्डेयोऽपि श्रीरामनाम संस्मृत्य सादरम् ।

मृत्युं तीर्णोऽविलम्बेन रामनाम परं बलम् ॥ ४६१ ॥

श्रीमार्कण्डेय मडर्षि भी सादर श्रीरामनाम का सम्यक् स्मरण करके अविलम्ब डी मृत्यु को पार कर गये अतः श्रीरामनाम का बल डी सर्वोत्कृष्ट बल है ।

तथैव नारदो योगी भक्तभूपास्तथापरे ।

मृत्योर्भङ्गार्णवं तीर्त्वा सन्निभग्राः सुधाम्बुधौ ॥ ४६२ ॥

उसी प्रकार योगिराज नारदजी अवं दूसरे श्रेष्ठ भक्तों ने भी श्रीरामनाम का जप करके मृत्युरुपी महासागर को पार करके भगवत्सान्निध्यरूपी सुधा सागर में सदा सर्वदा डे लिये निमग्न हो गये ।

लम्बोदरोऽपि श्रीरामनाममालात्म्यभुज्वलम् ।

श्रुत्वा य धारितं चित्ते ततः पूज्यः सुरासुरैः ॥ ४६३ ॥

श्रीगणेशजी ने भी श्रीरामनाम की उज्ज्वल मणिमा को सुनकर अपने चित्त में धारण किया तत्पश्चाद् देवताओं और असुरों से भी परम पूज्य हो गये ।

अवं नाम प्रसादेन ऋषयो देवतास्तथा ।

मनुष्याः किन्नरा नागा यक्षा विद्याधरास्तथा ॥ ४६४ ॥

सर्वे कृतार्था अबलवन् तस्मिन्तस्मिन् युगे युगे ।

नातः परतरोपायो दृश्यते श्रूयतेऽपि वा ॥ ४६५ ॥

इसी प्रकार श्रीरामनाम की कृपा से ऋषि, देवता, मनुष्य, किन्नर, नाग, यक्ष अवं विद्याधर आदि सभी लोग उस-उस युग में कृतार्थ हो गये । अतः श्रीरामनाम से बढःकर दूसरा कोई उपाय न देखा जाता है और न

सुना जाता है ।

निर्वाणभाण्डे श्रीशिववाक्यं श्रीरामं प्रति -

निर्वाणभाण्ड में श्रीशिवजी का वाक्य श्रीरामजी के प्रति -

भवन्नामामृतं पीत्वा गीत्वा य भवतां यशः ।

शिवोऽहं सर्वदैवैश्च पूजनीयो दयानिधे ॥ ४६६ ॥

हे रामजी ! हे दयानिधे ! मैं आपके श्रीरामनामरूपी अमृत का पान करके अवं आपकी कथारूपी अमृत का गान करके सभी देवताओं से पूज्य हो गया हूँ ।

निराकारं य साकारं सगुणं निर्गुणं विभो ।

उभौ विहाय सर्वस्वं तव नाम स्मराम्यहम् ॥ ४६७ ॥

हे विभो ! मैं निराकार, साकार, निर्गुण अवं सगुण दोनों को छोडःकर आपके श्रीरामनाम का स्मरण करता हूँ ।

मन्दात्मानो न जानन्ति बहिरर्थं स्पृहायुताः ।

रामनाम परब्रह्म सर्ववेदान्त सम्मतम् ॥ ४६८ ॥

सभी वेदान्तों का अभिमत परब्रह्म श्रीरामनाम ही है इस रहस्य को बाह्य पदार्थों में आसक्ति रहने वाले मन्दमति लोग नहीं जानते हैं ।

जगत्प्रभुं परानन्दं कारुणं सदसत्परम् ।

रामनाम परेशानं सर्वोपास्यं परेश्वरम् ॥ ४६९ ॥

श्रीरामनाम ही जगत् में परम समर्थ, परमानन्द का परम डेतु, स्थूल सूक्ष्म से परे परम ईश्वर परात्परेश्वर
 अेवं सभी से उपास्य है ।

सर्वेषां मत साराणामिदमेकं मलन्मतम् ।

जनकीजुवनस्थाय नामसङ्कीर्तनं परम् ॥ ४७० ॥

सभी मतों का सार अेवं श्रेष्ठमत अेकमात्र यही है कि श्रीजनकी जुवन भगवान् श्रीरामजु के नाम का सङ्कीर्तन ही
 सर्वोत्तम है ।

ब्रह्माण्ड पुराणो कोशलभाण्डे सूतवाक्यं ऋषीन् प्रति -

ब्रह्माण्ड पुराण के कोशलभाण्ड में सूतजु का वाक्य ऋषियों के प्रति -

न तत्पुराणो नहि यत्र रामो यस्यां न रामो नहि संखिता सा ।

स नेतिहासो नहि यत्र रामः काव्यं न तत्स्यान्न हि यत्र रामः ॥ ४७१ ॥

वास्तव में वल पुराण पुराण नहीं है, वल संखिता संखिता नहीं है, वल इतिहास इतिहास नहीं है और वल
 काव्य-काव्य नहीं है, जहाँ श्रीरामनाम नहीं है । तात्पर्य यल है कि श्रीरामनाम से रलित ग्रन्थ आदरणीय अेवं
 कल्याणप्रद तो नहीं है अपितु ग्रन्थि प्रदान करने वाला अेवं संशयजनक है ।

शास्त्रं न तत्स्यान्नहि यत्र रामस्तीर्थं न तद्यत्र न रामयन्द्रः ।

यागः स आगो नहि यत्र रामो योगस्स रोगो नहि यत्र रामः ॥ ४७२ ॥

वास्तव में वल शास्त्र-शास्त्र नहीं है अेवं वल तीर्थ-तीर्थ नहीं है जहाँ श्रीरामनाम का परत्व, मलत्व अेवं पूजा नहीं
 है । वल यज्ञ-यज्ञ नहीं है अपराध है अेवं वल योग-योग नहीं है रोग है जहाँ श्रीरामनाम नहीं है ।

न सा सभा यत्र न रामयन्द्रः कालोऽप्यकालः कलिरेव सोऽस्ति ।

सङ्कीर्त्यते यत्र न रामदेवो विद्याप्यविद्या रलिताल्यनेन ॥ ४७३ ॥

वल सभा-सभा नहीं है जहाँ श्रीरामनाम की यर्था नहीं है, वल समय-समय नहीं अकाल है कलियुगस्वरूप है
 जिसमें श्रीरामनाम का उच्चारण न लों अेवं वल विद्या-विद्या नहीं अविद्या है जो श्रीरामनाम से रलित है ।

स्थानं भयस्थानमरामकीर्तिं रामेतिनामामृत शून्यमास्थम् ।

सर्पालयं प्रेतगृहं गृहं तद् यत्रार्थ्यते नैव मडेशपूज्यः ॥ ४७४ ॥

वल स्थान मलाभयप्रद है जहाँ श्रीरामजु का यशोगान न लो, वल मुभ मलीन अेवं शून्य है जिसमें श्रीरामनामरूपी
 अमृत न लो, वल धर सर्पो अेवं प्रेतों का धर है जहाँ भगवान् शङ्कर से पूज्य श्रीरामजु की पूजा न लोती लो ।

उक्तेन किं स्याद् बहुनात विश्वं सर्वं मृषास्याद्यदि रामशून्यम् ।

अेतस्य कृष्णः पुनराडगनां स्पृष्ट्वोपवीतं जपमालिकां य ॥ ४७५ ॥

हे मुनियों ! बहुत कलने से क्या लाभ? इतना सत्य समजो कि - श्रीरामनाम से शून्य सम्पूर्ण विश्व भी जूहा ली
 है इस बात को श्रीकृष्ण द्वैपायन व्यासजु ने श्रीगङ्गाजु में षडःो लोकर लाय में यज्ञोपवीत और जप करने

वाली माला को लेकर कडा था । तात्पर्य यह है कि श्रीरामनाम सत्य है और श्रीरामनाम के सम्बन्ध से ही दूसरी कोई वस्तु सत्य है अन्य नहीं ।

रकारोध्वजवत्प्रोक्तो मकारश्छत्रवत्तथा ।

सर्ववर्णशिरस्थो हि राम धृत्युच्यते बुधैः ॥ ४७६ ॥

विद्वानों ने श्रीरामनाम के दोनों अक्षरों में रेफ (र) को ध्वजा की तरह एवं “म” को छत्र की तरह सभी वर्णों के शिर के आभूषण के रूप में कडा है । तात्पर्य है कि “र” और “म” ये दोनों वर्ण सभी वर्णों के आभूषण हैं जिस शब्द में वाक्य में “र” और “म” नहीं है वह शब्द एवं वाक्य श्री हीन एवं उपेक्षणीय हैं ।

रकारार्थो भवेद्रामः परमानन्दविग्रहः ।

मकारार्थो भवेत्सीता सखिदानन्दरूपिणी ॥ ४७७ ॥

श्रीरामनाम में “र” का अर्थ परमानन्द विग्रह स्वरूप श्रीरामजी हैं और “म” का अर्थ सखिदानन्दस्वरूपिणी श्रीसीताजी है ।

जैमिनि पुराणे -

जैमिनि पुराण में -

रामनाम परं स्वाद्दु मेदङ्गा रसना यथा ।

तन्नाम रसनेत्याहुर्मुनयस्तत्त्वदर्शिनः ॥ ४७८ ॥

श्रीरामनाम परम सुस्वादु है इस रहस्य को जो जानती है अर्थात् जो नित्य निरन्तर श्रीरामनाम के स्वाद का आस्वादन करती है उसे ही तत्त्वदर्शी मुनियों ने जिन्ना कडा है अन्य को मांस का टुकड़ा ।

कर्माधीनं जगत्सर्वं विष्णुना निर्मितं पुरा ।

तत्कर्म केशवाधीनं रामनाम्ना विनश्यति ॥ ४७९ ॥

प्राचीन समय में भगवान् नारायण ने सम्पूर्ण जगत् को जोवों के कर्मानुसार बनाया । अर्थात् जगत् कर्म के अधीन है एवं कर्म भगवान् के अधीन हैं और कर्म का नाश श्रीरामनाम के जप से होता है तात्पर्य यह है कि जब तक कर्म रहेङ्गे तब तक जगत् का सम्बन्ध बना रहेगा अतः कर्म का नाश आवश्यक है श्रीरामनाम के जप के बिना कर्म का नाश सम्भव नहीं है अतः श्रीरामनाम का जप करना यादिये ।

-धृति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे परात्परविलासनिवासो परात्परैश्वर्यदायके

श्रीयुगलानन्यशरणासङ्गृहीते उपपुराणोत्तिहासादिनिर्घणनाम् द्वितीयः प्रमोदः ॥ २ ॥

अथ तृतीयः प्रमोदः

संछितोक्त वचनानि -

अगस्त्य संछितायां श्रीशङ्करवाक्यं श्रीरामचन्द्रं प्रति -

अगस्त्यसंछिता में श्रीशङ्करजी का वाक्य श्रीरामचन्द्रजी के प्रति -

अळ भवन्नामजपन्तुतार्था वसामि काश्यामनिशं भवान्या ।

भरिष्यमाणस्य विमुक्तयेऽपि दिशामि मन्त्रं तव रामनाम ॥ ४८० ॥

हे श्रीरामजु ! भवानी के साथ मैं आपके मङ्गलमय श्रीरामनाम का जप करते हुआ कृतार्थ होकर काशी में रहता हूँ । मरणासन्न जुवों को उनके भोक्ष के लिये उनके दक्षिण कर्ण में आपके श्रीरामनाम का उपदेश करता हूँ ।

रकारो रामयन्द्रस्यात्साख्यिदानन्दविग्रहः ।

अकारो जानकीप्रोक्ता मकारो लक्ष्मणः स्वरार्त् ॥ ४८१ ॥

श्रीरामनाम में “र” का अर्थ साख्यिदानन्द विग्रह स्वरूप श्रीरामजु है “अ” का अर्थ श्रीजानकीजु है और “म” का अर्थ स्वयमेव प्रकाशमान श्रीलक्ष्मणजु है ।

रकारेण भडिर्याति मकारेण विशेत्युनः ।

रामरामेति सख्यधो जुवो जपति सर्वदा ॥ ४८२ ॥

अजपाजप की उत्तम प्रक्रिया यह है कि श्वास के बादर निकलते समय “र” का उच्चारण करें अर्थात् श्वास के भीतर जाते समय “म” का उच्चारण करें इस प्रकार राम राम इस पवित्र शब्द को जुव सदा सर्वदा जप करता है ।

दैन्यं दिनं तु दुरितं पक्षमासर्तुवर्षजम् ।

सर्वं दहति निशेषं तूलायलमिवानलः ॥ ४८३ ॥

वर्ष, ऋतु, मास, पक्ष अर्थात् अनेक दिन में किये गये सारे पाप अनेक बार श्रीरामनाम के उच्चारण करने से साकल्येन उसी प्रकार भस्म हो जाता है जैसे रूई का पर्वत अग्नि के स्पर्श होते ही भस्म हो जाता है ।

नामसङ्कीर्तनञ्चैव गुणानामपि कीर्तनम् ।

भक्त्या श्रीरामयन्द्रस्य वयसा शुद्धिरिच्छते ॥ ४८४ ॥

अपनी वाणी से भगवान् श्रीसीताराम जु के नाम का भक्तिपूर्वक सङ्कीर्तन अर्थात् भगवान् के गुणों का कीर्तन, गायन ही वाणी अर्थात् जुवन की शुद्धि है तात्पर्य यह है कि हमारा जुवन अर्थात् हमारी वाणी तभी शुद्ध होगी जब हम अपनी वाणी से भगवन्नाम सङ्कीर्तन अर्थात् भगवद् गुणानुवाह करें ।

विश्वामित्र संछितायां विश्वामित्रवाक्यं वैश्यं प्रति -

विश्वामित्र संछिता में विश्वामित्र जु का वाक्य वैश्य के प्रति -

विश्रुतानि बहून्धेव तीर्थानि विविधानि य ।

कोट्यंशान्नापि तुल्यानि नाम सङ्कीर्तनस्य वै ॥ ४८५ ॥

वेदों अर्थात् पुराणों में अनेक प्रकार से बहुत सारे तीर्थ प्रसिद्ध हैं परन्तु वे सारे तीर्थ निश्चित रूप से श्रीरामनाम सङ्कीर्तन के करोड़ों अंश की बराबरी भी नहीं कर सकते हैं ।

धन्याः पुण्याःप्रपन्नास्ते भाग्ययुक्ता कलौयुगे ।

संविडायाथ योगादीन् रामनामैक नैष्ठिकः ॥ ४८६ ॥

वे लोग अऽऽे ही सौभाग्यशाली, धन्यातिधन्य, पुण्यात्मा एवं भगवत्प्रपन्न हैं जो योगादि सारे साधनों को छोडऽऽ करके श्रीरामनाम के जप में पूर्णनिष्ठा रभते हैं ।

रकारो रामरूपस्तु मकारस्तस्य सेवकः ।

आचार्यस्तु ङ्याकारः स्यात्तयोः संयोजनाय च ॥ ४८७ ॥

श्रीरामनाम में “र” का अर्थ भगवान् राम है “म” का अर्थ श्रीरामजु के सेवक जुव मात्र है । “आ” का अर्थ जुव को भगवान् से मिलाने वाला आचार्य है ।

राम रामेति यो नित्यं मधुरं जपति क्षणम् ।

स सर्वसिद्धिमाप्नोति सत्यं नैवात्र संशयः ॥ ४८८ ॥

जो क्षणभर भी मधुर स्वर में श्रीराम राम राम ऐसा नित्य जप करता है । उसे सम्पूर्णा सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं ।

ब्रह्मघ्नश्च सुरापश्च स्तेयी च गुरुतल्पगः ।

शरणागतघाती च मित्रविश्रम्भकारकः ॥ ४८९ ॥

लब्धं परं पदं तेन जन्म कोटिभिरर्जितम् ।

कीर्तितं येन मडत्ता श्रीरामेत्यक्षरद्वयम् ॥ ४९० ॥

ब्राह्मण की लत्या करने वाला, शराबी, थोर, गुरुपत्नीगामी, शरणागत की लत्या करने वाला और मित्र के साथ विश्वासघात करने वाला मनुष्य उस परमपद को सलज में प्राप्त कर लेता है जो करोडऽऽों जन्मों के अर्जित सुकृत से प्राप्त होने वाला है जिसने “श्रीराम” इन दोनों अक्षरों का कीर्तन कर लिया ।

ज्ञातमध्यात्मशास्त्रं च प्राप्तं तेनामृतं मडत् ।

कीर्तितं येन वयसा श्रीरामेत्यक्षरद्वयम् ॥ ४९१ ॥

जिसने “रा” “म” इन दो अक्षरों को अपनी वाणी से अेक बार उच्यारण कर लिया उसने सम्पूर्णा अध्यात्मशास्त्र (वेदान्त) का अध्ययन कर लिया और परम मोक्ष स्वरूप मडान् अमृत को प्राप्त कर लिया ।

सर्वमन्त्रमयं नाम यन्त्रास्पदमनुत्तमम् ।

स्वाभाविकीं परां सिद्धिं दुर्लभां तज्जपाल्लभेत् ॥ ४९२ ॥

श्रीरामनाम सर्वमन्त्रमय एवं सर्वोत्तम यन्त्र स्वरूप है जिसके जप करने से अति दुर्लभ परा सिद्धि स्वाभाविक रूप से प्राप्त हो जाती है ।

वृथा नाना प्रयोगेषु मन्त्रतन्त्रेषु मानवाः ।

यत्नं कुर्वन्त्यडो मूढास्त्यक्त्वा श्रीनाम सुन्दरम् ॥ ४९३ ॥

अऽऽे आश्चर्य की बात है डि परमसुन्दर श्रीरामनाम को छोडऽऽकर भूर्ण लोग अनेक प्रयोगों, मन्त्रों एवं तन्त्रों में व्यर्थ में परिश्रम करते हैं ।

यस्य संस्मरणार्थेव सर्वार्थाश्चक्षुगोचराः ।

भवन्त्येवानायासेन तच्छ्रीराममलं भजे ॥ ४८४ ॥

जिनका सम्यक् स्मरण करने से सभी पदार्थों का अनायास ही प्रत्यक्ष दर्शन होने लगता है उन भगवान् श्रीरामजु का मैं भजन करता हूँ ।

सौर संछितायां -

सौर संछिता में -

श्रीरामनाममनिशं परिकीर्त्तनीयं वर्तेत मोद सु निधानमशेष सारम् ।

जन्मार्जितानि विविधान्यपलाय द्युभान्यत्यन्त धर्म निययं परधाममेति ॥ ४८५ ॥

आनन्द के सार स्वरूप श्रीरामनाम का कीर्त्तन सतत करना यादिये ऐसा करने से जुब अनेक जन्मों में डिये गये, विविध पापों से उत्पन्न होने वाले दुःखों से रक्षित होकर अत्यन्त पुण्य समूह को प्राप्त कर परम धाम को जाता है ।

स सागरां मर्डी दत्त्वा शुद्धकाञ्चन पूर्णिताम् ।

यत्कलं लभते लोके नामोख्यारस्ततोऽधिकम् ॥ ४८६ ॥

समस्त समुद्रों के साथ शुद्ध सुवर्णयुक्त पृथिवी का डिसी सुपात्र को दान करके जो फल प्राप्त होता है लोक में, उससे कठ गुना अधिक फल श्रीरामनाम के उच्चारण से होता है ।

वाय्यश्रीरामयन्द्रस्तु वायको नाम संस्मृतम् ।

वाय्यवायक सम्बन्धो नित्यमेव न संशयः ॥ ४८७ ॥

भगवान् श्रीराम वाय्य हैं और वायक श्रीरामनाम है वाय्य और वायक का सम्बन्ध नित्य होता है इसमें संशय नहीं है ।

जाबालि संछितायां -

जाबालिसंछिता में -

रामनाम परं जाप्यं ज्ञेयं ध्येयं निरन्तरम् ।

कीर्त्तनीयं च बहुधा मुमुक्षुभिरउर्निशम् ॥ ४८८ ॥

मुमुक्षुपुरुषों के लिये दिन रात निरन्तर परम जप, ज्ञान, ध्यान एवं अनेक प्रकार से कीर्त्तन के योग्य श्रीरामनाम ही है ।

श्रीरामनाम सामर्थ्यादपिबलेष्टं करे स्थितम् ।

भवन्ति कृत पुण्यानां यथाकल्पतरोर्धनम् ॥ ४८९ ॥

श्रीरामनाम के जप करने वालों के लिये अपिबल अमीष्ट पदार्थ श्रीरामनाम के सामर्थ्य से उनके करतल में वैसे ही स्थित हो जाता है जैसे पुण्यात्मा पुरुषों के लिये कल्पवृक्ष से सम्पूर्णा धन उपस्थित हो जाता है ।

नाम्नि यस्य रतिर्नास्ति स वै याद्दालतोऽधिकः ।

सम्भाषणं न कर्तव्यं तत्समं नामतत्परैः ॥ ५०० ॥

श्रीरामनाम में जिसकी प्रीति नहीं है वह तो निश्चित ही याएडाल है श्रीरामनामानुरागी भक्तों को उनसे बातचीत नहीं करना चाँडिअे ।

रामनाम प्रभा दिव्या यस्योरसि प्रकाशते ।

तस्यास्ति सुलभं सर्वं सौभ्यं सर्वेशजं परम् ॥ ५०१ ॥

श्रीरामनाम की दिव्य प्रभा जिसके उदय कमल में प्रकाशित होती है उस महात्मा के लिये सर्वेश्वर सम्बन्धी सभी उत्कृष्ट सुभ सलज में सुलभ हो जाते हैं ।

साधनेन बिना सिद्धिर्दृष्टं नास्त्रैव संस्कृतम् ।

अन्यत्र साधनैः दृष्टैर्दुर्लभं तन्मलत् सुभम् ॥ ५०२ ॥

बिना साधन श्रम के ही श्रीरामनाम से सभी सिद्धि सुभ सुलभ हो जाती है श्रीरामनाम के बिना दूसरे दुःखप्रद अनेक साधनों से वह महान् सुभ नहीं प्राप्त हो सकता है ।

सूत सँडितायां -

सूतसँडिता में -

यः श्रीरामपदं नरः प्रतिपदं सङ्घीर्तयन्तत्क्षणांभुक्तो दुष्कृतराशितो बुधजनेः पूज्यो विवस्वत्प्रभः ।

त्यक्त्वा संसृति मृत्यु दुःख पटलं संशुद्धयित्तः पुमान्

श्रीरामास्पदमुन्नतं पर पदं प्राप्नोत्ययासं विना ॥ ५०३ ॥

जो मनुष्य पग-पग पर श्रीरामनाम का सङ्घीर्तन करता है वह उसी क्षण से पापराशियों से मुक्त हो जाता है, सभी देवताओं का पूज्य हो जाता है, सूर्य के समान तेजस्वी हो जाता है । संसार-यक, मृत्यु अेवं दुःख समूह का त्याग करके परम विशुद्ध यित्त होकर बिना प्रयास के ही सबसे उन्नत परम पद श्रीरामधाम को प्राप्त करता है ।

रिपवस्तस्य नश्यन्ति न बाधन्ते त्रडाश्च तम् ।

राक्षसाश्च न भादन्ति नरं रामेति वादिनम् ॥ ५०४ ॥

जो श्रीरामनाम का उच्चारण करता है उसके सारे शत्रु नष्ट हो जाते हैं कोठ भी त्रड उसे पीडित नहीं करते हैं और राक्षस, भूत प्रेतादि उसका भक्षण नहीं कर सकते हैं ।

अहो धैर्यमहो धैर्यमहो धैर्यमिदं नृणाम् ।

रामनाम्नि स्थिते लोके न भजन्ति बडिर्भुभाः ॥ ५०५ ॥

आश्चर्य की बात है कि मनुष्यों का यह डैसा अद्भुत धैर्य है कि इस लोक में श्रीरामनाम के विद्यमान होने पर भी बडिर्भुभी वृत्ति वाले लोग भजन नहीं कर रहे हैं ।

रामनामामृतं पीत्वा भवेन्नित्यं निरामयम् ।

सिद्धान्तं सारमित्येकं साधूनां भावितात्मनाम् ॥ ५०६ ॥

शुद्ध अन्तःकरण वाले साधु सन्तों का सिद्धान्तसार अेक यही है कि श्रीरामनाम रूपी अमृत का पान करके सदा सर्वदा के लिये समस्त रोगों से मुक्त हो जाओ ।

श्रीरामं रामभद्रं च सीतारामं सुष्पाकरम् ।

धृतीरयन्ति ये नित्यं ते वै धन्यतमा नराः ॥ ५०७ ॥

मडासुष्पाजानि श्रीराम, रामभद्र और सीताराम इस प्रकार जो भगवान् के नामों का नित्य उच्चारण करते हैं वे लोग निश्चित ही धन्य हैं ।

ब्रह्म संछितायां श्रीशिववाक्यं -

ब्रह्मसंछिता में श्रीशिवजी का वाक्य -

रामेति वर्षाद्भयमादरेण सदा स्मरन्मुक्तिमुपैति जन्तु ।

कलौ युगे कल्मषमानसानामन्यत्र धर्मो भलु नाधिकारः ॥ ५०८ ॥

“श्रीराम” धन दानों अक्षरों को आदरपूर्वक सदा सर्वदा स्मरण करने वाला जोव मुक्ति को प्राप्त करता है । इस घोर कलियुग में कलुषित लृष्टय वाले ज्यों का डिसी दूसरे धर्म में निश्चय ही अधिकार नहीं है ।

यन्नामकीर्तनं क्वलं विविधं निशम्य

न श्रद्धधाति मनुते यद्दुतार्थवादम् ।

यो मानुषस्तमिह दुःखयये क्षिपामि

संसारं घोरं विविधात्निपीडिताङ्गम् ॥ ५०९ ॥

जो मनुष्य श्रीरामनाम के कीर्तन, स्मरण के विविध प्रकार के इलों को सुनकर श्रीरामनाम में श्रद्धा नहीं करता है बल्कि मडिमा को अर्थवादमात्र मानता है संसार के अनेक घोर दुःख से पीडित अङ्ग वाले उस मनुष्य को मैं दुःख समुद्र में डाल देता हूँ ।

कलिप्रभावतो नष्टाः सद्ग्रन्थानां कथाः शुभाः ।

पापैर्निर्मितं नानामतं श्रीनाम वर्जितम् ॥ ५१० ॥

कलियुग के प्रभाव से सद्ग्रन्थों की शुभ कथाएँ नष्ट हो गयी हैं । पापैरिणियों ने श्रीरामनाम से रचित भ्रमावड अनेक मतों का निर्माण किया है ।

अतस्सर्वं परित्यज्य नामसंस्मरणे रताः ।

त एव कृतकृत्याश्च सर्व वेदार्थं कोविदाः ॥ ५११ ॥

इसीलिअे अन्य सभी साधनों को छोडकर जो श्रीरामनाम के स्मरण में लग गये हैं वास्तव में वे ही कृतार्थ अवं समस्त वेदार्थ के पण्डित हैं ।

श्रीरामेति वदन् जिवो याति ब्रह्म सनातनम् ।

सर्वाचारविहीनोऽपि ताप क्वेशादि संयुक्त ॥ ५१२ ॥

जो सभी सदाचार से रछित है अवं सन्तापक्वेशादि से युक्त है वे भी जोव श्रीरामनाम का उच्चारण करके सनातन ब्रह्म को प्राप्त कर लेते हैं ।

बोधायन संहितायां मदर्षिबोधायनवाक्यं -

बोधायनसंहिता में मदर्षिबोधायन का वाक्य -

छष्टापूर्तानि कर्माणि सुबहुनि कृतान्यपि ।

भव उेतूनि तान्येव रामनाम्ना सुमुक्तयः ॥ ५१३ ॥

यज्ञादिक पुण्य कर्मों के सम्यक् अनुष्ठान होने पर भी जितने शुभ कर्म हैं वे सारे संसार के ही कारण है मुक्ति में नहीं । मुक्ति तो श्रीरामनाम से ही हो सकती है अन्य साधनों से नहीं ।

श्रीमद्रामेतिनाम्नस्तु सदा सर्वत्र कीर्तनम् ।

नाशौचं कीर्तने तस्य स पवित्रकरो यतः ॥ ५१४ ॥

श्रीरामनाम का सदा सर्वदा कीर्तन करना यादिये श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन में शुचि अशुचि का विचार नहीं करना यादिये श्योद्धि श्रीरामनाम स्वतः पवित्र है और अपवित्र को भी पवित्र बनाने वाला है ।

रामनामानि लोकेस्मिन् सर्वदा यस्तु कीर्त्तयेत् ।

तस्यापराधकोटिस्तु क्षमाभ्येव न संशयः ॥ ५१५ ॥

श्रीरामञ्च कडते हैं कि इस लोक में जो सदा सर्वदा श्रीरामनाम का उच्चारण करता है उसके करोड़ों अपराधों को मैं क्षमा कर देता हूँ इसमें संशय नहीं है ।

न तादृशं मलाभाग पापं लोकेषु विश्रुतम् ।

यादृशं विप्र शार्दूल रामनाम्ना विदध्यते ॥ ५१६ ॥

हे मलाभाग ! हे ब्राह्मण श्रेष्ठ ! मैं इस लोक में ऐसा कोई प्रबल अंश प्रसिद्ध पाप नहीं देखता हूँ जो श्रीरामनाम के उच्चारण से भस्म न हो जाये ।

श्रीरामनाम सामर्थ्यमतुलं विधत्ते द्विज ।

न हि पापात्मकस्तावत्पापं कर्तुं क्षमः क्षितौ ॥ ५१७ ॥

हे ब्राह्मण श्रेष्ठ ! श्रीरामनाम का सामर्थ्य अतुल है श्रीरामनाम के स्मरण से जितना पाप नष्ट हो सकता है पृथिवी पर उतना पाप कोई पापी नहीं कर सकता है ।

तापनीय संहितायां -

तापनीयसंहिता -

सर्वेषामेव दोषाणां प्रायश्चित्तं परं स्मृतम् ।

अपमृत्यु प्रशमनं मूलाविधा विनाशनम् ॥ ५१८ ॥

सभी दोषों का सबसे बड़ा प्रायश्चित्त श्रीरामनाम कडा गया है जो अपमृत्यु का शमन करने वाला है मूलाविधा अनादि अविधा का नाशक श्रीरामनाम है ।

नाम सङ्कीर्तनं विद्धि अतो नान्यद्द्रव्याभ्युदम् ।

सर्वस्वं रामयन्द्रस्य तन्नामानन्त वैभवम् ॥ ५१९ ॥

ઇસલિએ મૈં દૂસરી બાત નહીં કરતા હૂં ઇતના સચ માનો કિ શ્રીરામનામ કા સહુર્તન ભગવાન્ શ્રીરામ કા ભી સર્વસ્વ હૈ ઇસલિએ શ્રીરામનામ કા વૈભવ અનન્ત હૈં ।

સ્વપ્નેડપિ યો વદેન્નિત્યં રામનામ પરાત્પરમ્ ।

સોડપિ પાતકરાશીનાં દાહકો ભવતિ ધ્રુવમ્ ॥ ૫૨૦ ॥

જો સ્વપ્ન મૈં ભી પરાત્પર શ્રીરામનામ કા નિત્ય ઉચ્ચારણ કરતે હૈં ઉનકે ભી પાપરાશિ કો શ્રીરામનામ મહારાજ નિશ્ચિત હી ભસ્મ કર દેતે હૈં ।

પાપદ્રુમકુઠારોડયં પાપેન્ધનદાવાનલમ્ ।

પાપરાશિતમસ્તોમં રવિઃ સાક્ષાત્પ્રભાનિધિઃ ॥ ૫૨૧ ॥

પાપરૂપી વૃક્ષ કે લિએ કુઠાર કે સમાન, પાપરૂપી ઈન્ધન કો જલાને કે લિએ દાવાગ્નિ કે સમાન ઔર પાપસમૂહ રૂપી અન્ધકાર કા નાશ કરને કે લિએ પ્રભા પુન્જ સૂર્યનારાયણ કે સમાન શ્રીરામનામ હૈં ।

રામનામ પરન્ધામ પવિત્રં પાવનાસ્પદમ્ ।

અતઃ પરં ન સન્મ સ્તારકં વિદ્યતે ક્વચિત્ ॥ ૫૨૨ ॥

શ્રીરામનામ દિવ્ય તેજઃસ્વરૂપ, પવિત્ર, પવિત્ર કરને કા એકમાત્ર પરમ સ્થાન હૈ ઇસસે બઢ્કર દૂસરા કોઈ અચ્છા તારક મન્ત્ર નહીં હૈં ।

હિરણ્યગર્ભ સંહિતાયાં શ્રીઅગસ્ત્યવાક્યં સુતીક્ષણં પ્રતિ -

હિરણ્યગર્ભસંહિતા મૈં શ્રીઅગસ્ત્યજી કા વાક્ય સુતીક્ષણ જી કે પ્રતિ -

અભિરામેતિ યન્નામ કીર્તિતં વિવશાચ્ય યૈઃ ।

તેડપિ ધ્વસ્તાખિલાઘૌઘા યાન્તિ રામાસ્પદં પરમ્ ॥ ૫૨૩ ॥

જિન લોગોં ને શ્રીરામ ન કહકર અભિરામ શબ્દ કહા ઔર જો લોગ વિવશ (પરાધીન) હોકર શ્રીરામનામ કા ઉચ્ચારણ કિયા હૈ ઉનકે ભી સારે પાપ નષ્ટ હો જાતે હૈં ઔર વે ભગવાન્ શ્રીરામજી કે દિવ્ય ધામ કો પ્રાપ્ત કરતે હૈં ।

શ્રીરામેતિ વદન્બ્રહ્મભાવમાપ્નોત્યસંશયમ્ ।

તત્ત્વવિદ્યાર્થિનો નિત્યં રમન્તે ચિત્સુખાત્મનિ ॥ ૫૨૪ ॥

રામનામ કા ઉચ્ચારણ કરતે હી જીવ બિના સંશય કે બ્રહ્મભાવ કો પ્રાપ્ત હો જાતા હૈં । તત્ત્વવિદ્યા કી કામના કરને વાલે સાધક સચ્ચિદાનન્દસ્વરૂપ શ્રીરામનામ મૈં નિત્ય રમણ કરતે હૈં ।

ઇતિ રામપદેનાસૌ પરં બ્રહ્માભિધીયતે ।

સર્વસિદ્ધાન્તમિત્યાહુઃ સર્વે વૈ બ્રહ્મવાદિનઃ ॥ ૫૨૫ ॥

શ્રીરામનામ હી પરબ્રહ્મ હૈ સભી બ્રહ્મવાદી ઇસી કો સર્વસિદ્ધાન્ત કહતે હૈં ।

શ્રીરામેતિ પરં મન્ત્રં તદેવ પરમં પદમ્ ।

તદેવ તારકં વિદ્ધિ જન્મમૃત્યુ ભયાપહમ્ ॥ ૫૨૬ ॥

શ્રીરામનામ કો હી પરમ મન્ત્ર, પરમપદ, તારકમન્ત્ર એવં જન્મ મૃત્યુરૂપી ભય કા નાશક જાનો ।

अल्पेन नाम्ना कथमस्य पापक्षयो भवेदत्र न शङ्कनीयम् ।

तृष्णादि राशिं दृढतेऽल्पवह्निस्तथा मङ्गामोढमदादि नाम ॥ ५२७ ॥

थोऽं से रामनाम से षस पापी के मङ्गान् पापीं का नाश कैसे होगा? यहाँ ऐसी शङ्का नहीं करनी यादिये
क्योंकि जैसे थोऽं सी अग्नि तृष्णा समूह का नाश कर देती है उसी प्रकार श्रीरामनाम के स्मरण से मङ्ग
मोढमत्सरादि का नाश हो जाता है ।

पुलह संछितायां -

पुलह संछिता में -

बीजे यथा स्थितो वृक्षः शाखा पल्लव संयुतः ।

तथैव सर्ववेदाश्च रकारेषु व्यवस्थिताः ॥ ५२८ ॥

जिस प्रकार बीज में शाखा पल्लव से युक्त वृक्ष विराजमान होता है उसी प्रकार सम्पूर्णवेद “र” में व्यवस्थित हैं
तात्पर्य यह है कि श्रीरामनाम के जप स्मरणदि करने से सम्पूर्णवेद शास्त्रों के अर्थ लुप्त्य में

प्रकाशित होने लगते हैं ।

यथा करण्डे रत्नानि गुमान्यङ्गैर्न दृश्यन्ते ।

तथैव सर्व मन्त्राश्च रकारेषु व्यवस्थिताः ॥ ५२९ ॥

जैसे डिब्बे के भीतर रत्ने गये रत्नों को अज्ञानी नहीं देख पाता है उसी प्रकार सभी मन्त्र तन्त्र “र” में व्यवस्थित
है ।

रकारोऽप्यारण्येनैव बहिर्नियति पातकम् ।

पुनः प्रवेशकाले च मकारस्तु कपाटवत् ॥ ५३० ॥

श्रीरामनाम के “रकार” के उच्चारण करने से शरीर के सारे पाप बाहर चले आते हैं पुनः प्रवेश न कर सकें इसके
लिये “म” कपाट की तरह मुग्न बन्द कर देता है ।

सावित्री ब्रह्मणा सार्द्धं लक्ष्मीनारायणेन च ।

शम्भुना रामरामेति पार्वती जपति स्फुटम् ॥ ५३१ ॥

ब्रह्मण्यु के साथ सावित्री, लक्ष्मी के साथ नारायण भगवान् और शङ्कर के साथ पार्वती स्पष्ट शब्दों में
राम राम ऐसा जप करते हैं ।

रामरामेति रामेति स्वपन् जग्नेस्तथा निशि ।

ये जपन्ति कलौ नित्यं ते वै श्रीरामरूपिणः ॥ ५३२ ॥

जो लोग सोते, जागते तथा रात्रि में नित्य राम राम ऐसा जप करते हैं कलियुग में वे साक्षात् श्रीरामस्वरूप ही है
।

पराशर संछितायां व्यासवाक्यं साम्बं प्रति -

पराशरसंछिता में व्यास के वाक्य साम्ब के प्रति -

न साम्भ व्याधिजं द्रुपं डेयं नानौषधैपि ।

रामनामौषधं पीत्वा व्याधेस्त्यागो न संशयः ॥ ५३३ ॥

डे साम्भ ! मडाकुष्टरुप व्याधि जन्य द्रुप अनेक औषधियों से भी दूर नहीं होगा और श्रीरामनामरूपी मडाऔषधि का पान करने से निश्चित ही व्याधि दूर हो जायेगी । अतः श्रीरामनामरूपी औषधि का पान करो ।

कोटिजन्मार्जितं पापमौषधैः शान्तिमेति डिम् ।

कीर्तनीयं परं नाम भवव्याधेस्तदौषधम् ॥ ५३४ ॥

करोऽःों जन्मों से उपार्जित पाप से समुत्पन्न व्याधि क्या औषधियों से शान्त होगी? नहीं, तस्मात् संसार रूपी मडाव्याधि का नाशक श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करो ।

सर्व रोगोपशमनं सर्वाधीनां विनाशनम् ।

स्मर त्वं रामरामेति मडामोदैकमन्दिरम् ॥ ५३५ ॥

समस्त रोगों को शान्त करने वाला, सभी आधियों (मानसिक पीऽःा) का नाश करने वाला एवं मडाप्रमोद का निवास स्थान श्रीरामनाम का स्मरण है ।

श्रीरामनामविभुषं ज्ञुवं शोधयितुं क्षमम् ।

प्रायश्चित्तं न यैवास्ति किञ्चित् सत्यं वयो मम ॥ ५३६ ॥

श्रीरामनाम से विभुष ज्ञुवों की शुद्धि के लिये कोठ प्रायश्चित्त नहीं है यह मेरी वाणी सत्य है ।

प्रायश्चित्तेषु सर्वेषु रामनाम जपं परम् ।

यतीनां रामभक्तानां सर्वरीत्या विशिष्यते ॥ ५३७ ॥

सभी प्रायश्चित्तों में श्रीरामनाम का जप सर्वश्रेष्ठ प्रायश्चित्त है संन्यासियों एवं रामभक्तों के लिये तो विशेष रूप से श्रीरामनाम का जप परम प्रायश्चित्त है ।

सनत्दुमार संछितायां श्रीव्यासवाक्यं युधिष्ठिरं प्रति -

सनत्दुमारसंछिता में श्रीव्यासजु का वाक्य युधिष्ठिर के प्रति -

श्रीरामेति परं जायं तारकं ब्रह्मसंज्ञकम् ।

ब्रह्महत्यादि पापघ्नमिति वेदविदोविदुः ॥ ५३८ ॥

डे राजन् ! सर्वश्रेष्ठ जप करने योग्य मन्त्र, तारक ब्रह्म एवं ब्रह्महत्यादि पापों का नाश करने वाला श्रीरामनाम है ऐसा वेद को जानने वाले विद्वान् लोग जानते और कडते हैं ।

श्रीरामरामेति जना ये जपन्ति य सर्वदा ।

तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च भविष्यति न संशयः ॥ ५३९ ॥

श्रीरामराम इस प्रकार जो लोग सदा सर्वदा जप करते हैं उन लोगों के लिये इस लोक में भुक्ति-भोगसाधन एवं परलोक में मुक्ति निश्चित ही प्राप्त होगी ।

ब्रह्महत्यादि पापानि तत्समानि बहूनि य ।

स्वर्णस्तेयसुरापानगुरुतत्पायुतानि य ॥ ५४० ॥

गोवधाद्युपपापानि अनृतात्सम्भवानि य ।

सर्वैः प्रमुच्यते पापैः कल्यायुतशतोद्भवैः ॥ ५४१ ॥

ब्रह्महत्यादि पाप, उसके समान और भी बहुत से पाप, सुवर्ण की थोड़ी, महिरापान, गुरुपत्नी के साथ लज्जारे
भार गमन, गोवध आदि उपपाप, मिथ्या सम्भाषण से उत्पन्न पाप अर्थात् करोड़ों कल्पों में उत्पन्न पाप समूह
इन समस्त पापों से बल मुक्त हो जाता है जो श्रीरामनाम का उच्चारण करता है ।

मानसं वाचिकं पापं कर्मणा समुपार्जितम् ।

श्रीरामस्मरणेनैव तत्क्षणात्प्रश्रयति ध्रुवम् ॥ ५४२ ॥

मन से, वाणी से, कर्म से जो पाप एकट्टे लुभे हैं वे सारे पाप श्रीरामनाम के स्मरण करने से उसी क्षण निश्चित ही
नष्ट हो जाते हैं ।

एतं सत्यमिदं सत्यं सत्यमेतद्विद्विष्यते ।

रामः सत्यं परब्रह्म रामात्किञ्चिन्न विद्यते ॥ ५४३ ॥

मेरे द्वारा यह सत्य सत्य सत्य कहा जाता है कि भगवान् श्रीराम ही सत्य अर्थात् परब्रह्म है श्रीरामजी से अतिरिक्त
कुछ भी नहीं है ।

सुश्रुत संछितायां -

सुश्रुतसंछिता में -

दृष्टो येनैव श्रीरामस्तथा तन्नामकीर्तनम् ।

इतं सर्वं शुभं तेन जितं जन्मसुदुर्लभम् ॥ ५४४ ॥

जिसने भगवान् श्रीराम का साक्षात्कार कर लिया अर्थात् जिसने श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन कर लिया उसने समस्त
वैदिक कर्मों का अनुष्ठान कर लिया और अति दुर्लभ इस मानव शरीर पर विजय पा लिया ।

कारणं प्राणवस्थापि रामनाम जगद्गुरुम् ।

तस्मद्भ्यं सदा चित्ते यतिभिः शुद्धयेतनैः ॥ ५४५ ॥

वेदों के मूल प्राणव (ओं) का भी परम कारण अर्थात् जगद्गुरु श्रीरामनाम है इसलिये शुद्धचित्त वाले यतियों को
सदासर्वदा अपने चित्त में श्रीरामनाम का ध्यान करना चाड़िये ।

प्रमादादपि श्रीरामराम उच्यरितं जनैः ।

भष्मी भवन्ति पापानि रोगानीव रसायनैः ॥ ५४६ ॥

लोगों के द्वारा प्रमाद से भी श्रीरामनाम का उच्चारण करने पर पाप उसी प्रकार भस्म हो जाते हैं जैसे रसायनों
के द्वारा रोग भस्म हो जाते हैं ।

तदेव लग्नं सुष्टिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।

विद्याबलं दैवबलं तदेव सीतापतेर्नाम यदा स्मरामि ॥ ४४७ ॥

जिस समय मैं श्रीसीताराम नाम का उच्चारण करता हूँ वही शुभ लग्न, सुदिन, ताराफल, चन्द्रफल, विधाफल और वही प्रारब्धादि सब उत्तम सगुन है ।

सर्वाभिलाषं पूर्णार्थं जपेन्नामपरात्परम् ।

सर्वं त्यक्त्वा ततो याति ह्यवशं पदमव्ययम् ॥ ५४८ ॥

अपने समस्त अभिलाषाओं की पूर्ति के लिये अन्य साधनों को छोड़कर परात्परस्वरूप श्रीरामनाम का जप करना याद्विजे इससे अवश्य ही अविनाशी परम पद प्राप्त होगा ।

कात्यायन संछितायां -

कात्यायनसंछिता में -

नाम सङ्कीर्तनाज्जातं पुण्यं नोपययन्ति ये ।

नाना व्याधि समायुक्ताः शतजन्मसु ते नराः ॥ ५४९ ॥

जो लोग श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से उत्पन्न पुण्यों का सङ्ग्रह नहीं करते हैं वे लोग हजारों जन्मों में अनेक रोगों से युक्त हो जाते हैं ।

अर्थवादं परे नाम्नि भावयन्तीह यो नरः ।

स पापिष्ठो मनुष्याणां निरये पतति स्फुटम् ॥ ५५० ॥

जो लोग श्रीरामनाम की मछिमा सुनकर उसे अर्थवाद मात्र मानते हैं वे लोग मनुष्यों में अतिशयपापी हैं और अन्त में निश्चित ही घोर नरक में जायेङ्गे ।

श्रीरामनाममाहात्म्यं याथाश्र्यं श्रुति सम्मतम् ।

कुतर्कं ये प्रकुर्वन्ति तेऽधमाः पापयोनयः ॥ ५५१ ॥

श्रीरामनाम का माहात्म्य यथार्थ अवे श्रुति सम्मत है उस विषय में जो कुतर्क करते हैं वे लोग अधम अवे पापयोनि हैं ।

रामरामेति रामेति प्रत्यहं वक्ति यो नरः ।

सम्यक् पूजयुतं पुण्यं तीर्थकोटि इलं लभेत् ॥ ५५२ ॥

राम राम राम इस प्रकार जो प्रतिदिन जप करता है उसे सम्यक् प्रकार से देवताओं के हजारों बार पूजन का पुण्य अवे कोटि तीर्थयात्रा का पुण्य प्राप्त होता है ।

यस्तु पुत्रः शुचिर्दक्षः पूर्वे वयसि धार्मिकः ।

रामनाम परं नित्यं तत्पुत्रं कवयो विदुः ॥ ५५३ ॥

जो पुत्र आव्यावस्था में ही पवित्र, यतुर और श्रीरामनाम परायण धार्मिक है विद्वानों ने उसी को वास्तव में पुत्र कहा है अन्य तो मलमूत्र के समान है ।

वैश्वानर संछितायां -

वैश्वानर संछिता में -

न देशकालनियमो न शौयाशौचनिर्णयः ।

विद्यते कुत्रचिन्नैव रामनाम्नि परे शुचौ ॥ ५५४ ॥

श्रीरामनाम के जप, स्मरण, कीर्तन करने के लिये पवित्र स्थान, पुण्य तिथि, शौच, अशौच आदि का नियम नहीं है इसमें किसी की अपेक्षा नहीं है क्योंकि श्रीरामनाम सबके परे है ।

रामेति नित्यं यो भक्त्या ब्रूयाद्रात्रिदिवं नरः ।

महापातककोटिभ्यो मुक्तः पूतो भवेत्तु सः ॥ ५५५ ॥

जो मनुष्य रात दिन भक्तिपूर्वक श्रीरामनाम का नित्य उच्चारण करते हैं वे मनुष्य करोड़ों महापापों से निश्चित ही मुक्त हो जाते हैं और परम पवित्र हो जाते हैं ।

रामनामात्मकं मन्त्रं सततं कीर्त्तयन्ति ये ।

सर्वरोगविनिर्मुक्तो मुक्तिमाप्नोति दुर्लभाम् ॥ ५५६ ॥

जो लोग श्रीरामनामरूपी महामन्त्र का निरन्तर कीर्तन करते हैं वे लोग सभी रोगों से मुक्त होकर निश्चित ही दुर्लभ मुक्ति को प्राप्त करते हैं ।

भवेक्षतुल्याः कुलीनास्ते ये न भक्ता रघूत्तमे ।

सङ्घीर्णयोनयः पूता नामगृह्णन्ति ये सदा ॥ ५५७ ॥

उत्तम कुल में जन्म लेने के बाद भी जो लोग भगवान् श्रीराम की भक्ति नहीं करते हैं वे महायादव म्लेच्छ से भी अधम हैं जो नीच योनि में जन्म लेकर सदा सर्वदा श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करते हैं वे परम पवित्र हैं ।

नास्ति नास्ति मडाभाग क्लेर्युगसमं युगम् ।

स्मरणात् कीर्त्तनाद्यत्र लभते परमं पदम् ॥ ५५८ ॥

हे मडाभाग ! कलियुग के समान कोई युग नहीं है नही है जहाँ केवल श्रीरामनाम के स्मरण कीर्तन से परम पद की प्राप्ति होती है ।

वात्स्यायन संहितायां -

वात्स्यायनसंहिता में -

तुला पुरुष दानानि दत्त्वा यद्दुलमश्नुते ।

तस्मादसङ्ख्यगुणितं रामनाम्नापि संलभेत् ॥ ५५९ ॥

सुवर्ण पुरुष आदि का तुला दान करने से जो पुण्य प्राप्त होता है उससे असङ्ख्य गुना अधिक पुण्य एक बार श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से होता है ।

स्त्रीराजबालडा यैव यश्च विश्वासघातकः ।

सर्वापडारी पापिष्ठो मार्गङ्गो ग्रामदाडकः ॥ ५६० ॥

मातृगामी सुरापश्च भूतध्रुक् सर्वनिन्दकः ।

मातृडा पितृडा यैव भ्रूणडा गुरुतल्पगः ॥ ५६१ ॥

ते यान्ये शैव पापिष्ठा मडापापयुताश्च ये ।

सर्वपापैः प्रमुच्यन्ते रामनाम्नस्तु कीर्तनात् ॥ प६२ ॥

स्त्री, राजा और बालक की उत्या करने वाला, विश्वासघाती, सर्वस्व को लूटने वाला, मडापापी, पथिकों को लूटने वाला, गाओं में अग्नि लगाने वाला, माता के साथ गमन करने वाला, शराबी, सर्वद्रोही, सबका निन्दक, माता, पिता एवं गर्भ की उत्या करने वाला, गुरुपत्नी के साथ गमन करने वाला और दूसरे भी जो अत्यन्त पापी एवं मडापापी हैं वे सभी श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से समस्त पापों से मुक्त हो जाते हैं ।

उमभारसलस्रैश्च कुरुक्षेत्रे रविग्रहे ।

गजश्वरथदानैश्च देवालय प्रतिष्ठया ॥ प६३ ॥

सेवनैः सर्वतीर्थानां तपोभिर्विविधैश्च डिम् ।

श्रीरामनाम्नि सततं नित्यं यस्यास्ति निश्चयम् ॥ प६४ ॥

कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण के समय उजारों मन सोना, छाथी, घोड़ों और रथ के दान से, देवालय बनवाकर उसमें देवताओं की प्राण प्रतिष्ठा करने से, सभी तीर्थों के सेवन करने से और अनेक प्रकार के तप करने से क्या लाभ है? जिसका श्रीरामनाम में पूर्ण विश्वास हो गया है उसके लिये किसी अन्य कर्म के करने की आवश्यकता नहीं है ।

घोरे कलियुगे प्राप्ते सर्वदोषैकभाजने ।

रामनामरता ज्वास्ते कृतार्थाः सुज्ज्विनः ॥ प६५ ॥

समस्त दोषों का एकमात्र पात्र इस घोर कलियुग के आने पर जो लोग श्रीरामनाम के जप में लगे हुए हैं वास्तव में वे ही कृतार्थ हैं उन्हीं का ज्वन सकल है ।

रामनामपरा ये य घोरे कलियुगे द्विजाः ।

त श्वेद कृतकृत्याश्च न कलिर्बाधते हि तान् ॥ प६६ ॥

हे ब्राह्मणों ! इस घोर कलियुग में जो लोग श्रीरामनाम के जप स्मरण कीर्तन में लगे हैं वे ही कृतकृत्य हैं उनको कलियुग पीड़ित नहीं पहुँचाता है ।

समस्तजगदाधारं सर्वेश्वरमभ्यङ्गितम् ।

रामनाम कलौ नित्यं ये जपन्ति समादरात् ॥ प६७ ॥

ते धन्याः पूजनीयाश्च तेषां नास्ति भयं क्वचित् ।

सत्यं वदामि विप्रेन्द्र नान्यथा वचनं मम ॥ प६८ ॥

सम्पूर्णा जगत् का आधार, सर्वेश्वर और अभाण्ड श्रीरामनाम को जो इस कलियुग में नित्य आदरपूर्वक जपते हैं वे ही धन्य एवं पूजनीय हैं उनको कहीं भी किसी से भय नहीं है, हे ब्राह्मण श्रेष्ठ ! मैं सत्य कडता हूँ मेरी वाणी अन्यथा नहीं है ।

मडाशम्भु संछितायां श्रीशिववाक्यं -

मडाशम्भुसंछिता में शिवजो का वाक्य -

यत्र कुत्राशुभे देशे भवेद्रामानुकीर्तनम् ।

सर्वं तीर्थादिकं विद्धि मडाधौघं हरं छि तत् ॥ ५६८ ॥

जिस किसी अपवित्र स्थान में श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन होता है उस स्थान को सभी तीर्थों से श्रेष्ठ समझो वल्ल स्थान मडापापपुञ्ज का भी नाशक है ।

श्रीरामनामाभिलमन्त्रबीजं सञ्ज्वनं येत् लृट्ये प्रविष्टम् ।

ढालाडलं वा प्रलयानलं वा मृत्योर्मुषं वा विशतां कुतो भी ॥ ५७० ॥

श्रीरामनाम सम्पूर्ण मन्त्रों का बीज है और सञ्ज्वन भूरि है यल्ल रामनाम अल्ल बार किसी तरल्ल सन्त सद्गुरु कृपा से लृट्य में प्रविष्ट हो जाय तो उस साधक के लिअे ढालाडल विष, प्रलययात्रि अथवा मृत्यु के मुष में प्रवेश करने में भी कोल्ल भय नहीं है ।

तत्रैव श्रीजनकीवयनं श्रीरामं प्रति -

वर्डी श्रीजनकीञ्जु का वाक्य श्रीरामञ्जु के प्रति -

प्रणवं केचिदाहुर्वे बीजं श्रेष्ठं तथा परे ।

तत्तु ते नाम वरुण्यं सिद्धिमाप्नोति मे मतम् ॥ ५७१ ॥

कुछ लोग ॐ को तथा कुछ लोग अल्लकाक्षर बीज गं, लं आदि को श्रेष्ठ कल्लते हैं परन्तु वे दोनों (अों, गं, लं आदि) “र” और “म” ढन दोनों वर्णों से ढी सिद्ध ढोते हैं अल्लसा मेरा मत है ।

रामेति नाममात्रस्य प्रभावमतिदुर्गमम् ।

भृगयन्ति तु तद्भेदाः कुतो मन्त्रस्य ते प्रभो ॥ ५७२ ॥

ढे स्वामिन् ! श्रीरामनाम का प्रभाव अति दुष्प्राप्य है सभी वेद उसका अन्वेषण करते हैं परन्तु पार नहीं पाते हैं ढिर किसी दूसरे में ढतनी शक्ति कल्लों? जो उसका पार पा सके ।

रामनाम प्रभावेण स्वयम्भूः सृजते जगत् ।

विभर्ति सकलं विषणुः शिवः संहरते पुनः ॥ ५७३ ॥

श्रीरामनाम के प्रभाव से स्वयम्भू अल्लमाञ्जु जगत् की सृष्टि करते हैं भगवान् विषणु पालन करते हैं और शङ्करञ्जु संढार करते हैं ।

पतञ्जलि संढितायां -

पतञ्जलिसंढिता में -

पृथ्वीं शस्यसम्पूर्णां दत्त्वा यत्कलमश्रुते ।

रामनाम सङ्जजम्वा ततोऽनन्तगुणं कलम् ॥ ५७४ ॥

ढरे भरे धान्य से सम्पन्न सम्पूर्णा पृथिवी का दान करके जो कल्ल प्राप्त किया जाता है उससे अनन्त गुणा कल्ल अल्ल बार श्रीरामनाम के जप करने से प्राप्त ढोता है ।

रामेति नाम परमं मन्त्राणां बीजमव्ययम् ।

ये कीर्तयन्ति सततं तेषां किञ्चिन्न दुर्लभम् ॥ ५७५ ॥

सभी मन्त्रों का अविनाशी भीज श्रीरामनाम का जो निरन्तर कीर्तन करते हैं उनके लिखे कुछ भी दुर्लभ नहीं है ।

रामनाम परब्रह्म त्यक्त्वा वात्सल्यसागरम् ।

अन्यथा शरणां नास्ति सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ५७६ ॥

वात्सल्य सागर परब्रह्मस्वरूप श्रीरामनाम को छोड़कर दूसरा कोई रक्षक नहीं है यह बात मैं सत्य-सत्य कहता हूँ ।

नाम सङ्कीर्तनादेव सम्पूर्णाङ्गलदायकम् ।

अन्यत् कृत्वा क्व सर्वं मोक्षावधिमसंशयम् ॥ ५७७ ॥

श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से ही सम्पूर्णाङ्गल की प्राप्ति सम्भव है अन्य साधनों से नहीं । क्योंकि अन्य सारे साधन तुच्छ हल देने वाले हैं अधिक से अधिक मोक्ष तक देने वाले हैं वह भी परमानन्द रस की अपेक्षा निश्चित ही तुच्छ है ।

कलौ युगे राघवनामतस्सदा परं पदं यात्यनायासतो ध्रुवम् ।

सर्वैर्युगैः पूजितमुन्नतं युगं समस्तकल्याणनिकेतनं वरम् ॥ ५७८ ॥

दूसरे सभी युगों से पूजित, उन्नत, समस्त कल्याण का निधान एवं श्रेष्ठ युग कलियुग है क्योंकि इस कलियुग में सदा सर्वदा श्रीरामनाम के जप स्मरण एवं कीर्तन से बिना श्रम के ही निश्चित ही परमपद की प्राप्ति होती है ।

माङ्गल्यं सर्वपापघ्नमायुष्यमभिवेष्टदम् ।

भुक्ति मुक्तिप्रदं पुण्यं रामनाम्नस्तु कीर्तनम् ॥ ५७९ ॥

श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन मङ्गलमय, सभी पापों का नाश करने वाला, आयुष्य एवं सम्पूर्णाङ्गल को प्रदान करने वाला, भुक्ति और मुक्ति को प्रदान करने वाला एवं पुण्यप्रद श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन है ।

येऽलर्निश जगद्धातू रामनाम्नस्तु कीर्तनम् ।

कुर्वन्ति तान् नरव्याघ्र न कलिर्बाधते क्वचित् ॥ ५८० ॥

हे नरश्रेष्ठ ! जो लोग दिन रात जगत् पिता भगवान् श्रीरामजी के नाम का सङ्कीर्तन करते हैं उनको कहीं भी कलि पीड़ा नहीं पहुँचाता है ।

शमनाय जलं वह्नेस्तमसो भास्करोदये ।

शान्तिः क्लेशघ्नैश्च नामसङ्कीर्तनं वरम् ॥ ५८१ ॥

जिस प्रकार वह्नि की शान्ति के लिखे जल समर्थ होता है और अन्धकार समूह की शान्ति के लिखे सूर्य समर्थ होता है उसी प्रकार कलि के पाप समूह की शान्ति के लिखे श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन ही सर्वश्रेष्ठ है ।

नामसङ्कीर्तनं तस्य क्षुत्तृ संख्यवनादिषु ।

यः करोति मलाभागे तस्य तुष्यति राघवः ॥ ५८२ ॥

भूष प्यास के दुःख से अवे गिरते पडते छीड़ते जैसे डैसे भी जो बडःबागी श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करता है
उस पर भगवान् श्रीराम प्रसन्न होते हैं ।

वैशम्पायन संहितायां -

वैशम्पायनसंहिता में -

सर्वधर्मबलिर्भूतः सर्वपापयुतस्तथा ।

मुच्यते नात्र सन्धेऽपि रामनामानुकीर्तनात् ॥ ५८३ ॥

जो सभी धर्म अवे कर्म से बलिर्भूत है अवे समस्त पापों से युक्त है वल भी श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से मुक्त हो
जाता है इसमें संशय नहीं है ।

ब्रवीमि वाक्यं श्रुतिशास्त्रसारं शृण्वन्तु तत्सर्वजनाः पवित्रम् ।

रामेति वर्णद्वयमादरेण जपन्तु सर्वैर्मुनिभिः प्रदिष्टम् ॥ ५८४ ॥

मैं समस्त वेदों अवे शास्त्रों के सार अवे पवित्र वचन कलता हूँ आप सभी लोग उसको सुनें सभी मुनियों का यही
प्रकृष्ट आदेश है कि राम इन दो अक्षरों को आदरपूर्वक जप करे ।

रामनाम जपादेव महापातक कोटयः ।

विनश्यन्ति महाभाग अनयासेन तत्क्षणात् ॥ ५८५ ॥

हे महाभाग ! श्रीरामनाम के जप से ही बिना श्रम के उसी क्षण करोडों पाप भस्म हो जाते हैं ।

जुवनं रामभक्तस्य वरं पञ्चदिनानि च ।

न तु नामविहीनस्य क्वकोटिशतानि च ॥ ५८६ ॥

श्रीरामभक्ति से युक्त भक्तों का जुवन यदि केवल पाञ्च दिन के लिये है तो भी वल अतिश्रेष्ठ अवे धन्य है
श्रीरामनाम से रलित करोडों वर्षों का जुना भी बेकार अवे लेय है ।

वारान्निधौ पततु गच्छतु वा लुताशं

बन्ध्याऽथवा भवतु तज्जननी भरारिः ।

भक्तिर्न यस्य विमलेश्वरनाम्नि शुद्धे

जुवच्छवो जगति गर्हित कर्मकर्ता ॥ ५८७ ॥

भरारि भगवान् श्रीरामजु के पवित्र अवे शुद्ध श्रीरामनाम में जिसकी प्रीति नहीं है वल जगत् में जुते जु मुर्दा है
निन्दनीय कर्म करने वाला है, वल चाहे समुद्र में गिर पडःे अथवा अग्नि में प्रवेश कर जाये अथवा उसकी मां
बन्ध्या हो जाये ।

गार्गीयसंहितायां धर्मराजवाक्यं दूतान् प्रति -

गार्गीयसंहिता में धर्मराजजु का वाक्य दूतों के प्रति -

दूतः शृणुष्वं मम शासनं ध्रुवं सदैव माङ्गल्यकरं सुभावलम् ।

स्मरन्ति ये राघवनाम निर्मलं न तत्र यात्रा भवती शुभावहा ॥ ५८८ ॥

હે દૂતો ! તુમ લોગ મેરે સદા સર્વદા મડ્ગલ કરને વાલે ઔર સુખદ નિશ્ચિત આદેશ કો સુનો, જો લોગ નિત્ય નિરન્તર ભગવાન્ શ્રીરાઘવેન્દ્ર કે નિર્મલ નામ કા ઉચ્ચારણ કરતે હૈં સ્મરણ કરતે હૈં વહાં તુમહારી યાત્રા મડ્ગલકારી નહીં હૈ | ઇસલિએ તુમ લોગ વહાં ભૂલકર ભી મત જાના |

સાહુતરીત્યાથ ભયેન કલેશાદન્તેડપિ શ્રીરામમુદાહરન્તિ |

તે પુણ્યભાજો મનુજા મહાત્મકા ન તત્ર યાત્રા ભવતી શુભાવહા || ૫૮૯ ||

જો લોગ સહુત મેં, ભય સે અથવા કિસી કલેશ કે કારણ અન્ત મેં ભી શ્રીરામનામ કા ઉચ્ચારણ કરતે હૈં વે લોગ અવશ્ય હી પુણ્યાત્મા ઔર મહાન્ આત્મા હૈ વહાં તુમહારી યાત્રા શુભ નહીં હોગી |

વયઃ સદા નામ સુહૃદ્ધુણો રતાસ્તથૈવ તજજાપકપાદસેવકાઃ |

પ્રભાવતો યસ્ય હરીશ બ્રહ્મા વિભર્તિ વિશ્વં સલયં સસમ્ભવમ્ || ૫૯૦ ||

હમ લોગ ભી સદા સર્વદા શ્રીરામનામાનુરાગિયોં કે ગુણગાન મેં લગે રહતે હૈં ઔર શ્રીરામનામ કે જાપકોં કી ચરણ સેવા કરતે હૈં | જિસ શ્રીરામનામ કે પ્રભાવ સે ભગવાન્ વિષ્ણુ વિશ્વ કી રક્ષા, ભગવાન્ શકુર સંહાર એવં બ્રહ્માજી વિશ્વ કી રચના કરતે હૈં |

તસ્માત્ પ્રમાદમુત્સૃજ્ય દૂરતઃ કિહુરાસ્સદા |

શ્રીરામનામસમ્પન્ને ગૃહે ગચ્છતુ નૈવ હિ || ૫૯૧ ||

હે સેવકોં ! ઇસીલિએ પ્રમાદ કો દૂર છોડકર શ્રીરામનામ સે સમ્પન્ન ઘર મેં ભૂલકર ભી ન જાના |

કર્તવ્યં વાક્યમાકર્ણ્ય સ્વામિનો મમ સામ્પ્રતમ્ |

ધાર્યં ધ્રુવં પ્રયત્નેન મહામોહૈકનાશનમ્ || ૫૯૨ ||

હે સેવકોં ! ઇસ સમય મુઝ સ્વામી કે મહામોહનાશક કર્તવ્ય વાક્ય કો સુનકર નિશ્ચિત હી પ્રયત્નપૂર્વક ધારણ કરો |

વૃહદ્ વશિષ્ઠસંહિતાયાં શ્રીવશિષ્ઠવાક્યં રાજકુમારં પ્રતિ -

બૃહદ્ વશિષ્ઠસંહિતા મેં શ્રીવશિષ્ઠજી કા વાક્ય રાજકુમારોં કે પ્રતિ -

હિત્વા સકલપાપાનિ લબ્ધ્વા સુકૃતસગ્ચયમ્ |

સ પૂતો જાયતે ધીમાન્ રામનામાનુકીર્તનાત્ || ૫૯૩ ||

વહ શ્રીરામનામ કે સહીર્તન કે પ્રભાવ સે સમસ્ત પાપોં કા ત્યાગકર સુકૃત પુન્જ કો પ્રાપ્ત કર બુદ્ધિમાન્ પવિત્ર હો ગયા |

રામ રામેતિ રામેતિ કીર્તયચ્છુદ્ધયેતસા |

રાજસૂયસહસ્રાણામ્હલં પ્રાપ્નોતિ માનવઃ || ૫૯૪ ||

જો મનુષ્ય શુદ્ધચિત્ત સે રામ રામ રામ કીર્તન કરતા હૈ વહ હજારોં રાજસૂય યજ્ઞોં કા ફલ પ્રાપ્ત કરતા હૈ |

તત્રૈવ શ્રીનારદવાક્યં મુનીન્ પ્રતિ -

વહીં શ્રીનારદજી કા વાક્ય મુનિયોં કે પ્રતિ -

अेकतः सर्वतीर्थानि जलं चैव प्रयागजम् ।

श्रीरामनाम माहात्म्यं कलां नार्हति षोडशीम् ॥ ५८५ ॥

तराजू के अेक पलडः पर सभी तीर्थों अेवं तीर्थराज प्रयाग के सङ्गम के जल को रभें और दूसरी ओर किञ्चिद् रामनाम माहात्म्य को रभें तो सभी तीर्थ अेवं सङ्गम का जल उसकी कला के समान भी नहीं हो सकते ।

अन्धानां नेत्रमुत्कृष्टं स्वरश्च श्रीनाम मङ्गलम् ।

बधिराणां तथा कर्णपङ्गूनां उस्तपादकम् ॥ ५८६ ॥

भीतर बाहर दोनों तरफ से जो अन्धे हैं उनके लिये श्रीरामनाम परम मङ्गल मय अेवं उत्कृष्ट नेत्र हैं बधिरों के लिये कान अेवं लूले लङ्गुओं के लिये हाथ पांव श्रीरामनाम है अर्थात् असहाय लोगों के लिये परम सहायक श्रीरामनाम है ।

गालवीय संछितायां -

गालवीयसंछिता में -

आश्रयः सर्वजन्तूनामाधाररछितात्मनाम् ।

जननी तातवन्नित्यं पोषकं सर्वदृष्टिनाम् ॥ ५८७ ॥

जो लोग निराधार हैं उन सभी निराधार जन्तुओं का परम आधार श्रीरामनाम है अेवं सभी देवधारियों का माता-पिता की तरह नित्य भरण पोषण करने वाला श्रीरामनाम है ।

सुदृशिन संछितायां -

सुदृशिनसंछिता में -

यातकानां यकोराणां मयूराणां तथा शुभम् ।

लक्षाणां दोषनिर्मुक्तं धार्य श्रीनाम तत्परैः ॥ ५८८ ॥

श्रीरामनामजापकों को यातकों, यकोरों अेवं मयूरों के दोषरहित लक्षाण टेक, ध्यान अेवं मधुर शब्द को धारण करना याडिअे ।

दुःप्पादिकं समं कृत्वा द्रुधर्म विहाय च ।

भजेन्निरामयं नाम चित्तमाकृष्य सर्वतः ॥ ५८९ ॥

सुभ दुःप्पादि को सम मानकर और मान-अपमानादि द्वन्द्वों को छोड़कर अपने चित्त को सभी तरफ से भीग्यकर निरामय श्रीरामनाम का भजन करना याडिअे ।

श्रीरामनाममात्रायामादौ चित्तस्य धारणा ।

कृत्वा पश्चात्सुधीर्धानं रेकस्यैव विवेकतः ॥ ६०० ॥

बुद्धिमानों को पडले श्रीरामनाम के अवयव मात्रा “आ” के मनन अर्थानुसन्धान में मन को लगाना याडिअे तत्पश्चात् विवेकपूर्वक “र” का अर्थानुसन्धान मनन करना याडिअे ।

प्रणवादीनि मन्त्राणि रामनाम्नि समभ्यसेत् ।

यथा गुरुपदशेन नित्यमेकाग्रमानसैः ॥ ६०१ ॥

अपने गुरु मહाराज ने जिस प्रकार उपदेश दिया है उसी के अनुसार स्थिर आसन पर बैठकर ओकाग्रचित्त होकर नित्य प्रणवादि सभी मन्त्रों का श्रीरामनाम में ही अभ्यास करें ।

अेवं रीत्या जपेन्नाम तदा स्वल्पमुपागतः ।

जायते परमा सिद्धिर्विरक्तिर्भक्तिरुज्ज्वला ॥ ६०२ ॥

इसी रीति से यदि श्रीरामनाम का जप किया जाय तो थोड़े-से समय में ही परम सिद्धि, वैराग्य अेवं उज्ज्वल भक्ति की प्राप्ति हो जाती है ।

शिव संछितायां -

शिवसंछिता में -

नारायणादि नामानि कीर्तितानि बहुन्यपि ।

सम्यग् भगवतस्तेषु रामनाम प्रकाशकम् ॥ ६०३ ॥

भगवान् के नारायणादि अनन्त नामों के कीर्तन करने पर भी उन सभी नामों में सम्यक् प्रकाशक नाम तो श्रीरामनाम ही है ।

नारायणादि नामानि साकारैश्वर्यमुत्तमम् ।

नित्यं ब्रह्म निराकारमैश्वर्यं वै विभाति य ॥ ६०४ ॥

नारायणादि जितने भगवान् के नाम हैं वे सब साकार अेवं उत्तम अैश्वर्यमय हैं और नित्य निराकार अैश्वर्यमय ब्रह्म हैं दोनों अलग-अलग हैं ।

उभयैश्वर्यमान्नित्यो रामो दशरथात्मजः ।

साडेते नित्यमाधुर्यं धाम्नि संराजते सदा ॥ ६०५ ॥

श्रीदशरथनन्दन भगवान् श्रीराम दोनों प्रकार के अैश्वर्य से नित्य सम्पन्न हैं और नित्य माधुर्यमय साकेत धाम में सदा सर्वदा विराजते हैं ।

रामनाम परं तत्त्वं द्वयोः कारणमुज्ज्वलम् ।

तस्य संस्मरणार्थेव साक्षाद्रामालयं प्रजेत् ॥ ६०६ ॥

साकार निराकार का परम कारण उज्ज्वल परात्पर तत्व श्रीरामनाम है उसके स्मरण मात्र से मनुष्य साक्षात् श्रीरामधाम साकेत जाता है ।

नाम स्मरणामात्रेण नामी सन्मुपतां लभेत् ।

तस्माच्छ्रीरामनामस्तु कीर्तनं सर्वदोषितम् ॥ ६०७ ॥

श्रीरामनाम के स्मरण मात्र से भगवान् श्रीराम प्रत्यक्ष प्रकट हो जाते हैं इसलिये सदा सर्वदा श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करना चाडिअे यही उचित है ।

रा शब्दस्तु परं ब्रह्म वायकत्वेन बोधितः ।

मकारस्तु परा शक्तिरसर्वशक्त्यभिवन्दिता ॥ ६०८ ॥

श्रीरामनाम में “र” परब्रह्म का वाचक कडा गया है । अवं “म” सभी शक्तियों से पूज्या पराशक्ति श्रीसीताञ्जु का वाचक है ।

लोमश संछितायां -

लोमशसंछिता में -

न सोऽस्तु प्रत्ययो लोके यश्च श्रीराम नामतः ।

भिन्नं प्रतीयते विप्र सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ६०९ ॥

डे विप्र ! असा कोठ शब्द अर्थ नहीं है ज्ञान नहीं है जो श्रीरामनाम से भिन्न प्रतीत हो यड मैं सत्य-सत्य कडता हूँ । तात्पर्य यड है डि सभी शब्दार्थ ज्ञान श्रीरामनाम के अंश से प्रकट होते हैं ।

लौकिकाः वैदिकाः सर्वे शब्दा श्रीरामनामतः ।

समुद्भवन्ति लीयन्ते काले काले न संशयः ॥ ६१० ॥

वैदिक अवं लौकिक सभी शब्द समय-समय पर श्रीरामनाम से डी प्रकट होते हैं और विलीन भी होते हैं मैं सत्य-सत्य कडता हूँ ।

यथा भुशुष्टिशब्देन पलायन्ते भगा मुने ।

तरुं विडाय वै तद्द्राम नाम्ना दुराशय ॥ ६११ ॥

डे मुने ! जैसे धमाके डी आवाज सुनकर वृक्ष छोडःकर पक्षी भाग जाते हैं उसी प्रकार श्रीरामनाम डी ध्वनि सुनकर शरीर के सारे पाप नष्ट हो जाते हैं ।

यथा चिन्तामणोस्स्पर्शाद्धारिद्रुं याति सङ्क्षयम् ।

तथा श्रीराम नाम्ना वै मोडजालमसंशयम् ॥ ६१२ ॥

जैसे चिन्तामणि के स्पर्श से दरिद्रता का नाश हो जाता है उसी प्रकार श्रीरामनाम से निश्चित डी मोडजाल नष्ट हो जाते है ।

रामेति द्रयक्षरं नाम मानम्भङ्गः पिनाकिनः ।

अभेदो बोध्यते तेन सततं नामनामिनोः ॥ ६१३ ॥

श्रीरामनाम के दोनों अक्षरों ने (रा म) शङ्करञ्जु के मान का भञ्जन डिया है इससे प्रतीत होता है डि नाम और नामी में अभेद है । तात्पर्य यड है डि धनुष तोडःा रामञ्जु ने और कडा गया डि दो अक्षरों ने शिवञ्जु का मान भङ्ग डिया अतः रामञ्जु और रामनाम दोनों अके डी है ।

तत्रैव लोमशवाक्यं -

वडी लोमशवाक्य -

अेकदा मुनयः सर्वे शौनकाद्या बडुश्रुताः ।

नैमिषे सूतमासीनं पप्रञ्छुरिदमादरात् ॥ ६१४ ॥

એક બાર નૈમિષારણ્ય મેં બહુશ્રુત શૌનકાદિ ઋષિયોં ને સુખપૂર્વક બૈઠે હુએ શ્રીસૂતજી સે આદરપૂર્વક
ચહ પૂછા ।

અજ્ઞાનધ્વાન્તવિધ્વંસોડનન્ત કોટિ સમપ્રભઃ ।

કથિતો ભવતા પૂર્વ તદ્વદસ્વ મહામતે ॥ ૬૧૫ ॥

હે મહામતે ! આપને પહલે કહા થા કિ અજ્ઞાનરૂપી અન્ધકાર કો નાશ કરને કે લિએ અનન્ત સૂર્ય કે સમાન પ્રભા
શ્રીરામનામ મેં હૈ અબ ઉસે વિસ્તાર સે કહિએ ।

શ્રીસૂત ઉવાચ -

સૂતજી ને કહા -

શ્ુણુધ્વં મુનયઃ સર્વે રહસ્યં પરમાદ્ભુતમ્ ।

પાર્વતી શિવ સંવાદ ચતુર્વર્ગપ્રદાયકમ્ ॥ ૬૧૬ ॥

હે મુનિયોં ! આપ સબ પરમ અદ્ભુત રહસ્યાત્મક ચાર પદાર્થોં કો પ્રદાન કરને વાલા ભગવાન્ શિવ ઔર પાર્વતીજી
કા સુન્દર સંવાદ સુનિએ ।

કૈલાસશિખરાસીનં દેવદેવં જગદ્ગુરુમ્ ।

લોકાનાગ્ચ હિતાર્થાય પપ્રચ્છ નગકન્યકા ॥ ૬૧૭ ॥

કૈલાસ કે શિખર પર સુખપૂર્વક બૈઠે હુએ જગદ્ગુરુ દેવાધિદેવ ભગવાન્ શિવજી સે શ્રીપાર્વતીજી જગત્ કે કલ્યાણ
કી કામના સે પૂછા ।

પાર્વત્યુવાચ -

પાર્વતીજી બોલી -

દેવ દેવ મહાદેવ સર્વજ્ઞ પરમેશ્વર ।

ત્વત્તઃ શ્રુતં મયા પૂર્વ મન્ત્રતન્ત્રાદૈનેકધા ॥ ૬૧૮ ॥

હે સર્વજ્ઞ ! હે પરમેશ્વર ! હે દેવાધિદેવ મહાદેવ ! મૈત્રે પહલે આપકે મુખ સે અનેક પ્રકાર કે મન્ત્રોં એવં તન્ત્રોં કો સુના
હે ।

સર્વધર્માણિ જીવાનાં વ્યવહારાણિ યાનિ ચ ।

ઇદાનીં શ્રોતુમિચ્છામિ કિં તત્ત્વં કૃતનિશ્ચિતમ્ ॥ ૬૧૯ ॥

ઔર જીવોં કે સભી ધર્મોં ઔર સભી વ્યવહારોં કો સુના । ઇસ સમય મૈં ચહ સુનના ચાહતી હૂં કિ અબ તક આપને
કૌનસા તત્ત્વ નિશ્ચિત કિયા ।

ગુહ્યાદ્ ગુહ્યતરં ગુહ્યં પવિત્રં પરમં ચ યત્ ।

સુલભં સુગમોપાયં વિનાયાસેન સિદ્ધિદમ્ ॥ ૬૨૦ ॥

જો ગુહ્ય સે ભી ગુહ્ય ઔર પરમ પવિત્ર હો, જો સુલભ એવં સુગમ ઉપાય વાલા હો, ઔર બિના શ્રમ કે હી સિદ્ધિ
પ્રદાન કરને વાલા હો ઐસે તત્ત્વ કો બતાઇએ ।

शिव उवाच -

शिवञ्च ने कडा -

धन्यासि कृतपुण्यासि यद्वि ते मतिरीदृशी ।

पृष्टं लोकोपकाराय तस्मात्त्वां प्रवदाम्यहम् ॥ ६२१ ॥

हे पार्वती ! तुम धन्य हो, तुमने पुण्य का कार्य किया है ज्योद्धि तुम्हारी औसी मति है तुमने लोक कल्याण की कामना से पूछा है अतः मैं तुमसे कहूँगा ।

रहस्यं परमं प्रेष्ठं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।

रामनामपरं तत्त्वं सर्वशास्त्रेषु प्रस्कृतम् ॥ ६२२ ॥

सभी प्रकार की सिद्धियों को प्रदान करने वाला, अत्यन्त प्रिय तत्व श्रीरामनाम है जो सभी शास्त्रों में प्रकृष्टता से स्फुटित हुआ है ।

यस्य नामप्रभावेण सर्वज्ञोऽहं वरानने ।

रामनाम्नः परं तत्त्वं नास्ति किञ्चिज्जगत्त्रये ॥ ६२३ ॥

हे सुमुनि ! जिस श्रीरामनाम के जप के प्रभाव से मैं सर्वज्ञ हो गया हूँ श्रीरामनाम से बढ़कर तीनों लोकों में कोई दूसरा तत्व नहीं है ।

रामभद्रं परित्यज्य योऽन्यदेवमुपासते ।

कुम्भीपाके मलाघोरे पथ्यते नात्र संशयः ॥ ६२४ ॥

भगवान् श्रीरामचन्द्र को छोड़कर जो किसी दूसरे देवी देवता की उपासना करते हैं वे लोग निश्चित ही मलाघोर कुम्भीपाक नरक में पकाये जाते हैं ।

अज्ञानाद्यथा ज्ञानाद्रामेति द्वयक्षरं वदेत् ।

जन्मकोटिकृतं पापं नाशमायाति तत्क्षणात् ॥ ६२५ ॥

जानबूझकर अथवा अनजान में जो “राम” इन दो अक्षरों का उच्चारण करते हैं उनके कष्ट जन्मों के पापों का नाश तत्क्षणा ही हो जाता है ।

यज्ञदानतपस्तीर्थस्वाध्यायाध्यात्मबोधतः ।

कोटिसङ्ख्यं रामनाम्नि पावित्र्यं वर्तते प्रिये ॥ ६२६ ॥

हे प्रिये ! यज्ञ, दान, तप, तीर्थ, स्वाध्याय एवं स्वस्वरूप बोध की अपेक्षा करोड़ों गुना अधिक पवित्रता श्रीरामनाम में है ।

ततः कोटिगुणं पुण्यं सीतानाम सनातनम् ।

एति मत्वा भजन्त्येतान् मुनयो नारदादयः ॥ ६२७ ॥

और यज्ञदानादि से कोटि गुना अधिक पुण्य श्रीसीता नाम के साथ राम नाम के जप में है औसा मान करके ही नारदादि ऋषि मुनि श्रीसीताराम नाम का जप करते हैं ।

यावन्न कीर्तयेदस्या नाम कल्मषनाशनम् ।

अनन्तकोटिं जपतोऽपि न रामः क्लृप्साधकः ॥ ६२८ ॥

जब तक समस्त पापों का नाशक श्रीसीताजी के नाम का कीर्तन जप नहीं करेङ्गे तब तक केवल श्रीरामनाम के अनन्त कोटि जप करने से भी कोई क्लृप्त नहीं मिलेगा अतः सदा सर्वदा युगल नाम का जप करना चाडिअे ।

सीतया सखितं यत्र रामनाम प्रकीर्त्यते ।

न तत्र नामदोषाणां प्रवृत्तिस्स्यात्कथञ्चन ॥ ६२९ ॥

जहाँ सीतानाम के साथ श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन होता है अर्थात् सीताराम सीताराम सङ्कीर्तन होता है वहाँ नामापराध जन्म दोष नहीं लगते हैं अर्थात् नामापराध होने पर भी श्रीसीताराम जप करने से उसका पाप नष्ट हो जाता है उसका क्लृप्त नहीं भोगना पडता है ।

साङ्गाः सल रलस्याश्च पठिता वेदराशयः ।

कृताश्च सकलाः यज्ञा येन रामेति कीर्तितम् ॥ ६३० ॥

जिसने श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन कर लिया उसने समस्त अङ्गों अेवं रलस्यों के साथ सम्पूर्णा वेद राशि को पढः लिया और समस्त यज्ञों का अनुष्ठान कर लिया ।

रामेति द्रयक्षरं नाम यत्र सङ्कीर्त्यते बुधैः ।

तत्राविर्भूय भगवान् सर्वदुष्णं विनाशयेत् ॥ ६३१ ॥

जहाँ पर विद्वानों के द्वारा “राम” धन हो अक्षरों का सङ्कीर्तन डिया जाता है वहाँ भगवान् प्रकट होकर सभी दुष्णों का नाश कर डेते हैं ।

अज्ञानतिमिरोद्भेदं कोटिसूर्येन्दुभास्वरम् ।

ज्ञानामृतपयोवाडं रामनाम सदा जपेत् ॥ ६३२ ॥

अज्ञानरुपी अनधकार के नाश करने के लिअे करोडःों सूर्य अेवं यन्द्र सम तेजस्वी, ज्ञानामृत की वृष्टि करने वाले मेघ के समान श्रीरामनाम का सदा सर्वदा जप करना चाडिअे ।

किं कार्यं वैदिकैः शब्दः किंवा मन्त्रैश्च तान्त्रिकैः ।

किं कर्मणा य ज्ञानेन किमन्यैस्तपसाश्रमैः ॥ ६३३ ॥

दूसरे वैदिक शब्दों से अथवा तन्त्र मन्त्रों से, कर्म, ज्ञान अेवं दूसरे तपस्याओं अेवं आश्रम धर्म के पालन से डया प्रयोजन? तात्पर्य यह है कि जब श्रीरामनाम के जप से सलज में डी सब कुछ प्राप्त हो जाता है तब अन्य साधनों की डया आवश्यकता है ।

स्मर्तव्यं रामनामैकं श्रोतव्यं यैव सर्वदा ।

पठितव्यं कीर्तितव्यं य श्रद्धायुक्तैर्दिवानिशम् ॥ ६३४ ॥

अतः रात दिन सदा सर्वदा श्रद्धापूरवक अेकमात्र श्रीरामनाम का स्मरण, श्रवण, पठन और कीर्तन करना चाडिअे ।

विधिरुक्तं सर्वैवास्थ न निषेधः क्वचिद्भवेत् ।

सर्वदेशे सर्वकाले सर्वैश्च नरजातिभिः ॥ ६३५ ॥

श्रीरामनाम के जप का विधान सदासर्वदा है निषेध कहीं नहीं है डर जाति का स्त्री या पुरुष डर जगह और डर समय श्रीरामनाम का जप कीर्तन कर सकते हैं ।

एदमेकं सदा कार्यं यदीच्छेच्छुभमात्मनः ।

यतुर्वर्गप्रदानेऽपि समर्थो रघुपुङ्गवः ॥ ६३६ ॥

यदि कोई अपना कल्याण चाहता है तो उसे एकमात्र श्रीरामनाम का सदासर्वदा कीर्तन करना चाहिये सभी मनोरथों को पूर्ण करने में भगवान् श्रीराम समर्थ हैं ।

ध्यानाज्ज्ञानाख्य सततं नाममात्रस्य कीर्तनात् ।

एत्युक्तं वः प्रियं सर्वं मया देवर्षिपुङ्गवः ॥ ६३७ ॥

ध्यान एवं ज्ञान की अपेक्षा निरन्तर श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन श्रेष्ठ है हे मुनिश्रेष्ठों ! मैं आप लोगों को प्रिय लगने वाली बात यह कह दिया ।

नातोऽपि वेदितव्यं स्याद्भवतां तत्त्वमीयुषाम् ।

सिद्धान्तः सर्वशास्त्राणां भवतां समुदाहृतम् ॥ ६३८ ॥

आप तत्व जिज्ञासुओं को इसके अतिरिक्त कुछ भी जानना बाकी नहीं है मैंने आप लोगों के लिये सभी शास्त्रों का सार सिद्धान्त कहा है ।

एति ते कथितं देवि रघस्यं परमाद्भुतम् ।

गोपनीयं प्रयत्न येन श्रेयो ह्यवाप्स्यसि ॥ ६३९ ॥

हे देवि ! मैंने परम अद्भुत रघस्य तुमसे कहा है इसको प्रयत्नपूर्वक छिपाना चाहिये सबसे नहीं कहना चाहिये तभी इससे कल्याण प्राप्त करोगी ।

पुलस्त्यसंछितायां -

पुलस्त्यसंछिता में -

कृष्णेति वासुदेवेति सन्ति नामान्यनेकशः ।

तेभ्यो रामेति यन्नाम प्राडुर्वेदाः परं मुने ॥ ६४० ॥

हे मुने ! वेदों में भगवान् के कृष्ण, वासुदेव आदि अनेक नाम कहे हैं उनसे बढकर श्रीरामनाम हैं अर्थात् सभी नामों से श्रेष्ठ श्रीरामनाम है ।

सर्ववेदाश्रयत्वाख्य सर्वलोकस्य कारणात् ।

एश्वरप्रतिपाद्यत्वाद्यभाण्डब्रह्मवाचकः ॥ ६४१ ॥

समस्त वेदों का परम आश्रय, समस्त लोकों का परम कारण एवं एश्वर शिवजी का भी प्रतिपाद्य होने से श्रीरामनाम परब्रह्म वाचक है ।

शुकसंछितायां -

श्रीशुकसंछिता -

आकृष्टिः इतयेतसां सुमलतामुग्याटनं यांलसा-

मायाइडालममूकलोकसुलभो वश्यश्च मुक्ति स्त्रियः ।

नो दीक्षां न य दक्षिणां न य पुरश्चर्यामिनागीक्षते

मन्त्रोऽयंरसनास्पृगेव हलति श्रीरामनामात्मकः ॥ ६४२ ॥

जिन्डोंने अपने मन को वशकर लिया है जैसे मलात्माओं के भी चित्त को आकृष्ट करने वाला, पापों का उग्याटन करने वाला, गूँगों को छोड़कर ब्रह्मा से लेकर चाण्डाल पर्यन्त सभी जिवों के लिखे सुलभ, मुक्ति स्त्री को वश में करने वाला श्रीरामनाम है इसमें दीक्षा दक्षिणा और पुरश्चरणादि की अपेक्षा नहीं है यह श्रीरामनामरूपी मलामन्त्र केवल जिह्वा के स्पर्श मात्र से सम्पूर्ण हल प्रदान करता है ।

नायनाय यदृतेऽक्षराष्टकं पञ्चकं च न शिवाय यद्विना ।

मुक्तिर्दं भवति यद्वययोर्वशात्तद्वयं वयमुपास्महे डिल ॥ ६४३ ॥

श्रीरामनाम के “रा” शब्द के बिना अष्टाक्षर मन्त्र नायणाय अयं “म” के बिना पञ्चाक्षर मन्त्र “न” शिवाय डोकर अभीष्ट हल नहीं देते हैं तात्पर्य यह है कि श्रीरामनाम के “रा” के कारण ही नारायण मन्त्र अयं “म” के कारण ही शिव का पञ्चाक्षर मन्त्र अभीष्ट अर्थ प्रदान करता है मुक्ति प्रदान करता है इसलिखे डम लोग निश्चित ही श्रीरामनाम की उपासना करते हैं ।

रामस्यातिप्रियं नाम रामेत्येव सनातनम् ।

दिवारात्रौ गुणत्रेधो भाति वृन्दावने स्थितः ॥ ६४४ ॥

भगवान् श्रीराम का अतिप्रिय सनातन नाम श्रीराम ही है इसी नाम को श्रीधाम वृन्दावने में स्थित डोकर श्रीकृष्णयन्त्र दिन रात श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करते रहते हैं ।

येषां रामः प्रियो नैव रामे न्यूनत्वदर्शनाम् ।

द्रष्टव्यं न मुषं तेषां सङ्गतिस्तु कुतस्तराम् ॥ ६४५ ॥

जिन लोगों का श्रीराम के प्रति प्रेम नहीं है अथवा जो लोग श्रीरामजु में न्यूनत्व का दर्शन करते हैं उन सबका मुष नहीं देखना चाडिखे सङ्गति करना तो बहुत दूर है ।

यन्नामवैभवं श्रुत्वा शङ्कराश्चुङ्कजन्मना ।

साक्षादीश्वरतां प्राप्तः पूजितोऽलं मुनीश्वरैः ॥ ६४६ ॥

जिस श्रीरामनाम की मडिमा को भगवान् शङ्कर से सुनकर मैं शुक शरीर से साक्षात् ईश्वर रूप डो गया और बड-बड-मुनीश्वरों के भी पूज्य डो गये ।

नातः परतरं वस्तु श्रुतिसिद्धान्तगोचरम् ।

दृष्टं श्रुतं मया क्वापि सत्यं सत्यं वयो मम ॥ ६४७ ॥

समस्त वेदान्तों में श्रीरामनाम से बढःकर कोई दूसरी वस्तु मैंने न देखा है और न कहीं सुना है यद्य मेरी वाणी सत्य सत्य है ।

पद्मसंछितायां -

पद्मसंछिता में -

पठति सकलशास्त्रं वेदपारं गतो वा

यमनियमयुतो वा वेदशास्त्रार्थकृद्वा ।

अपि य सकलतीर्थप्राजको वाछिताग्नि-

र्नछि लुट्टि यद्वि रामस्सर्वमेतद्धृथा स्यत् ॥ ६४८ ॥

सम्पूर्णा शास्त्रों को पढः लिया हो अथवा वेदों में पारङ्गत हो गये हो । यमनियमादि से युक्त हो अथवा वेदशास्त्रों के अर्थ करने वाले हो, अथवा सभी तीर्थों की यात्रा कर लिया हो अथवा अग्नि होत्रादि कर्म कर लिया हो, यदि भगवान् श्रीराम लुट्टय में नहीं आये अर्थात् यदि भगवान् श्रीराम से प्रेम नहीं हुआ तो यद्य सब कुछ करना व्यर्थ बला गया ।

उपस्थानुभवं दिव्यं परानन्दस्य सागरम् ।

रामनाम रसं दिव्यं पिब नित्यं सदाव्ययम् ॥ ६४९ ॥

भगवान् श्रीराम के दिव्य स्वरूप का अनुभव करने वाला, परमानन्द का समुद्र, दिव्य रस अर्थात् अविनाशी श्रीरामनाम है अतः तुम सदासर्वदा इसका पान करो ।

रामनामरसानन्तंसाधकं सु रसालयम् ।

स्मरणाद्रामभद्रस्य सङ्काशः तस्य संस्कृष्टम् ॥ ६५० ॥

श्रीरामनाम अनन्त रस का साधक और रस का निवास स्थान है श्रीरामनाम के स्मरण करने से भगवान् श्रीराम का भीतर बाहर प्रकाश होने लगता है ।

रकाराज्जायते ब्रह्मा रकाराज्जायते हरिः ।

रकाराज्जायते शम्भू रकारात्सर्वशक्तयः ॥ ६५१ ॥

श्रीरामनाम के “र” से ब्रह्मा, विष्णु, शङ्कर अर्थात् सभी शक्तियाँ उत्पन्न होती हैं ।

आद्यावन्ते तथा मध्ये रकारेषु व्यवस्थितम् ।

विश्वं यरायं सर्वमवकाशेन नित्यशः ॥ ६५२ ॥

यद्य यरायं सम्पूर्णा विश्व आदि मध्य अर्थात् अन्त में अवकाश के साथ “र” में नित्य ही अवस्थित हैं ।

अनन्तसंछितायां -

अनन्तसंछिता में -

वने यरामो वसु याडरामो नदीस्तरामो न भयं स्मरामः ।

धत्थं वदन्तश्च वने किराता मुक्तिं गता रामपदानुषङ्गात् ॥ ६५३ ॥

डिसी वन में चार डिरात आपस में वन में “विचरएा करेङ्गे, धन का डरएा करेङ्गे, नदी पार करेङ्गे और भय की याद नडीं करेङ्गे” एस प्रकार भातथीत करते डुअे डैववश मर गये । श्रीरामनाम से सम्बन्धित “र” “म” का उअ्यारएा करने के कारण वे सब मुक्त डो गये ।

सर्वैश्वर्यप्रदं सर्वं सिद्धिदं सर्वधर्मदम् ।

सर्वभोक्षकरं शुद्धं परानन्दस्य कारणम् ॥ ६५४ ॥

सभी अैश्वर्यो को प्रदान करने वाला, विश्वस्वरूप, सिद्धि अेवं सभी धर्म प्रदान करने वाला, सभी मुक्तियों को प्रदान करने वाला, शुद्ध तथा परमानन्द का कारण श्रीरामनाम डै ।

अेकैकं रामनामस्तु सर्वतापप्राणशनम् ।

सडस्रनामडोटीनां डुलदं वेदविश्रुतम् ॥ ६५५ ॥

श्रीरामनाम का अेक नाम तो सभी तापो का नाश करने वाला डै अेवं भगवान् विष्णु के डजारो करेङ्गे नाम के समान डुल देने वाला डै यड भात वेद प्रसिद्ध डै ।

डमं मन्त्रं सदा स्नेडाधै जपन्तीड सादरम् ।

ते डृतार्थाः डलौ डेवि अन्ये मायाविमोडिताः ॥ ६५६ ॥

डे डेवि ! ञे वोग प्रेम से आदरपूर्वक सदासर्वदा श्रीरामनाम का जप करते डै एस डलियुग में वे वोग निश्चित डी डृतार्थ डै, शेष वोग माया के कारण मोडितसित्त वाले डै ।

डमं मन्त्रं मडेशानि जपन्त्रित्यमडर्निशम् ।

मुच्यते सर्वपापेभ्यो रामसायुज्यमाप्नुयात् ॥ ६५७ ॥

डे पार्वति ! एस मन्त्र को नित्य रात दिन जप करने से सभी पापो से ञुव मुक्त डो जाता डै और श्रीराम की सायुज्य मुक्ति (भगवान् के आभूषण, वस्त्राडि) को प्राप्त डोता डै ।

सर्वेषां सिद्धिदं रामनाम सर्वत्र सर्वदा ।

यस्य संस्मरणाय्छीड्रं डुलमायाति दूरगम् ॥ ६५८ ॥

सभी जगड सदासर्वदा ञुवमात्र को सिद्धि प्रदान करने वाला श्रीरामनाम डै ञिसके स्मरणमात्र से दूर में विधमान डुल भी शीड्र डी प्राप्त डो जाता डै ।

रामनामः प्रभावेण स्ख्यम्भूः सृजते जगत् ।

तथैव सर्वदेवाश्च सर्वैश्वर्यसमन्विताः ॥ ६५९ ॥

श्रीरामनाम के प्रभाव से ड्रज्माञु जगत् की सृष्टि करते डै और श्रीरामनाम के प्रभाव से डी देवता वोग सभी अैश्वर्यो से युक्त डुअे डै ।

मार्कण्डेयसंडितायां -

मार्कण्डेयसंडिता में -

अन्तःकरणसंशुद्धिर्नान्यसाधनतो भवेत् ।

कलौ श्रीरामनाम्नैव सर्वेषां सम्मतं परम् ॥ ६६० ॥

सभी सन्त मडापुरुषों का सर्वश्रेष्ठ मत है कि कवियुग में अन्तःकरण की शुद्धि केवल श्रीरामनाम से ही हो सकती है अन्य किसी साधन से नहीं ।

आर्त्तानां ज्वनं नित्यं दृष्टानां वै प्रमोददम् ।

भक्तानां त्राणकर्तारं रामनाम समाश्रये ॥ ६६१ ॥

दोनों प्रकार के शरणगत भक्तों में आर्त भक्तों का तो नित्य ज्वन एवं दृप्त भक्तों को आनन्द प्रदान करने वाला श्रीरामनाम है अैसे सभी भक्तों की रक्षा करने वाले श्रीरामनाम का मैं आश्रय ग्रहण करता हूँ ।

कृपादिगुणसम्पन्नं सर्वदा शोकहारकम् ।

तारकं संसृतेर्नित्यं रामनाम भजाम्यहम् ॥ ६६२ ॥

कृपादि अनन्त गुणों से सम्पन्न, सदासर्वदा शोक रहने वाले, भवसंसृति से तारने वाले श्रीरामनाम का मैं नित्य भजन करता हूँ ।

चित्तस्थ वासना सूक्ष्मा सर्वानन्दविनाशिनी ।

सोपि श्रीरामसंवापादनायासेन नश्यति ॥ ६६३ ॥

चित्त की जो सूक्ष्म वासना सभी आनन्दों का नाश करने वाली है वह वासना भी श्रीरामनाम के सङ्घूर्तन से बिना श्रम के नष्ट हो जाती है ।

रसना सर्पिणी प्रोक्ता संस्थिता बिल वन्मुषे ।

या न वक्ति सुधासारं रामनामपरात्परम् ॥ ६६४ ॥

जो जिह्वा अमृत की मूसलाधार वृष्टि स्वरूप श्रीरामनाम का उच्चारण नहीं करती है वह जिह्वा सर्पिणी कही गयी है और मुष्णुपी बिल में बैठी है ।

विवेकादीन् शुभाचारान् रक्षणाय सद्योद्यतम् ।

श्रीरामेति सन्नाम परमानन्दविग्रहम् ॥ ६६५ ॥

विवेकादि शुभाचारणों की रक्षा के लिये सदासर्वदा उद्यत, परमानन्दस्वरूप सन्नाम श्रीरामनाम है ।

अत्रिसंखितायां श्रीशङ्करवाक्यं पार्वतीं प्रति -

अत्रिसंखिता में श्रीशङ्करजी का वाक्य पार्वतीजी के प्रति -

येन केन प्रकारेण संस्मरेद्रामनामकम् ।

अवश्यं लभते सिद्धिं प्राप्तिरूपां मनोरमाम् ॥ ६६६ ॥

जिस किसी भी प्रकार से जो श्रीरामनाम का स्मरण करता है वह निश्चित ही भगवत्प्राप्तिरूप मनोरम सिद्धि को प्राप्त करता है ।

श्रीमद्रामेति नाम्नस्तु नियमं धारणं सदा ।

कर्तव्यं सावधानेन त्यक्त्वा प्रामादिकं शिवे ॥ ६६७ ॥

डे पार्वति ! प्रमादादि दोषों का त्याग करके सदासर्वदा सावधानचित्त से श्रीरामनाम के जप का नियम धारण करना
याडिओ ।

तावद्वै नियमं कार्यं यावत् चित्तं न संस्मरेत् ।

अनियमं कृतं जायं निष्कलं प्रथमं प्रिये ॥ ६६८ ॥

डे पार्वति ! बिना नियम के जप ज्यादा दिन नहीं चलता है और निष्कल भी होता है अतः नियमपूर्वक जप करना
याडिओ और तब तक नियम धारण करना याडिओ जब तक अपना चित्त स्वतः निरन्तर स्मरण न करे ।

नियमेनैव श्रीरामनाम्नि प्रीतिर्घृवा भवेत् ।

तस्माद्विपर्ययं त्यक्त्वा नियमं सश्वरेद्बुधः ॥ ६६९ ॥

नियमपूर्वक जप करने से ही श्रीरामनाम में निश्चित व ध्रुव प्रेम प्रकट होगा अतः अन्यथा विचार का त्याग करके
बुद्धिमान् को नियम लेना याडिओ ।

अछो भाग्यमछो भाग्यं कलौ तेषां सदा शिवे ।

येषां श्रीरामनाम्नस्तु नियमं समभङ्गितम् ॥ ६७० ॥

डे पार्वति ! इस कलियुग में वे ही भाग्यशाली हैं सदा भाग्यवान् हैं जिनका श्रीरामनाम के जप का नियम सम्यक्
अथं अभङ्ग रूप से चल रहा है ।

सनकसनातनसंछितायां -

सनकसनातनसंछिता में -

डे जिह्ने मधुरप्रिये सुमधरं श्रीरामनामात्मकं

पीयूषं पिबप्रेमभक्तिमनसा छित्वा विवादानलम् ।

जन्मव्याधिकषायकामशमनं रम्यातिरम्यं परं

श्रीगौरीशप्रियं सदैव सुभगं सर्वेश्वरं सौभ्यदम् ॥ ६७१ ॥

डे मधुरप्रिये जिह्ने ! विवादरूपी अग्नि का त्याग करके प्रेमस्वरूपी भक्ति से युक्त मन से अत्यन्त मधुर अमृत स्वरूप
श्रीरामनाम को भूषण पियो । यह श्रीरामनाम जन्म मरणरूपी भयङ्कर व्याधि अथं कामरूपी कषाय का नाशक है
अत्यन्त रमणीय, सर्वोत्कृष्ट, सदासर्वदा भगवान् शिव को प्रिय, सुभग, सर्वेश्वर अथं सुभ प्रदान करने वाला है ।

नाना तर्कवितर्कमोहगडने क्लिश्यन्ति ते मानवा-

स्तेषां श्रीरघुवीरनामविमलं सर्वात्मना सौभ्यदम् ।

प्रेमानन्दपवत्ररङ्गरमणं सर्वाधिपं सुन्दरं

दृष्टं बोधमयंविचित्ररथनं सर्वोत्तमं शाश्वतम् ॥ ६७२ ॥

जो नाना प्रकार के तर्क वितर्क अथं मोह के गडने वन में दृग्म पा रहे हैं उन लोगों के लिये भगवान् राघवेन्द्र का
यह विमल रामनाम हर प्रकार से सुभ प्रदान करने वाला है परम प्रेमामन्द के पवित्र रङ्ग में रमण करने वाला है,
सबका स्वामी है, सुन्दर दर्शनमात्र से बोध प्रदान कराने वाला, विचित्र रथनामय, शाश्वत अथं सर्वोत्तम है ।

श्रमं मृषैव कुर्वन्ति ज्ञानयोगादिसाधने ।

कथं न भजते रामनाम सर्वेशपूजितम् ॥ ६७३ ॥

लोग व्यर्थ में ही ज्ञानयोगादि साधनों में श्रम करते हैं क्यों नहीं अन्य साधनों को छोड़कर भगवान् शंकर से भी पूजित श्रीरामनाम का भजन करते हैं?

सर्वेषां साधनानां वै परिपाकमिदं मुने ।

यज्जिह्वाग्रे परं नाम जपेन्नित्यमतन्द्रितम् ॥ ६७४ ॥

हे मुने ! सभी साधनों का परम फल यही है कि तन्द्रा का त्याग करके सदासर्वदा सर्वश्रेष्ठ श्रीरामनाम का नित्य जप करे ।

श्रीऽनुमत् संछितायां -

श्रीऽनुमत् संछिता में -

राम त्वत्तोऽधिकं नाम धृति मे निश्चला मतिः ।

त्वया तु तारिताऽयोध्या नाम्ना तु भुवनत्रयम् ॥ ६७५ ॥

हे रामज ! आपसे बढ़कर अधिक फलदायी आपका नाम श्रीरामनाम है यह मेरी निश्चला बुद्धि है क्योंकि आपने तो केवल अयोध्यावासियों को तारा है आपके रामनाम ने सम्पूर्ण त्रिभुवन को तार दिया है ।

हे जिह्वे ! जनकीजनेर्नाम माधुर्यमिदं तम् ।

भजस्व सततं प्रेमणा येद्वाञ्छसि छितं स्वकम् ॥ ६७६ ॥

हे जिह्वे ! यदि तुम अपना कल्याण चाहती हो तो तुम श्रीजानकीपति श्रीरामज के माधुर्य युक्त पावन नाम श्रीरामनाम का निरन्तर प्रेम से भजन करो ।

जिह्वे श्रीरामसंलापे विलम्बं कुरुषे कथम् ।

श्रीऽनायाति ते किञ्चिद्दिना श्रीनाम सुन्दरम् ॥ ६७७ ॥

हे जिह्वे ! श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन में तुम विलम्ब क्यों करते हो? परम सुन्दर श्रीरामनाम के बिना तुम्हें कुछ लज्जा नहीं आती ।

रामनामात्मकं मन्त्रं यन्त्रितं येन धारितम् ।

तस्य क्वापि भयं नास्ति सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ६७८ ॥

जिसने यन्त्र स्वरूप महामन्त्र श्रीरामनाम को धारण कर लिया उसे कहीं भी भय नहीं है मैं सत्य-सत्य कहता हूँ ।

स्मरतोऽभीष्टमाप्नोति रामनामानुरागिणाम् ।

न जाने दर्शनस्पर्शपादोदकफलं यथा ॥ ६७९ ॥

श्रीरामनाम के अनुरागी भक्तों के स्मरण करने मात्र से सम्पूर्ण अभीष्ट की प्राप्ति हो जाती है फिर नामानुरागी सन्तों के दर्शन, यरणस्पर्श और उनके यरणामृत का क्या फल होता है यह मैं नहीं जानता हूँ ।

श्रीरामनामस्मरणान् सीतारामौ ममोपरि ।

कृपामडैतुकी नित्यं कृत्वा सर्वोत्तमां मुने ॥ ६८० ॥

डे मुने ! श्रीरामनाम के स्मरण से श्रीसीतारामजी ने मेरे ऊपर अपनी सर्वश्रेष्ठ अडेतुकी कृपा नित्य की है ।

सदाशिवसंछितायां श्रीलनुमद्वाक्यमगस्त्यं प्रति -

सदाशिवसंछिता में श्रीलनुमानजी का वाक्य अगस्त्य के प्रति -

यस्तु स्वप्ने वदेद्रामं सम्भ्रमस्मलनादिभिः ।

तस्य पादरजो मे तु मूर्धानमघिरोडतु ॥ ६८१ ॥

जो स्वप्न में भी अडःअडःाते समय अथवा गिरते समय श्रीरामनाम का स्मरण करते हैं उब्यारण करते हैं उनके यरणों की धूलि मेरे शिर पर सुशोभित हो । उनके यरण धूलि से डमारी आत्मा प्रसन्न होती है ।

रामनामात्मकं शब्दं श्रवणान्मुनिशिरोमणो ।

रामनामसमं पुण्यं क्वलं प्राप्नोति मानवः ॥ ६८२ ॥

डे मुनिश्रेष्ठ ! श्रीरामनाम के श्रवण से मनुष्य को श्रीरामनाम के जप के समान ही पुण्यकल प्राप्त होता है अर्थात् श्रीरामनाम का जप और श्रवण दोनों तुल्यकल है ।

रामनामगुणालापि सज्जनो रामवल्लभः ।

सत्यं वस्मि मडाभाग रामनाम परात्परम् ॥ ६८३ ॥

डे मडाभाग ! श्रीरामनाम का जप कीर्तन करने वाले सज्जन पुरुष श्रीरामजी के अत्यन्त प्रिय हैं श्रीरामनाम परात्पर तत्व है यड मैं सत्य-सत्य कडता हूँ ।

-०ति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे प्रमोदनवासे परात्परैश्वर्यदायके

श्रीयुगलानन्धशरणसङ्गृहीते संछितावाक्यप्रमाणो नाम तृतीयः प्रमोदः ॥ ३ ॥

अथ यतुर्थः प्रमोदः

यतुर्थ प्रमोद में -

नाटकोक्तवचन -

श्रीलनुमन्नाटके श्रीलनुमद्वाक्यमगस्त्यं प्रति -

श्रीलनुमन्नाटक में श्रीलनुमानजी का वाक्य अगस्त्यजी के प्रति -

०दं शरीरं शतसन्धिजर्जरं पतत्यवश्यं परिणामदुर्वडम् ।

डिमौषधं पृथञ्चि मूढ दुर्मते निरामयं रामरसायनं पिव ॥ ६८४ ॥

डे मूढः दुर्मते ! यड मानव शरीर सैकडःों सन्धियों के कारण जर्जर है यड निश्चित ही नष्ट होगा और अन्त में दुःख रूप है, ०सको स्वस्थ करने के लिअे औषधियों के बारे में क्या पूछ रहे हो? यदि स्वस्थ रहना चाहते हो तो निरामयस्वरूप परम रसायन श्रीरामनाम का पान करो ।

आसीनो वा शयानो वा तिष्ठतो यत्र कुत्र वा ।

श्रीरामनाम संस्मृत्य याति तत्परमं पदम् ॥ ६८५ ॥

बैठे सोते हुआ, अथवा जहाँ-तहाँ ठहरते हुआ मनुष्य श्रीरामनाम का सम्यक् स्मरण करते हुआ भगवान् का जो लोग सदासर्वदा स्नेह से जप करते हैं । वे परम पद को प्राप्त करते हैं ।

ये जपन्ति सदा स्नेहान्नाम माङ्गल्यकारणम् ।

श्रीमतो रामचन्द्रस्य कृपालोर्मम स्वामिनः ॥ ६८६ ॥

परम कृपालु हमारे स्वामी श्रीमान् श्रीरामचन्द्रजी के “कल्याण का परम कारण” श्रीरामनाम का जो लोग सदासर्वदा स्नेह से जप करते हैं ।

तेषामर्थे सदा विप्र प्रयातोऽहं प्रयत्नतः ।

एदामि वाञ्छितं नित्यं सर्वदा सौख्यमुत्तमम् ॥ ६८७ ॥

हे विप्र ! उन भक्तों के लिये मैं सदासर्वदा प्रयत्न करके प्रिय से भी प्रिय अभीष्ट पदार्थों एवं उत्तम सुख को नित्य प्रदान करता हूँ ।

रामनामैव नामैव सदा भज्जुवनं मुने ।

सत्यं वदामि सर्वस्वमिदमेकं सदा मम ॥ ६८८ ॥

हे मुने ! श्रीरामनाम ही सदासर्वदा मेरा ज्ञान है मैं सत्य कहता हूँ कि श्रीरामनाम ही मेरा सर्वस्व है ।

श्रीजानकीपरिणयनाटक -

श्रीजानकीपरिणय नाटक में -

महामणिन्द्रादपि काशतेऽधिकं सदैव जिह्वाग्रप्रदीपयत्यलम् ।

आत्म्यन्तरध्वान्तसबाह्यमुल्बलां निवारणे शक्तमहर्निशं भजे ॥ ६८९ ॥

शङ्करजी कहते हैं कि श्रीरामनाम महामणियों से भी अधिक प्रकाशमान है, जिह्वा के अग्र भाग पर प्रदीप की तरह अतिशय रूप से प्रकाशित होता रहता है भीतर और बाहर के भयङ्कर अन्धकार के नाश करने में परम समर्थ है जैसे श्रीरामनाम का मैं रात दिन भजन करता हूँ ।

सीतासमेतं रघुवीरनाम जपन्ति ये नित्यमघौघदारि ।

ते पुण्यवन्तः भुवु भाग्यवन्तः परं पदं यान्ति स्ववर्गयुक्ताः ॥ ६९० ॥

जो लोग श्रीसीतानाम के साथ श्रीरामनाम अर्थात् श्रीसीताराम नाम, जो पाप समूह का हरण करने वाले हैं, उस सीताराम नाम का नित्य जप करते हैं वे लोग निश्चित ही पुण्यवान् एवं परम भाग्यशाली हैं वे लोग अपने परिकर के साथ भगवान् के परम पद को प्राप्त होते हैं ।

रोमाञ्चितशरीराश्च त्यक्तसर्वदुराग्रहा ।

रटन्ति रामनामाभ्यं मन्त्रं ते पावनेश्वराः ॥ ६९१ ॥

श्रीरामनामरूपी मन्त्र के जप, कीर्तन के समय जिनके शरीर में रोमाञ्च हो जाता है जो समस्त दुराग्रहों का त्याग कर देते हैं वे लोग निश्चित ही सभी पवित्र करने वालों के स्वामी हैं ।

येऽभिनन्दन्ति नामानि रामभद्रस्य नित्यशः ।

मनसा वयसा नित्यं ते वै भागवतोत्तमाः ॥ ६८२ ॥

जो लोग रात दिन श्रीरामनाम का अभिनन्दन करते हैं तथा मन और वाणी से नित्य जप करते हैं । वे ही वास्तव में श्रेष्ठ भागवत हैं ।

दृढाभ्यासेन ये नित्यं रामनाम्नि रमन्ति य ।

तेषामभयदाता य श्रीरामो जनकीपतिः ॥ ६८३ ॥

दृढः अत्यासपूर्वक जो नित्य श्रीरामनाम में रमण करते हैं उन भक्तों को श्रीसीतापति रामजी सदा अभय प्रदान करते हैं ।

विचित्रनाटके -

विचित्रनाटक में -

प्रभावतो यस्य छि कुम्भजन्मना प्रशोषितः सिन्धुरपारपारणः ।

तथैव विन्ध्यायलरोधिताद्भुता मुनीन्द्रराजेन प्रभाकरेण ॥ ६८४ ॥

श्रीरामनाम के प्रभाव से सूर्यसम तेजस्वी मुनीन्द्र श्रीअगस्त्य ने अपार समुद्र को पीकर सोभ लिया अर्थात् मछलाभिमानि विन्ध्यायल का निरोध किया ।

न नामतः साधनमन्यदस्ति वै न साध्यसौभाग्यमतः परं क्वचित् ।

परात्परं प्रेमप्रकाशकं वरं सुधासारं सारमनन्तवैभवम् ॥ ६८५ ॥

परात्पर, प्रेम का प्रकाशक, श्रेष्ठ, अमृत की मूसलाधार वृष्टि स्वरूप, समस्त शास्त्रों का सार अनन्त विभूतिवान् श्रीरामनाम से बढकर दूसरा कोई न साधन है और न कहीं कोई दूसरा सौभाग्यशाली साध्य है ।

यदीक्षणाच्छम्भुसुतो गण्ठाधिपः सुरासुरैः प्राथमिकः प्रपूज्यः ।

प्रदक्षिणा यस्य कृते समस्ता क्षमावती स्यात् परितः प्रदक्षिणा ॥ ६८६ ॥

जिनकी कृपा कटाक्ष से भगवान् शङ्कर के सुपुत्र श्रीगणेशजी सुर असुर सभी से प्रथम पूज्य हो गये जिसके लिखे गणेशजी ने सम्पूर्ण पृथिवी की थारों तरफ से परिक्रमा की थी ।

साराणां सारमित्याहुर्मुनयः सत्यवादिनः ।

श्रीरामनाम सर्वेशं नित्यानां नित्यमव्ययम् ॥ ६८७ ॥

सत्यवादी मुनियों ने कहा है कि समस्त सारों का भी सार, सबका स्वामी, नित्यों में भी नित्यता सम्पादन करने वाला अर्थात् अविनाशी श्रीरामनाम है ।

सर्वेषां सुलभं नाम सदा सर्वत्र सौष्यदम् ।

ये जपन्ति सदा भक्त्या तेभ्यो नित्यं नमो नमः ॥ ६८८ ॥

वैसे तो सभी को सुभ देने वाला भगवान् का नाम सभी के लिखे सदासर्वदा सब जगह सुलभ है तथापि जो लोग सदासर्वदा भक्तिपूर्वक श्रीरामनाम का जप करते हैं उन भक्तों को बारम्बार नमस्कार है ।

प्रमोदनाटक -

प्रमोदनाटक में -

वन्दे श्रीरामचन्द्रस्य नाम मुक्तिप्रदं परम् ।

यत्कृपालेशतोऽस्माकं सुलभं सर्वतः सुभम् ॥ ६८८ ॥

जिनकी लेशमात्र कृपा से हम लोगों के लिये सर्वत्र सुभ सुलभ हो रहा है भगवान् श्रीराम के उस सर्वश्रेष्ठ अर्थात् मुक्तिप्रद श्रीरामनाम की मैं वन्दना करता हूँ ।

अनामयं तृपयुगप्रकाशकं सदैव भक्तार्तिहरं कृपानिधिम् ।

स्मरामि श्रीराघवनाम निर्मलं प्रपूजितं देवमुनीश्वरेश्वरैः ॥ ७०० ॥

श्रीरामनाम अनामय-निरोग, श्रीसीताराम युगल सरकार के स्वतंत्र का प्रकाशक, सदासर्वदा भक्तों के दुःख को हरने वाला, कृपा समुद्र, देवताओं और ब्रह्म-ब्रह्म-मुनीश्वरों से प्रकर्ष तृप से पूजित है । अैसे श्रीरामजी के निर्मल नाम का मैं स्मरण करता हूँ ।

नाम्नः पराशक्तिपतेः प्रभावं प्रजानते मर्कटराजराजः ।

यद्रूपरागीश्वरवायुसूनुस्तद्रोमकूपे ध्वनिमुल्लसन्तम् ॥ ७०१ ॥

पराशक्ति के स्वामी श्रीरामनाम के प्रभाव को वानरराज श्रीहनुमानजी महाराज जानते हैं जो भगवान् श्रीसीतारामजी के स्वतंत्र के अनुरागी हैं अर्थात् जिनके रोम-रोम से श्रीरामनाम की ध्वनि होती रहती है ।

कषायविक्षेपलयादिहारकं सुतारकं संसृतिसागरस्था ।

सदैव दीनार्तिहरं ध्याननिधिं स्मरामि भक्त्या परमेश्वरप्रियम् ॥ ७०२ ॥

समाधि के विघ्न स्वतंत्र वासना विक्षेप तन्द्रादि का हरण करने वाले, संसारसागर से पार करने वाले, सत्स्वतंत्र, दीन दुःखियों के आर्ति को हरण करने वाले, ध्यासागर भगवान् शिव के प्राण प्रिय श्रीरामनाम का मैं भक्तिपूर्वक स्मरण करता हूँ ।

गुणानां कारणं नाम तथैश्वर्यवतां सदा ।

सङ्कीर्तनाल्लभेन्मर्त्यः पदमव्ययमुज्ज्वलम् ॥ ७०३ ॥

श्रीरामनाम सदासर्वदा दिव्य गुणों अर्थात् अश्वर्यवानों का परम कारण है मनुष्य श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन

करके उज्ज्वल अर्थात् अविनाशी पद को प्राप्त कर लेता है ।

रहस्यनाटक -

रहस्यनाटक में -

मधुरमधुरमेतं मङ्गलं मङ्गलानां

सकलनिगमवल्लीसङ्गलं चित्स्वतंत्रम् ।

सकृदपि परिगीतं श्रद्धया हेलया वा

स भवति भवपारं रामनामानुभावात् ॥ ७०४ ॥

मधुरातिमधुर, मङ्गलौं का भी परम मङ्गलकर्ता, सम्पूर्णा वेदरूपी वृक्ष का दिव्य स्वरूप हल चित्स्वरूप श्रीरामनाम है जो मनुष्य श्रद्धा से अथवा अवलेलना से ही એક बार श्रीरामनाम का उच्चारण करता है वल श्रीरामनाम के प्रभाव से ભવ से पार હો जाता है ।

येतोऽलेः कमलद्वयं श्रुतिपुटीपीयूषपुरद्वयं

वागीशानयनद्वयङ्घनतमश्वाङ्गांशुयन्त्रद्वयम् ।

छान्दस्सिन्धुमणिद्वयं मुनिमनःकासारुसद्वयं

मोक्षश्रीश्रवणोत्पलद्वयमिदं रामेति वर्णद्वयम् ॥ ७०५ ॥

चित्तरूपी भ्रमर के लिखे दो कमलस्वरूप, दोनों कानों के दोना को पूर्ण करने के लिखे अमृत की धारास्वरूप, श्रीसरस्वतीजी के लिखे युगल नेत्र स्वरूप, मडामोडरूपी अन्धकार का नाश करने के लिखे श्रीसूर्य अेवं यन्त्रस्वरूप, वेदरूपी समुद्र के अनुपम दो मणि स्वरूप, मुनियों के मनरूपी मानसरोवर के युगल रुंस और मोक्षरूपी लक्ष्मी के युगल कर्णकूल स्वरूप श्रीरामनाम के दो अक्षर “र” “म” हैं ।

रामनाम परब्रह्म दुराराध्यं दुरात्मनाम् ।

साध्यं य सुलभं नित्यं प्रेमसम्पन्नमानसैः ॥ ७०६ ॥

दृष्ट दुरात्माओं के लिखे दुराराध्य अेवं प्रेमी मन वाले साधकों के लिखे सुलभ साध्य नित्य तथा परमब्रह्म श्रीरामनाम है ।

श्रुतिस्मृतिपुराणानि रामनाम्नि य संस्थितम् ।

यथैव लोके सुस्पष्टं सूत्रे मणिगणा एव ॥ ७०७ ॥

जैसे लोक में देखा जाता है कि मणियों का समूह सूत्र में गूथे होते हैं उसी प्रकार सम्पूर्णा वेद पुराण श्रीरामनाम में स्थित हैं श्रीरामनाम की साधना करने से समस्त शास्त्रों का अर्थ प्रकाश में आता है ।

स्मरणाद्रामनाम्नस्तु यत् सुभं न लभेन्नरः ।

तत्सुभं जे गतं पुष्यं बन्ध्यापुत्रमिवाद्भुतम् ॥ ७०८ ॥

श्रीरामनाम के स्मरण से जो सुभ मनुष्य को नहीं मिल पाता है वल सुभ गगन पुष्य अेवं बन्ध्या पुत्र की तरल मिथ्या है अर्थात् श्रीरामनाम के स्मरण से सभी लौकिक अेवं अलौकिक सुभ सलज में प्राप्त हो जाते हैं इसमें आश्चर्य नहीं है ।

प्रेमार्णवनाटके -

प्रेमार्णवनाटक में -

त्रिचाञ्छिन्नतरं लोके दृष्टं न कथितं मया ।

सार्वभौमस्य रामस्य नाम्नैव सुजपत्यलम् ॥ ७०९ ॥

यङ्कवर्ती संराट् भगवान् श्रीराम के नाम के प्रभाव से ही इस लोक में मैंने अनेक आश्चर्य देखा किन्तु कला नहीं, इसीलिये श्रीरामनाम को ही अतिशयेन सुष्ठु जप करते हैं

क्षाणं विहाय श्रीरामनाम यः पामराधमः ।

कुरुते यान्यवस्तूनां चिन्तनं स तु गर्दभः ॥ ७९० ॥

जो मनुष्य क्षाण्णर के लिअे श्रीरामनाम को छोडःकर अन्य वस्तुओं का चिन्तन करते हैं वे अत्यन्त पामर गधे हैं ।

प्रेमवैचित्र्यता प्रोक्ता दुर्लभा साधनान्तरैः ।

तां लभेद्रामनाम्नस्तु जपाच्छीघ्रं न संशयः ॥ ७९१ ॥

अन्य दूसरे साधनों से प्रेम वैचित्र्य दुर्लभ कडा गया है और श्रीरामनाम के जप से बहुत जल्दी से प्राप्त हो जाती है । इसमें संशय नहीं है । प्रेम वैचित्र्य का मतलब होता है -वियोग में साक्षात् संयोग का अनुभव अर्थात् संयोग में वियोग का अनुभव होना ।

सर्वाशां सम्परित्यज्य संस्मरेन्नाम मङ्गलम् ।

यदीच्छा वर्तते स्वच्छा प्राप्तिरुपा परात्पराः ॥ ७९२ ॥

यदि आपके में भगवत्प्राप्तिरुप पवित्र छ्छा है तो अन्य सभी आशाओं को छोडःकर परम मङ्गलमय श्रीरामनाम का स्मरण करें अवश्य श्रीरामजी की प्राप्ति हो जायेगी ।

-इति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे प्रमोदनवासे परात्परैश्वर्यदायके

श्रीयुगलानन्धशरणासङ्गृहीते नाटकवाक्यप्रमाणानिरुपणं नाम चतुर्थः प्रमोदः ॥ ४ ॥

चतुर्थप्रमोदः समाप्तः

अथ पञ्चमः प्रमोदः

स्मृत्युक्तवचनानि -

पाञ्चवां प्रमोद स्मृतियों में कहे गये वचन -

मनुस्मृतौ -

मनुस्मृति में -

सप्तकोटिमहामन्त्राश्चित्तविलम्बकारकाः ।

अेक अेव परो मन्त्रः श्रीरामेत्यक्षरद्वयम् ॥ ७९३ ॥

सात करोडः जो अे-अे मन्त्र कहे गये हैं वे सब साधक के चित्त को भ्रमित करने वाले हैं "श्रीराम" यह दो अक्षर ही अेकमात्र सर्वश्रेष्ठ मन्त्र है ।

येषां नित्यं रमेच्छित्तं रामनाम्नि सद्योज्ज्वले ।

तेषां पुण्यौघमुत्कृष्टं जायते हि प्रतिक्षणम् ॥ ७९४ ॥

जिन साधकों का चित्त सदासर्वदा उज्ज्वल श्रीरामनाम में रमण करता है उन साधकों को प्रतिक्षण में उत्कृष्ट पुण्य समूह प्राप्त होता है ।

दक्षस्मृतौ -

दक्षस्मृति में -

धन्या माता पिता धन्यो धन्याद्भन्यतमं कुलम् ।

यत्र श्रीरामनाम्नस्तु जापको जायते शुचिः ॥ ७१५ ॥

जहाँ श्रीरामनाम के पवित्र जापक प्रकट होते हैं वे माता, पिता धन्य हैं और धन्याति धन्य वल कुल है ।

विष तस्य सुधा प्रोक्तं शत्रुस्तस्य सुदुद्भवत् ।

सर्वेषां प्रेमपात्रं सः यस्य नाम्नि सदा रुचिः ॥ ७१६ ॥

श्रीरामनाम में जिसकी सदासर्वदा रुचि होती है उसके लिये विष अमृत और शत्रु मित्र हो जाते हैं तथा वल सभी का प्रेमपात्र हो जाता है ।

धर्मराजस्मृतौ -

धर्मराजस्मृति में -

दृष्ट्वा श्रीरामनाम्नस्तु जापकं ध्यानतत्परम् ।

अव्युत्थानं सदा स्नेहात् करिष्येऽहं मलामुने ॥ ७१७ ॥

हे मलामुने ! श्रीरामनाम के जापक को ध्यान करते लुभे टेभकर मैं सदासर्वदा सप्रेम उठकर उसका आदर करूँगा ।

स वै धन्यतरो देशः साक्षाच्छ्रीधामसन्निभः ।

यत्र तिष्ठन्ति श्रीरामनामसंलाङ्घनैष्ठिका ॥ ७१८ ॥

निश्चित ही वल देश अत्यन्त धन्य अवं साक्षाद् साकेतधाम तुल्य है जहाँ अेकमात्र श्रीरामनाम के कीर्तन में निष्ठा रभने वाले भक्त निवास करते हैं ।

कात्यायनस्मृतौ -

कात्यायनस्मृति में -

मिथ्यावादे द्दिवा स्वापे बहुशोऽम्बुनिषेवणे ।

रामनामाक्षरं जप्त्वा सद्यः पूतः प्रजायते ॥ ७१९ ॥

मिथ्या सभभाषण करने से, दिन में सोने से अवं अत्यधिक जल का दुरुपयोग करने से जो पाप लगता है श्रीरामनाम के जप करने से वल पाप नष्ट हो जाता है और कर्ता पवित्र हो जाता है ।

कृतैश्च क्रियमाणैश्च भविष्यद्भिश्च पातकैः ।

रामेति द्वयक्षरं नाम सकृज्जप्त्वा विशुध्यति ॥ ७२० ॥

भूत वर्तमान अवं भविष्यत्कालिक पापों से श्रीरामनाम के दो अक्षर “रा” “म” के अेक बार जप करने से मुक्ति हो जाती है । साधक परम विशुद्ध हो जाता है ।

आयासः स्मरणे कोऽस्य मोक्षं यच्छति शोभनम् ।

पापक्षयश्च भवति स्मरतां तदहर्निशम् ॥ ७२१ ॥

श्रीरामनाम के स्मरण करने में कोई श्रम भी नहीं होता और सुन्दर मुक्ति प्राप्त होती है श्रीरामनाम के स्मरण करने वालों का रात दिन पाप क्षय होता है ।

अभिमानं परित्यज्य येतसा शुद्धगामिना ।

शृण्वन्तु रामभद्रस्य नाममाडात्म्यमुज्ज्वलम् ॥ ७२२ ॥

अभिमान का सर्वथा त्याग करके विशुद्ध चित्त से भगवान् श्रीरामचन्द्रजी के नाम के उज्ज्वल माडात्म्य को सुनना यादिये ।

साङ्ख्यस्मृतौ -

साङ्ख्य स्मृति में -

श्रवणात्कीर्तनाद्यस्य नरो याति निरापदम् ।

तच्छ्रीमद्रामनामाभ्यं मन्त्रं वै संश्रयाम्यडम् ॥ ७२३ ॥

जिस श्रीरामनाम के श्रवण एवं कीर्तन से मनुष्य आपत्तिरहित पद को प्राप्त करता है उस श्रीरामनाम मडामन्त्र का मैं निश्चित ही आश्रय ग्रहण करता हूँ ।

पापानां शोधकं नित्यं परानन्दस्य बोधकम् ।

रोधकं चित्तवृत्तीनां भजध्वं नाम मङ्गलम् ॥ ७२४ ॥

हे साधकों ! पापों का शोधक, परमानन्द का समुद्भावक एवं चित्तवृत्तियों का निरोधक मङ्गलमय श्रीरामनाम का भजन करो ।

दारितस्मृतौ -

दारित स्मृति में -

धर्मं मन्त्रभगस्त्यस्तु जप्त्वा रुद्रत्वमाप्तवान् ।

ब्रह्मत्वं काश्यपश्चैव कौशिकोऽप्यमरेशताम् ॥ ७२५ ॥

धर्म श्रीरामनामरूपी मडामन्त्र का जप करके अगस्त्यजी ने रुद्र पद को, काश्यप मुनि ने ब्रह्म पद को और विश्वामित्र जी ने धन्द्र पद को प्राप्त कर लिया ।

कार्तिकेयो मनुश्चैव धन्द्रार्कगिरिनारदाः ।

बालभिल्यादि मुनयो देवतात्वं प्रपेदिरे ॥ ७२६ ॥

एवं कार्तिकेय, मनु, धन्द्र, सूर्य, पर्वत, नारद एवं बालभिल्यादि ऋषि देवत्व को प्राप्त किये ।

अद्यापि रुद्रः काश्यां वै सर्वेषां त्यक्तञ्जविनाम् ।

दिशत्येतन्मडामन्त्रं तारकं ब्रह्मनामकम् ॥ ७२७ ॥

आज भी भगवान् शङ्कर जी काशी में मरने वाले सभी जीवों के दक्षिण कर्ण में श्रीरामनामरूपी तारक ब्रह्म का उपदेश करते हैं ।

यस्य श्रवणमात्रेण सर्वं भवेद्विं गताः ।

प्रजमव्यं सदा प्रेम्णा तन्मन्त्रं रामनामकम् ॥ ७२८ ॥

जिस श्रीरामनाम के श्रवण मात्र से सभी लोग स्वर्ग को चले गये । उस मडामन्त्र श्रीरामनाम का सदासर्वदा प्रेम से जप करना याछिये ।

विनैव दीक्षां विप्रेन्द्र पुरश्चर्यां विनैव हि ।

विनैव न्यासविधिना जपमात्रेण सिद्धिः ॥ ७२९ ॥

डे ब्राह्मण श्रेष्ठ ! दीक्षा, पुरश्चरण अवे न्यासविधि आदि केबिना भी केवल जप करने से श्रीरामनाम सिद्धि प्रदान करता है ।

तस्मात् सर्वात्मना रामनाम रूपं परं प्रियम् ।

मन्त्रं जपेत् सदा धीमान् संविद्यान्यसाधनम् ॥ ७३० ॥

इसलिये बुद्धिमान को अन्य साधनों को छोड़कर सदासर्वदा परमप्रिय श्रीरामनाम मडामन्त्र का जप करना याछिये ।

वैष्णवस्मृतौ -

वैष्णवस्मृति में -

रामनामरता ये य रामनामपरायणाः ।

वर्णा वा वर्णबाध्या वा ते कृतार्थाः सदा भुवि ॥ ७३१ ॥

जो लोग श्रीरामनाम में रत है और जो लोग श्रीरामनाम परायण हैं इस पृथ्वी में वे ही लोग सदासर्वदा कृतार्थ हैं याडे वे यारों वर्ण के भीतर डो यार्ले वर्णबिर्भूत हों ।

स्वपन् भुञ्जन् प्रजंस्तिष्ठन्नुत्तिष्ठश्च वदंस्तथा ।

यो वक्ति रामनामाप्यं मन्त्रं तस्मै नमो नमः ॥ ७३२ ॥

सोते डुअे, ખાતે डुअे, ચલતે ઠહરતે ઔર બોલતે डुअे या બાતચીત કરતે डુअે જો શ્રીરામનામ મડામન્ત્ર કા ઉચ્ચારણ કરતે હૈ ઉનકો નમસ્કાર હૈ નમસ્કાર હૈ ।

અત્રિસ્મૃતૌ -

અત્રિસ્મૃતિ મેં -

કવલે કવલે કુર્વન્ રામનામનુકીર્તનમ્ ।

યઃ કશ્ચિત્ પુરુષોડશ્રાતિ સોડન્નદોષૈર્ન લિપ્યતે ॥ ૭૩૩ ॥

જો કોઈ પુરુષ ભોજન કરતે સમય પ્રત્યેક ગ્રાસ કો લેતે સમય શ્રીરામનામ કા સકૂર્તન કરતે ડુઅે ભોજન કરતે હૈ ઉસે અન્ન દોષ નહીં લગતા હૈ ।

સિદ્ધ્યે સિદ્ધ્યે લભેન્મત્વો મહાયજ્ઞાધિકં ફલમ્ ।

યઃ સ્મરેદ્રામનામાપ્યં મન્ત્રરાજમનુત્તમમ્ ॥ ૭૩૪ ॥

जो सर्वोत्तम मन्त्रराज श्रीरामनाम का स्मरण करता है उसको भोजन करते समय दाने-दाने पर मलयज्ञों से भी अधिक पुण्य प्राप्त होता है ।

साम्बर्तकस्मृतौ -

साम्बर्तकस्मृति में -

असङ्ख्यजन्मसुकृतैर्युक्तो यदि भवेज्जनः ।

तदा श्रीरामसन्मन्त्रे रतिस्सञ्जायते नृणाम् ॥ ७३५ ॥

असङ्ख्यजन्मों के पुण्य से युक्त जब मनुष्य होता है तब उसके लृद्य में श्रीराममन्त्र के प्रति प्रेम प्रकट होता है ।

तन्नामस्मरतां लोके कर्मलोपो भवेद्यदि ।

तस्य तत्कर्म कुर्वन्ति त्रिंशत्कोट्यो मर्षयः ॥ ७३६ ॥

भगवान् श्रीराम के नाम स्मरण करने में यदि किसी साधक के नित्य नैमित्तिक कर्म का लोप हो जाता है तो उसके कर्म को तीस करोड़ों मर्षि लोग पूरा करते हैं ।

आङ्गिरसस्मृतौ -

आङ्गिरसस्मृति में -

कान्तास्ववन्दुर्गेषु सर्वापत्सु य सम्भ्रमे ।

दस्युभिस्सन्निःशब्दे य यस्तु श्रीनाम कीर्तयेत् ॥ ७३७ ॥

ततः सद्यो विमुख्येद्वै रामनामप्रभावतः ।

येतादृशं सदा स्वच्छं स्वतन्त्रं रामनाम य ॥ ७३८ ॥

बीडः वन कीला, सभी प्रकार की विपत्ति, भ्रम की स्थिति और लूटेरों के द्वारा रोके जाने पर जो श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करता है वह श्रीरामनाम के प्रभाव से तत्काल सङ्कट मुक्त हो जाता है और सदासर्वदा पवित्र एवं स्वतन्त्र श्रीरामनाम है ।

शनैश्चरस्मृतौ -

शनैश्चरस्मृति में -

मत्कृता या भवेद्बाधा मलाद्गुणौघदायिनी ।

रामनाम्नो जपोत्साही मुख्यते स्वल्पकालतः ॥ ७३९ ॥

शनि देवता कलते हैं कि मलाद्गुण को देने वाली मेरे द्वारा की गयी जो बाधा है वह स्वल्पकाल में उत्साह से श्रीरामनाम का जप करने से नष्ट हो जाती है ।

सर्वोपद्रवनाशार्थं रामनाम जपेद् बुध् ।

सत्यं सत्यं न सन्देहो मन्तव्यं सततं जनैः ॥ ७४० ॥

सभी प्रकार के उपद्रव के नाश के लिये बुद्धिमान् को श्रीरामनाम का जप करना चाहिए । इस बात को सज्जनों को बिना सन्देह के निरन्तर सत्य-सत्य मानना चाहिए ।

याज्ञवल्क्यस्मृतौ -

याज्ञवल्क्यस्मृति में -

परमात्मानमव्यक्तं प्रधानपुरुषेश्वरम् ।

अनायासेन प्राप्नोति कृते तन्नामकीर्तनम् ॥ ७४१ ॥

श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करने पर मनुष्य बिना परिश्रम के ही अव्यक्त प्रधान पुरुष, ईश्वर परमात्मा को प्राप्त कर लेता है ।

ज्ञानविज्ञानसम्पन्नं वैराग्यं विषयेष्वनु ।

अमलां प्रीतिमुन्निद्रां लभते नामकीर्तनात् ॥ ७४२ ॥

श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन करने पर साधक विषयों के प्रति ज्ञान विज्ञान से युक्त वैराग्य एवं निर्मल प्रीति एवं उन मुनीमुद्रा को शीघ्र ही प्राप्त कर लेता है ।

वशिष्ठस्मृतौ -

वशिष्ठस्मृति में -

रामनामजपेनैव तदर्थ्या चोत्तमा स्मृता ।

अन्येषां लौकिकी पूजा प्रतिष्ठावर्द्धिनी भुवि ॥ ७४३ ॥

श्रीरामनाम के जप से ही भगवान् की श्रुतिसम्मत उत्तमा पूजा कही गयी है । दूसरे लोगों की श्रीरामनाम से रक्षित पूजा पृथिवी पर लोक में प्रतिष्ठा बढ़ाने वाली मेला मात्र है ।

श्रीराम राम रामेति ये वदन्त्यपि पापिनः ।

पापकोटिसदस्येभ्यस्तेषामुद्धरणं क्षणात् ॥ ७४४ ॥

जो पापी भी राम राम राम असा उच्चारण करते हैं क्षण भर में करोड़ों पापों से उनका उद्धार हो जाता है ।

गौतमस्मृतौ -

गौतमस्मृति में -

तावद्विजृम्भते पापं ब्रह्महत्या पुरस्सरम् ।

यावच्छ्रीरामनामस्तु नास्ति सम्भाषणं नृणाम् ॥ ७४५ ॥

ब्रह्महत्यादि सारे पाप तभी तक शरीर में गरजते हैं, मनुष्य जब तक श्रीरामनाम का उच्चारण नहीं करता

है । श्रीरामनाम का उच्चारण करते ही उसी क्षण सारे पाप नष्ट हो जाते हैं ।

रामनामः परं तत्त्वं समं वा यस्त्वधी वदेत् ।

संसर्गं तस्य यः कुर्याद्रामद्वेषी भवेत्तु सः ॥ ७४६ ॥

यदि कोह बुद्धिहीन श्रीरामनाम से श्रेष्ठ अथवा तुल्य किसी तत्व को कहेता है उस पापी के संसर्ग में रहने वाले भी निश्चित ही श्रीरामजु के द्वेषी हैं ।

माण्डव्यस्मृतौ -

माण्डव्यस्मृति में -

सुरापो ब्रह्मडा स्तेयी यौरो भग्नप्रतोऽशुचिः ।

स्वाध्यायोपाजितः पापी लुब्धो नैष्ठितिकः शठः ॥ ७४७ ॥

अप्रती वृषलीभर्ता कुन्धी सोमविह्वयी ।

सोऽपि मुक्तिमवाप्नोति रामनामानुकीर्तनात् ॥ ७४८ ॥

शराभी, ब्राह्मण उत्यारा, योर, नियम भङ्गित लो गया है जिसका, अपवित्र, जो वेदादि के स्वाध्याय से वर्जित है, पापी, लोभी, कृतघ्नी, मूर्ख, अपने वार्ण्येवं आश्रम के अनुकूल प्रत का पालन न करने वाला, शुद्रा स्त्री का पति, कुत्सित नर्भों वाला और सोमलता को बेचने वाला भी श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करने से शीघ्र पापों से मुक्त हो जाता है ।

भृङ्गस्मृतिस्मृतौ -

भृङ्गस्मृतिस्मृति में -

यावच्छ्रीरामनामस्तु स्मरणं नास्ति भो मुने ।

तावद् यमभटा सर्वे विचरन्तीह निर्भयाः ॥ ७४९ ॥

हे मुने ! जब तक श्रीरामनाम का स्मरण नहीं होता है तभी तक यहां यमराज के दूत निर्भय होकर विचरण करते हैं ।

रामनाम परं ब्रह्म सर्वदेवैः प्रपूजितम् ।

सर्वेषां सम्मतं शुद्धं ज्वनं मडतामपि ॥ ७५० ॥

सभी देवों से भी प्रकृत रूप से पूजित परम ब्रह्म स्वरूप श्रीरामनाम सभी प्रकार के जिवों की शुद्धि का परम साधन एवं मडापुरुषों का ज्वन सर्वस्व है ।

आतातपस्मृतौ -

आतातपस्मृति में -

नित्यन्धिक् डिचतेऽस्माभिस्तेषां भाग्येषु निश्चितम् ।

नो पीतं रामनामाभ्यं पीयूषं मानवाऽऽकृतौ ॥ ७५१ ॥

हम लोग उन लोगों के भाग्य को निश्चित ही नित्य धिक्कारते हैं जिन लोगों ने मानव शरीर से श्रीरामनाम रूपी अमृत का पान नहीं किया ।

सूक्ष्ममत्यन्तमात्मानं प्रवदन्ति विपश्चितः ।

तस्याऽप्यनुभवः साक्षाज्जायते नामकीर्तनात् ॥ ७५२ ॥

विद्वान् लोग आत्मा को अत्यन्त सूक्ष्म कहते हैं उस सूक्ष्म आत्मा का भी अनुभव श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से हो जाता है ।

ज्ञानानां परमं ज्ञानं ध्यानानां परमो लयः ।

योगानां परमो योगो रामनामानुकीर्तनम् ॥ ७५३ ॥

समस्त ज्ञानों में परम ज्ञान, ध्यानों में परमलयस्वरूप अ एवं योगों में परम योग श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन है ।

अथमेव परो लाभः सर्वेषां जगतीतले ।

नामव्याहरणं नित्यं श्रीरामस्य सनातनम् ॥ ७५४ ॥

इस संसार में सभी के लिये यही सर्वश्रेष्ठ लाभ है कि भगवान् श्रीराम के सनातन श्रीरामनाम का नित्यकीर्तन स्मरण ।

परं ब्रह्ममयं नाम वेदानां गुह्यमुत्तमम् ।

यत्प्रसादात् परां शान्तिं लभते पातकी नरः ॥ ७५५ ॥

परम ब्रह्मस्वरूप वेदों का उत्तम गुह्य पदार्थ श्रीरामनाम है जिनकी कृपा से पापी भी परम शान्ति को प्राप्त कर लेता है ।

ब्राह्मणः श्वपथीं भुञ्जन् विशेषेण रजस्वलाम् ।

यदन्नं सुरया पक्वं मरणो नाम संस्मरेत् ॥ ७५६ ॥

स याति परमं स्थानं सर्वपापविवर्जितः ।

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं रामनामप्रभावतः ॥ ७५७ ॥

तद्देहलक्षणं वृक्षं पापघ्नपास्तु पक्षिणः ।

त्यक्त्वा योद्गीय गच्छन्ति विलम्बं संविहाय च ॥ ७५८ ॥

जो ब्राह्मण किसी रजस्वला याइडाली स्त्री को भोग करते हुए उसके द्वारा शराब में पकाये हुए अन्न को खाता है वह भी यदि मरते समय श्रीरामनाम का स्मरण कर लेता है तो श्रीरामनाम के प्रभाव से वह सभी पापों से मुक्त हो कर उत्कृष्ट स्थान को प्राप्त करता है यह सत्य-सत्य अ एवं सत्य है । उसके शरीररूपी वृक्ष को

पापघ्नी पक्षीगण अविलम्ब त्याग करके उड़ जाते हैं ।

ऋतुस्मृतौ -

ऋतुस्मृति में -

तन्नास्ति कायजं लोके वाक्यजं मानसं तथा ।

यत्तु न क्षीयते पापं रामनामजपान्मुने ॥ ७५९ ॥

हे मुने ! शारीरिक, मानसिक तथा वाचिक अइसा कोई पाप नहीं है जो श्रीरामनाम के जप से नष्ट न हो जाय ।

न तावत् पापमस्तीह यावन्नाम्ना उतस्मृतम् ।

अतिरेकभयादाहुः प्रायश्चित्तान्तरं बुधाः ॥ ७६० ॥

इस जगत् में उतने पाप नहीं है जितने पापों के नाश की बात श्रीरामनाम से कही गयी है विद्वानों ने अधिकता के भय से दूसरे प्रायश्चित्तों की बात कही है ।

महाभारते शान्तिपर्वणि भगवद्वाक्यं -

मडाभारत में शान्ति पर्व में भगवान् का वाङ्मय -

ऋग्वेदेऽथ यजुर्वेदे तथैवाथर्वसामसु ।

पुराणो सोपनिषदि तथैवं ज्योतिषेऽर्जुन ॥ ७६१ ॥

साङ्ग्ये य योगशास्त्रे य आयुर्वेदे तथैव य ।

बहूनि मम नामानि कीर्तितानि महर्षिभिः ॥ ७६२ ॥

गौणानि तत्र नामानि कर्मजानि य कानि य ।

सर्वेषु मन्त्रतत्त्वेषु रामनामपरात्परम् ॥ ७६३ ॥

भगवान श्री कृष्ण कडते हैं, डे अर्जुन ! ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद अेवं सामवेद, पुराणों, उपनिषदों ज्योतिषशास्त्र, साङ्ग्य, योग और आयुर्वेदादि ग्रन्थों में मडात्माओं ने डमारे अनेक नामों को कडा है उनमें कुछ नाम गौण अेवं कुछ कर्म डे अनुसार है सभी मन्त्र तत्त्वों में परात्परस्वरूप श्रीरामनाम श्रेष्ठ है ।

-धति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे प्रमोदनवासे परात्परैश्वर्यदायके

श्रीयुगलानन्यशरणासङ्गुडीते समस्तरडस्यसारे स्मृतिवाङ्मयप्रमाणानिरूपणं नाम पञ्चमः प्रमोदः ॥ ५ ॥

पञ्चमः प्रमोदः सामासः ।

अथ षष्ठः प्रमोदः

रडस्योक्त वयनानि -

छठे प्रमोद में रडस्योक्त वयन -

शिवरडस्ये -

शिवरडस्य में -

शोथन्ते ते तपोडीनाः स्वभाग्यानि दिने दिने ।

प्रमादेनापि यैर्नोक्तं श्रीरामेत्यक्षरद्वयम् ॥ ७६४ ॥

वे तपस्या से रडित लोग प्रतिदिन अपने भाग्यों डे लिअे शोक करते हैं जिनडोत्रे प्रमादवश भी श्रीरामनाम डे डो अक्षरों का उअ्यारण नहीं डिया ।

(रामनाम अनुराग धन चिन्तामणि थयसार ।

युगलानन्य स्नेड से जपिये बारडिवार ॥

सीताराम प्रपन्न विनुु भये न मोद अनन्त ।

युगलानन्य सनेड सज्जि पाठय प्रभा समन्त ॥)

रामनाम सुविज्ञेयः षडमात्रास्तत्त्वबोधकाः ।

जानन्ति तत्त्वनिष्णाता रामनामप्रसादतः ॥ ७६५ ॥

श्रीरामनाम में तत्व का बोध कराने वाली छः मात्राओं हैं तत्व में निष्पात पण्डित लोग श्रीरामनाम की कृपा से उन मात्राओं को जानते हैं ।

रामनाम्नि स्थितो रेङ्गो जानकी तेन कथ्यते ।

रकारेण तु विज्ञेयः श्रीरामः पुरुषोत्तमः ॥ ७६६ ॥

अकारेण तु विज्ञेयो भरतो विश्वपालकः ।

व्यञ्जनेन मकारेण लक्ष्मणोऽत्र निगद्यते ॥ ७६७ ॥

उस्वाकारेण निगमैःशत्रुघ्नः समुदाहृतः ।

मकारार्थो द्विधा ज्ञेयः सानुनासिकभेदतः ॥ ७६८ ॥

प्रोच्यन्ते तेन उंसा वै श्रुवाश्चैतन्यविग्रहाः ।

संसारसागरोत्तीर्णाः पुनरावृत्तिवर्जितः ॥ ७६९ ॥

वेदों ने श्रीरामनाम के “र” का अर्थ श्रीजानकीशु, “अ” का अर्थ श्रीरामशु, “आ” का अर्थ विश्वपालक श्रीभरतशु,

“म” का अर्थ श्रीलक्ष्मणशु और इस्व “अ” का अर्थ श्रीशत्रुघ्नशु किया है, मकार

का अर्थ अनुनासिक अंवं निरनुनासिक के भेद से दो प्रकार से किया गया है । उसके द्वारा उंसा स्वरूप चैतन्य से अभिन्न संसार सागर से उत्तीर्ण अंवं आवागमन से रहित श्रुव कहे जाते हैं ।

सैवाधिकारिणः सर्वे श्रीरामस्य परात्मनः ।

अेतत्तात्पर्यमुप्यार्थादन्यार्थो योऽनुभूयते ॥ ७७० ॥

सोऽनर्थं षति विज्ञेय संसारप्राप्तिहेतुकः ।

तस्मात्तात्पर्यमर्थं य मन्तव्यं नामतन्मयैः ॥ ७७१ ॥

सभी श्रुव परमात्मा श्रीराम की प्राप्ति के अधिकारी हैं श्रीरामनाम का यही मुख्य अर्थ है इसके अतिरिक्त यदि कोई दूसरे अर्थ का अनुभव करता है तो अर्थ नहीं है अपितु वह संसार की प्राप्ति कराने वाला अनर्थ है अतः श्रीरामनामानुरागियों को वास्तविक तात्पर्यार्थ का मनन करना चाखिये ।

नारायणरहस्ये श्रीनारायणवाक्यं नारदं प्रति -

नारायणरहस्य में श्रीनारायणशु का वाक्य नारदशु के प्रति -

यथौषधं श्रेष्ठतमं मडामुने अजानतोऽप्यात्मगुणं प्रकुर्वते ।

तथैव श्रीराघवनामतो जनाः परं पदं यान्त्यनायासतः षलु ॥ ७७२ ॥

हे मडामुने ! जैसे अत्यन्त श्रेष्ठ औषधि अनजान में भक्षण करने पर भी अपने गुण को प्रकट करता ही है उसी प्रकार लोग भगवान् श्रीसीतारामशु के मङ्गलमय श्रीरामनाम से बिना प्रयास के ही निश्चित ही परम पद को प्राप्त कर लेते हैं ।

यथा दीपेन धाम्नस्तु तमस्तोमविनाशनम् ।

तथा श्रीरामनाम्ना तु अविद्यासन्निवर्तते ॥ ७७३ ॥

जैसे घर के अन्धकार समूह दीपक के द्वारा नष्ट हो जाता है उसी प्रकार श्रीरामनाम से अविद्या की निवृत्ति हो जाती है ।

यन्नामकीर्तनाद्दोषास्सर्वे नश्यन्ति तत्क्षणात् ।

विनिर्दोषायते तस्मै श्रीरामाय नमो नमः ॥ ७७४ ॥

जिसके मङ्गलमय श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करने से सभी दोष उसी क्षण नष्ट हो जाते हैं जैसे दोषों से सर्वथा परे भगवान् राम को नमस्कार हो नमस्कार हो ।

त्यजेत् क्लेवरं रोगी मुख्यते सर्वकर्मभिः ।

भक्त्याऽऽवेश्य मनो यस्मिन् वाचा श्रीनाम कीर्तने ॥ ७७५ ॥

यस्तारयति भूतानि त्रिलोकीसम्भवानि य ।

स्वनामकीर्तनेनैव तस्मै नामात्मने नमः ॥ ७७६ ॥

जो रोगी भक्तिपूर्वक श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन में अपने मन को लगा दिया वह सभी कर्मों से रहित होकर अपने शरीर को छोड़ता है । जो अपने नाम श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से ही त्रिलोकी में उत्पन्न समस्त प्राणियों को तार देता है जैसे श्रीरामनाम महाराज को नमस्कार हो ।

श्रीरामेत्युक्तमात्रेण दैहिकः क्लेशबन्धनः ।

पापौघो विलयं याति दानमश्रोत्रिये यथा ॥ ७७७ ॥

श्रीरामनाम के उच्चारण मात्र से देह के बन्धन भूत क्लेश कारक पाप प्रवाहों का उसी प्रकार विलय हो जाता है जैसे अवैदिक ब्राह्मण को दिया गया दान नष्ट हो जाता है ।

ब्रह्मरहस्ये -

ब्रह्मरहस्य में -

नियतं रामनामस्तु कीर्तनाच्छ्रवणाच्छिवे ।

महतोऽप्येनसः सत्यमुद्धरेद्राघवो बली ॥ ७७८ ॥

हे पार्वति ! श्रीरामनाम का नियत रूप से कीर्तन एवं श्रवण करने से महाबली भगवान् श्रीरामजी बड़े से बड़े पाप से उद्धार कर देते हैं । यह सत्य है ।

सत्यम्भवीमि देवेशि श्रुत्वैदमवधारय ।

नामसङ्कीर्तनादन्यो मोयकोऽत्र न विद्यते ॥ ७७९ ॥

हे देवेश्वरि पार्वति ! मैं सत्य कहता हूँ ऐसे सुनकर तुम धारण करो जोव के बिना श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन के अलावा दूसरा कोई भवबन्धन से मुक्त करने वाला साधन नहीं है ।

सकृदुच्चारयेद्यस्तु रामनामेतिमङ्गलम् ।

उलयथा श्रद्धया वापि स पूतः सर्वपातकैः ॥ ७८० ॥

उपेक्षापूर्वक या श्रद्धा से जो परम मङ्गलमय श्रीरामनाम का एक बार उच्चारण करता है वह सभी पापों से मुक्त होकर परम पवित्र हो जाता है ।

सर्वाचारविहीनोऽपि तापक्लेशादिसंयुतः ।

श्रीरामनाम सङ्कीर्त्य याति ब्रह्म सनातनम् ॥ ७८१ ॥

विविध तापक्लेशादि से युक्त होकर सदाचार से रहित होकर भी एक बार श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करके सनातन ब्रह्म स्वरूप परमपद को प्राप्त कर लेता है ।

विष्णुरहस्ये -

विष्णुरहस्य में -

यस्य नाम सततं जपन्ति येऽज्ञानकर्मकृतबन्धनं क्षणात् ।

सद्येव परिमुच्य तत्पदं याति कोटिरविभास्वरं शिवम् ॥ ७८२ ॥

जिस भगवान् के मङ्गलमय नाम श्रीरामनाम का जो जप करते हैं उनके अज्ञान जन्य कर्मकृत बन्धन तत्क्षण नष्ट हो जाते हैं और वे करोड़ों सूर्य के समान तेजस्वी मङ्गल स्वरूप परमपद को प्राप्त कर लेते हैं ।

सर्वकाले शुचिर्नाम मङ्गलमौक्षिककारणम् ।

धृति मत्वा जपेद्यस्तु स तु सिद्धान्तपारगः ॥ ७८३ ॥

श्रीरामनाम मोक्ष का एक मात्र कारण और हर समय परम पवित्र है ऐसा मानकर जो श्रीरामनाम का जप करता है वही वास्तव में सिद्धान्त का पारगामी है ।

श्रीरामदिव्यनामानि सर्वदा परिकीर्तयेत् ।

यतः सर्वात्मकं नाम पावनानां य पावनम् ॥ ७८४ ॥

भगवान् राम के दिव्यनामों का सदासर्वदा कीर्तन करना याद्विभो ज्योतिष् श्रीरामनाम सर्वात्मक एवं पवित्रता को भी पवित्र करने वाला है ।

गणेशरहस्ये -

श्रीगणेश रहस्य में -

सर्वजातिबहिर्भूतो भुञ्जानो वा यतस्ततः ।

कदाचिन्नारकं द्रुमं नाम वक्ता न पश्यति ॥ ७८५ ॥

जो सभी जातियों से बहिर्भूत है और जहाँ तहाँ भाते-पीते रहते हैं वे भी श्रीरामनाम का उच्चारण करने पर नरक जन्य द्रुम को नहीं भोगते हैं ।

स्मरणो रामनामस्तु मानसं यस्य वर्तते ।

तस्य वैवस्वतो राजा करोति लिपिमाञ्जनम् ॥ ७८६ ॥

जिसका मन श्रीरामनाम के स्मरण में लगा रहता है धर्मराज उसके पाप पुण्य की लिपि को धो डालते हैं ।

अेकस्मिन्नप्यतिक्रान्ते भुङ्क्ते नामवर्जिते ।

दस्युभिर्मोषितस्तेन युक्तमाकन्दितुं भृशम् ॥ ७८७ ॥

डमारी आयु का अेक मुडूर्त भी श्रीरामनाम के जप के बिना यहि भीत जाय तो डमारे पापरुप खोरों ने मेरे समय को चुरा लिया अैसा समजकर आर्त स्वर में कन्दन करना चाखिअे यडी उचित डोगा ।

शक्तिरडस्ये -

शक्तिरडस्य में -

रामेतिभ्रुवतोऽनिशं भ्रुवि जनस्येतावता सङ्ख्य-

म्पापानामतिशोधकं भ्रुवु पुनर्नान्यत् कृतं चिन्तनम् ।

भार्ताण्डोदयकाल अेव तमसो नास्ति क्षतिस्स्यात् क्षयं

किं कार्यं पुरुषैः प्रदीपकरणेयार्थानभिज्ञैर्वृथा ॥ ७८८ ॥

निरन्तर श्रीरामनाम का उख्यारण करने वाले मनुष्य के समस्त पापो का सम्यक् नाश डो जाता डै डिर डिंसी अन्य साधनों की आवश्यकता नहीं डै ड्योड्डि श्रीरामनाम डी निश्चित रूप से समस्त पापों का विशोधक डै जैसे सूर्य के उदय डोते डी समस्त अन्धकारों का नाश डो जाता डै । अन्धकार के नाश डेतु डीपकाडि की डिर आवश्यकता नहीं रहती डै ।

अडो मूर्धमडो मूर्धमडो मूर्धमिडं जगत् ।

विद्यमानेऽपि मत्स्वामी मूढा नैव रमन्ति य ॥ ७८९ ॥

यड जगत् अऽःा डी मूर्ध डै यडी मडान् आश्चर्य डै डि सर्व समर्थ डमारे स्वामी श्रीरामनाम के विद्यमान अेवं सर्वसुखभ डोने पर भी मूर्ध डोग उसमें रमण नहीं करते डै ।

सिद्धान्तरडस्ये -

सिद्धान्तरडस्य में -

श्रीराम राम रघुवंशकुलावतंस

त्वन्नामकीर्तनपरा भवतीड वाणी ।

नान्यं वरं रघुपते भ्रमतोऽपि याये

सत्यंवडामि रघुवीर दयानिघेऽडम् ॥ ७९० ॥

डे श्रीरघुवंश शिरोमणु डे दयानिघे ! डे रघुवीर रामजु ! डमारी जिह्वा सडासर्वडा आपडे नाम के सडुीर्तन स्मरण में डी लगी रहे यडी वरदान आपसे माँगता डूँ, भ्रमवश भी डोड दूसरा वरदान मैं नहीं माँगता डूँ, मैं यड सत्य कडता डूँ आप तो अन्तर्यामी डै डी अतः स्वतः समज लीजिअे ।

तस्मात् मूर्धतरः डोऽपि डोऽन्यस्तस्मादयेतनः ।

यस्य नाम्नि परा प्रीतिर्नास्ति सर्वेश्वरेश्वरे ॥ ७९१ ॥

सर्वेश्वरों के स्वामी श्रीरामनाम में जिसकी पराप्रीति नहीं डुड तो उससे अडकर अत्यन्त मूढ और जऽः डोड दूसरा नहीं डै ।

परमानन्दजलधौ नाम्नि सिद्धान्तमौलिनि ।

नास्ति यस्य रतिर्नित्या स विप्रः श्रपयाधमः ॥ ७८२ ॥

जिसकी परमानन्द समुद्र सिद्धान्त सार सर्वस्व श्रीरामनाम में नित्य रति नहीं हुई तो वह विप्र भी अधम
थाइसल है ।

अहो चित्रमहो चित्रमहोचित्रमिदं द्विजः ।

रामनाम परित्यज्य संसारे रुचिमुल्लवणाम् ॥ ७८३ ॥

हे द्विजश्रेष्ठो ! सबसे बड़ा आश्चर्य एवं वैचित्र्य यही है कि मनुष्यों की श्रीरामनाम को छोड़कर संसार में
उत्कृष्ट प्रीति हो रही है ।

यावन्नेन्द्रियवैकल्यं यावद्व्याधिर्न बाधते ।

तावत् सङ्कीर्तयेद्रामं सलजानन्ददायकम् ॥ ७८४ ॥

जब तक इन्द्रिया स्वस्थ हैं विकलाङ्ग नहीं हुई है, और जब तक अनेक प्रकार के रोग पीड़ा नहीं दे रहे हैं
तब तक स्वाभाविक आनन्द प्रदायक श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन अवश्य कर लेना चाहिए ।

मातृगर्भाधिदा ज्वो निष्कान्तश्च तदैव हि ।

मृत्युवङ्त्रागतो वाढे तस्माद्रामं प्रकीर्तयेत् ॥ ७८५ ॥

जब जब मां के गर्भ से भूतल पर आया तभी से मृत्यु के मुख में आ गया उत्तरोत्तर आयु क्षीण होगी अतः
उत्तम यही है कि श्रीरामनाम का कीर्तन करें ।

नारदपाञ्चरात्रे -

नारदपाञ्चरात्र में -

कदाऽहं विजनेऽरण्ये निरन्तरमितस्ततः ।

प्रलपन् राम रामेति गमिष्यामि य वासरान् ॥ ७८६ ॥

हे प्रभो ! कब अइसा सुखवसर प्राप्त होगा जब निर्जन वन में धर धर विचारण करते हुये श्रीरामनाम राम का
उच्चारण करते हुये अपने दिनों को व्यतित करूँगा ।

यन्नाम स्मरतां पुंसां सद्यो हरति पातकम् ।

जायते याक्षयं पुण्यं तं वन्दे जानकीपतिम् ॥ ७८७ ॥

जिनके श्रीरामनाम का स्मरण करने वाले पुरुषों का पाप तत्काल नष्ट हो जाता है और अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती
है उन श्रीजानकीनाथ भगवान् श्रीराम की मैं वन्दना करता हूँ ।

सग्राहनामभण्डिकस्य य यस्य कण्ठे संराजते प्रतिदिनं स तु मुक्तिरूपः ।

जन्मादिदुःखपरिपूर्वमहावर्णस्य साक्षात्परं परतरं प्लवनं पवित्रम् ॥ ७८८ ॥

श्रीरामनामरूपी मणियों की माला जिसके कण्ठ में सम्यक् रूप से प्रतिदिन विराजमान होती है वह श्रुवन्मुक्त है अर्थात् श्रुते श्रु मुक्ति को पा लिया है क्योंकि श्रीरामनाम जन्ममरणरूपी मलाद्गुण समुद्र को पार करने के लिये सर्वश्रेष्ठ एवं परमपवित्र नौका है, श्रीरामनाम के माध्यम से सज्ज में भव पार हो सकते हैं ।

अयं सर्वेषु मन्त्रेषु यूगामणिरुदाहृतः ।

मन्त्राणां सिद्धिदो मन्त्रः श्रीरामेत्यक्षरद्वयम् ॥ ७९९ ॥

यह श्रीरामनाम सभी मन्त्रों में यूऽऽमणि कडा गया है श्रीरामनाम के “र” “म” ये दो अक्षर सभी मन्त्रों को सिद्धि प्रदान करने वाला मलामन्त्र है ।

सर्वार्थसिद्धियुक्तेषु नाम्नामेकार्थतापतः ।

अतः श्रीरामनामेदं लजेद्भावैकवल्लभम् ॥ ८०० ॥

सभी प्रकार के अर्थ एवं सिद्धि से युक्त भगवान् के समस्त नामों का सम्मिलित एक रूप श्रीरामनाम है अतः एकमात्र भाव प्रिय इस श्रीरामनाम का सदासर्वदा लजन करना चाहिये ।

-एति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे प्रमोदनवासे परात्परैश्वर्यदायके

श्रीयुगलानन्यशरणसङ्गृहीते रडस्यवाङ्मयप्रमाणनिरूपणं नाम षष्ठः प्रमोदः ॥ ६ ॥

षष्ठ प्रमोदः समाप्तः

अथ सप्तमः प्रमोदः

यामलोक्तवचनानि -

सातवें प्रमोद में यामलोक्त वचन -

ब्रह्मयामले -

ब्रह्मयामल में -

रकारः सर्वदेवानां साक्षात् कालानलः प्रभुः ।

रकारः सर्वश्रुवानां सर्वपापस्य दाहकः ॥ ८०१ ॥

श्रीरामनाम का “र” सभी देवताओं में सर्वसमर्थ साक्षात् कालाग्नि है एवं “र” सभी श्रुवों के सभी पापों का नाशक अग्निरूप है ।

रकारः सर्वभूतानां श्रुवरूपी परात्परः ।

रकारः सर्वदेवानां तेजःपुञ्जः सनातनः ॥ ८०२ ॥

समस्त प्राणियों में परात्पर श्रुव है एवं सभी देवों का सनातन तेजःपुञ्ज “र” है ।

रकारः सर्वसौम्यानां सिद्धिदस्तु पुरातनः ।

रकारः सर्वविद्यानां वेद्यस्तत्त्वं सनातनः ॥ ८०३ ॥

सभी प्रकार के सुभों को देने वाली सिद्धियों को प्रदान करने वाला पुराना दाता है एवं सभी विधाओं से वेध सनातन तत्व “२” है ।

रकारः सर्वभूतानामीश्वरोऽनन्तःपृथक् ।

रकारः सर्वभूतानां व्याप्यव्यापकमीश्वरः ॥ ८०४ ॥

सभी प्राणियों का स्वामी अनन्तस्वरूप धारण वाला “२” है एवं समस्त प्राणियों का व्याप्य तथा व्यापक ईश्वर “२” है ।

रकारोत्पद्यते नित्यं रकारे लीयते जगत् ।

रकारो निर्विकल्पश्च शुद्धबुद्धस्सदाऽद्भ्यः ॥ ८०५ ॥

यह जगत् से ही उत्पन्न होता है और “२” में ही विलीन हो जाता है “२” शुद्ध बुद्ध सदा अद्वैत एवं निर्विकल्प है ।

रकारः सर्वकामश्च पश्चिपूर्वामनोरथः ।

रकारः सर्वदुष्टानां नाशको रघुनायकः ॥ ८०६ ॥

सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाला है एवं सभी दुष्टों का नाश करने वाले भगवान् श्रीराम ही “२” है ।

रकारः सर्वसत्त्वानां मढामोदमयः स्वराट् ।

रकारः सर्ववेदानां कारणः प्रकृतेः परः ॥ ८०७ ॥

समस्त प्राणियों को मढामोद प्रदान करने वाला सर्वतन्त्र स्वतन्त्र “२” है एवं समस्त वेदों का मूल एवं प्रकृति से सर्वथा परे ।

तत्रैव पार्वतीवाङ्मयं श्रीशिवं प्रति -

वर्डी श्रीपार्वतीञ्चु का वाङ्मय शिवञ्चु के प्रति -

गुटिका पाटुका सिद्धि परकायप्रवेशनम् ।

वाया सिद्धिश्चार्थसिद्धिस्तथा सिद्धिर्मनोमयी ॥ ८०८ ॥

ज्ञानविज्ञानकर्माणि नानासिद्धिकराणि य ।

लक्ष्मी कुतूहला सिद्धिर्वाञ्छासिद्धिस्तु षेयरी ॥ ८०९ ॥

केनेदं सर्वमाप्नोति देव मे वद तत्त्वतः ।

सर्वतो निर्णयं कृत्वा ज्ञात्वा मामनुगामिनी ॥ ८१० ॥

हे भोलेनाथ ! गुटिका-उडःने की शक्ति, पाटुका सिद्धि-जल पर चलने की सिद्धि, दूसरे के शरीर में प्रवेश करने की शक्ति, वाणी की सिद्धि अर्थात् जो कहे वल सत्य हो जाय, सृष्टि के समस्त धन सम्पत्ति को देने की शक्ति, मनोऽनुकूल सिद्धि, अनेक प्रकार के यमत्कार एवं सिद्धिमय ज्ञान विज्ञान की सिद्धि आश्चर्यमय लक्ष्मी की सिद्धि और अपनी याचना के अनुरूप आकाश में उडःने की शक्ति हे देवाधिदेव मढादेव ! ये सभी प्रकार की सिद्धियाँ हैसे प्राप्त होऽगी मुझे अपनी सेविका समझकर सभी तरल से निर्णय करके यथार्थ से मेरे लिये कडिओ ।

श्रीशिव उवाच -

श्रीशिवञ्च ने कडा -

सर्वैश्वर्यप्रदं सर्वसिद्धिदं परमार्थदम् ।

मडामाङ्गलिकं नित्यं रामनाम परात्परम् ॥ ८११ ॥

डे पार्वति ! सभी प्रकार के शैश्वर्यो का प्रदाता, सभी सिद्धियों का दाता, परमार्थ को देने वाला, और मडामाङ्गलमय परात्परस्वरूप श्रीरामनाम है अर्थात् श्रीरामनाम के जप एवं कीर्तन से ही सभी सिद्धियाँ

प्राप्त हो जाती है ।

नातः परतरोपायः सुभार्थं वर्तते प्रिये ।

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं नान्यथा वचनं मम ॥ ८१२ ॥

डे प्राणप्रिये पार्वति ! मनुष्यों के लिये सभी प्रकार सुभ प्राप्ति के लिये श्रीरामनाम से बढःकर दूसरा कोई उपाय नहीं है यही सत्य-सत्य एवं सत्य है मेरी वाणी अन्यथा नहीं है ।

तत्रैव स्थानान्तरे -

वडी दूसरी जगह में -

रामनामपरा वेदा रामनामपरागतिः ।

रामनाम परायज्ञा रामनामपरा क्रियाः ॥ ८१३ ॥

सभी वेदों का परम तात्पर्य, सभी सद्गतियों का मूल, सभी यज्ञों का पर्यवसान एवं समस्त अनुष्ठानादि क्रियाओं का परम इल श्रीरामनाम है ।

रामनाम सदानन्दो रामनाम सदागतिः ।

रामनाम सदातुष्टो रामनाम सदाऽमलः ॥ ८१४ ॥

श्रीरामनाम सम्यक् आनन्दस्वरूप सम्यक् गतिरूप, सम्यक् सन्तोषस्वरूप और सदासर्वत्र पवित्र है ।

रामनाम परं ज्ञानं रामनाम परो रसः ।

रामनाम परो मन्त्रो रामनाम परो जपः ॥ ८१५ ॥

श्रीरामनाम सर्वोत्कृष्ट ज्ञान, सर्वश्रेष्ठ रस, परम मन्त्र एवं सर्वश्रेष्ठ जपस्वरूप है ।

रामनाम परं ध्यानं सदा सर्वत्र पूर्णकम् ।

रामनाम सदा सेव्यमीश्वराणां मम प्रिये ॥ ८१६ ॥

डे प्रिये पार्वति ! सदासर्वदा सर्वत्र परमपूर्ण श्रीरामनाम ही सर्वश्रेष्ठ ध्यान है सभी ईश्वरों एवं मेरे द्वारा सदासर्वदा सेव्य श्रीरामनाम है ।

रकारादीनि नामानि शृण्वतो मम पार्वति ।

मनः प्रसन्नतामेति रामनामाभिश्चकृया ॥ ८१७ ॥

डे पार्वति ! “र” जिस शब्द डे पडले आता डै जैसे रात्रि, रथ, रावण।डि शब्दों डो सुनकर मेरा मन ँस आशङुा से प्रसन्न डो जाता डै डि यड रामनाम डा उख्यारण करेगा ।

रुद्रयामले श्रीशिववाङ्यं शिवां प्रति -

रुद्रयामले में श्रीशिवजु डा वाङ्य पार्वती डे प्रति -

मडारः सर्व साध्यानां सर्वसौष्यप्रदस्तथा ।

मडारः सर्वदेवानां सिद्धिदस्तु सदा प्रिये ॥ ८१८ ॥

डे प्रिये ! सभी साध्य पदार्थों डो सर्वविध सुभु प्रदान करने वाला तथा सभी देवों डो सदासर्वदा सिद्धि देने वाला श्रीरामनाम डा “म” डै ।

मडारः सर्वमूलानां मूलं मोदमयः स्वरट् ।

मडारश्च पराशक्तिरुज्ज्वला सर्वडामदा ॥ ८१९ ॥

समस्त मूलों डा मडामूल आनन्दमय अेवं सर्वतन्त्र स्वतन्त्र “म” डै और सभी डामनाओं डो प्रदान करने वाली परम उज्ज्वल पराशक्ति “म” डै ।

मडारः सर्वजुवानां पालडो जगदीश्वरः ।

मडारः सर्वसिद्धीनां डारणं नात्र संशयः ॥ ८२० ॥

सभी जुवों डा पालन करने वाला जगत् डा स्वामी अेवं सभी सिद्धियों डा अेकमात्र डारण “म” डै, ँसमें संशय नडी डै ।

मडारो लोडलोडानां मडारः सर्वव्यापडः ।

मडारः सर्वशास्त्राणां सिद्धान्तः सर्वमुक्तिदः ॥ ८२१ ॥

समस्त लोडालोडों में सबडा व्यापड, सबडो मुक्ति प्रदान करने वाला अेवं सभी शास्त्रों डा सिद्धान्त “म” डै ।

रडारदेर्न सिद्धिः स्यान्मडारदिं विना शिवे ।

मडारदेर्नसिद्धिः स्याद्रडारदिं विना प्रिये ॥ ८२२ ॥

तस्माद्धिवेडिभिर्नित्यं जप्तव्यमुभयाक्षरम् ।

सिद्धान्तं सर्ववेदानां रामनाम परात्परम् ॥ ८२३ ॥

डे प्राणवल्लभे पार्वति ! मडारदि डे विना रडारदि डी सिद्धि नडी डो सकती अेवं रडारदि डे विना मडारदि डी सिद्धि नडी डो सकती डै ँसविअे विवेडी पुरुषों डो नित्य सभी वेदों डे सिद्धान्तस्वरुप परात्पर श्रीरामनाम डे ँनों अक्षरों “राम” डा जप करना याडिअे ।

सम्मोडनतन्त्रे श्रीशिववाङ्यं शिवां प्रति -

सम्मोडन तन्त्र में श्रीशिवजु डा वाङ्य पार्वती जु डे प्रति -

यन्मयोदितमुल्लासं मन्त्राणां ढूधरात्मजे ।

तत् सर्व रामनाम्ना वै सिद्धिमाप्नोति निश्चितम् ॥ ८२४ ॥

डे पर्वतनन्दिनी पार्वति ! मैत्रे जितने मन्त्र तन्त्रों के उल्वास का वर्णन किया है वे सब श्रीरामनाम से ही शक्ति
अपेक्षित को निश्चित ही प्राप्त करते हैं ।

रामनामप्रभावेण पञ्च तत्त्वात्मकस्तनुः ।

स भवेत् सखिदानन्दः सत्यं सत्यं वयो मम ॥ ८२५ ॥

ड पार्वति ! निरन्तर श्रीरामनाम के जप करने से श्रीरामनाम के प्रभाव से यह पाञ्चभौतिक शरीर भी
सखिदानन्दस्वरूप हो जाता है मेरी यह वाणी सत्य है सत्य है ।

चित्तैकाग्रतया नित्यं ये जपन्ति सदाप्रिये ।

रामनाम परं ब्रह्म किञ्चित्तेषां न दुर्लभम् ॥ ८२६ ॥

डे प्रिये ! परब्रह्मस्वरूप श्रीरामनाम को जो ऐकाग्रचित्त से नित्य जपते हैं उनके लिये कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं
है ।

सर्वेषां सुप्रयोगाणां सिद्धिरन्यत्र दुर्लभा ।

श्रीरामनामस्मरणेनाध्यासेन सिद्ध्यति ॥ ८२७ ॥

श्रीरामनाम के बिना सभी मन्त्र तन्त्रों के प्रयोगों की सिद्धि दुर्लभ है और श्रीरामनाम के स्मरण से बिना श्रम के
ही सभी प्रयोग सिद्ध हो जाते हैं ।

तस्माच्छ्रीरामनामस्तु कीर्तनं सर्वसिद्धिदम् ।

कर्तव्यं नियतं देवि त्यक्त्वाऽन्यान्मन्त्र सञ्चयान् ॥ ८२८ ॥

डे देवि ! इसीलिये दूसरे मन्त्र सञ्चयों का त्याग करके सभी सिद्धियों को प्रदान करने वाले श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन
को व्यापक रूप से करना चाहिये ।

प्राणात् प्रियतरं मज्जं रामनाम सदा प्रिये ।

क्षाणं विहातुं शक्तोऽस्मि नैव देवि कदाचन ॥ ८२९ ॥

डे प्रिये ! मुझे प्राणों से भी ज्यादा प्रिय श्रीरामनाम है डे देवि ! श्रीरामनाम को छोड़कर मैं एक क्षण भी जुने
में समर्थ नहीं हूँ ।

तन्त्रसारे -

तन्त्रसार में -

एतमेव परं सारं सर्वेषां मन्त्रसंज्ञतेः ।

वेदानां लृप्त्यं सौम्य रामनामसुधास्पदम् ॥ ८३० ॥

डे सौम्य ! सबका अपेक्षित मन्त्र समुदाय का परमसार अपेक्षित वेदों का लृप्त्य अमृतस्वरूप श्रीरामनाम है ।

यावच्छ्रीरामनामस्तु पानं नास्ति नृणां शिवे ।

तावन्मन्त्राणि यन्त्राणि रुचिः स्थादुलृप्त्यस्थले ॥ ८३१ ॥

हे पार्वति ! मनुष्यों की अन्य मन्त्र तन्त्रों में इन्हीं तभी तक होती है जब तक उन्होंने श्रीरामनामरूपी अमृत का पान न किया हो अर्थात् श्रीरामनाम के आस्वादन के पश्चात् सभी मन्त्र तन्त्र हीके लगने लगते हैं ।

दुर्लभं सर्वज्जवानामिमं मन्त्रेश्वरेश्वरम् ।

कथं भजन्ति पापिष्ठाः सुकृतौघं बिना प्रिये ॥ ८३२ ॥

हे प्रिये ! बिना पुण्य के अत्यन्त पापी लोग इस श्रेष्ठ मन्त्रों के भी स्वामी, सामान्य जूवों के लिखे दुर्लभ श्रीरामनाम का भजन कैसे करते हैं?

मन्त्रमखोदधौ -

मन्त्रमखोदधि में -

असारतरसंसारसागरोत्तारकारकम् ।

हारकं द्रुण्जलानां श्रीरामेत्यक्षरद्वयम् ॥ ८३३ ॥

अत्यन्त असार संसार सागर का तारक एवं द्रुण समूह का नाशक “रा” “म” ये दो अक्षर है ।

श्रीरामनामसर्वस्वं मन्त्राणां परमं गुरुम् ।

यस्य सङ्कीर्तनाज्जन्तुर्याति निर्वाणमुत्तमम् ॥ ८३४ ॥

सभी मन्त्रों का सर्वस्व एवं परम गुरु श्रीरामनाम है जिस श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन करने से जेव उत्तम मुक्ति को प्राप्त करता है ।

मन्त्रप्रकाशे -

मन्त्र प्रकाश में -

कृतं सद्ग्रन्थशास्त्राणां निर्णयं परमं मया ।

श्रीरामनामस्मरणं सारमन्यं निरर्थकम् ॥ ८३५ ॥

मैंने सभी सद्ग्रन्थों एवं शास्त्रों का परम निर्णय यल निश्चित किया है कि श्रीरामनाम का स्मरण ही सार

है शेष सब व्यर्थ है ।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदस्सामवेदस्त्वथर्वणः ।

अधीतास्तेन येनोक्तं श्रीरामेत्यक्षरद्वयम् ॥ ८३६ ॥

जिसने “रा” “म” इन दो अक्षरों का उच्चारण कर लिया उसने सम्पूर्ण ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेदों का अध्ययन कर लिया ।

श्रीरामनाम सन्त्यक्त्वा ह्यन्यस्मिन् यस्य संरुचिः ।

स तु बुध्यतमो लोके पुनरायाति याति च ॥ ८३७ ॥

जिस अधम की श्रीरामनाम को छोड़कर अन्य मन्त्रों के जप में इन्हीं के वल तो अवश्य वध के योग्य है और इस जगत् में बार-बार आता और जाता रहता है ।

-इति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे प्रमोदनवासे परात्परैश्वर्यदायके

श्रीयुगलानन्धशरणासङ्गृहीते तन्त्रवाङ्मयप्रमाणनिर्गुणं नाम सप्तमः प्रमोदः ॥ ७ ॥
“सप्तम प्रमोद समाप्त”

अथाष्टमः प्रमोदः

नानाग्रन्थोक्त वचनानि -

अष्टम प्रमोद में नाना ग्रन्थोक्तवचन -

श्रीजानकीविनोदविलासे -

श्रीजानकीविनोदविलास में -

सीतां विना भजेद्रामं सीतां रामं विना भजेत् ।

कल्पकोटिशुद्धस्रैस्तु लभते न प्रसन्नताम् ॥ ८३८ ॥

जो सीताञ्जु के बिना रामञ्जु का और रामञ्जु के बिना सीताञ्जु का भजन करते हैं वे लोग करोड़ों कल्पों तक प्रसन्नता को नहीं प्राप्त करते हैं । अर्थात् वे लोग सदा अशान्त ही रहते हैं ।

सीतारामात्मकं ध्यानं सीतारामात्मकार्यनम् ।

सीतारामात्मकं नामजपं परतरात्परम् ॥ ८३९ ॥

श्रीसीतारामञ्जु का ध्यान, पूजन एवं युगलनाम का जप ही सर्वश्रेष्ठ है ।

श्रीजानकीविलासोत्तमे -

श्रीजानकीविलासोत्तम में -

स रामो न भवेज्जातु सीता यत्र न विद्यते ।

सीता नैव भवेत् सा हि यत्र रामो न विद्यते ॥ ८४० ॥

वह राम कभी भी राम नहीं है जहाँ सीताञ्जु नहीं है एवं वह सीताञ्जु वास्तव में सीताञ्जु नहीं है जहाँ रामञ्जु नहीं है तात्पर्य यह है कि ये दोनों के एक दूसरे के पूरक हैं एक के बिना एक अधुरा है अतः युगल की विपासना ही श्रेयस्करी है ।

सीता रामं विना नैव राम सीतां विना नहि ।

श्रीसीतारामयोरेष सम्बन्धः शाश्वतो मतः ॥ ८४१ ॥

श्रीसीताञ्जु की शोभा श्रीराम के बिना एवं श्रीरामञ्जु की शोभा श्रीसीताञ्जु के बिना नहीं है परस्पर में अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है इन दोनों का सम्बन्ध शाश्वत है ।

रामः सीता जानकीरामचन्द्रो नाडुर्भेदो ज्येथोरस्ति किञ्चित् ।

सन्तो मत्वा तत्त्वमेतद्विचित्रं पारं याताः संसृतेर्मृत्युकालात् ॥ ८४२ ॥

श्रीरामञ्जु एवं श्रीसीताञ्जु तथा श्रीजानकीञ्जु एवं श्रीरामञ्जु इन दोनों में लेशमात्र भी भेद नहीं है दोनों एक परम विचित्र तत्त्व मानकर अनेकों सन्त मृत्युङ्गपी संसार सागर -सागर से पार हो गये ।

राममन्त्रार्थ -

श्रीराममन्त्रार्थ में” (श्रीवैष्णवमताञ्ज भास्कर में)

रकारार्थो रामः सगुणपरमैश्वर्यजलधि-

र्मकारार्थो ज्वस्सकलविधिकैडुर्यनिपुणः ।

तयोर्मध्येऽकारो युगलमथ सम्बन्धमनयो-

रनन्योऽर्थः सिद्धस्मृतिनिगमरूपोऽयमतुलः ॥ ८४३ ॥

श्रीरामनाम के “र” का अर्थ परम श्रेष्ठार्थों के समुद्र सगुण साकार विग्रह भगवान् श्रीराम है । “म” का अर्थ भगवान् के सभी प्रकार के कृत्यों के सम्पादन में परमदक्ष ज्व है “अ” का अर्थ श्रीरामज्ज और ज्व के मध्य शेषशेषिभावादि सम्बन्ध है यही मुख्य एवं समस्त स्मृति एवं वेद का प्रतिपाद्य अतुलनीय अर्थ है ।

जानकीरत्नमाण्डिक्ये -

श्रीजानकीरत्नमाण्डिक्य में -

सीतां विना ये सपि कोटिकल्पसमास्तु रामं जनकात्मजाशु ।

ध्यायन्ति निन्द्याश्रयभागिनस्ते रामप्रसादाद्भिमुखाः भवन्ति ॥ ८४४ ॥

हे सपि ! श्रीजनक पुत्री सीताज्ज के बिना जो कोई केवल रामज्ज के नाम का करोडों कल्पों तक जप ध्यानादि करते हैं वे लोग निन्दा के पात्र हैं स्वप्न में भी श्रीरामज्ज की प्रसन्नता नहीं प्राप्त कर सकते हैं ।

रामस्तु वश्यो भवतीह सीतिप्रोख्यारणाद् ये तु जपन्ति सीताम् ।

भूत्वानुगामी भजते जनांस्तान् ब्रह्मेशशकार्यितराजपुत्रः ॥ ८४५ ॥

श्रीब्रह्मा शङ्कर ष्टन्द्रादि से पूजित राजेन्द्र भगवान् श्रीरामज्ज श्रीसीताज्ज के “सी” के उच्चारण करने मात्र से भक्त के वश में हो जाते हैं और जो लोग सीताराम सीताराम कडते हैं भगवान् राम उन भक्तों के अनुगामी होकर सदासर्वदा उनकी सेवा करते हैं ।

भरद्वाजस्तोत्रे -

भरद्वाजस्तोत्र में -

राम रामेति रामेति वदन्तं विकलं भवान् ।

यमदूतैरनुकान्तं वत्सं गौरिवधावतु ॥ ८४६ ॥

हे रामज्ज ! यमदूतों से आकान्त होने पर विकल होकर राम राम राम शैसा उच्चारण करने वाले भक्त के पीछे आप उसी प्रकार दौड़िये जैसे वत्सला गौ अपने बछडों के पीछे दौड़ती है । अर्थात् मृत्यु के समय श्रीरामनाम का उच्चारण होने पर आप शीघ्र जाकर उस भक्त को निर्भय करें ।

स्वच्छन्द्यारिणं दीनं राम रामेतिवादिनम् ।

तावन्मामनु निम्नेन यथा वारीव धावतु ॥ ८४७ ॥

स्वच्छन्द विचरणा करते हुआ राम नाम का उच्चारण करने वाले मुझ हीन हीन के पीछे आप उसी प्रकार अनुगमन करें जैसे पानी नीचे की ओर जाता है ।

राम त्वं लृद्ये येषां सुभलभ्यं वनेऽपि तैः ।

मएऽं च नवनीतं च क्षीरसर्पिमधूदकम् ॥ ८४८ ॥

हे रामजी ! जिन भक्तों के लृद्य में आप सदासर्वदा विराजमान रहते हैं उन भक्तों को वन में भी तृण, मधुमन्, दूध, घी, मधु एवं जलादि सुभपूर्वक प्राप्त हो जाते हैं ।

सीतापते राम रघूत्तमेति यो नाम्निरज्येद्धुषि तस्य तत्क्षणात् ।

दिशं द्रवन्त्येव युयुत्सवोऽपि भियं दधाना लृद्येषु शत्रवः ॥ ८४९ ॥

जो लोग युद्ध भूमि में हे सीतापते ! हे राम ! हे रघूत्तम ! इस प्रकार भगवान् के नामों का उच्चारण करते हैं, जप करते हैं उन लोगों के शत्रु उसी क्षण लृद्य से भयभीत होकर युद्ध छोड़कर भी दशों दिशाओं में भागते हैं ।

प्रपन्नगीतायां लोमश उवाच -

प्रपन्नगीता में श्रीलोमशजी ने कहा -

रामान्नास्ति परो देवो रामान्नास्ति परं व्रतम् ।

न हि रामात्परो योगो नहि रामात्परो भवः ॥ ८५० ॥

भगवान् श्रीरामचन्द्रजी से बढकर कोई दूसरा देवता नहीं है एवं श्रीरामजी से बढकर कोई व्रत, योग एवं यज्ञ नहीं है ।

तत्रैव पुष्करवाक्यं -

वर्डी पुष्करजी का वाक्य -

ये केसिदुस्तरं प्राप्य रघुनाथं स्मरन्ति हि ।

तेषां दुःखोदधिः शुष्को भवत्यपि न संशयः ॥ ८५१ ॥ ,

जो लोग दुस्तर दुःख की प्राप्ति होने पर श्रीरामजी का स्मरण करते हैं उन लोगों का दुःख समुद्र सूख जाता है इसमें संशय नहीं है ।

ऋतुपर्णा उवाच -

भज श्रीरघुनाथस्त्वं कर्मणा मनसा गिरा ।

नैष्ठापट्येन लोकेषां तोषयस्व मलामते ॥ ८५२ ॥

ऋतुपर्णा ने कहा: हे मलाबुद्धिमान् ! आप निष्कपट भाव से कर्म, मन और वाणी से समस्त लोकों के स्वामी भगवान् श्रीराम का भजन करें । और उन्हें सन्तुष्ट करें ।

विश्वामित्र प्रातः पञ्चके -

श्रीविश्वामित्रकृत प्रातः पञ्चक में -

प्रातर्वदामि वयसा रघुनाथनाम वागदोषहारि सकलं समलं निहन्तु ।

यत्पार्वती स्वपतिना सह भोक्तुकामा प्रीत्या सहस्रहरि नाम समं जजाप ॥ ८५३ ॥

मैं वाणी के दोष को हरने वाले, सम्पूर्ण पापों का स्वभाव से ही नाश करने वाले श्रीरामजी के श्रीरामनाम का अपनी वाणी से प्रातःकाल उच्चारण करता हूँ । जिस अेक श्रीरामनाम को विष्णु सहस्रनाम के तुल्य समझकर अपने पति के साथ भोजन करने की इच्छा से श्रीपार्वतीजी ने प्रीतिपूर्वक जपा था ।

सुयज्ञसंछितायां -

सुयज्ञसंछिता में -

रामनाम कथयामोऽपरमपढाय ।

सीता नाम युतं यत् स्वाद्दुसुप्माय ॥ ८५४ ॥

हम लोग दूसरे नामों को छोडकर श्रीरामनाम का उच्चारण करते हैं श्रीसीतानाम से युक्त रामनाम अर्थात् श्रीसीताराम नाम परम सुस्वादु है । सुभकारी है ।

विरचिसर्वस्वे -

विरचिसर्वस्व में -

श्रीरामनामस्मरतः प्रयाति संसारपारं दुरितौघयुक्त ।

नरस्स सत्यं कलिदोषजन्यं पापं निहन्त्याशु किमत्र चित्रम् ॥ ८५५ ॥

श्रीरामनाम के स्मरण करने से समस्त पापों से युक्त पुरुष भी भवसागर से पार हो जाता है यह सत्य है फिर यह कि कहे कि कलि से जन्य सारे पाप श्रीरामनाम के उच्चारण से शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं तो इसमें आश्चर्य क्या है?

शिवसर्वस्वे -

शिवसर्वस्व में -

यावन्न कीर्तयेद्रामं कलिकल्मषनाशनम् ।

तावत्तिष्ठति देहेऽस्मिन् भयं संसारदायकम् ॥ ८५६ ॥

मनुष्य जब तक कलि के कल्मष के नाशक श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन नहीं करता है तभी तक इस शरीर में संसारदायक भय बना रहता है ।

श्रुतिस्मृतिपुराणेषु रामनाम समीरितम् ।

यन्नामकीर्तनेनैव तापत्रयविनाशनम् ॥ ८५७ ॥

वेदों पुराणों अेवं स्मृतियों में श्रीरामनाम कडा गया है जिस श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से तीनों तापों का नाश हो जाता है ।

सर्वेषामेव पापानां प्रायश्चित्तमिदं स्मृतम् ।

नातः परतरं पुण्यं त्रिषु लोकेषु विद्यते ॥ ८५८ ॥

समस्त पापों का अेकमात्र प्रायश्चित्त श्रीरामनाम सङ्कीर्तन है तीनों लोकों में इससे बढकर कोठ पुण्य नहीं है ।

नामसङ्कीर्तनादेव तारकं ब्रह्म दृश्यते ।

सत्यं वदामि ते देवि नान्यथा वचनं मम ॥ ८५८ ॥

हे देवि ! श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से ही तारक ब्रह्म श्रीरामजी का दर्शन होता है मैं तुमसे सत्य-सत्य कड़ता हूँ मेरा वचन अन्यथा नहीं होगा ।

वैष्णवचिन्तामणौ -

वैष्णवचिन्तामणि में -

कालोऽस्ति दाने यज्ञे वा स्नानेकालोऽस्ति सञ्जये ।

श्रीनामकीर्तने कालो नास्त्यत्र पृथिवीपते ॥ ८६० ॥

हे राजन् ! दान, यज्ञ, स्नान एवं मन्त्रादि के सम्यक् जप में समय की व्यवस्था है पञ्चक, ढोलाष्टक, गुर्वस्त, शुक्रास्त आदि देवना पऽःता है । परन्तु श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन करने में कोई विधि निषेध नहीं देवना है खाहे जहाँ हो जैसे हो सर्वदा कीर्तन कर सकते है ।

राम रामेति यो नित्यं मधुरं गायति क्षणम् ।

स ब्रह्मला सुरापो वा मुच्यते सर्वपातकैः ॥ ८६१ ॥

जो मधुर स्वर में राम राम ऐसा नित्य क्षणभर गान करता है वह ब्राह्मण उत्यारा अथवा शराभी हो तो भी सभी पापों से मुक्त हो जाता है ।

शिवसिद्धान्ते शङ्करवाक्यं -

शिवसिद्धान्त में शङ्करजी का वाक्य -

ब्रह्मघ्नो गुरुतल्पगोऽपि पुरुषः स्तेयीसुरापोऽपिवा-

मातृभ्रातृविडिंसकोऽपिसततं भोगैकबद्धस्पृहः ।

नित्यं राममिमं जपन् रघुपतिं भक्त्या वृद्धिस्थं तथा

ध्यायन् मुक्तिमुपैति किं पुनरसौ स्वाचारयुक्तो नरः ॥ ८६२ ॥

ब्राह्मणघातक, गुरुपत्नीगामी, चोर, शराभी, माता एवं भाई का उत्यारा अथवा निरन्तर ऐकमात्र भोग की इच्छा करने वाला हो वह मनुष्य भी नित्य इस श्रीरामनाम का जप करते अपने वृद्धय में विराजमान श्रीरामजी का भक्तिपूर्वक ध्यान करते दुःखे मुक्ति को पा जाता है फिर वार्ता एवं आश्रम के अनुष्ठान सदाचार का पालन करने वाले मनुष्यों के लिये क्या कड़ना ।

डिमवद् विन्ध्ययोर्मध्ये जना भागवता मताः ।

उच्यारयन्ति श्रीरामनाम प्राणात् प्रियं मम ॥ ८६३ ॥

डिमालय और विन्ध्यायल पर्वतों के मध्य में भगवान् के भक्तजन निवास करते हैं वे लोग मेरे प्राणों से प्रिय श्रीरामनाम का उच्यारण करते रहते हैं ।

रामनामरतानां वै सेवकानां च सेवया ।

मुच्यते सर्वपापेभ्यो मलापातकवानपि ॥ ८६४ ॥

श्रीरामनाम के अनुरागी भक्तों के सेवकों की सेवा करने से मलापापी भी सभी पापों से मुक्त हो जाता है ।

श्रीरामस्य कृपासिन्धोर्नामः प्रोच्यारणं परम् ।

ओष्ठस्पन्दनमात्रेण कीर्तनं तु तपोऽधिकम् ॥ ८६५ ॥

कृपासिन्धु श्रीरामनाम का उच्चारण ही सर्वश्रेष्ठ है और दानों दानों का छिलाना ही कीर्तन है वह तपस्या से भी श्रेष्ठ है ।

भृङ्गैतमीये -

वृष्ट् गौतमी तन्त्र में -

कुष्ठरोगी भवेत्लोकैः बहुधा ब्रह्मण्डा नरः ।

सकृदुच्यरितं नाम शीघ्रं तत् क्षपयत्यधम् ॥ ८६६ ॥

ज्यादातर ब्राह्मण की उल्टा करने वाला मनुष्य कोढ़ी होता है लेकिन एक बार श्रीरामनाम का उच्चारण करने से शीघ्र ही वह पाप धुल जाता है ।

यत्कलं दुर्लभं सर्वसाधनैः कल्पकोटिभिः ।

तत् कलं शीघ्रमाप्नोति रामनामानुकीर्तनात् ॥ ८६७ ॥

दूसरे समस्त साधनों से करोड़ों कल्पों में जो कल दुर्लभ है वह कल शीघ्र ही श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से सज्ज में प्राप्त हो जाता है ।

आश्वलायनतन्त्रे -

आश्वलायन तन्त्र में -

ये कीर्तयन्ति नामानि रामस्य परमात्मनः ।

सर्वधर्मबहिर्भूतास्तेऽपि यान्ति परं पदम् ॥ ८६८ ॥

जो सभी धर्मों से बहिर्भूत होकर भी परमात्मा श्रीराम के नाम का कीर्तन करते हैं वे भी परमपद को प्राप्त कर लेते हैं ।

स्वप्नेऽपि रामनामस्तु स्मरणान् मुक्तिमाप्नुयात् ।

प्रीत्या सङ्कीर्तयेद्यस्तु न जाने किं कलं लभेत् ॥ ८६९ ॥

स्वप्न में भी श्रीरामनाम का स्मरण करने से मुक्ति की प्राप्ति हो जाती है जो लोग प्रीतिपूर्वक श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करते हैं उन्हें क्या कल मिलता है यह मैं नहीं जानता हूँ ।

वैश्वस्यतन्त्रे -

वैश्वस्यतन्त्र में -

पूजयस्व रघूत्तमं सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ।

गुड्याद् गुड्यतमं नाम कीर्तयस्व निरन्तरम् ॥ ८७० ॥

सभी तन्त्रों में अत्यन्त गोपित श्रीरघुश्रेष्ठ रामजी का पूजन करो और अत्यन्त गुह्य श्रीरामनाम का निरन्तर कीर्तन करो ।

त्यक्त्वाऽन्यसाधनान् सर्वान् रामनामपरो भव ।

नातः परतरं यत् सुखं सकलैश्च ॥ ८७१ ॥

दूसरे सभी साधनों को छोड़कर श्रीरामनाम के जप परायण हो जाओ, श्रीरामनाम से बढकर दूसरा कोई प्रयत्न सभी अभीष्टों को देने के लिये सुख नही है ।

मेरुतन्त्रे -

मेरुतन्त्र में -

नाम्नां मुष्यतमं नित्यं रामनामप्रकीर्तितम् ।

नातः परतरं नाम ब्रह्माण्डेऽपि प्रदृश्यते ॥ ८७२ ॥

भगवान् के सभी नामों में श्रीरामनाम मुष्य है सम्पूर्णा ब्रह्माण्ड में भी इससे बढकर कोई दूसरा नाम नहीं है ।

रामनाम्नि सुधाधाम्नि यस्य प्रीतिर्न विद्यते ।

पापिनामग्रगण्यस्स भूमेर्भारो मङ्गतरः ॥ ८७३ ॥

अमृत का निवासभूत श्रीरामनाम में जिसकी प्रीति नहीं है वह सभी पापियों में अग्रगण्य एवं पृथिवी मडान् भार है ।

नारायणतन्त्रे -

नारायणतन्त्र में -

ये गृह्णन्ति निरन्तरं परपदं रामेति वर्णद्वयं

ते वै भागवतोत्तमाः सुभमया पूजयास्तु ते सर्वथा ।

ते निस्तीर्य भवार्णवं सुतकलत्राद्यैस्तु नैर्युतं

तृषणावारि सुदुस्तरं परतरे सायुज्यमायान्ति वै ॥ ८७४ ॥

जो लोग सर्वोद्दिष्ट शब्द "श्रीराम" इन दो वर्णों को नित्य निरन्तर ग्राहण करते हैं अर्थात् उच्चारण करते हैं वास्तव में वे ही श्रेष्ठ भागवत हैं सुभी हैं और सभी लोगों से सदासर्वदा पूज्य हैं वे लोग ही पुत्रपत्नी आदि ग्राहों से परिव्याप्त एवं तृषणाशुपी अथाह जल से दुस्तर भवसागर को निश्चित ही पार करके वैकुण्ठ में सायुज्य मुक्ति को प्राप्त करते हैं ।

यानि धर्माणि कर्माणि मङ्गोत्कृष्टानि वै ।

निष्कलानि च सर्वाणि रामनामरतात्मनाम् ॥ ८७५ ॥

मडान् एवं उग्रहृल देने वाले जितने धर्म एवं कर्म हैं वे सारे धर्म कर्म श्रीरामनामानुरागियों के लिये निष्कल है ।

वामनतन्त्रे -

वामनतन्त्र में -

पृथिव्यां कतिधा लोका जाताश्च कतिनो मृताः ।

मुक्तास्तेऽत्र न सन्देहो रामनामानुकीर्तनात् ॥ ८७६ ॥

इस पृथिवी पर कितने लोग पैदा हुआ और कितने लोग मर गये परन्तु जो श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करते हैं वे लोग ही मुक्त होते हैं इसमें सन्देह नहीं है ।

ब्रह्माण्डे सन्ति यावन्ति मङ्गलाः पुण्यसञ्चयाः ।

रामनाम्नो जपस्यापि कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ ८७७ ॥

इस ब्रह्माण्ड में जितने मङ्गल अथवा पुण्य हैं वे सारे पुण्य समुदाय श्रीरामनाम के जप के सोलहवीं कला के बराबर ही नहीं है ।

वशिष्ठतन्त्रे -

वशिष्ठतन्त्र में -

रामनामपरा ये य रामनामार्थचिन्तकाः ।

तेषां पादरजःस्पर्शात् पावनं भुवनत्रयम् ॥ ८७८ ॥

जो लोग श्रीरामनाम परायण हैं और जो श्रीरामनाम के अर्थ का चिन्तन करते हैं उन भक्तों की चरणधूलि के संस्पर्श से सम्पूर्ण त्रिलोकी पवित्र हो जाती है ।

कृष्णानारायणादीनि नामानि जपतोऽनिशम् ।

सहस्रैर्जन्मभी रामनाम्नि स्नेहो भवत्युत् ॥ ८७९ ॥

भगवान् के कृष्णानारायणादि नामों का दिन रात जप करने पर हजारों जन्मों के बाद श्रीरामनाम में प्रेम होता है ।

राम अवाभिजानाति रामनाम्नः कुलं हृदि ।

प्रवक्तुं नैव शक्नोति ब्रह्मादीनां तु का कथा ॥ ८८० ॥

श्रीरामनाम के जप का इल श्रीरामजी ही अपने हृदय में जानते हैं पर वे भी कह नहीं सकते हैं कि ब्रह्मा शिवादि का क्या कहना ।

श्रीरामरक्षायां -

श्रीरामरक्षास्तोत्र में -

पातालभूतलव्योमयारिणश्छन्नयारिणः ।

न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः ॥ ८८१ ॥

श्रीरामनाम से सर्वथा सुरक्षित भक्तों को, पाताल, भूतल, आकाश में विचरणा करने वाले अथवा कपट में विचरण करने वाले प्राणी भी दृष्टने में समर्थ नहीं हो सकते हैं वे सब श्रीरामनाम से उरते हैं ।

रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन् ।

नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ॥ ८८२ ॥

राम, रामभद्र एवं रामचन्द्र इस प्रकार उच्यारण करते भगवान् का स्मरण करने वाला मनुष्य पापों में विभ्र नही होता है और लौकिक भोग एवं मोक्ष को प्राप्त करता है ।

जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनामैव रक्षितम् ।

यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः ॥ ८८३ ॥

सम्पूर्णा जगत् को जिताने वाला ऐकमात्र महामन्त्र श्रीरामनाम है उससे संयुक्त किसी भी यन्त्र को जो अपने कण्ठ में धारण करता है उसके हाथ में सभी सिद्धिया स्वतः आ विराजती हैं ।

शाश्वततन्त्रे -

शाश्वततन्त्र में -

वाङ्मनोगोचरातीतः सत्यलोकेश ईश्वरः ।

तस्य नामादिकं सर्वं रामनाम्ना प्रकाशते ॥ ८८४ ॥

सत्यलोक के स्वामी भगवान् वाणी और मन से परे हैं उनके सभी नाम श्रीरामनाम से प्रकाशित होते हैं ।

यस्य प्रसादाद्देवेशि मम सामर्थ्यमीदृशम् ।

सङ्हरामि क्षणादेव त्रैलोक्यं सयरायरम् ॥ ८८५ ॥

हे देवेशरि पार्वति ! जिस श्रीरामनाम की कृपा से मुझे ऐसा सामर्थ्य प्राप्त हुआ है कि मैं यर अयर से युक्त सम्पूर्णा त्रिलोकी का क्षण भर में संसार कर सकता हूँ ।

धाता सृजति भूतानि विष्णुर्धारयते जगत् ।

तथा येन्द्राद्यः सर्वे रामनाम्नासमृद्धिमान् ॥ ८८६ ॥

श्रीरामनाम की कृपा से प्राप्त समृद्धि से युक्त डोकर ब्रह्माण्ड भूतों की सृष्टि करते हैं भगवान् विष्णु जगत् का पालन करते हैं एवं इन्द्रादि सब देवता अपना-अपना कार्य करते हैं ।

रुद्रस्यसारे श्रीनारायणवाक्यं मुनीन् प्रति -

रुद्रस्यसार में श्रीनारायण का वाक्य मुनियों के प्रति -

रसनायां विशेषेण जमव्यं नाम सज्जनैः ।

कलौ सङ्कीर्तनं विप्राः सर्वसिद्धान्तसम्मतम् ॥ ८८७ ॥

हे विप्रो ! कलियुग में “सभी सिद्धान्त वालों” को श्रीहरिनाम सङ्कीर्तन अभिमत है, अतः सज्जनों को विशेष रूप से अपनी जिह्वा से श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करना चाहिए ।

प्रेमसङ्कितत्रया वाया ये रमन्ति रटन्ति वै ।

नाम सर्वेश्वराधारं ते कृतार्था मडामुने ॥ ८८८ ॥

सर्वेश्वरों के मूलाधार श्रीरामनाम का जो लोग प्रेम से भीगी बुद्धि वाणी से जप एवं स्मरण करते हैं, वे मडामुने ! वास्तव में वे लोग ही कृतार्थ हैं ।

नामप्रोच्यारणं नित्यं रसनायां प्रशस्यते ।

भक्तानां योगिनां चैव ज्ञानिनां कर्मिणां तथा ॥ ८८९ ॥

भक्तों, योगियों, ज्ञानियों एवं कर्मकाण्डियों के विषये नित्य अपनी जिह्वा से श्रीरामनाम का उच्चारण ही प्रशस्त है ।

यत्र सङ्गृह्यते नाम प्रेमसम्पन्नमानसैः ।

तत्र तत्र परा वाणी नाभिस्था सर्वतः शुभा ॥ ८९० ॥

जहाँ-जहाँ प्रेमयुक्त मन से श्रीरामनाम का गूँज किया जाता है वहाँ-वहाँ सब तरफ से कल्याणकारी नाभि से परावाणी निकलती है ।

रामनाम परम्ब्रह्म सर्वमोटैकमन्दिरम् ।

शुवनं दिव्यनित्यानां परिकराणां महात्मनाम् ॥ ८९१ ॥

भगवान् के दिव्य एवं नित्य परिकरों एवं महात्माओं का सभी प्रकार से आनन्द का अकेला आश्रय परम्ब्रह्म श्रीरामनाम ही शुवन है ।

यस्य रामरसे प्रीतिर्वर्तते भक्तिसंयुता ।

स एव कृतकृत्यश्च सर्वशास्त्रार्थकोविदः ॥ ८९२ ॥

जिसकी श्रीरामनामामृत में भक्ति युक्त प्रीति है वास्तव में वही कृतकृत्य है एवं सभी शास्त्रों का पण्डित है ।

-एति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे प्रमोदनवासे परात्परैश्वर्यदायके

श्रीयुगलानन्यशरणासङ्गृहीते नानारहस्यतन्त्रस्तोत्रवाक्यप्रमाणनिरूपणं नामाष्टमः प्रमोदः ॥ ८ ॥

“अष्टम प्रमोद समाप्त”

अथ नवमः प्रमोदः

श्रीरामायणोक्तवचनानि -

नवम प्रमोद में श्रीरामायणोक्तवचन -

श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण -

रामो रामो राम एति प्रजानां समभूदध्वनिः ।

रामभूतमिदं विश्वं रामे राजयं प्रशासति ॥ ८९३ ॥

भगवान् राम के गद्दी पर बैठकर राज्य का शासन करने पर समस्त प्रजा में राम राम-राम यही दिव्य ध्वनि गूँज उठी एवं सम्पूर्ण विश्व राममय हो गया ।

यश्च रामं न पश्येत्तु यं य रामो न पश्यति ।

निन्दितः सर्वलोकेषु स्वात्माऽप्येनं विगर्हति ॥ ८९४ ॥

जिसने श्रीराम को नहीं देखा एवं श्रीराम ने जिसको नहीं देखा वह सभी लोकों में निन्दित है उसकी आत्मा भी उसकी भर्त्सना करती है ।

क्षणाद्धैनापि यच्छित्तं त्वयि तिष्ठत्ययञ्चलः ।

तस्याज्ञानमनर्थानां मूलं नश्यति तत् क्षणात् ॥ ८८५ ॥

हे रामज ! जिसका स्थिर चित्त आधे क्षण के लिये भी आप में लग गया उसके समस्त अनर्था का मूल अज्ञान उसी क्षण नष्ट हो जाता है ।

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।

आरुढ्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोडिलम् ॥ ८८६ ॥

कवितारुपी शाखा पर आरुढः ङोकर मधुराक्षरों में राम-राम इस प्रकार कूजन करने वाले वाल्मीकिरुपी कोयल की मैं वन्दना करता हूँ ।

सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति य याचते ।

अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाभ्येतद् व्रतं मम ॥ ८८७ ॥

एक बार शरण में आकर प्रभो ! मैं आपका हूँ ऐसी प्रार्थना करने वाले को मैं समस्त प्राणियों से निर्भय कर देता हूँ यद्य मेरा व्रत है ।

कथञ्चिद्गुणकारेण कृतेनैकेन तुष्यति ।

न स्मरत्यपकाराणां शतमप्यात्मवत्तया ॥ ८८८ ॥

किसी भी प्रकार से एक उपकार करने पर भी भगवान् प्रसन्न हो जाते हैं फिर तो हजारों अपकारों को याद नहीं करते हैं क्योकि वे परम आत्मवान् धैर्यवान् अर्थात् धीर गम्भीर हैं । नाम और नामी दोनों को एक मानकर नामी परक श्लोकों को यहाँ दिया गया है ।

ब्रह्मरामायणे श्रीरामवाक्यं श्रीजनकी प्रति -

ब्रह्मरामायण में श्रीरामज का वाक्य श्रीजनकी के प्रति -

ये त्वां स्मरन्ति सद्भक्त्या ते मे प्रियतमाः प्रिये ।

तेषां भाग्योदयं वक्तुं न शक्तोऽहं कदाचन ॥ ८८९ ॥

हे प्राणवल्लभे जनकि ! जो सद्भक्तिपूर्वक तुम्हारा स्मरण करते हैं वे मुझे अत्यन्त प्रिय हैं मैं उनके भाग्योदय को कलने में समर्थ नहीं हूँ ।

क्वचित् त्वां ये स्मरन्त्यन्तर्भम पार्षदतां पराम् ।

कोटिजम्भार्जितैः पुण्यैः दुर्लभामपि यान्ति ते ॥ ९०० ॥

जो भीतर से आपका स्मरण करते हैं वे लोग करोड़ों जन्मों से अर्जित पुण्यों से भी दुर्लभ मेरे उत्कृष्ट पार्षद पद को प्राप्त करते हैं ।

श्रीसीतारामनाम्नस्तु सदैक्यं नास्ति संशयम् ।

एति ज्ञात्वा जपेद्यस्तु स धन्यो भाविनां वरः ॥ ९०१ ॥

श्रीसीतानाम अवेवं श्रीरामनाम दोनोँ में सदासर्वदा अैश्य है अैसा समज कर जो सीताराम-सीताराम जप करता है वही धन्य अवेवं भावुकोँ में श्रेष्ठ है ।

ज्ञानं सीतानाम तुल्यं न किञ्चित् ध्यानं सीतानाम तुल्यं न किञ्चित् ।

भक्तिः सीतानाम तुल्या न काचित् तत्त्वं सीतानाम तुल्यं न किञ्चित् ॥ ९०२ ॥

श्रीसीताञ्च के नाम के समान न कोठ ज्ञान, ध्यान, भक्ति और न कोठ तत्त्व है ।

अेकं शास्त्रं गीयते यत्र सीता कर्माध्येकं पूज्यते यत्र सीता ।

अेका लोके देवता यापि सीता मन्त्रश्रौकोऽप्यस्ति सीतेति नाम ॥ ९०३ ॥

वास्तव में अेकमात्र वही शास्त्र है जहाँ श्रीसीताञ्च का नाम, मछिमा वर्णित है, कर्म भी वही सुकर्म है जिसमें श्रीसीताञ्च की पूजा होती है अेक मात्र श्रीसीताञ्च ही सर्वश्रेष्ठ देवता है और सबसे बडाँ मछामन्त्र श्रीसीताराम नाम है ।

नान्यः पन्था विद्यते यात्मलब्धौ नान्यो भावो विद्यते यापि लोके ।

नान्यद् ज्ञानं विद्यते यापि वेदेष्वं सीतानाममात्रं विधाय ॥ ९०४ ॥

परमात्मा की प्राप्ति के लिये लोक में श्रीसीतानाम को छोडकर न तो कोठ दूसरा मार्ग है, न भाव है और वेदों में न तो कोठ दूसरा ज्ञान है । अर्थात् श्रीञ्च की कृपा के बिना भगवान् की प्राप्ति असम्भव है और श्रीञ्च की कृपा श्रीसीतानामोअ्यारण के बिना असम्भव है ।

सीतेति मङ्गलं नाम सकृच्छ्रुत्वा कृपाकरः ।

श्रीरामो जनकीजानिर्विशेषेण प्रसीदति ॥ ९०५ ॥

परममङ्गलमय श्रीसीतानाम का अेक बार सकृदतिर्न सुनकर कृपा सागर श्रीजनकीनाथरामञ्च विशेष प्रसन्न होते है ।

श्रीसीतानाममाहात्म्यं सुगोप्यं सर्वतः शुभम् ।

रसिका प्रेमसम्मग्ना जानन्ति तदनुग्रहात् ॥ ९०६ ॥

श्रीसीताञ्च के नाम की मछिमा अत्यन्त गोपनीय अवेवं सली तरड से शुभ करने वाला है किन्तु ंस भात को श्रीकिशोरीञ्च की कृपा से प्रेम में सम्मग् मग्ना रसिक लोग ही जानते हैं ।

अध्यात्मरामायणे -

अध्यात्मरामायणे में -

येषु येष्वपि देशेषु रामनाम उपासते ।

दुर्भिक्षदैत्यदोषाश्च न भवन्ति कदायन ॥ ९०७ ॥

जिन-जिन देशों में श्रीरामनाम की उपासना होती है वहाँ-वहाँ अकाल, गरीबी अवेवं आधि व्याधि दोष नहीं होते हैं ।

राम रामेति ये नित्यं पठन्ति मनुजा भुवि ।

तेषां मृत्युभयादीनि न भवन्ति कदाचन ॥ ९०८ ॥

इस पृथिवी में जो लोग नित्य श्रीरामनाम का उच्चारण करते हैं उनको कभी भी मृत्यु आदि का भय नहीं होता है ।

राम रामेति सततं पठनाल्लभते क्लमम् ।

वाया सिद्धयादिकं सर्वं स्वयमेव भवेद्भ्रुवम् ॥ ९०९ ॥

अपनी वाणी से निरन्तर राम राम ऐसा पाठ करने से तुरन्त इल मिलता है और वाक् सिद्धि आदि सब सिद्धियां स्वयं ही निश्चित प्राप्त हो जाती है ।

यन्नाम विवशो गुणान् भ्रियमाण परं पदम् ।

याति साक्षात् त्वमेवासि मुमूर्षो मे पुरःस्थितम् ॥ ९१० ॥

जिनके नाम का भ्रियमाण पुरुष विवश होकर उच्चारण करने पर परमपद को प्राप्त करता है फिर मुझ मरणोच्छु के समक्ष साक्षात् आप प्रकट हैं ऐसा सौभाग्य फिर मिलेगा कि नहीं ।

यस्मिन् रमन्ते मुनयो विद्यया ज्ञानविश्वे ।

तं गुत्र प्राड रामेति रमणाद्राम इत्यपि ॥ ९११ ॥

विद्या के द्वारा अज्ञान के समाप्त हो जाने पर बड़े-बड़े मुनि लोग जिसमें रमण करते हैं उनका नाम गुरु वशिष्ठ ने “राम” रखा, अपने गुण एवं शील के द्वारा सबको आनन्द प्राप्त करते हैं इसलिये उन्हें राम कहते हैं ।

इत्युक्त्वा राम ! ते नाम व्यत्ययाक्षरपूर्वकम् ।

अेकाग्रमनसा यैव मरेति जप सर्वदा ॥ ९१२ ॥

हे रामज्ज ! ऐसा कहकर आपके नाम राम को उलटकर “मरा” ऐसा अेकाग्रचित्त से सदासर्वदा तुम जपो । ऐसा मछात्माओं ने उपदेश दिया ।

त्वन्नामामृतलीनानां भोक्षः स्वप्नेऽपि नो भवेत् ।

तस्माष्टीरामनामस्तु सङ्कीर्तनपरो भव ॥ ९१३ ॥

हे रामज्ज ! आपके श्रीरामनामरूपी अमृत से रहित मनुष्यों को स्वप्न में भी भोक्ष नहीं मिल सकता है इसलिये श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करो । ऐसा मछात्माओं ने उपदेश दिया ।

नाधीतवेदशास्त्रोऽपि न कृताध्वरकर्मकः ।

यो नाम वदते नित्यं तेन सर्वं कृतं भवेत् ॥ ९१४ ॥

जो वेदशास्त्रों को नहीं पढ़ा है अेवं यज्ञानुष्ठानादि कर्म नहीं किया है और जो श्रीरामनाम का सङ्कीर्तन करता है उसने सभी यज्ञादि कर्मों अेवं वेदाध्ययनादि को कर लिया ।

मानसराभायणे -

श्रीमद्रामचरितमानस में -

ब्रह्माभ्योधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं

श्रीमच्छम्भुमुपेन्दुसुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा ।

संसारामयभेषजं सुभकरं श्रीजनकीशुवनं

धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ॥ ८१५ ॥

जो वेदरूपी समुद्र से प्रकट हुआ है, कलि के मल का नाशक है, अविनाशी है, भगवान् शङ्कर के श्रेष्ठ मुषयन्त्र पर सदासर्वदा सुशोभित है, संसाररूपी रोग नाश की मलौषधि है, सुभ प्रदान करने वाला है, और श्रीजनक पुत्री सीताशु का शुवन सर्वस्व है । उस श्रीरामनामरूपी अमृत को जो पुण्यात्मा लोग नित्य निरन्तर पीते हैं वे ही वास्तव में धन्य हैं ।

प्रमोदरामायणे -

प्रमोदरामायणे में -

रामनामांशतो जातास्सुमन्त्राश्चाप्यनन्तकाः ।

अबुधा नैव जानन्ति नाममाहात्म्यमुज्ज्वलम् ॥ ८१६ ॥

श्रीरामनाम के अंश से ही अनन्त सुन्दर सुन्दर मन्त्र उत्पन्न हुआ है, मूर्ख लोग श्रीरामनाम के उज्ज्वल मल्लव को नहीं जान पाते हैं ।

भुशुण्डिरामायणे -

भुशुण्डिरामायणे में -

श्रीरामनामदीमाग्निर्दग्धदूर्जतिकिङ्कितः ।

श्वपयोऽपि बुधैः पूज्यो वेदाढ्योऽपि न नास्तिकः ॥ ८१७ ॥

श्रीरामनामरूपी प्रदीप्त अग्नि में जल गया है कुत्सित जाति जन्य दोष जिसका वड श्वपय भी विद्वान् से पूज्य है और श्रीरामनाम से रक्षित वैदिक ब्राह्मण भी नास्तिक है पूज्य नहीं है ।

वेदशास्त्रशतं वापि तारयन्ति न तं नरम् ।

यस्तु स्वमनसा वाया न करोति जपं परम् ॥ ८१८ ॥

सैकड़ों वेदशास्त्र भी उस मनुष्य का उद्धार नहीं कर सकते हैं जो मन और वाणी से श्रीरामनाम का जप नहीं करता है ।

रामनामविडीनस्य जातिशशास्त्रं जपस्तपः ।

अप्राणस्यैव देहस्य मण्डनन्तु वृथा यथा ॥ ८१९ ॥

श्रीरामनाम से विडीन मनुष्यों के लिये उत्तम जाति, शास्त्र, जप अथवा तप उसी प्रकार व्यर्थ है जिस प्रकार मूर्ख के लिये आभूषण व्यर्थ है ।

ये शृण्वन्ति हि सद्भक्त्या रामनामपरात्परम् ।

तेऽपि यान्ति परं धाम किं पुनर्जपको जनः ॥ ८२० ॥

जो लोग श्रद्धाभक्तिपूर्वक परात्पर श्रीरामनाम का श्रवण करते हैं वे भी परम धाम को प्राप्त करते हैं हिर श्रीरामनाम के जप करने वाले के लिये क्या कलना है ।

द्विजो वा राक्षसो वापि पापी वा धार्मिकोऽपि वा ।

राम रामेति यो वक्ति स मुक्तो भवभन्धनात् ॥ ८२१ ॥

ब्राह्मण हो या राक्षस हो, पापी हो या धर्मात्मा हो जो राम-राम ऐसा कलता है वह संसार यज्ञ से मुक्त हो जाता है ।

यत्र यत्र समुद्धारो दृश्यते श्रूयतेऽथवा ।

रामनाम्नैव नित्यं य तत्र तत्र न संशयः ॥ ८२२ ॥

जहाँ कहीं भी किसी का उद्धार देखा या सुना जाता है वहाँ श्रीरामनाम की कृपा से उद्धार समझना चाहिये इसमें संशय नहीं है ।

द्विवा रात्रौ य ये नित्यं रामनाम जपन्ति हि ।

साक्षात्परिकरा द्विव्या नित्या रसमयाः सदा ॥ ८२३ ॥

दिन में और रात्रि में जो लोग नित्य श्रीरामनाम का जप करते हैं वे लोग सदासर्वदा ठाकुरजी के साक्षात् द्विव्य, नित्य एवं सदासर्वदा रसमय पार्षद हैं ।

क्षणार्द्धमपि यैकान्ते स्थित्वा येषां रतिः परे ।

रामनामात्मके मन्त्रे तेषां जन्मादिकं नहि ॥ ८२४ ॥

एकान्त में स्थित होकर परात्पर श्रीरामनामरूपी महामन्त्र में आधे क्षण के लिये भी जिनकी रति हो जाती है उनका पुनर्जन्म नहीं होता है ।

अहो श्रीभारतं वर्षं धन्यं पुण्यालयं परम् ।

प्राप्य यत्रापि श्रीरामनाम नैव जपन्ति ये ॥ ८२५ ॥

नान्यस्तत् सद्दृशो मूढश्चाण्डालो लोकगर्हितः ।

भ्रमन्ते भवयुक्तेऽस्मिन् सर्वदा तस्य वै मतिः ॥ ८२६ ॥

धन्य, पुण्यालय एवं सर्वश्रेष्ठ श्रीभारतवर्ष को प्राप्त करके भी जो श्रीरामनाम का जप नहीं करते हैं उनके लिये आश्चर्य है । उनसे बढकर दूसरा कोठ न मूर्ख है और न लोक निन्दित चाण्डाल, उनको वह बुद्धि सदासर्वदा भवसागर में घूमती रहेगी ।

असङ्ख्यकोटिलोकानामुपादानं परात्परम् ।

तथैव सर्ववेदानां कारणं नाम उच्यते ॥ ८२७ ॥

अनन्त लोकों का उपादानकारण एवं सभी वेदों का मूल कारण श्रीरामनाम कला जाता है ।

स्वप्ने तथा सम्भ्रमतः प्रमादाद्येज्जृम्भणात् संख्यलनाधिभावात् ।

रामेति नाम स्मरतः सङ्कटैर्नश्यत्यसङ्ख्यद्विजघेनुडत्या ॥ ८२८ ॥

स्वप्न में, भ्रमवश, प्रमादवश, जम्माई लेते समय, गिरते समय अथवा अभावग्रस्त होकर जो एक बार श्रीरामनाम का स्मरण करता है उससे असङ्ख्य ब्राह्मण और गौडत्या जन्य पाप नष्ट हो जाते हैं ।

प्रायो नामावलम्बेन सानुभूता प्रतीयताम् ।

अद्यत्वे तद्विशेषेण नामि प्राप्तिर्हि नामतः ॥ ८२८ ॥

अधिकांश श्रीरामनाम के सङ्घारे से ही भगवान् का अनुभव भक्तों ने किया है- इस पर विश्वास करो, वर्तमान कलियुग में विशेष रूप से भगवान् की प्राप्ति श्रीरामनाम से ही सम्भव है ।

शारदारामायणे -

शारदारामायणे में -

श्रीमतो जनकीजनेर्नाम नित्यं जपन्ति ये ।

ते सर्वैश्चिदशैः पूज्याः वन्दनीयाश्च सर्वदा ॥ ८३० ॥

श्रीमान् जनकीनाथ के नाम श्रीरामनाम का जो नित्य जप करते हैं वे लोग सभी देवताओं से सदासर्वदा पूज्य एवं वन्दनीय हैं ।

यतुर्युगेषु श्रीरामनाममाहात्म्यमुज्ज्वलम् ।

सर्वोत्कृष्टं न सन्देहो कलौ तत्रापि सर्वथा ॥ ८३१ ॥

यारों युगों में श्रीरामनाम का उज्ज्वल माहात्म्य सर्वोत्कृष्ट है उसमें भी वर्तमान कलियुग में विशेष है इसमें सन्देह नहीं है ।

प्रेमरामायणे -

प्रेमरामायणे में -

श्रीरामनामसंस्वापतत्परं पुरुषं भजेत् ।

मुक्तिस्थ्यात् सेवनादेवि ह्यनायासेन सत्वरम् ॥ ८३२ ॥

श्रीरामनाम के कीर्तन परायण सन्तों भक्तों की सेवा करनी चाडिअे डे देवि! श्रीरामानुरागियों की सेवा से शीघ्र ही बिना श्रम के मुक्ति प्राप्त हो जाती है ।

यन्मुખे रामनामास्ति सर्वदा प्रेमतःशिवे ।

दृष्ट्वा तद् वदनं पुण्यं सुगमं शाश्वतं सुभम् ॥ ८३३ ॥

डे पाविर्त ! जिनके मुख में सदासर्वदा प्रेमपूर्वक श्रीरामनाम विद्यमान है उनके मुखमण्डल को देखकर पुण्य, सुगति एवं शाश्वत सुभ मिलता है ।

अहो ह्यभाग्यं जलु पामराणां रामेति नामामृतशून्यमास्थम् ।

जुवन्ति ते देवि ! कथं मनुष्याः पापात्मकाः भूढतमा धियास्ते ॥ ८३४ ॥

आश्चर्य है निश्चित ही उनका दुर्भाग्य है जिन पामर ज़ुवों के मुँह श्रीरामनामरूपी अमृत से शून्य है, देवि पार्वति ! पाप विग्रह अत्यन्त मूढः बुद्धि वाले वे मनुष्य क्यों ज़ुते हैं? श्रीरामनाम से रक्षित ज़ुवन से तो मर जाना ही अच्छा है ।

असङ्ख्यकोटिनामानि नैव साम्यं प्रयान्ति च ।

भधोतराशयो यान्ति रवेः सादृश्यतां कथम् ॥ ८३५ ॥

भगवान् के असङ्ख्य नाम भी એક श्रीरामनाम की तुलना नहीं कर सकते हैं जैसे असङ्ख्य ज़ुगनू सूर्य की समता नहीं कर सकते हैं ।

यत्रास्ति तिमिरं घोरं मलाद्गुणौघसञ्चयम् ।

तन्मार्गो रामनामस्तु प्रभा सन्दृश्यते परम् ॥ ८३६ ॥

जहाँ मलाद्गुण समूह रूपी घोर अन्धकार होता है वहाँ श्रीरामनामरूपी सूर्य की दिव्य प्रभा स्पष्ट दिभायी देती है ।

यस्मिन्देशे न कोऽप्यस्ति जनाः सम्बन्धिनस्तथा ।

तादृशे क्लेशसम्पन्ने नामैको दुःखलारकः ॥ ८३७ ॥

जिस जगह पर अपना कोई सगा सम्बन्धी नहीं होता है वैसे क्लेश से युक्त स्थल पर એકमात्र श्रीरामनाम ही दुःख उरए करने वाला होता है ।

निरालम्बं परं नाम निर्विकल्पं निरीहकम् ।

ये रटन्ति सदा भक्त्या ते कृतार्थाः सुमुक्तिदाः ॥ ८३८ ॥

दूसरे के अवलम्ब से रक्षित विकल्प शून्य एवं येष्टा रक्षित सर्वोत्कृष्ट श्रीरामनाम को सदासर्वदा जो रटते हैं वास्तव में वे ही कृतार्थ हैं और दूसरों को सुन्दर मुक्ति देने वाले हैं ।

वशिष्ठरामायणे -

वशिष्ठरामायणे में -

नानातर्कविवाद्गर्तकुडरे पाताश्रु ये जन्तव-

स्तेषामेकमसंशयं सुशरणां श्रीरामनामात्मकम् ।

मन्त्रं नास्ति यतः परं सुललितं प्रेमास्पदं पावनं

स्वल्पायासङ्कलप्रदानपरमं प्रोत्कर्षसौष्यप्रदम् ॥ ८३९ ॥

अनेक तर्क वाद् विवाद्रूपी भयङ्कर गड्ढे में जो लोग गिर चुके हैं उन लोगों के लिये એकमात्र संशय रक्षित सुन्दर रक्षक श्रीरामनाम है । जिससे बढःकर सुललित, प्रेमास्पद एवं कम परिश्रम में सुन्दर कुल प्रदान करने वाला तथा सर्वोत्कृष्ट सुभ देने वाला दूसरा कोई मन्त्र नहीं है ।

नवद्वाराणि संयम्य ये रमन्ति समादरात् ।

रामनाम्नि परे मन्त्रे धन्या भागवतोत्तमाः ॥ ८४० ॥

इस मानव शरीर के नवद्वारों को संयमित करके जो परममन्त्र श्रीरामनाम में आदरपूर्वक स्मरण करते हैं वे धन्य एवं उत्तम भक्त हैं ।

भगवद्वाक्यं -

भगवद् वाक्य -

यदि वातादिदोषेण मद्भक्तो मां य न स्मरेत् ।

अहं स्मरामि तं भक्तं नयामि परमां गतिम् ॥ ८४१ ॥

यदि कष्टवात एवं पित्त के प्रकोप के कारण कण्ठ के अवरोध होने पर मेरा भक्त मेरा स्मरण नहीं । करता है तो मैं उस भक्त की याद स्वयं करता हूँ परमगति को प्राप्त कराता हूँ ।

मन्नामोव्यारकं साधुं सादरं पूजयन्ति ये ।

तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात् ॥ ८४२ ॥

मेरे नाम का उच्चारण करने वाले साधु का आदरपूर्वक जो पूजन करते हैं उन लोगों का मृत्यु संसार सागर से मैं उद्धार कर देता हूँ ।

ये स्मरन्ति सदा स्नेहान् ममनाम सुधासरः ।

तेऽतिधन्याः प्रियास्माकं सत्यं सत्यं ब्रवीम्यहम् ॥ ८४३ ॥

जो लोग सदासर्वदा स्नेह से अमृत सरोवर स्वरूप मेरे नाम का स्मरण करते हैं वे लोग अत्यन्त धन्य और हमारे प्रिय हैं यही मैं सत्य-सत्य कहता हूँ ।

अेतदेव परं तत्त्वं मत् प्रसादाय निश्चितम् ।

मनसा वयसा नित्यं भजेन् मन्नाम भङ्गलम् ॥ ८४४ ॥

मेरी प्रसन्नता के लिये यही परम तत्व निश्चित किया गया है कि मन और वाणी से नित्य मेरे भङ्गलमय नाम का भजन करें ।

मद्वाक्यमादरेद्यस्तु स मे प्रियतमो नरः ।

तस्यार्थं सर्ववस्तूनि सृजामि वसुधातले ॥ ८४५ ॥

मेरी वाणी का जो आदर करता है वह मनुष्य मुझे अत्यन्त प्रिय है, वास्तव में वैसे भक्तों के लिये ही मैं पृथिवी पर सभी वस्तुओं की रचना करता हूँ ।

मन्नाम संस्मरेद्यस्तु सततं नियतेन्द्रियः ।

तस्मात् प्रियतमः कश्चिन्नास्ति ब्रह्माण्डमाण्डले ॥ ८४६ ॥

जो जितेन्द्रिय होकर मेरे नाम का निरन्तर सम्यक् स्मरण करता है उससे अधिक मेरा अत्यन्त प्रिय कोई दूसरा इस ब्रह्माण्ड में नहीं है ।

आदिरामायणो श्रीभुजवाक्यं नारदं प्रति -

आदि रामायण में श्रीभुज का वाक्य नारदजी के प्रति -

यावन्तो ब्रह्मणो वङ्गान्निर्गता वेदराशयः ।

ते य सर्वेऽप्यधीताः स्युर्नाम्नि नारायणात्मके ॥ ८४७ ॥

ब्रह्मणो के मुभ से जितनी वेद राशि निकली है उन समस्त वेद राशियों को उसने पढ़ः लिया जिसने नारायण नाम का एक बार उच्चारण कर लिया ।

नारायणस्य यावन्ति पुराणेष्वामेषु य ।

दिव्यनाम्नां सडस्राणि कीर्तयन् यत्कलं लभेत् ॥ ८४८ ॥

ततः कोटिगुणं पुण्यं कलं दिव्यं मदात्मकम् ।

लभते सडसा ब्रह्मन् सङ्कृ रामेति कीर्तनात् ॥ ८४९ ॥

समस्त पुराणों अवं आगमशास्त्रों में भगवान् नारायण के जितने नाम हैं उन दिव्य नामों को उचार कर कलने पर जो पुण्य कल प्राप्त होता है, उे नारद ! उससे कोटि गुना ज्यादा दिव्य अवं मत्स्वरूपपात्मक पुण्य कल अथानक एक बार श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से प्राप्त होता है ।

मन्नामकीर्तने लृष्टो नरः पुण्यवतां वरः ।

तस्यापि पादरजसा शुद्ध्यति क्षितिमाण्डलम् ॥ ८५० ॥

उभारे श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन करते सुनते समय जो मनुष्य प्रसन्न होता है जिसका लृद्य गदगद हो जाता है, वह मनुष्य समस्त पुण्यात्माओं में श्रेष्ठ है उनके भी यरण रज से सम्पूर्ण पृथिवी पवित्र हो जाती है ।

तत्रैव स्थानान्तरे -

आदि रामायण में दृसरी जगल -

असङ्घ्यैः पुण्यनिधयैः कोटिजन्मार्जितैरपि ।

पञ्चाङ्गोपासनाभिश्च रामनाम्नि रतिर्भवेत् ॥ ८५१ ॥

अनेक जन्मों से सञ्चित असङ्घ्य पुण्यों अवं भगवान् विष्णु आदि पञ्चदेवों की उपासना के कलस्वरूप ही श्रीरामनाम में रति होती है अन्यथा नहीं ।

यावत्र रामभक्तानां सततं पादसेवनम् ।

रामनाम्नि परे तावत् प्रीतिस्सञ्जायते कथम् ॥ ८५२ ॥

जब तक श्रीरामण के भक्तों के यरणों की सेवा सतत कुछ दिन तक नहीं करेङ्गे तब तक परात्पर श्रीरामनाम में सम्यङ् प्रीति कैसे होगी ।

पापिष्ठा भाग्यहीनाश्च पापकर्मणि तत्पराः ।

रामनाम्नः कथं तेषां मुष्णादुच्चारणं भवेत् ॥ ८५३ ॥

जो लोग अत्यन्त पापी, भाग्यहीन अवं पापकर्म में लगे लुअे हैं उन पापियों के मुभ से श्रीरामनाम का उच्चारण कैसे होगा ।

रकारेणाघसन्नाशो मकारान्मुक्तिरुत्तमा ।

पूर्वो न वश्यतां याति रामो रामेति शब्दितः ॥ ६५४ ॥

राम राम अैसा उख्यारण करने पर श्रीरामनाम के “र” का उख्यारण करने पर पापों का नाश होता है, “म” के उख्यारण करने से उत्तम मुक्ति प्राप्त होती है पूरे “राम” नाम के उख्यारण करने पर श्रीरामजु उस साधक के वश में हो जाते हैं ।

श्रीब्रह्मोवाच -

श्रीब्रह्मजु ने कडा -

अेतद्धनुमता प्रोक्तं रामनामरहस्यकम् ।

श्रुत्वा नलःप्लवङ्गेशस्तथैव छि यकार सः ॥ ६५५ ॥

इस श्रीरामनाम के रहस्य को श्रीहनुमान् जु ने कडा उसे सुनकर कपीश नल ने वैसा किया ।

लिपित्वा दृषदां मध्ये नाम सीतापतेर्मुहुः ।

निचिक्षेप पथोराशौ बभुनुख्यावयान् गिरीन् ॥ ६५६ ॥

नल ने पत्थरों पर श्रीजानकीनाथ के श्रीरामनाम को लिपकर बङ्े-बङ्े पत्थरों को समुद्र में डेड्डा ।

सन्तरन्तिस्म दृषदो रामनामाङ्किता जले ।

तद् दृष्ट्वा वानराः सर्वे बभूवुर्विस्मितास्तदा ॥ ६५७ ॥

श्रीरामनाम से अङ्कित पत्थर समुद्र के जल में तैरते थे उस दृश्य को देखकर उस समय सभी वानर आश्चर्यचकित हो गये ।

इदं सुगोप्यं भवते वदामि प्रसङ्गतः सेतुनिबन्धनेऽस्मिन् ।

न वाच्यमेतद् भवता परस्मै ब्रह्मचोपसन्नाय तु वाच्यमेव ॥ ६५८ ॥

श्रीहनुमान् जु कडते हैं कि श्रीरामनाम का यह रहस्य अत्यन्त गोपनीय है सेतु बन्धन के पुनीत अवसर पर प्रसङ्गवश मैं आपके लिखे कडता हूँ । आप इस रहस्य को डर किसी के समक्ष न प्रकट करें परन्तु भक्तिपूर्वक शरण में आने वाले के लिखे अवश्य कडें ।

रामेतिमन्त्रं कवयो वदन्ति यद् द्रव्यक्षरं नाम रघूद्रहस्या ।

अस्मत् प्रभोरस्य मडामडिभो मनुष्यलिहस्य परस्य पुंसः ॥ ६५९ ॥

मडामडिमाभय मनुष्यरूप परात्परपुरुष डमार स्वामी रघुवन्श भूषण श्रीरामचन्द्र जु के “श्रीराम” इन डोनों अक्षरों को विद्वान् लोग मन्त्र कडते हैं ।

तदेव सम्यग् विविभोरुबुद्धे प्रत्यद्रिपाषाणशिलासु तावत् ।

भवाम्बुधिं येन जनास्तरन्ति डिं तारणं दृष्टरमस्य तोषाम् ॥ ६६० ॥

डे मडान् बुद्धि नल ! उसी श्रीरामनाम को प्रत्येक पाषाण शिलाओं पर सम्यक् लिभो । जिस श्रीरामनाम के माध्यम से मनुष्य भवसागर को पार कर जाते हैं डिर उसी नाम के सडारे पत्थरों के लिखे इस समुद्र पर तैरना डौन दृष्टर कार्य है ।

ग्रावाङ्गोभ्योऽपि जनस्य पापान्यतीव सारेण समाकुलानि ।

लघुक्रियन्ते मनुजा यदेतैर्भृशं विलुप्तैरिड तत्र चित्रम् ॥ ८६१ ॥

हे मनुष्यों ! मनुष्यों के पाषाण से भी ભारी એવં अति विशाल पाप जो જીव को व्याकुल कर देते हैं वे भी श्रीरामनाम के उच्चारण से तृष्ण हो जाते हैं, अतः श्रीरामनाम में कुछ भी आश्चर्य नहीं है ।

नल उवाच -

नल ने कहा -

साधु भो साधु हनुमन् भवान् यदुपदिष्टवान् ।

जपन् सन्तारणं नाम रामस्य करुणानिधिः ॥ ८६२ ॥

हे हनुमान् ! आपने जो उपदेश दिया वह साधु है साधु है, करुणानिधि भगवान् श्रीराम का नाम जप करने वाले को सम्यक् तारने वाला है ।

सत्यमेतत्प्रभुरयं नराकारो नरोत्तमः ।

कोऽस्य स्वरूपं जानीयात्त्वामृते विदुषां वर ॥ ८६३ ॥

हे विद्वद्गुरु ! आपके अलावा श्रीरामजी के स्वरूप को और कौन जान सकता है ? वास्तव में यही सत्य है कि ये नर रूप में पुरुषोत्तम ही हैं ।

भूयस्त्वां परिपृच्छामि कृपाते मयि मारुते ।

क्षमस्व तन् ममात्यन्तं बहुधा मूढैः येतसः ॥ ८६४ ॥

हे पवन पुत्र ! मैं पुनः पुनः आपसे पूछता हूँ क्योडि आपकी कृपा मुझ पर है, विमूढैः चित्त मेरे अपराध को क्षमा करें ।

भवस्याम्भोनिधेश्चापि त्वया पारः प्रदर्शितः ।

विस्तरेण पुनर्ब्रूहि रामनाम्नोऽस्य वैभवम् ॥ ८६५ ॥

आपने भवसागर एवं इस समुद्र के भी पार जाने का मार्ग दिखा दिया है अतः अब आप पुनः विस्तार के साथ श्रीरामनाम के वैभव का वर्णन करें ।

शृण्वन् स्मरन् प्रभोर्नामि माहात्म्यमिदमद्भुतम् ।

न तृप्यमि मरुत्सूनो कथयस्व ततो मम ॥ ८६६ ॥

हे पवनतनय ! परम प्रभु श्रीरामजी के श्रीरामनाम के इस अद्भुत माहात्म्य को सुनकर एवं स्मरण करके मैं तृप्त नहीं हो पा रहा हूँ अतः आप पुनः मेरे लिये कहें ।

श्रीहनुमानुवाच -

श्रीहनुमान् जो बोले -

श्रूयतां सावधानेन रामनामबलं त्वया ।

यच्छ्रुत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः ॥ ८६७ ॥

हे नल ! तुम सावधान होकर श्रीरामनाम के बल को सुनो । जिसके श्रवण करने पर मनुष्य सभी पापों से मुक्त हो जाता है इसमें संशय नहीं है ।

अेकतः सकला मन्त्रा अेकतो ज्ञानकोटयः ।

अेकतो रामनाम स्यात्तदपि स्यान्न वै समम् ॥ ६६८ ॥

सम्पूर्णा मन्त्र, तन्त्र, ज्ञान, ध्यानादि अेक ओर और श्रीरामनाम अेक ओर फिर भी श्रीरामनाम से वे सब सम नहीं है श्रीरामनाम ही सर्वश्रेष्ठ है ।

देशकालक्रियाज्ञानादनपेक्ष्यं स्वरूपतः ।

अनन्तकोटिकूलदं नाममन्त्रं जगत्पते ॥ ६६९ ॥

जगत्पति भगवान् श्रीरामजी के नाम में स्वरूपतः देश, काल, कर्मकाण्ड अेवं ज्ञानादि की अपेक्षा नहीं है उच्यारण मात्र से अनन्त कोटि कुल देने वाला है ।

गङ्गास्नानसहस्रेण यज्ञान्तस्नानकोटिभिः ।

या न सिद्धिर्भवेज्जातु सा रामेतिप्रकीर्तनात् ॥ ६७० ॥

श्रीगङ्गाजी में हजारों बार स्नान करने से अेवं यज्ञान्त में अवलूथ करने से जो सिद्धि नहीं प्राप्त होती है वड सिद्धि श्रीरामनाम के सङ्कीर्तन से प्राप्त हो जाती है ।

अन्यदेव कुलं ज्ञाने श्रवणे वान्यदेव तत् ।

कीर्तने चान्यदेवस्य ह्यन्यदा वर्तते कुलम् ॥ ६७१ ॥

श्रीरामनाम के ज्ञान होने पर दूसरा कुल, श्रवण करने पर दूसरा कुल अेवं श्रीरामनाम के कीर्तन करने पर दूसरा ही कुल प्राप्त होता है ।

ये जानन्ति जनास्तत्त्वं रामनाम्नो मडद् यशः ।

न ते दृष्टतसन्दोर्हैर्विच्यन्ते जन्मकोटिभिः ॥ ६७२ ॥

जो लोग श्रीरामनाम के मडायशस्वी तत्व को जानते हैं वे लोग अनन्त जन्मों तक पाप समूह से विम नहीं होते हैं ।

शिव अेवास्थ जानाति सरडस्यं स्वरूपकम् ।

उपदिश्य सङ्ज्जुवान् यस्तारयति मोडतः ॥ ६७३ ॥

वास्तव में श्रीरामनाम के रडस्य अेवं स्वरूप को भगवान् शङ्कर ही जानते हैं जो जीवों को अेक बार श्रीरामनाम का उपदेश करके मोडरूपी भवसागर से पार करते हैं ।

अन्यदाराधनशतैर्मन्त्रं कुलति नाथवा ।

गुडीतमात्रकुलदं रामनाम स्वरूपतः ॥ ६७४ ॥

दूसरे हजारों आराधनाओं से मन्त्र कुलित होता है डि नहीं, पर श्रीरामनाम के ँरुण मात्र से कुल प्राप्त होता है ।

न शौचनियमाधत्र न सिद्धारिविचारणम् ।

कल्पवृक्षस्वरूपत्वाज्जनां रामनामकम् ॥ ८७५ ॥

श्रीरामनाम के जप करने में शौच नियमादि एवं सिद्धि शत्रु आदि का विचार नहीं होता है क्योंकि साधकों के लिये श्रीरामनाम कल्पवृक्ष है ।

सकृज्जसं धुनोत्याशु पापमाजन्मसम्भवम् ।

द्विरावृत्त्या पुनर्जसं कोटियज्ञकृलप्रदम् ॥ ८७६ ॥

एक बार जप करने पर श्रीरामनाम जन्म से लेकर वर्तमान के सारे पापों को शीघ्र ही नष्ट कर देता है दो बार जप करने पर अनन्त यज्ञों का फल प्राप्त होता है ।

त्रिरावृत्त्या पुनर्जसं स्वरूपस्थं करोत्यमुम् ।

यतुरावृत्तिजमत्वाद्दृणीभवति राघवः ॥ ८७७ ॥

तीन बार जप करने पर साधक को स्व स्वरूप में स्थित कर देता है एवं चार बार जप करने पर रामजी ऋणी हो जाते हैं ।

चिन्तामणिः कल्पतरुः कामधेनुश्च वै नृणाम् ।

अनल्पकृलसन्दोषभवनं रामनाम वै ॥ ८७८ ॥

चिन्तामणि, कल्पवृक्ष एवं कामधेनु मनुष्यों को जितना फल प्रदान करते हैं उनसे भी अत्यधिक फल समूह का भवन श्रीरामनाम है ।

नास्य रूपं विजानन्ति ब्रह्माद्या देवता अपि ।

वाग्बल्ली बीजमेतद्वै रामनाम जगत्पतेः ॥ ८७९ ॥

श्रीरामनाम के यथार्थ स्वरूप को ब्रह्मादि देवता भी नहीं जानते हैं सम्पूर्णा शब्द ब्रह्मरूपलता का मूल बीज जगत्पति श्रीरामजी का नाम है ।

अमृतस्याकरं विद्यादेतदेव मञ्जोर्जितम् ।

सर्वलोकमखामोडतिमिरौघनिवारणम् ॥ ८८० ॥

श्रीरामनाम को ही मडातेजस्वी, अमृत की पान एवं सम्पूर्णा लोक के मखामोडरूपी अन्धकार प्रवाल का निवारक समझना चाड़िये ।

अनन्तकोटिसूर्येन्दुवह्निदीधितिदीप्तिमत् ।

बाह्यान्तरसुसञ्चरं तमोवृन्दनिरासकम् ॥ ८८१ ॥

ज्ञानधारामृतसैरात्मनः स्नपनंस्कृटम् ।

दृत्पद्मभवेन नित्यं दीप्तिद्वीपकोपमम् ॥ ८८२ ॥

सर्व वेदान्तविधानां सारमेतद्गुदीरितम् ।

रामनामाभिलाज्ञानरजनीडरभास्करम् ॥ ८८३ ॥

पुरा कृतयुगे डेचित् जनाः सुकृतिनो नव ।

सरलस्य रामनाम सकृदास्वाधे सद्गुरुम् ॥ ८८४ ॥

भित्वाऽज्ञानतमोराशिं कृत्वा स्वात्मप्रकाशनम् ।

परं ब्रह्मणि संलीनाः सिद्धिं प्राप्ता विना श्रमम् ॥ ८८५ ॥

अनन्त सूर्य यन्द्र अवं अग्नि की किरणों के समान दीप्तिमान् बाहर अवं भीतर के आवरणरूप अन्धकार का नाशक, विज्ञानधारारूप अमृत रसों के द्वारा आत्मा का स्नान कराने वाला, लृध्य कमल रुपी भवन में दीपक जैसे प्रकाश करने वाले, समस्त वेदान्त विद्या का सारसर्वस्व और सम्पूर्ण अज्ञानरुपी रात्रि का डरण करने वाला सूर्य, श्रीरामनाम को कडा गया है । हे नव! बहुत पहले सत्युग में कुछ सुकृती लोग सद्गुरु स्वरूप श्रीरामनाम का ओक बार आस्वादन करके अज्ञानरूप अन्धकार समूल का नाश करके, अपने आत्मस्वरूप का प्रकाश करके बिना परिश्रम के ही परात्पर ब्रह्म श्रीरामजी में संलीन होकर सिद्धि को प्राप्त कर लिये ।

अपरं साधनानील बभूवुः कोटिशो नृणाम् ।

मुनीनां मतभेदेन येष्वायासो मडान् भवेत् ॥ ८८६ ॥

मुनियों के मतभेद से यहाँ मनुष्यों के कल्याणार्थ अनन्त साधन हैं जिनमें परिश्रम बहुत है ।

ध्यानतो रामयन्द्रस्य रामयन्द्रस्य भक्तितः ।

रामयन्द्रस्य यजनान्नाम्ना रामस्य मुच्यते ॥ ८८७ ॥

भगवान् श्रीराम के ध्यान, भक्ति अवं यजन तथा नाम से मनुष्य भवबन्धन से मुक्त हो जाता है ।

रामैव यस्य बहिरन्तर्पापकोटिनिर्वासनैककरणं शरणं जनानाम् ।

कस्तस्य कोशलपुराधिपराजसूनोरन्यावतारनिवहस्तुलने प्रयातु ॥ ८८८ ॥

जिन भगवान् श्रीराम का नाम श्रवमात्र के बाहर भीतर के अनन्त पापों का एकमात्र नाशक अवं साधक लोगों का रक्षक है । उन कोशलेन्द्रनन्दन भगवान् श्रीराम की तुलना अन्य अवतार समूल कैसे कर सकते है ।

यावन्ति नामानि रधूतमस्य तेषामिदं मुष्यतमं प्रदिष्टम् ।

यज्ञज्ञानमात्रेण विमुक्तबन्धः स्वरूपनिष्ठां लभतेऽधमोऽपि ॥ ८८९ ॥

श्रीरघुवंशभूषण भगवान् श्रीराम के जितने नाम हैं उन सबमें यह श्रीरामनाम अत्यन्त मुष्य कडा गया है जिसके ज्ञानमात्र से अधम भी बन्धन मुक्त होकर स्वरूप रूप में निष्ठा को प्राप्त कर लेता है ।

अज्ञानेन्धननिर्दाहो ज्ञानदीपप्रदीपनम् ।

ऐतदेवमतं नाम्नि रामेति द्वयक्षरात्मके ॥ ८९० ॥

अक्षर द्वय स्वरूप श्रीरामनाम में यही मडान् गुण माना गया है कि अज्ञानरुपी काष्ठ का नाश अवं ज्ञानरुपी दीप का प्रकाश ।

जिह्वाग्रे यस्य लिपितं रामेति द्वयक्षर परम् ।

कथं स्पृशन्ति तं दूताः यमस्य क्रोधभीषणा ॥ ८९१ ॥

जिसकी ज़ुब पर “श्रीराम” ऐसा परात्पर अक्षरद्वय लिखा हो उस भक्त का कोष से भयङ्कर दीप्तिने वाले यमदूत कैसे स्पर्श कर सकते हैं ।

रामनामाङ्गिता मुद्रा प्रत्यङ्गं येन वै धृतः ।

आभङ्गं तेन कवयं मोडशत्रुयमूजये ॥ ८८२ ॥

श्रीरामनाम से अङ्कित मुद्रा जो अपने प्रत्येक अङ्ग में धारण करते हैं मानो उन साधकों ने अपने मोडरूपी शत्रु सेना पर विजय पाने के लिये कवय धारण कर लिया हो ।

जाग्रंस्तिष्ठन् स्वपन् क्रीडन् विडरत्राडरन्नपि ।

उन्मिषन् निमिषंश्चैव रामनाम सदा जपेत् ॥ ८८३ ॥

जागते, बैठते, सोते, भेलते, विडार करते, आडार लेते, आँप भोलते अथवा नेत्र बन्द करते समय सदा श्रीरामनाम का जप करना चाहिए ।

पापं कृत्स्नं विधूयाशु मुक्तभारः स मानुषः ।

अनायासेन मोडाभ्यं सिन्धुं तरति द्रुस्तरम् ॥ ८८४ ॥

श्रीरामनाम का जापक वह मनुष्य अपने सम्पूर्ण पापों का शीघ्र ही विनाश करके बिना परिश्रम ही मोडरूपी द्रुस्तर भवसागर को पार कर जाता है ।

प्रारब्धकर्मापि लृप्तिप्रवीणं रामेति नामैव बुधैर्निरुक्तम् ।

यज्ञज्ञानमात्रादधमा किराती मुनीन्द्रवृन्दैरभवन्नमस्या ॥ ८८५ ॥

विद्वानों ने प्रारब्ध कर्म के नाश करने में परम यतुर श्रीरामनाम को ही कडा है । जिसके ज्ञान मात्र से ही अधम किराती भी मुनिश्रेष्ठों से पूज्या अथवा प्रणाम्य हो गयी ।

कस्तेन तुल्यः सुकृती भवेत्स्मिन् कस्तेन तुल्यश्च सदाप्रकाशः ।

कस्तेन तुल्यश्च विशोकमोहो यो नाम रामेति जपेदजस्रम् ॥ ८८६ ॥

जो निरन्तर श्रीरामनाम का जप करता है उसके समान पुण्यात्मा, सदा सर्वदा प्रकाश स्वरूप अथवा शोक मोह से रहित दूसरा कौन है । अर्थात् कोई नहीं ।

अेतन् मया सम्मरिपृच्छयते ते भूयः प्रदिष्टं परमं रडस्यम् ।

दृढावधार्यं स्वयमेव विद्धि वाच्यं भजित्वा सति नो परस्मिन् ॥ ८८७ ॥

तुम्हारे सम्यक् पूछने पर मैंने यह परम रडस्य पुनः कडा है इस दिव्य रडस्य को दृढ्य में धारण करके स्वयं भजन करके अनुभव करो । किसी दूसरे के लिये इसे न कडना, तात्पर्य है कि यदि कोई अपना हो नामानुरागी अथवा अधिकारी हो तो कडना अन्याया नहीं ।

श्रीमन् मडारामायणे श्रीपार्वतीवाक्यं श्रीशङ्करं प्रति -

श्रीमडारामायणे मैं श्रीपार्वतीजो का वाक्य श्रीशङ्कर जो के प्रति -

मुहुर्मुहुस्तवया प्रोक्तं रामनाम परात्परम् ।

तदर्थं ब्रूहि भो स्वामिन् कृत्वा मध्यं दयां लृष्टि ॥ ९९८ ॥

डे स्वामिन् ! आपने परात्पर श्रीरामनाम को बारम्बार कडा डै अब लृष्टय में दयाभाव को भरकर मेरे लिये श्रीरामनाम के अर्थ को कडिअे ।

श्रीशिव उवाच -

श्रीशिवञ्च ने कडा -

त्वमेव जगतां मध्ये धन्या धन्यतरा प्रिये ।

पृष्टं त्वया मलत्तत्वं रामनामार्थमुत्तमम् ॥ ९९९ ॥

डे प्रिये पार्वति ! ँस संसार में वास्तव में तुम्हीं धन्य अेवं धन्यतर डो, डयोड्डि तुमने मलत्त्व स्वरुप उत्तम श्रीरामनाम के विषय में पूछा डै ।

वेदास्सर्वे च शास्त्राणि मुनयो निर्जरर्षभाः ।

नाम्नः प्रभावमत्युग्रं ते न जानन्ति सुग्रते ॥ १००० ॥

डे सुन्दर व्रत करने वाली पार्वति ! सम्पूर्ण वेद, शास्त्र मुनि और श्रेष्ठ देवता, वे सब भी श्रीरामनाम के अत्युग्र प्रभाव को नहीं जानते डै ।

राम अेवाभिजानाति कृत्स्नं नामार्थमद्भुतम् ।

ँषट् वदामि नामार्थं देवि तस्यानुकम्पया ॥ १००१ ॥

डे देवि ! श्रीरामनाम के अद्भुत अर्थ को साकल्येन (सम्पूर्णातया) श्रीरामञ्च डी जानते डै उन्हीं की कृपा से मैं यत्किञ्चित् नामार्थ कड रडा डूँ ।

कोटिकन्दर्पशोभाढ्ये सर्वाभिराणुभूषिते ।

रम्यरुपाण्वि रामे रमन्ते सनकाद्यः ॥ १००२ ॥

अत अेव रमुकीडा रामनाम्नः प्रवर्तते ।

रमन्ते मुनयः सर्वे नित्यं यस्याऽङ्घ्रिपङ्कजे ॥ १००३ ॥

अनेकसम्पिभिः साकं रमते रासमाण्डले ।

अतअेव रमुकीडा रामनाम्ना प्रवर्तते ॥ १००४ ॥

करोऽंो कामदेवो की शोभा से युक्त सभी आभूषणो से सुसज्जित अेवं रमणीय रुपसमुद्र भगवान श्रीसीतारामञ्च में सनकादि मडर्षि रमण करते डै, ँसीलिये रामनाम में रमुकीडायां धातु डै । सभी ऋषि मुनि जिसके यरण कमलो में नित्य रमण करते डै अथवा अपनी अनेक सडयारियो के साथ जो नित्य रासमाण्डल में रमण करते डै उन्हे राम कडते डै । ँसीलिये राम नाम में रमुकीडा धातु की प्रवृत्ति डोती डै ।

ब्रह्मज्ञाननिमग््नो यो जनको योगिनां वरः ।

डित्वा तद्रमते रामे रमुकीडा ततोऽनघे ॥ १००५ ॥

डे निष्पाप पार्वति ! योगियों में श्रेष्ठ, ब्रह्मज्ञान में नित्य निमग्न जो जनकजु हैं वे भी उस ब्रह्मानन्द को छोड़कर श्रीरामजु में ही रमण करते हैं इसीलिये राम शब्द में रमुक्रीडा धातु है ।

आबालतो विरक्तो यो जामदग्न्यो हरिःस्मृतः ।

स अवे रमते रामे रमुक्रीडा ततोऽनघे ॥ १००६ ॥

डे निष्पापे ! जो बाल्यावस्था से ही विरक्त थे और जो “हरि” के अवतार कहे जाते हैं वे जमदग्नि पुत्र परशुरामजु भी श्रीरामजु में रमण करते हैं अतः रमुक्रीडा है ।

सप्तद्वीपाधिपास्सर्वे साधवोऽसाधवोऽपि वा ।

विदेहकुलसम्भूता ये य सर्वे नृपोत्तमाः ॥ १००७ ॥

रामरूपरुता भूत्वा रमितास्तैर्मिजा निजाः ।

दत्तात्मजा रमुक्रीडा रामस्यैव इति श्रुतिः ॥ १००८ ॥

सप्तद्वीपाधीश सभी सज्जन अथवा असज्जन और श्रीजनकजु के वंश में समुत्पन्न श्रेष्ठ राजा जो थे वे सभी राजा लोग श्रीरामजु का दर्शन करके श्रीरामजु के रूप से आकृष्ट होकर अपनी-अपनी कन्याओं को रामजु के यरणों में समर्पित कर दिया अर्थात् विवाह कर दिया इसीलिये वेद रामनाम में रमुक्रीडा धातु बताते हैं ।

चित्रकूटमनुप्राप्य पितुर्वयनगौरवात् ।

रम्यमावसथं कृत्वा रममाणा वने त्रयः ॥ १००९ ॥

श्रीपिताजु के वयन के गौरवार्थ वन यात्रा के समय श्रीचित्रकूट को सम्यक् रूप से प्राप्त कर सुन्दर पार्शुकुटी बनाकर श्रीसीताजु, श्रीलक्ष्मणजु और श्रीरामजु तीनों ने वन में भूषण रमण किया ।

देवगन्धर्वसङ्घाशास्तत्र ते न्यवसन् सुभम् ।

अतोऽस्य रामनाम्नो वै रमुक्रीडा प्रवर्तते ॥ १०१० ॥

देवताओं और गन्धर्वों के समान वे सब वहाँ सुभपूर्वक निवास किये, इसीलिये इस नाम में रमुक्रीडा धातु है ।

राक्षसी घोररुपा या दृष्टत्वं कर्तुमागता ।

साध्यासीद्रमिता रामे पतिवत् काममोहिता ॥ १०११ ॥

जो राक्षसी अवे घोररुपा थी और जो दृष्टता करने आयी थी वह शूपर्णा भी श्रीरामजु को देखकर काम मोहित हो गयी और पति की तरह रामजु में रमण करने लगी ।

यतुर्दशसहस्राश्च राक्षसाः भरदूषणा ।

मोहिता रामसद्रूपे रमुक्रीडात उच्यते ॥ १०१२ ॥

यौदह ब्रह्मरक्षसों के साथ भरदूषण आदि भी श्रीरामजु को देखकर श्रीरामजु के रूप पर मोहित हो गये इसलिये रामनाम में रमुक्रीडा धातु कडा जाता है ।

नाना मुनिगणा सर्वे दण्डकारण्यवासिनः ।

ज्ञानयोगतपोनिष्ठा जापका ध्यानतत्पराः ॥ १०१३ ॥

मुनिवेशाधरं रामं नीलज्जुमूतसन्निभम् ।

रमन्ते योषितीभूता रूपां दृष्ट्वा मलर्षयः ॥ १०१४ ॥

अनेक प्रकार के दण्डकारण्य के ऋषि मलर्षि लोग जो ज्ञानयोग एवं तपोनिष्ठ जापक तथा ध्यान परायण थे । वे मलर्षि लोग भी नील मेघ के समान कान्ति वाले मुनि वेषधारी श्रीरामज्जु को देखकर काम मोहित से होकर अपने में स्त्रीभाव को स्वीकार करके रामज्जु में रमण करने लगे ।

ःषड्भास्ये कृते रामे दृष्ट्वा तेषामिमां गतिम् ।

यूयं धन्यतरा ज्ञानं मत्प्रसन्ने हि साम्प्रतम् ॥ १०१५ ॥

उन मलात्माओं की उस स्थिति को देखकर श्रीरामज्जु थोड़ा मुस्कराये और कडा डे मलर्षियों ! आप लोग अत्यन्त धन्य हैं मेरी प्रसन्नता होने पर ही ऐसा दिव्यज्ञान प्राप्त होता है ।

मन्निदेशात् तपो यूयं यरध्वम्भो मलर्षयः ।

ःष्वितास्ते भविष्यन्ति द्वापरे वर्तते युगे ॥ १०१६ ॥

डे मलर्षियों ! मेरी आज्ञा से आप लोग यहीं इस शृङ्गार भाव से तपस्या करें, द्वापर युग के आने पर आप लोगों के अभीष्ट की सिद्धि होगी ।

अजरामरतनुं त्यक्त्वा रामाल्लब्धं विलोक्य सः ।

राम अवारमद्गाली रमुकीडात उच्यते ॥ १०१७ ॥

श्रीरामज्जु से प्राप्त अजर एवं अमर शरीर को त्यागकर भाली श्रीरामज्जु का दर्शन करके श्रीरामज्जु में ही रमण करने लगा ःसीलिअे रमुकीडा धातु है ।

यतोऽयं रमते रामे सदैव पवनात्मजः ।

दग्ध्वा लङ्गां ततः सीतां वीक्ष्यायातः सुप्तेन सः ॥ १०१८ ॥

श्रीपवनपुत्र श्रीलनुमानज्जु सदासर्वदा श्रीरामज्जु में ही रमण करते हैं ःसीलिअे श्रीसीताज्जु का दर्शन करके और लङ्गा को जलाकर भी सुभपूर्वक लौट आये ।

रमिता रामसद्रूपे राक्षसा रावणाद्यः ।

राम रामाडवेत्युक्त्वा राममेवाभिसङ्गताः ॥ १०१९ ॥

रावणादि राक्षस श्रीरामज्जु के सुन्दर रूप में रमण करते डुअे “राम” “राम” ःसा युद्ध में कडते डुअे श्रीरामज्जु को ही प्राप्त हो गये ।

परधाम्नि गते रामेऽयोध्यायां ये यरायराः ।

रामेऽभिरमिता भूत्वा तत्साकं जम्भुरेव हि ॥ १०२० ॥

रामनाम्नो विशेषेण रमुकीडात उच्यते ।

डेतुरन्धद् रमुकीडां शृणु त्वं सावधानतः ॥ १०२१ ॥

श्रीरामञ्चु डे परात्पर धाम साङ्केत जाते समय अयोध्या में जितने चर अचर प्राणी थे वे सब श्रीरामञ्चु में सम्यक् रमण करते हुअे उन्डीं के साथ साङ्केत थले गये । श्रीरामनाम में विशेष रूप से रमुकीडा कडा जाता है

डे पार्वति ! अब तुम सावधान डोकर दूसरा कारण सुनो ।

वाच्यवाचकरामस्य कथितौ रूपनामनी ।

रामनाम परं ब्रह्म रमिता यच्चराचरे ॥ १०२२ ॥

डे पार्वति ! श्रीरामनाम वाचक अवं श्रीरामञ्चु वाच्य कडे गये हैं श्रीरामनाम परब्रह्मस्वरूप है चर अवं अचर सभी में रमण करता है ।

रमन्ते मुनयो यस्मिन् योगिनश्चोद्ध्वरेतसः ।

अतो देवि रमुकीडा रामनामैव वर्तते ॥ १०२३ ॥

पोषणं भरणार्थं रामनामो जगत्सु च ।

अत एव रमुकीडा परब्रह्माभिधीयते ॥ १०२४ ॥

बऽःे-बऽःे ऒध्वरेता मुनि भी जिंसमें रमण करते हैं डे देवि! ँसीलिये श्रीरामनाम में रमुकीडा धातु है । सम्पूर्णा लोकों में ञुवमात्र का भरण, पोषण अवं आश्रय श्रीसीतारामञ्चु हैं ँसीलिये श्रीरामनाम से रमुकीडा अवं

परब्रह्म कडा जाता है ।

अंशांशै रामनामश्च त्रयः सिद्धा भवन्ति ङि ।

बीजभोङ्कारसोऽङं च सूत्रमुक्तमिति श्रुतिः ॥ १०२५ ॥

श्रीरामनाम डे अंश डे अंशों से ङी तीन की सिद्धि ङोती है सभी मन्त्रों का बीज मन्त्र “रां” , “ओं” अवं सोऽङं ँसको शिवसूत्र पाणिनि व्याकरण से समञ्जना थालिये ।

श्रीपार्वत्युवाच -

श्रीपार्वतीञ्चु ने कडा -

कथमेतद्भिजनामि संसिद्धा रामनामतः ।

बीजभोङ्कारसोऽङं च सूत्रमुक्तमिति श्रुतिः ॥ १०२६ ॥

डे भगवन् ! रां बीज, ओम्, सोऽङं ये तीनों श्रीरामनाम से उत्पन्न ङोते हैं यड मैं डैसे समञ्जं

श्रीशिव उवाच ।

श्रीशिवञ्चु ने कडा -

निश्चलं मानसं कृत्वा सावधानाच्छृणु प्रिये ।

गुड्याद् गुड्यतमं तत्त्वं वक्ष्येऽमृतमयं मुदा ॥ १०२७ ॥

डे प्रिये ! अपने मन को स्थिर करडे सावधान डोकर सुनो, मैं प्रसन्नतापूर्वक गोपनीय से भी अत्यन्त गोप्य अमृतमय तत्व को कडूंगा ।

रामनाम मडाविद्ये! षड्भिरवस्तुभिरावृतम् ।

ब्रह्मजुवमडानादैस्त्रिभिरन्यद्द्रवामि ते ॥ १०२८ ॥

डे मडाविद्यास्वरूपे पार्वति । श्रीरामनाम छः वस्तुओं से आवृत है । ब्रह्म, जुव अवं मडानाए अवं और दूसरे तत्त्वों को तुम्हारे बिअे कडता हूँ ।

स्वरेण विन्दुना यैव दिव्यया माययापि य ।

पृथक्त्वेन विभागेन साम्प्रतं शृणु पार्वति ॥ १०२९ ॥

स्वर, बिन्दु अवं दिव्य माया, डे पार्वति ! अब सभी तत्त्वों को अलग-अलग समजो ।

परब्रह्ममयो रेडो जुवोऽकारश्च मश्च यः ।

रस्याकारो मडानादो राया दीर्घस्वरत्मिका ॥ १०३० ॥

रेडू “रू” पब्रह्मस्वरूप श्रीसीतारामजु है, म का जो “अ” है समस्त जुव है । “र” का जो अ है वड मडानाए है । दस प्रकार डे नादों का कारण है । “रा” में जो “आ” है वड स्वर मात्र का कारण है ।

मकारो व्यञ्जनं बिन्दुर्लुतुः प्रणवमाययोः ।

अर्धभागाद्दुकार स्यादकारान्नादरूपिणः ॥ १०३१ ॥

“मू” बिन्दुस्वरूप है और अँ तथा माया का कारण है । श्रीरामनाम से अँ की निष्पत्ति प्रकार बता रहे हैं । रकार में मडानाएस्वरूप जो “अ” है उसको “उ” आदेश कर दिया ।

रकारगुरुकार तथा वर्णावपर्ययः ।

मकारव्यञ्जनं यैव प्रणवं याभिधीयते ॥ १०३२ ॥

“र” “आ” में वर्ण विपर्यय कर दिया तो “आ” “उ” “मू” दुआ सन्धिकार्य अँ सिद्ध हो गया ।

मस्यासवर्णितं मत्वा प्रणवे नादरूपधृक् ।

अन्तर्भूतो भवेद्देहः प्रणवे सिद्धिरुपिणी ॥ १०३३ ॥

“म” डे अकार को वर्ण विपर्यय करके रू आ अ ं होने पर “आ अ” में सवर्ण दीर्घ हो गया “ओं” में “म” का “अ” नादरूप है । अवं रू को “उ” हो गया वड अँ में अन्तर्भूत है ।

रामनामः समुत्पन्नः प्रणवो मोक्षदायकः ।

रुपं तत्त्वमसेश्चासौ वेदतत्त्वाधिकारिणः ॥ १०३४ ॥

श्रीरामनाम से समुत्पन्न “ओं” मोक्ष प्रदाता है अवं “तत्त्वमसि” इत्यादि मडावाक्य भी श्रीरामनाम से ही उत्पन्न होते हैं । तात्पर्य यड है कि जब सम्पूर्णा वाज्मय श्रीरामनाम से उत्पन्न दुअे हैं तब “ओं” अवं तत्त्वमसि आदि मडावाक्य भी श्रीरामनाम से ही उत्पन्न होना याडिअे । अतः श्रीरामनाम से “ओं” की निष्पत्ति प्रडिया दिभाया - “र अ अ ं अ” यड वर्ण विखेड है इसका विपर्यय-अ अ रू अं यड वर्ण विपर्यय है । यडां “अतोरोरप्नुतादप्नुते” (६।१।११३) सूत्र से “रू” को “उ” हो गया अ अ उ अं हिर अ अ में सवर्ण दीर्घ आ

ॐ अं लुआ हिर “आद् गुण” सूत्र गुण लो गया ओ अं लुआ, हिर “अः पदान्तादति” सूत्र से पूर्वरूप लुआ
ॐ सिद्ध लो गया ।

अकारः प्रणवे सत्त्वमुकारश्च रजोगुणः ।

तमोऽलमकारस्स्यात् त्रयोऽलङ्कारमुद्भवः ॥ १०३५ ॥

प्रणव ॐ में “अ” सन्तोऽगुण, “ॐ” रजोगुण और “म्” तमोगुण है इन तीनों वर्गों में क्रमशः सात्विक, राजस
अवे तामस अलङ्कार की उत्पत्ति होती है ।

यरायरसमुत्पन्नो गुणत्रयविभागतः ।

अतः प्रिये रमुक्तीडा रामनामैव वर्तते ॥ १०३६ ॥

अवे तीनों गुणों से युक्त यरायर भी उत्पन्न हुआ है हे प्रिये! इसीलिये रामनाम में रमुक्तीडायां धातु है ।

यथा य प्रणवो ज्ञेयो श्रीं तद्वर्णं सम्भवम् ।

स शब्देन लकारेण सोऽलमुक्तं तथैव य ॥ १०३७ ॥

जैसे श्रीरामनाम से ॐ की निष्पत्ति हुई उसी प्रकार बीजमन्त्र “रं” की भी निष्पत्ति समझनी चाहिये । अर्थात्
र अ अं अ यलं ं के उत्तरवर्ती “अ” का लोप कर दिया तो “रं” यल बीज बन गया । अवे सोऽल की निष्पत्ति
भी समझनी चाहिये यथा र अ अं अ यलं वर्णविपर्यय किया अ अ र अं लुआ, “अतोऽप्लुतादप्लुते”
सूत्र से र को लुआ, “अः सवर्णो दीर्घः” सूत्र से दीर्घ लुआ, आद् गुण से “अः पदान्तादति” से पूर्वरूप लुआ
ॐ लुआ यलं ओ को सुट् आगम अवे ं को अलत् आगम लुआ टित् लोने से आधवयव लुआ स् ओ अलं वर्ण
सम्भवन सो अलं हिर “अः पदान्तादति” से पूर्वरूप सोऽलं सिद्ध लो गया ।

धत्याद्यो मलामन्त्रा वर्तन्ते सप्त कोटयः ।

आत्मा तेषां य सर्वेषां रामनाम्ना प्रकाशते ॥ १०३८ ॥

ॐ बीजमन्त्र सोऽलं धत्यादि सात करोऽः मलामन्त्र हैं उन सभी मन्त्रों की आत्मा श्रीरामनाम से प्रकाशित होती
है ।

अतः प्रिये रमुक्तीडा तेषामर्थे प्रवर्तते ।

सनकाद्या हृणीशाद्या रामनाम भजन्त्यतः ॥ १०३९ ॥

हे प्रिये ! उन्हीं के अर्थों में रमुक्तीडा की प्रवृत्ति है इसलिये सनकादि अवे शोषादि श्रीरामनाम का भजन करते हैं ।

रामनामगुणैश्चर्यं सङ्क्षेपेण प्रभाषितम् ।

रूपमेव प्रतापं य रामनाम्नो वदामि ते ॥ १०४० ॥

हे पार्वति ! श्रीरामनाम के गुण और अर्थ का सङ्क्षेप से वर्णन किया अब तुम्हारे लिये श्रीरामनाम का स्वरूप
अवे प्रताप कल रला हूँ ।

शृणुष्व परमं गुह्यं यत्र जानन्ति केऽपि य ।

केऽपि केऽपि विजानन्ति रामानुकोशयैव य ॥ १०४१ ॥

પાર્વતિ ! જિસકો કોઈ ભી નહીં જાનતા હૈ ઔર શ્રીરામજી કી કૃપા સે કોઈ-કોઈ જાનતે હૈં ઉસ પરમ ગુહ્ય રહસ્ય કો તુમ સુનો ।

તેજોરૂપમયો રેકુઃ શ્રીરામામ્બકકઞ્જયો ।

કોટિસૂર્યપ્રતીકાશઃ પરં બ્રહ્મ સ ઉચ્યતે ॥ ૧૦૪૨ ॥

શ્રીરામનામ કે પરમતેજઃસ્વરૂપ રેકુ ભગવાન્ શ્રીરામ કે યુગલનયન કમલ કા વાચક હૈ કરોડ઼ોં સૂર્યો કી કાન્તિ સે યુક્ત હૈ વહી પરબ્રહ્મ કહા જાતા હૈ ।

સોડપિ સર્વેષુ ભૂતેષુ સહસ્રારે પ્રતિષ્ઠિતઃ ।

સર્વસાક્ષી જગદ્વ્યાપી નિત્યં ધ્યાયન્તિ યોગિનઃ ॥ ૧૦૪૩ ॥

વહ ભી સમસ્ત પ્રાણિયોં કે સહસ્રાર મેં સ્થિત હૈ જો સબકા સાક્ષી એવં જગદ્ મેં વ્યાપ્ત હૈ યોગી લોગ જિસકા નિત્ય ધ્યાન કરતે હૈં ।

રામસ્ય મણ્ડલસ્યૈવ તેજોરૂપં વરાનને ।

કોટિકન્દર્પશોભાઢ્યો રેકુકારો હિ વિદ્ધિ ચ ॥ ૧૦૪૪ ॥

હે સુમુખિ ! શ્રીરામનામ કા રેકુ કે ઠીક ઉત્તર “અ” હૈ વહ ભગવાન્ શ્રીરામ કે પરમ તેજોમય કરોડ઼ોં કામદેવોં કી શોભા સે યુક્ત મુખમણ્ડલ કા બોધક હૈ, ઐસા સમજો ।

અકારસ્સોડપિ રૂપશ્ચ વાસુદેવસ્સ કથ્યતે ।

મધ્યાકારો મહારૂપઃ શ્રીરામસ્યેવ વક્ષસઃ ॥ ૧૦૪૫ ॥

સોડયાકારો મહાવિષ્ણોર્બલવીર્યસ્વરૂપકઃ ।

સર્વેષામેવ ભૂતાનામાધારસ્ત્વં ચ વિદ્ધિ સઃ ॥ ૧૦૪૬ ॥

ઔર વહી “અ” ભગવાન્ વાસુદેવ કા ભી વાચક હૈ । શ્રીરામનામ કા જો મધ્યમ અકાર હૈ વહ મહાપરાક્રમ પુઞ્જ શ્રીરામજી કે વક્ષસ્થલ કા બોધક હૈ, બલ એવં વીર્યસ્વરૂપ મહાવિષ્ણુ કા ભી વહ બોધક હૈ એવં સમસ્ત ભૂતોં કા આધાર ઉસે જાનો ।

અસ્યાકારો ભવેદ્ રૂપ શ્રીરામકટિજાનુની ।

સોડયાકારો મહાશમ્ભુરુચ્યતે યો જગદ્ગુરુઃ ॥ ૧૦૪૭ ॥

શ્રીરામનામ કે ં કે ઉત્તરવર્તી જો “અ” હૈ વહ શ્રીરામજી કે કટિ ઔર જ્ઘા કા વાચક હૈ ઔર જગદ્ગુરુ મહાશમ્ભુ કા ભી બોધક હૈ ।

ઇચ્છાભૂતં ચ રામસ્ય મકારં વ્યઞ્જનં ચ યત્ ।

સા મૂલપ્રકૃતિર્જ્યા મહામાયાસ્વરૂપિણી ॥ ૧૦૪૮ ॥

ભાષિતેયં રમુક્રીડા ગુહ્યાદ્ ગુહ્યતરા પરા ।

અન્યમ્પ્રકરણં વક્ષ્યે ત્વત્તોડહં ચારુલોચને ॥ ૧૦૪૯ ॥

श्रीरामनाम का जो “म” है वह मडा आश्चर्यभूता भगवान् की ँच्छा है वडी मूल प्रकृति अेवं मडामाया है । डे सुलोचने ! यह रमुडीडा जो अत्यन्त गुड्य थी मैने तुम्हें कडकर सुनाया अब दूसरे प्रकरण को तुमसे कडूंगा ।

नारायणो रकारः स्यादकारो निर्गुणात्मकः ।

मकारो भक्तिरेव स्याद् मडाह्लादाभिधायिनी ॥ १०५० ॥

श्रीरामनाम का “र” भगवान् नारायण, “अ” निर्गुण स्वरूप अेवं “म” मडा आह्लाद करने वाली साक्षात् भक्ति है ।

विज्ञानस्थो रकारः स्यादाकारो ज्ञानरूपकः ।

मकारः परमा भक्ती रमुडीडोच्यते ततः ॥ १०५१ ॥

श्रीरामनाम का “र” विज्ञान, “आ” ज्ञान अेवं “म” भक्ति है । ँसलिये राम शब्द में रमुडीडा धातु ँपयुक्त है ।

शिद्धायको रकारः स्यात् सद्वाय्याकार उच्यते ।

मकारानन्दं वाच्यं सखिदानन्दमव्ययम् ॥ १०५२ ॥

“र” शिद् “आ” सद् अेवं “म” आनन्द का वाचक है अतः श्रीरामनाम अविनाशी सखिदानन्दस्वरूप है ।

रकारस्तत्पदो ज्ञेयस्त्वं पदोऽकार उच्यते ।

मकारोऽसि पदं सोमं तत्त्वमसि सुलोचने ॥ १०५३ ॥

डे सुन्दर नेत्रों वाली पार्वति ! श्रीरामनाम का “र” तत् का, “आ” त्वं का अेवं “म” असि का वाचक है अर्थात् तत्त्वमसि अेवं श्रीरामनाम दोनों अेकार्यवाचक हैं ।

ब्रह्मेति तत्पदं विद्धि त्वं पदो ज्वनिर्मलः ।

ँश्वरोऽसि पदं प्रोक्तं ततो माया प्रवर्तते ॥ १०५४ ॥

“तत्त्वमसि” पद में तत् पद ब्रह्म, त्वं पद निर्मल ज्व अेवं असि पद ँश्वर का वाचक है, जिसकी ँच्छा डी माया है ।

वेदसारमडावाक्यं यत्तत्त्वमसि कथ्यते ।

रामनाम्नश्च तत् सर्वा रमुडीडा प्रवर्तते ॥ १०५५ ॥

समस्त वेदों का सार जो “तत्त्वमसि” आदि मडावाक्य कडे जाते हैं वे सब श्रीरामनाम से सिद्ध डोते हैं ँसलिये रमुडीडा कडा जाता है ।

अन्यं प्रकरणं त्वत्तो भक्त्या शृणु वदाम्यहम् ।

सङ्क्षेपेणैव यद् भेदं क्षराक्षरनिरक्षरै ॥ १०५६ ॥

डे पार्वति ! दूसरे प्रकरणों को क्षर अक्षर और निरक्षर डे द्वारा तुम्हारे लिये सङ्क्षेप से मैं कडता डूँ सुनो ।

व्यञ्जनाय्य क्षरोत्पत्तिरकाराद् ब्रह्म याक्षर ।

रेकान्निरक्षरो ब्रह्म सर्वव्यापी निरञ्जनः ॥ १०५७ ॥

श्रीरामनाम के “म” से यथाथर संसार रूप क्षर उत्पन्न हुआ है “अ” से अक्षर ब्रह्म अर्थात् रेक से निरञ्जन अर्थात् सर्वव्यापी ब्रह्म प्रकट हुआ है ।

क्षरोऽभिधीयते माया ब्रह्मात्मानस्तु याक्षरः ।

परमात्मा परब्रह्म निरक्षर इति स्मृतः ॥ १०५८ ॥

माया को ही क्षर, ब्रह्म और आत्मा को अक्षर तथा परब्रह्म परमात्मा को निरक्षर कहते हैं ।

सकल व्यापिनस्त्रेधा क्षराक्षरनिरक्षराः ।

रामनामरमुक्तीडा प्रवीणोऽतः समुच्यते ॥ १०५९ ॥

क्षर, अक्षर अर्थात् निरक्षर ये तीनों सब में व्याप्त हैं । हे परम यतुर पार्वति ! अर्थात् सब में रमण करते हैं इसीलिये रमुक्तीऽा कला जाता है ।

रामनामगुणं त्वत्तो सङ्क्षेपेण प्रभाषितम् ।

रामनामप्रतापं य साम्प्रतं सूक्ष्मतः शृणु ॥ १०६० ॥

मैत्रे श्रीरामनाम के गुणों को तुमसे कला और अब श्रीरामनाम के प्रताप को संक्षेप में सुनो ।

रकारोऽनलबीजं स्याद् ये सर्वे वाऽवाद्यः ।

कृत्वा मनोमलं सर्वं भस्म कर्म शुभाशुभम् ॥ १०६१ ॥

श्रीरामनाम का “र” अग्निबीज है अऽवानल आदि समस्त अग्नि का कारण है औसा समझकर जो रामनाम का जप करता है उसके समस्त शुभाशुभ अर्थात् मन के मैल भस्म हो जाते हैं ।

अकारो भानुबीजं स्याद् वेदशास्त्रप्रकाशकः ।

नाशयत्येव सदीप्त्या या विद्यते हृदये तमः ॥ १०६२ ॥

श्रीरामनाम का “अ” सूर्य का बीज अर्थात् वेदशास्त्रों का प्रकाशक है तथा अपनी सुन्दर कान्ति से हृदय में विद्यमान अनादि अज्ञानान्धकार को नाश करता है ।

मकारश्चन्द्र बीजं य पीयूषपरिपूर्णाकम् ।

जितापं हरते नित्यं शीतलत्वं करोति य ॥ १०६३ ॥

श्रीराम नाम का “म” यन्द्रबीज तथा अमृत से परिपूर्ण है । दैहिक, दैविक तथा भौतिक तीनों तापों का नाश करता है और शीतलता प्रदान करता है

रकारोऽहेतुर्वैराग्यं परमं यच्च कथ्यते ।

अकारो ज्ञानहेतुश्च मकारो भक्तिहेतुकः ॥ १०६४ ॥

रकार परम वैराग्य का हेतु, अकार ज्ञान का हेतु और मकार भक्ति का हेतु है ।

अतो देवि ! रमुक्तीडा रामनामः समुच्यते ।

सम्यक् शृणु प्रवीणो! त्वं हेतुरन्यद् वदामि ते ॥ १०६५ ॥

डे परम यतुर देवि ! रामनाम में रमुकीडा कडा जाता है दूसरे कारणों को अच्छी तरह सुनो, तेरे लिखे मैं कडता हूँ ।

वेदे व्याकरणे येव ये य वार्णाः स्वरा स्मृताः ।

रामनाम्नैव ते सर्वे जाता नैवात्र संशयः ॥ १०६६ ॥

वेदों में अेवं व्याकरण में जितने वर्ण और स्वर कडे गये हैं वे सब श्रीरामनाम से ही उत्पन्न हुअे हैं ँसमें सन्देह नहीं है ।

रकारो मूर्ध्नि सञ्चारस्त्रिकुट्याकार उच्यते ।

मकारोऽधरयोर्मध्ये लोमे लोमे प्रतिष्ठितः ॥ १०६७ ॥

“र” का उच्यारण स्थान मूर्धा, “अ” का त्रिकुटी (कण्ठ) अेवं “म” का दोनों ओष्ठ तथा रोम रोम में श्रीरामनाम का स्थान है ।

रकारो योगिनां ध्येयो गच्छन्ति परमं पदम् ।

अकारो ज्ञानिनां ध्येयस्ते सर्वे भोक्षुपिणः ॥ १०६८ ॥

रकार योगियों का ध्येय है रकार के द्वारा योगी लोग परमपद को प्राप्त करते हैं । अकार ज्ञानियों का ध्येय है ँसका ध्यान करने पर ज्ञानी भोक्षस्वरुप हो जाते हैं ।

पूर्णा नाम मुदा दासा ध्यायन्त्ययलमानसाः ।

प्राप्नुवन्ति परां भक्तिं श्रीरामस्य समीपकम् ॥ १०६९ ॥

स्थिर मन से दासजन प्रसन्नतापूर्वक पूर्ण श्रीरामनाम का जप अेवं ध्यान करते हैं जिसके फलस्वरुप दासों को भगवान् की पराभक्ति अेवं श्रीराम का सामीप्य प्राप्त होता है ।

अन्तर्जपन्ति ये नाम श्रुवन्मुक्ता भवन्ति ते ।

तेषां न जायते भक्तिर्न य रामसमीपकाः ॥ १०७० ॥

जो साधक भीतर ही भीतर श्रीरामनाम का जप करते हैं वे श्रुते श्रु मुक्त हो जाते हैं उन्हेँ भक्ति अेवं श्रीराम सामीप्य की प्राप्ति नहीं होती है ।

जिह्वाऽप्यन्तरेणैव रामनाम जपन्ति ये ।

ते य प्रेमपरा भक्ता नित्यं रामसमीपकाः ॥ १०७१ ॥

जो साधक आग्रह शून्य होकर भीतर से अेवं बाह्य जिह्वा से दोनों से श्रीरामनाम का जप करते हैं उन्हेँ प्रेमलक्षणा पराभक्ति अेवं नित्य श्रीराम सामीप्य प्राप्त होता है

योगिनो ज्ञानिनो भक्ताः सुकर्मनिरताश्च ये ।

रामनाम्नि रतास्सर्वे रमुकीडात अेव वै ॥ १०७२ ॥

योगी, ज्ञानी, भक्त अेवं सुकर्मपरायण जो लोग हैं वे सभी लोग श्रीराम नाम में लगे हुअे हैं ँसलिखे रामनाम में रमुकीडा कडा जाता है ।

शृणुष्व मुष्यनामानि वक्ष्ये भगवतः प्रिये ।

विष्णुनारायणः कृष्णो वासुदेवो हरिः स्मृतः ॥ १०७३ ॥

ब्रह्म विश्वम्भरोऽनन्तो विश्वरूपः कला निधिः ।

कल्मषघ्नो दयामूर्तिः सर्वगः सर्वसेवितः ॥ १०७४ ॥

हे प्रिय पार्वति ! भगवान् के मुख्य नामों को मैं कहता हूँ उसे सुनो - श्रीविष्णु, श्रीनारायण, श्रीवासुदेव, श्रीहरि, ब्रह्म, विश्वम्भर, अनन्त, विश्वरूप, कलानिधि, कल्मषघ्न, दयामूर्ति, सर्वग और सर्वसेवित ।

परमेश्वरनामानि सन्त्यनेकानि पार्वति ।

परन्तु रामनामेदं सर्वेषामुत्तमोत्तमम् ॥ १०७५ ॥

हे पार्वति ! भगवान् के अनेकों नाम हैं परन्तु सभी नामों से अत्यन्त उत्तम श्रीरामनाम है ।

गडाणां य यथा भानुर्नक्षत्राणां यथा शशी ।

निर्जराणां यथा शङ्को नराणां भूपतिर्यथा ॥ १०७६ ॥

यथा लोकेषु गोलोकः सरयू निम्नगासु य ।

कवीनां य यथाऽनन्तो भक्तानामञ्जनीसुतः ॥ १०७७ ॥

शक्तीनां य यथा सीता रामो भगवतामपि ।

भूधराणां यथा मेरुः सरसां सागरो यथा ॥ १०७८ ॥

कामधेनुर्गवां मध्ये धन्वीनां मन्मथो यथा ।

पक्षिणां वैनतेयश्च तीर्थानां पुष्करो यथा ॥ १०७९ ॥

अहिंसा सर्वधर्माणां साधुत्वेऽपि दया यथा ।

मेदिनी क्षमिणां मध्ये मणीनां कौस्तुभो यथा ॥ १०८० ॥

धनुषां य यथा शार्ङ्गः ऋद्गानां नन्दको यथा ।

ज्ञानानां ब्रह्म ज्ञानं य भक्तीनां प्रेमलक्षणा ॥ १०८१ ॥

प्राणवः सर्वमन्त्राणां रुद्राणामहमेव य ।

कल्पद्रुमश्च वृक्षाणां यथाऽयोध्या पुरीषु य ॥ १०८२ ॥

कर्मणां भगवत्कर्म अकारश्च स्वरेष्वपि ।

किमत्र बहुनोक्तेन सम्यग् भगवतः प्रिये ॥ १०८३ ॥

नाम्नां तथा य सर्वेषां रामनाम परं महत् ॥

पार्वत्युवाच -

नाम्नामेव य सर्वेषां रामनाम परं महत् ॥ १०८४ ॥

एदं त्वया कथं प्रोक्तं येतदर्थं वद प्रभो ।

त्वमेव सर्वं जानासि रामनाम सुवैभवम् ॥ १०८५ ॥

ग्रहों में जैसे सूर्य, नक्षत्रों में जैसे चन्द्रमा, देवताओं में जैसे इन्द्र, मनुष्यों में राजा, लोकों में जैसे गोलोक, नदियों में जैसे सरयू, कवियों में जैसे शेषशु, भक्तों में जैसे अनुमान शु, शक्तियों में जैसे सीता, समस्त भगवद् अवतारों में जैसे रामशु, पर्वतों में जैसे सुमेरु, सरों में जैसे समुद्र, गायों में जैसे कामधेनु, धनुधारियों में जैसे कामदेव, पक्षियों में जैसे गरुडःशु, तीर्थों में पुष्करशु, सभी धर्मों में अहिंसा, साधुता में जैसे दया, क्षमावानों में जैसे पृथिवी, मणियों में जैसे कौस्तुभ मणि, धनुषों में जैसे शाङ्ग धनुष, षड्गों में जैसे नन्दक, ज्ञानों में जैसे ब्रह्मज्ञान, भक्तियों में प्रेमलक्षणभक्ति, सभी मन्त्रों में ओम्, अकारश रुद्रों में जैसे मै, वृक्षों में जैसे कल्पवृक्ष, पुरियों में जैसे अयोध्याशु, कर्मों में भगवत्कर्म, और जैसे स्वरो में “अ” श्रेष्ठ है । हे प्रिये ! यहाँ अधिक कलने से क्या लाभ? जिस प्रकार उपर्युक्त श्रेष्ठ है उसी प्रकार समस्त भगवन्नामों में श्रीरामनाम श्रेष्ठ है । परात्पर है मडान् है ।

श्रीपार्वती शु ने कडा -

हे प्रभो ! समस्त नामों में श्रीरामनाम परात्पर एवं मडान् है यड आपने कैसे कडा? ँसडे अर्थ को कडिअे डयोडुडि श्रीरामनाम के वैभव को वास्तव में आप डी जनते हैं ।

श्रीशिव उवाच -

श्रीशिवशु कडा -

नाम्नामर्थमडं देवि सङ्क्षेपेण वडामि ते ।

नाम्नां भगवतोऽनेका गुणार्थाः कोटिकोटयः ॥ १०८६ ॥

डे देवि ! भगवान् के नामों के अर्थों को सङ्क्षेप से कड रडा डूं । भगवान् के नामों में कोटि कोटि गुण और अर्थ हैं ।

अप्सु नारे गुडं यस्य तेन नारायणः स्मृतः ।

शुवा नाराश्रया यस्य तेन नारायणोऽपि वा ॥ १०८७ ॥

नारायणः- शुव में निवास स्थान है जिसका उसे नारायण कडते हैं अथवा शुव मात्र है आश्रय (आधार) जिसका उसे नारायण कडते हैं ।

सर्वं वसति वै यस्मिन् सर्वस्मिन् भसतेऽपि वा ।

तमाहुर्वासुदेवं य योगिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥ १०८८ ॥

वासुदेवः- जिसमें सब लोग निवास करते हैं अथवा सब में जो निवास करता है तत्त्वदर्शी योगी लोग उसे वासुदेव कडते हैं ।

व्यापकोऽपिडि यो नित्यं सर्वं यैव यरायरे ।

विशप्रवेशने धातोर्विष्णुरित्यभिधीयते ॥ १०८९ ॥

विष्णुः- जो यरायरे में व्याप्त है सब में प्रवेश डिये है, उसे विष्णु कडते हैं विश प्रवेशने धातु से बनता है ।

कथ्यते स डरिर्नित्यं भक्तानां क्लेशनाशनः ।

भरणं पोषणं विश्वं विश्वम्भर ँति स्मृतः ॥ १०९० ॥

डरिः- जो भक्तों के क्लेशों का डरण करते हैं नाश करते हैं उसे डरि कडते हैं ।

विश्वम्भरः- जो सम्पूर्णा विश्व का भरण पोषण करता है उसे विश्वम्भर कहते हैं ।

वायुवद् गगने पूर्णा जगतामेव वर्तते ।

सर्वमिन्नं निराकारं निर्गुणं ब्रह्म उच्यते ॥ १०८१ ॥

ब्रह्मः- वायु की तरह एवं गगन की तरह सम्पूर्णा जगत् में व्याप्त निर्दिष्ट एवं पूर्णा जो है जो सबसे अलग, निराकार और निर्गुण है उसे ब्रह्म कहते हैं ।

यस्थानन्तानि रूपाणि यस्य यान्तत्र विद्यते ।

श्रुतयो यत्र जानन्ति सोऽप्यनन्तोऽभिधीयते ॥ १०८२ ॥

अनन्तः- जिसके अनन्त रूप हैं, जिसका अन्त नहीं है, और जिसको वेद भी नहीं जानते हैं उसे अनन्त कहते हैं ।

यो विराजस्तनुर्नित्यं विश्वरूपमथोच्यते ।

कला वैधिष्ठितान् सर्वान् यस्मिन्निति कलानिधिः ॥ १०८३ ॥

विराट्- सम्पूर्णा विश्व ही जिनका स्वरूप है उसे विराट् कहते हैं ।

कलानिधिः- सम्पूर्णा कलाओं जिसमें अधिष्ठित हैं उसे कलानिधि कहते हैं ।

सर्वाण्येतानि नामानि मया प्रोक्तानि यानि य ।

सख्यिदानन्दरूपाणि नामान्येतानि सर्वशः ॥ १०८४ ॥

हे पार्वति ! मेरे द्वारा भगवान् के जितने नाम कहे गये हैं वे सभी नाम सख्यिदानन्दस्वरूप हैं ।

परन्तु नामभेदश्च सङ्क्षेपेण वदामि ते ।

सख्यिदानन्दरूपैश्च त्रिभिरेभिः पृथक् पृथक् ॥ १०८५ ॥

परन्तु नाम भेद सत्, चित् और आनन्द इन तीनों के द्वारा पृथक्-पृथक् सङ्क्षेप में तुमसे कहता हूँ ।

वर्तते रामनामेदं सत्यं दृष्ट्वा मधेश्वरि ।

नामान्यन्यान्यनेकानि मया प्रोक्तानि पार्वति ॥ १०८६ ॥

हे मधेश्वरि ! पार्वति ! भगवान् के दूसरे मेरे द्वारा कहे गये नामों में श्रीरामनाम सख्यिदानन्दस्वरूप है इसमें सत्, चित् और आनन्द तीनों पूर्णरूप से विद्यमान है ।

कस्मिन् मुष्यौ सदानन्दौ चिद्गमनं तथोच्यते ।

कस्मिञ्चित्सतौ मुष्यौ यानन्दं गमनं स्मृतम् ॥ १०८७ ॥

कुछ नामों में सत् और आनन्द मुख्य है चिद् गुप्त है । कुछ नामों में चित् और सत् मुख्य आनन्द गुप्त है ।

त्वमेवमेव नामानि विद्धि सर्वाणि पार्वति ।

नामभेदं वदाम्यन्यं प्रवीणो शृणु भक्तितः ॥ १०८८ ॥

हे परमचतुर पार्वति ! इसी प्रकार भगवान् के नामों को समझो दूसरे नाम के रहस्यों को मैं कहता हूँ भक्तिपूर्वक सुनो ।

अन्यानि यानि सर्वाणि नामानि साक्षराणि च ।

निर्वर्णं रामनामेदं केवलं च स्वराधिपम् ॥ १०८८ ॥

दूसरे भगवान् के जितने नाम हैं सब साक्षर हैं केवल श्रीरामनाम सभी स्वरों का राजा एवं निर्वर्ण है ।

मुकुटं छत्रं च सर्वेषां मकारो रेक्यञ्जनम् ।

रामनाममयास्सर्वे नामवर्णाः प्रकीर्तिताः ॥ ११०० ॥

श्रीरामनाम के “र” और “म” कहीं मुकुट कहीं छत्र के रूप में सभी वर्णों में सुशोभित होते हैं सभी नाम एवं वर्ण श्रीरामनाममय हैं ।

अतथेव रमुकीडा नाम्नामीशाः प्रवर्तते ।

निजमत्यनुसारेण रामनामप्रभाषितम् ॥ ११०१ ॥

समस्त नामों के स्वामी श्रीरामनाम में रमुकीडा धातु है अपनी मति के अनुसार मैंने श्रीरामनाम के विषय में कडा है ।

रामनामप्रभावोऽयं केन वक्तुं न शक्यते ।

ब्रह्मादीनां बुद्धिरपि कुण्ठिता भवति ध्रुवम् ॥ ११०२ ॥

श्रीरामनाम के प्रभाव को सम्पूर्णतया कोह भी वर्णन नहीं कर सकता है इसके प्रभाव का वर्णन करने में ब्रह्मादि की भी बुद्धि कुण्ठित हो जाती है ।

कोटितीर्थानिदानानि कोटियोगप्रतानि च ।

कोटियज्ञजपश्चैव तपसः कोटि कोटयः ॥ ११०३ ॥

कोटिज्ञानैश्च विज्ञानैः कोटिध्यानसमाधिभिः ।

सत्यं वदामि तैस्तुल्यं रामनाम न वर्तते ॥ ११०४ ॥

अनन्त तीर्थों में दान, अनन्त योग व्रत, यज्ञ, जप, तप, ज्ञान, विज्ञान, ध्यान, समाधि ये सब श्रीरामनाम की तुलना नहीं कर सकते हैं । यह मैं सत्य कडता हूँ ।

परावाण्या भजेन्नित्यं रामनामपरात्परम् ।

त्यक्त्वा मोहं च मात्सर्यं वाक्यं यैवानृतं तथा ॥ ११०५ ॥

दुःखं लोभकामाद्या लोभमज्ञानमेव च ।

रागद्वेषं च दुःसङ्गं त्यक्त्वा दुर्वासनामपि ॥ ११०६ ॥

सर्वेन्द्रियजितो भूत्वा पूतो बाह्यान्तरस्तथा ।

एत्थं नाम जपेन्नित्यं रामरूपो भवेन्नरः ॥ ११०७ ॥

मोह, मात्सर्य, अनृत वाक्य, दुःख के मूल, कामक्रोधादि, लोभ, अज्ञान, रागद्वेष, दुःसङ्ग और दुर्वासना का त्याग करके समस्त इन्द्रियों को वश में करके, बाहर भीतर से पवित्र होकर परात्पर श्रीरामनाम की परा वाणी से नित्य भजन करें तो साधक धीरे-धीरे श्रीरामजु जैसे स्वभाव वाला हो जाता है ।

રહઃ પઠતિ યો નિત્યમેતત્ કમલલોચને ।

સર્વધ્યાનફલં તસ્ય કલાં નાર્હન્તિ ષોડશીમ્ ॥ ૧૧૦૮ ॥

હે કમલનયને ! જો સાધક એકાન્ત મેં નિત્ય શ્રીરામનામ કા પાઠ કરતા હૈ સમસ્ત ધ્યાન કા ફલ ઉસકી સોલહવી કલા કે બરાબર ભી નહીં હોતે હૈં ।

શઠાય પરશિષ્યાય વિષયાઢ્યાય માનિને ।

ન દાતવ્યં ન દાતવ્યં શ્રીરામોપાસકં વિના ॥ ૧૧૦૯ ॥

હે પાર્વતિ ! ઇસ રહસ્ય કો શ્રીરામોપાસક કે બિના કિસી ભી મૂર્ખ, પર શિષ્ય, વિષયી ઔર અહંકારી કો ન દેના, ન દેના ।

યદિ દાતવ્યમન્યેષાં સઘો મૃત્યુઃ પ્રજાયતે ।

મહતામેવ સર્વેષાં જીવનં પ્રોચ્યતે યતઃ ॥ ૧૧૧૦ ॥

યદિ અજ્ઞાનતાવશ કિસી દૂસરે કો દિયા તો તત્કાલ મૃત્યુ હો જાતી હૈ ક્યોહ્નિ યહ મહાપુરુષોં કા જીવન હૈ ।

-ઇતિ શ્રીસીતારામનામપ્રતાપપ્રકાશે પ્રમોદનિવાસે પરાત્પરૈશ્વર્યદાયકે

શ્રીયુગલાનન્યશરણસડ્ગૃહીતે શ્રીરામાયણવાક્યપ્રબલપ્રમાણનિરૂપણં નામ નવમઃ પ્રમોદઃ ॥ ૯ ॥

અથ દશમઃ પ્રમોદઃ

શ્રુત્યુક્તવચનાનિ

યજુર્વેદે -

મર્તાડમર્ત્તસ્ય તે ભૂરિ નામમનામહે વિપ્રાસો જાતવેદસઃ ॥ ૧૧૧૧ ॥

હે પ્રભો ! મૃત્યુધર્મ સે રહિત આપકે અનેક નામોં કો જો મરણધર્મા મનુષ્ય સ્મરણ મનન કરતે હૈં વે વિપ્ર એવં અગ્નિ કે સમાન તેજસ્વી હો જાતે હૈં ।

અથર્વણોપનિષદિ -

જપાત્તેનૈવ દેવતાદર્શનં કરોતિ કલૌ નાન્યેષાં ભવતિ ॥ ૧૧૧૨ ॥

શ્રીરામ નામ કે જપ સે હી ભગવાન્ તથા દેવતાઓં કા દર્શન હોતા હૈ કલિયુગ મેં શ્રીરામનામ કે અલાવા દૂસરા કોઈ સાધન નહીં હૈ ।

યજુર્વેદે -

યસ્ય નામ મહદ્યશઃ ॥ ૧૧૧૩ ॥

રામનામ જપાદેવ મુક્તિર્ભવતિ ॥ ૧૧૧૪ ॥

જિનકા નામ મહાયશસ્વી હૈ । શ્રીરામનામ કે જપ સે હી મુક્તિ હોતી હૈ

ભાલ્લેયશ્રુતિ -

સર્વાણિ નામાનિ યમાવિશન્તિ ॥ ૧૧૧૫ ॥

समस्त नाम जिस श्रीरामनाम में प्रवेश कर जाते हैं ।

अथर्वणो -

यश्चाण्डालोऽपि रामेति वाचं वदेत् तेन सः ।

संवदेत् तेन सः संवसेत् तेन सः सम्भुञ्जयात् ॥ १११६ ॥

जो याण्डाल भी “राम” ऐसा कडता है उसी के साथ सम्भाषण, सखवास और उसी के साथ सम्यक् भोजन करना चाडिअे ।

ऋग्वेदे -

ॐ परं ब्रह्म ज्योतिर्मयं नाम उपास्यं मुमुक्षुभिः ॥ १११७ ॥

ज्योतिः स्वरूप परमब्रह्म श्रीरामनाम की उपासना मुमुक्षुओं को करना चाडिअे ।

सामवेदे -

ॐ मित्येकाक्षरं यस्मिन् प्रतिष्ठितं तन्नाम ध्येयं संसृतिपारमिथ्योः ॥ १११८ ॥

“ओं” यड अेकाक्षर मन्त्र जिसमें प्रतिष्ठित है उस श्रीरामनाम का ध्यान भवसागर से पार करने की

थश्छा वालों को करना चाडिअे ।

श्रीरामोत्तरतापनीये -

अकाराक्षरसम्भूतः सौमित्रिर्विश्वभावनः ।

उकाराक्षरसम्भूतः शत्रुघ्नस्तैजसात्मकः ॥ १११९ ॥

प्रज्ञात्मकस्तु भरतो मकाराक्षरसम्भवः ।

अर्द्धमात्रात्मको रामो ब्रह्मानन्दैकविग्रहः ॥ ११२० ॥

ॐ और श्रीरामनाम में अलेड मानकर ॐ के “अ” से विश्व संज्ञक सुमित्रानन्दन श्रीलक्ष्माण, “उ” से तैजस संज्ञक श्रीशत्रुघ्न, “म” से प्राज्ञसंज्ञक श्रीभरत तथा अर्धमात्रा से ब्रह्मानन्दस्वरूप श्रीराम प्रकट डुअे हैं ।

श्रीरामपूर्वतापनीये -

यथैव वटभीजस्थः प्राकृतश्च मडान्द्रुमः ।

तथैव रामभीजस्थं जगदेतच्चराचरम् ॥ ११२१ ॥

यथा भीजात्मको मन्त्रो मन्त्रिणोऽभिमुषो भवेत् ॥ ११२२ ॥

जैसे वट के भीज में विशाल वटवृक्ष स्थित रहता है उसी प्रकार यड चराचर जगत् श्रीरामभीज मन्त्र में स्थित है । वैसे भीजमन्त्र मन्त्री (नामी) को सम्भुष प्रकट कर देता है ।

धर्ममार्गं यस्त्रिणं ज्ञानमार्गं य नामतः ।

तथा ध्यानेन वैराग्यमैश्वर्यं तस्य पूजनात् ॥ ११२३ ॥

श्रीरामञ्च ने अपने यस्त्रि के माध्यम से धर्म मार्ग को, अपने नाम के माध्यम से समस्त वेड ज्ञान को, अपने ध्यान के माध्यम से वैराग्य को तथा अपने पूजन के माध्यम से समस्त ऐश्वर्य को व्यवस्थित डिया है ।

તાત્પર્ય યહ હૈ કિ શ્રીરામજી અપને ચરિત્રોં કા ચિન્તન કરને સે ધર્મમાર્ગ, શ્રીરામનામ કે જપ સે જ્ઞાનમાર્ગ (સમસ્ત શાસ્ત્રોં કા જ્ઞાન) , ધ્યાન કરને સે વિષયોં સે વૈરાગ્ય તથા પૂજન કરને સે સમસ્ત ઐશ્વર્ય કો પ્રદાન કરતે હૈં ।

રામનામ ભુવિ ખ્યાતમભિરામેણ વા પુનઃ ।

અગ્નિસોમાત્મકં વિશ્વં રામબીજપ્રતિષ્ઠિતમ્ ॥ ૧૧૨૪ ॥

લોકલોચનાભિરામ હોને સે શ્રીરામનામ પૃથિવી પર પ્રસિદ્ધ હૈ । અગ્નિ ચન્દ્રાત્મક જગત્ શ્રીરામબીજ મન્ત્ર મેં

હી વ્યવસ્થિત એવં પ્રતિષ્ઠિત હૈ ।

રમન્તે યોગિનોડનન્તે સત્યાનન્દે ચિદાત્મનિ ।

ઇતિ રામપદેનાસૌ પરમ્બ્રહ્માભિધીયતે ॥ ૧૧૨૫ ॥

અનન્ત, સત્યાનન્દ એવં ચિત્સ્વરૂપ મેં બડ઼ો-બડ઼ો યોગી લોગ રમણ કરતે હૈં ઇસલિએ શ્રીરામપદ સે પરબ્રહ્મ કા અભિધાન હોતા હૈ ।

રુદ્રસ્તારકં બ્રહ્મ વ્યાપકં ચષ્ટે યેનાસાવમૃતો ભૂત્વા સ્વર્ગો ભવતીતિ ॥ ૧૧૨૬ ॥

ભગવાન્ રુદ્ર કાશી મેં મરણાસત્ર જીવોં કો શ્રીરામ તારક મન્ત્ર કા ઉપેદશ કરતે હૈં જિસકે પ્રભાવ સે જીવ અમર હોકર સ્વર્ગવાસી હો જાતા હૈ ।

શ્રીરામોપનિષદિ -

રામ એવ પરં બ્રહ્મ રામ એવ પરં તપઃ ।

રામ એવ પરં તત્ત્વં શ્રીરામો બ્રહ્મતારકમ્ ॥ ૧૧૨૭ ॥

શ્રીરામજી હી પરમ્બ્રહ્મ, પરં તપ, એવં પરન્તત્ત્વ હૈં, શ્રીરામજી હી તારકબ્રહ્મ હૈં ।

સ્વ ભૂજ્યોંતિર્મયોડનન્તરૂપી સ્વેનૈવ ભાસતે ।

જીવત્વેનેદમોં સૃષ્ટિસ્થિતિહેતુર્લયસ્ય ચ ॥ ૧૧૨૮ ॥

શ્રીરામનામ સ્વયમ્ભૂ પ્રકાશમય, અનન્ત સ્વરૂપવાલા ઔર સ્વયં પ્રકાશિત હૈ યહ સબકા જીવન, ઐં કા પ્રાણ, સૃષ્ટિ સ્થિતિ ઔર લય કા હેતુ હૈ ।

રેફ્કારૂઢા મૂર્તયઃ સ્યુઃ શક્તયસ્તિસ્ર એવ ચેત્ ॥ ૧૧૨૯ ॥

શ્રીરામનામ કે રેફ્ક મેં સમસ્ત મૂર્તિયાં એવં આહ્વાદિની આદિ શક્તિયાં સ્થિત હૈં ।

-ઇતિ શ્રીસીતારામનામપ્રતાપપ્રકાશે પ્રમોદનિવાસે પરાત્પરૈશ્વર્યદાયકે શ્રીયુગલાનન્યશરણસઙ્ગૃહીતે શ્રુતિવાક્યપ્રમાણ નિરૂપણં નામ દશમઃ પ્રમોદઃ ॥ ૧૦ ॥

અથસઙ્ગ્રહ શ્લોકાનિ -

નાનાપુરાણસ્મૃતિસંહિતાદિ ગ્રન્થોક્તવાક્યાનિ વિચારિતાનિ ।

નામ્નઃ પરત્વાનિ સમુદ્ ગતાનિ શ્રીમદ્યુગલાનન્ય પ્રપન્નકેન ॥ ૧૧૩૦ ॥

સ્વામી શ્રીયુગલાનન્યશરણજી ને અનેક પુરાણોં સ્મૃતિયોં એવં સંહિતાદિ મેં આયે હુએ શ્રીરામનામ કે પરત્વ પરક વાક્યોં કા વિચાર કિયા તત્પશ્ચાત્ યહ શ્રીસીતારામનામપ્રતાપપ્રકાશ ગ્રન્થ કા પ્રણયન કિયા હૈ ।

ये सर्वसौख्यमिदं रघुनन्दनस्य

नाम्नः परत्वमभिलाष्यैवरूपास्थम् ।

शृण्वन्ति शुद्धमनसा य पठन्ति नित्यं

श्रीरामनाम्नि परमां रतिमाप्नुवन्ति ॥ ११३१ ॥

जो लोग, सम्पूर्णा आर्य श्रेष्ठों के द्वारा सदासर्वदा उपास्य एवं सत्मी प्रकार के सुभ को प्रदान करने वाले इस श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाश ग्रन्थको शुद्ध मन से नित्य सुनेङ्गे और पढेंगे उन्हें निश्चित ही श्रीसीतारामनाम में परा रति की प्राप्ति होगी ।

श्रीरामनामरसिकाः प्रपठन्ति भक्त्या

शृण्वन्ति यैव सततं सुधियः प्रयत्नात् ।

नाम्नः परत्वमभिलागमसारभूतं

निन्दन्ति नष्टमतयो ह्यधमा मदान्धाः ॥ ११३२ ॥

सम्पूर्णा आगम शास्त्रों का सार श्रीराम परक इस ग्रन्थ को श्रीरामनाम के रसिक भक्तजन सुधीजन भक्तिपूर्वक पढेंगे हैं और निरन्तर प्रयत्नपूर्वक सुनते हैं । किन्तु जिनकी बुद्धि नष्ट हो गयी है जो मदान्ध हैं जैसे अधम लोग इसकी निन्दा करते हैं ।

श्रीरामनाममाहात्म्यं श्रुत्वा यो नैव हृष्यति ।

राक्षसं तं विजानीयात् मलाघौघनिडेतनम् ॥ ११३३ ॥

श्रीरामनाम के माहात्म्य को सुनकर जो प्रसन्न नहीं होता है उसे मलापापी राक्षस समझना चाहिए ।

श्रीरामनाममाहात्म्यं श्रुत्वा निन्दति योऽधमः ।

तन्मुषं नैव द्रष्टव्यं मलारौरवदायकम् ॥ ११३४ ॥

श्रीरामनाम की मलिमा सुनकर जो अधम इसकी निन्दा करता है मलारौरवनरक प्रदायक उस पापी के मुष को नहीं ट्रेपना चाहिए ।

श्रुत्वा श्रीनाममाहात्म्यं प्रीतिश्चैवान्यसाधने ।

स मलान्धो रवि त्यक्त्वा षधोतं समुपासते ॥ ११३५ ॥

श्रीरामनाम की मलिमा को सुनकर भी जिसकी दूरसरे साधनों में प्रीति होती है वह मलान्ध है और सूर्य को छोड़कर जुगनू की उपासना करता है ।

श्रुत्वा श्रीनाममाहात्म्यं नाम्नि स्नेहो न जायते ।

ततः परो न ब्रह्माण्डे भाग्यहीनो मलाघवान् ॥ ११३६ ॥

श्रीरामनाम के माहात्म्य को सुनकर भी जिसके हृदय में श्रीरामनाम के प्रति स्नेह प्रकट नहीं हुआ । इस ब्रह्माण्ड में उससे बढकर मलाघवी एवं भाग्यहीन को ह दूरसरा नहीं है ।

श्रीरामनाममाडात्त्र्यं सामान्यं यस्तु मन्थते ।

तस्याधमस्य दृष्टस्य संसर्गं सम्परित्यजेत् ॥ ११३७ ॥

श्रीरामनाम के माडात्त्र्य को जो सामान्य मानता है उस अधम अवेवं दृष्ट का संसर्ग छोड़ देना चाखिअे ।

श्रुत्वा श्रीनाममाडात्त्र्यं तत्त्वमन्यं परं वदेत् ।

तन्भुभालोकनाख्त्रेयः पापं विप्रवधादिकम् ॥ ११३८ ॥

श्रीरामनाम के माडात्त्र्य को सुनकर भी जो किसी दूसरे को परतत्व कडता है उस पापी के मुभ देभने से ब्राह्मणशुलत्यादि पापश्रेष्ठ है अर्थात् उसका मुभ देभना ब्रह्म डत्या के समान पाप है ।

रामनामात्मकं ग्रन्थं चिन्तनीयमिमं सदा ।

श्रावयेन्न कदाचिद्वै श्रीरामोपासकं विना ॥ ११३९ ॥

श्रीरामनामात्मक षस ग्रन्थ का सदासर्वदा चिन्तन करना चाखिअे और श्रीरामोपासक के बिना किसी अन्य को नहीं सुनना चाखिअे ।

नामामृतसोल्वासवैभवसम्प्रकाशकम् ।

ग्रन्थरत्नमिदं भूयात् भक्तानां भूतिकारकम् ॥ ११४० ॥

श्रीरामनामरूपी रसामृत के वैभव का दशप्रमोदों (डल्वासों) के माध्यम से भली भान्ति वर्णन करने ग्रन्थों में रत्न स्वरूप यड ग्रन्थ रत्न नाम जापक भक्तों के लिये कल्याणकारी डो ।

आनन्दाख्यसंलितयां-

जपन्ति यद् विष्णुशिवस्वयम्भुवो लक्ष्म्यादिवैकुण्ठयराश्र नित्याः ।

तदेव तत्त्वं य मुनीन्द्रयोगिनां श्रीरामनामामृतमाश्रयं मे ॥ ११४१ ॥

जिस श्रीरामनाम को भगवान् विष्णु, शङ्कर, ब्रह्माञ्ज तथा बैकुण्ठवासी भगवान् के लक्ष्मी आदि नित्य पार्षद जपते हैं और बडःे-बडःेे मुनियों अवेवं योगियों की दृष्टि में जो परतत्व है वडी श्रीसीतारामनामामृत मेरे ञुवन का परम आश्रय डो ।

रामनाम्नो ङि ग्रन्थस्य साधुभिर्लब्ध्याधिया ।

साधूनां पादपद्मेष्वेवानुवादः समर्पितः ॥

नाम भरोस नामभल नामसनेडु ।

जन्म जन्म रघुनन्दन तुलसिङि देडु ॥

जन्म जन्म जडँ तडँ तनु तुलसिङि देडु ।


तडँ तडँ राम निभाङिभ नाम सनेडु ॥


श्रीरामनाम्नि रतिस्तु मतिरस्तु

श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाश ग्रन्थ सम्पूर्णा डुगुआ

॥ समाप्तुडयं ग्रन्थः ॥

Proofread by Mrityunjay Pandey

——
Sitarama Nama Pratapa Prakasha
pdf was typeset on February 2, 2024

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

